

भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, नेपाली विभाग, भरतपुर, चितवनको
स्नातकोत्तर तह (एम.ए.), द्वितीय वर्षको
दसौँ पत्रको प्रयोजनार्थ
प्रस्तुत

शोधपत्र

शोधार्थी

वासुदेव आचार्य

शैक्षिक सत्र २०६५-२०६७
त्रि.वि.दर्ता नं. १७७७१-८९
क्याम्पस रोल नं. ३६/२०६५

नेपाली विभाग

वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस
भरतपुर, चितवन
२०७१/२०१४

कृतज्ञताज्ञापन

भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन शीर्षकको शोधपत्र मैले आदरणीय गुरु प्रा. डा. कुलप्रसाद ढुङ्गानाको निर्देशनमा तयार पारेको हुँ । समयको अति व्यस्तताको बावजुद पनि प्रस्तुत शोधकार्य तयार पार्ने क्रममा आफ्नो मूल्यवान् समय, अमूल्य सुभावा, सल्लाह र कुशल निर्देशन दिएर मलाई आत्मबल र हौसला प्रदान गरी शोधकार्यमा उत्प्रेरित गर्नुहुने आदरणीय गुरु डा. ढुङ्गानाप्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट गर्दछु । मेरो शोध प्रस्तावलाई विभागीय स्वीकृति प्रदान गरी अनुसन्धान गर्ने अवसर दिनुभएकोमा नेपाली विभागका तत्कालीन विभागीय प्रमुख आदरणीय गुरु प्रा. डा. नारायणप्रसाद खनाल प्रति हार्दिक आभार व्यक्त गर्दछु । यो शोधपत्र तयार पार्ने सन्दर्भमा आवश्यक सुभावा र सल्लाह दिई प्रेरणा प्रदान गर्नु हुने नेपाली विभागका वर्तमान विभागीय प्रमुख प्रा.डा.होमनाथ सापकोटा तथा सम्पूर्ण गुरुहरूप्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु ।

यस शोधपत्र लेखन कार्यका लागि आवश्यक सहयोग पुऱ्याउनु हुने तथा सामग्री उपलब्ध गराई हार्दिकतापूर्वक आफ्नो समय दिनुहुने शोधनायक साहित्यकार भूपिन व्याकुल तथा उहाँकी श्रीमती ज्योती खड्का प्रति पनि आभार व्यक्त गर्दछु । यसैगरी मलाई यथेष्ट सहयोग गर्नुहुने सनराइज इङ्लिस स्कुलका शिक्षक मित्र द्वय काशिराम आचार्य र किशोर काप्लेलाई विशेष धन्यवाद दिन चाहन्छु । सामग्री सङ्कलनका क्रममा पुस्तकालयीय सुविधा प्रदान गर्ने वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस पुस्तकालयका पुष्प अधिकारी अञ्जलीलाई पनि धन्यवाद दिन चाहन्छु साथै मलाई यस अवस्थासम्म ल्याई पुऱ्याउनु हुने र अध्ययन र लेखनको उपयुक्त वातावरण तयार पारिदिनु हुने पिता रुद्रप्रसाद आचार्य र माता डम्बर कुमारी आचार्य प्रति ऋणी हुनुको साथै पारिवारिक व्यस्ततामा पनि शोधपत्र तयार पार्न यथेष्ट समय उपलब्ध गराई सहयोग गर्ने श्रीमती गोमा ढकाल, छोरीहरू सोनिया, सोफिया र छोरा सफल आचार्य एवं समस्त परिवारजनलाई धन्यवाद दिन चाहन्छु ।

प्रस्तुत शोधपत्र समयमै टङ्कन गरी सहयोग गर्ने शालिकराम सापकोटा प्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्दै धन्यवाद दिन चाहन्छु । अन्त्यमा यो शोधपत्र आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, नेपाली विभाग समक्ष पेश गर्दछु ।

मिति :- २०७२/१०/०३

१७ जनवरी, २०१६

.....

वासुदेव आचार्य

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, भरतपुर, चितवन
नेपाली विभाग

स्वीकृति पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस भरतपुर, चितवनका विद्यार्थी वासुदेव आचार्यले नेपाली स्नातकोत्तर तह (एम.ए.) दशौँ पत्रको प्रयोजनका लागि प्रस्तुत गरेको भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन शीर्षकको शोधपत्र स्वीकृत गरिएको छ ।

मूल्याङ्कन समिति

प्रा.डा.होमनाथ सापकोटा
विभागीय प्रमुख

.....
हस्ताक्षर

प्रा.डा.कुलप्रसाद ढुङ्गाना
शोधनिर्देशक

.....
हस्ताक्षर

प्रा.डा.नारायणप्रसाद खनाल
बाह्य परीक्षक

.....
हस्ताक्षर

मिति : २०७२/१०/२४

७ फरवरी, २०१६

शोधनिर्देशकको मन्तव्य

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय, वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस नेपाली विभाग अन्तर्गत स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षका छात्र वासुदेव आचार्यले भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन शीर्षकको शोधपत्र मेरा निर्देशनमा तयार पार्नुभएको हो । परिश्रम र लगनका साथ तयार पारिएको हुँदा प्रस्तुत शोधकार्यबाट म सन्तुष्ट छु र यसको आवश्यक मूल्याङ्कनको लागि विभागसमक्ष सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०७२/१०/०३

१७ जनवरी, २०१६

.....

डा.कुलप्रसाद ढुङ्गाना

प्राध्यापक

नेपाली विभाग

वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस

भरतपुर, चितवन

विषयसूची

शीर्षक

पृष्ठ सं.

स्वीकृतिपत्र

शोध निर्देशकको मन्तव्य

कृतज्ञता ज्ञापन

सङ्क्षेपीकृत शब्दसूची

परिच्छेद एक

परिचय

| | |
|----------------------------------|----|
| १.१ विषय परिचय | १ |
| १.२ समस्या कथन | २ |
| १.३ शोधकार्यको उद्देश्य | २ |
| १.४ पूर्वकार्यको विवरण र समीक्षा | २ |
| १.५ अध्ययनको औचित्य र महत्त्व | ९ |
| १.६ शोधकार्यको क्षेत्र र सीमा | ९ |
| १.७ सामग्री सङ्कलन विधि | ९ |
| १.८ शोधविधि | १० |
| १.९ शोधपत्रको रूपरेखा | १० |

परिच्छेद दुई

साहित्यकार भूपिन व्याकुलको जीवनी

| | |
|--------------------------------------|----|
| २.१ जन्म र जन्मस्थान | १२ |
| २.२ वंश परम्परा र बसाइँ-सराइ | १२ |
| २.३ बाल्यकाल | १३ |
| २.४ शिक्षा दीक्षा | १३ |
| २.५ वैवाहिक र पारिवारिक अवस्था | १४ |
| २.६ पेशा र आर्थिक अवस्था | १५ |
| २.७ साहित्य क्षेत्रमा प्रवेश र कार्य | १६ |

| | |
|-------------------------------------------------------------|----|
| २.८ सामाजिक क्षेत्रमा संलग्नता र कार्य | १७ |
| २.९ रुचि र स्वभाव | १७ |
| २.१० भ्रमण | १८ |
| २.११ दुःख र सुखका क्षणहरू | १९ |
| २.१२ अविस्मरणीय घटना | १९ |
| २.१३ साहित्यिक मान्यता | २० |
| २.१४ जीवन दर्शन | २० |
| २.१५ सङ्घसंस्थामा आबद्धता | २१ |
| २.१६ सम्मान र पुरस्कार | २१ |
| २.१७ नेपाली साहित्यमा भूपिन व्याकुलको आगमन र साहित्य यात्रा | २२ |
| २.१७.१ लेखनको लागि प्रेरणा र प्रभाव | २२ |
| २.१७.२ नेपाली साहित्यमा भूपिनको आगमन र प्रकाशनको थालनी | २३ |
| २.१७.३ भूपिनको साहित्यिक यात्रा | २३ |

परिच्छेद तीन

साहित्यकार भूपिन व्याकुलको व्यक्तित्व

| | |
|------------------------------|----|
| ३.१ पृष्ठभूमि | ३० |
| ३.२ बाह्य व्यक्तित्व | ३० |
| ३.३ आन्तरिक व्यक्तित्व | ३१ |
| ३.३.१ साहित्यिक व्यक्तित्व | ३१ |
| ३.३.१.१ कवि व्यक्तित्व | ३१ |
| ३.३.१.२ निबन्धकार व्यक्तित्व | ३२ |
| ३.३.१.३ गीतकार व्यक्तित्व | ३३ |
| ३.३.१.४ गजलकार व्यक्तित्व | ३३ |
| ३.३.१.५ मुक्तककार व्यक्तित्व | ३४ |
| ३.३.१.६ भूमिका लेखन | ३४ |
| ३.३.१.७ सम्पादक व्यक्तित्व | ३४ |
| ३.३.२ साहित्येतर व्यक्तित्व | ३५ |
| ३.३.२.१ अध्यापक व्यक्तित्व | ३५ |
| ३.३.२.२ खेलाडी व्यक्तित्व | ३५ |

| | |
|--------------------------------|----|
| ३.३.२.३ सामाजिक व्यक्तित्व | ३६ |
| ३.३.२.४ सञ्चारकर्मी व्यक्तित्व | ३६ |
| ३.३.३ निष्कर्ष | ३६ |

परिच्छेद चार

भूपिन व्याकुलका कृतिहरूको अध्ययन

| | |
|-------------------------------------------------------------|----|
| ४.१ विषय प्रवेश : क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक कविता सङ्ग्रह | ३८ |
| ४.१.१ मलाई अनुभव-अनुभूतिको गर्भाधारण मन पर्छ | ३९ |
| ४.१.२ समय र कुपुत्रहरू | ३९ |
| ४.१.३ प्रजातन्त्र र अज्ञात देशवासीहरू | ४१ |
| ४.१.४ म यो शहरभित्र मेरो गाउँ भेट्दिन | ४१ |
| ४.१.५ भो अब दुखे जस्तो नगरे हुन्छ | ४२ |
| ४.१.६ अन्तरपीडा | ४४ |
| ४.१.७ एउटा अनुत्तरित प्रश्न | ४४ |
| ४.१.८ गुनासाहरू : आफैसँग | ४५ |
| ४.१.९ क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूल सडक | ४६ |
| ४.१.१० युगधर्म : एउटा महान धर्म | ४७ |
| ४.१.११ म कविता लेख्न सकिदैन | ४८ |
| ४.१.१२ बीसौँ शताब्दी : प्रत्येक मनको क्यानभासमा | ४९ |
| ४.१.१३ मनहरू | ५० |
| ४.१.१४ काग, ब्वाँसो र समय | ५० |
| ४.१.१५ हामीहरूले आफनो-आफनो अनुहार हराएका छौं | ५१ |
| ४.१.१६ सभ्यता (?), सभ्यता(!) र सभ्यता (I) | ५२ |
| ४.१.१७ काली, तँ यसरी नै बाँच्नु | ५३ |
| ४.१.१८ एउटा युगलाई अर्को युग कोरल्ल दिनुपर्छ | ५४ |
| ४.१.१९ ग्यालिलियोको दूरबिन मौन छ | ५५ |
| ४.१.२० एउटा यस्तो संविधान | ५५ |
| ४.१.२१ स्वाभिमानको चिया साटिएको छ | ५६ |
| ४.१.२२ आमोद थिग्रिएका तालहरू | ५७ |

| | |
|-------------------------------------------------------------|----|
| ४.१.२३ आमा माग्ने भाँडो भएकी छिन् | ५८ |
| ४.१.२४ तीन दिन जिन्दगीका | ५९ |
| ४.१.२५ बहिनीलाई चिठी | ६० |
| ४.१.२६ आक्रमण जारी छ | ६१ |
| ४.१.२७ बुद्ध देखियो/अमरसिंह भेटियो | ६२ |
| ४.१.२८ समकालीन कवि र कविता | ६२ |
| ४.१.२९ कलम, आवाज र आस्था | ६३ |
| ४.१.३० हिउँको मूर्ति पग्लिनु पर्छ एक दिन | ६४ |
| ४.१.३१ गुज्रिरहेछ मेरो बैसको मध्याह्न | ६५ |
| ४.१.३२ समुद्रका छालहरू र भावावेगहरू | ६७ |
| ४.१.३३ म, मालिक र अभाषिक खेतलाहरू | ६७ |
| ४.१.३४ सारांश | ६८ |
| ४.२ विषय प्रवेश : शब्दहरूको नेपथ्य कविता सङ्ग्रहको अध्ययन | ६८ |
| ४.२.१ नदीहरू मान्छेजस्ता हुँदैनन्-२ | ६९ |
| ४.२.२ मान्छेको कथा | ७० |
| ४.२.३ प्रेमी-हातहरू | ७१ |
| ४.२.४ ग्लोब, नदी र बगरहरू | ७२ |
| ४.२.५ मान्छे, खोला र एक्युरियम | ७३ |
| ४.२.६ चराहरूको गीत | ७४ |
| ४.२.७ पागल कविताहरू.... | ७५ |
| ४.२.८ मान्छेको परिभाषा | ७६ |
| ४.२.९ मृत्यु र मान्छे | ७७ |
| ४.२.१० अनुभूति-४ | ७८ |
| ४.२.११ ओ, तमाम स्वघोषित मान्छेहरू | ७९ |
| ४.२.१२ ईश्वरहरूको युद्ध | ८० |
| ४.२.१३ निदाएका बगरहरू | ८१ |
| ४.२.१४ सारांश | ८२ |
| ४.३ विषय प्रवेश : हजार वर्षको निद्रा कविता सङ्ग्रहको अध्ययन | ८३ |

| | |
|-------------------------------------------|-----|
| ४.३.१ मान्छेको अन्तिम गीत खण्डका कविता | ८३ |
| ४.३.१.१ नदीहरू मान्छेजस्ता हुँदैनन् | ८४ |
| ४.३.१.२ समुद्र हेरिरहेको मानिस | ८४ |
| ४.३.१.३ छालहरू | ८५ |
| ४.३.१.४ म नदी बग्न चाहन्छु | ८६ |
| ४.३.२ आत्महत्यादेखि जीवनसम्म खण्डका कविता | ८७ |
| ४.३.२.१ आत्महत्या | ८८ |
| ४.३.२.२ हजार वर्षको निद्रा | ८९ |
| ४.३.२.३ दिवङ्गत कविको नाममा | ९० |
| ४.३.२.४ उल्टो रूख | ९१ |
| ४.३.२.५ नक्सा | ९२ |
| ४.३.२.६ नीद | ९२ |
| ४.३.२.७ फोहर | ९३ |
| ४.३.२.८ समय - नासिया | ९४ |
| ४.३.२.९ अँध्यारोको मौनतामा | ९५ |
| ४.३.२.१० जीवनको गति | ९६ |
| ४.३.२.११ आवाजहरूको बन्दीगृह | ९७ |
| ४.३.२.१२ घामजूनको माभ्रमा | ९८ |
| ४.३.२.१३ एउटा लोरीगीत छोराको लागि | ९९ |
| ४.३.३ कुरूप कविताको सौन्दर्य खण्डका कविता | ९९ |
| ४.३.३.१ कुरूप कविता | १०० |
| ४.४.३.२ किरणहरूको खेलभूमि | १०० |
| ४.३.३.३ शब्दका सुरुङहरू | १०१ |
| ४.३.३.४ कवि नभएको भए | १०२ |
| ४.३.३.५ पाठकहरूको हत्या | १०३ |
| ४.३.४ एम्बुलेन्सभिन्न देश खण्डका कविता | १०४ |
| ४.३.४.१ लोकतन्त्रलाई प्रश्न | १०४ |
| ४.३.४.२ शब्दकोश | १०५ |

| | |
|--------------------------------------------------|-----|
| ४.३.४.३ परिवर्तन | १०६ |
| ४.३.४.४ सडक र एम्बुलेन्स | १०७ |
| ४.३.४.५ उल्टो जुलुस | १०७ |
| ४.३.४.६ हस्ताक्षर | १०८ |
| ४.३.४.७ अन्तिम कविता | १०९ |
| ४.३.५ ईश्वर: केही शोकगीतहरू खण्डका कविता | ११० |
| ४.३.५.१ कम्प्युटरमा ईश्वर | ११० |
| ४.३.५.२ ईश्वरहरूको युद्ध | १११ |
| ४.३.५.३ ईश्वरका नदीहरू | ११२ |
| ४.३.५.४ आविष्कार | ११३ |
| ४.३.६ गाँउमा कविता खण्डका कविता | ११४ |
| ४.३.६.१ कहीं नपुगेका यात्रीहरू | ११४ |
| ४.३.६.२ सपनाहरूको रङ | ११५ |
| ४.३.६.३ तामागी* | ११६ |
| ४.३.६.४ गाउँको सानो भाइ | ११७ |
| ४.३.६.५ कुमारी गाउँ | ११९ |
| ४.३.६.६ हिँड्ने रूखको कथा | १२० |
| ४.३.७ कमजोर शब्दहरूमा प्रेमको ध्वनि खण्डका कविता | १२० |
| ४.३.७.१ पोखरा | १२० |
| ४.३.७.२ साँचो | १२१ |
| ४.३.७.३ यो सहर | १२२ |
| ४.३.७.४ प्रिय आँखाहरू | १२३ |
| ४.३.७.५ एउटा प्रतीक्षाको विपक्षमा | १२३ |
| ४.३.७.६ किताब | १२४ |
| ४.३.७.७ म तिमीलाई प्रेम गर्छु | १२५ |
| ४.३.७.८ प्रेमीहरू | १२६ |
| ४.३.७.९ अन्तिम हस्ताक्षर | १२६ |
| ४.३.७.१० सारांश | १२७ |

| | |
|-----------------------------------------------------|-----|
| ४.४ विषय प्रवेश : चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रहको अध्ययन | १२८ |
| ४.४.१ कवि र सपना | १२९ |
| ४.४.१.१ शीर्षक | १२९ |
| ४.४.१.२ संरचना | १२९ |
| ४.४.१.३ विषयवस्तु | १२९ |
| ४.४.१.४ उद्देश्य | १२९ |
| ४.४.१.५ भाषाशैली | १३० |
| ४.४.२ सिलिगढीमा शब्दसाँघु | १३० |
| ४.४.२.१ शीर्षक | १३० |
| ४.४.२.२ संरचना | १३० |
| ४.४.२.३ विषयवस्तु | १३० |
| ४.४.२.४ उद्देश्य | १३१ |
| ४.४.२.५ भाषाशैली | १३१ |
| ४.४.३ मनको एल्मबका प्रिय गीत | १३१ |
| ४.४.३.१ शीर्षक | १३१ |
| ४.४.३.२ संरचना | १३१ |
| ४.४.३.३ विषयवस्तु | १३२ |
| ४.४.३.४ उद्देश्य | १३२ |
| ४.४.३.५ भाषाशैली | १३२ |
| ४.४.४ रूखको विम्बमा कविता | १३३ |
| ४.४.४.१ शीर्षक | १३३ |
| ४.४.४.२ संरचना | १३३ |
| ४.४.४.३ विषयवस्तु | १३३ |
| ४.४.४.४ उद्देश्य | १३३ |
| ४.४.४.५ भाषाशैली | १३४ |
| ४.४.५ कविता यात्राको गोरेटो | १३४ |
| ४.४.५.१ शीर्षक | १३४ |

| | |
|-------------------------------|-----|
| ४.४.५.२ संरचना | १३४ |
| ४.४.५.३ विषयवस्तु | १३४ |
| ४.४.५.४ उद्देश्य | १३५ |
| ४.४.५.५ भाषाशैली | १३५ |
| ४.४.६ साँस्कृतिक विम्ब | १३५ |
| ४.४.६.१ शीर्षक | १३५ |
| ४.४.६.२ संरचना | १३५ |
| ४.४.६.३ विषयवस्तु | १३६ |
| ४.४.६.४ उद्देश्य | १३६ |
| ४.४.६.५ भाषाशैली | १३६ |
| ४.४.७ अस्तित्व | १३६ |
| ४.४.७.१ शीर्षक | १३६ |
| ४.४.७.२ संरचना | १३७ |
| ४.४.७.३ विषयवस्तु | १३७ |
| ४.४.७.४ उद्देश्य | १३७ |
| ४.४.७.५ भाषाशैली | १३७ |
| ४.४.८ भोकको सङ्गीत | १३८ |
| ४.४.८.१ शीर्षक | १३८ |
| ४.४.८.२ संरचना | १३८ |
| ४.४.८.३ विषयवस्तु | १३८ |
| ४.४.८.४ उद्देश्य | १३८ |
| ४.४.८.५ भाषाशैली | १३९ |
| ४.४.९ समयको कुरूप चित्रकारिता | १३९ |
| ४.४.९.१ शीर्षक | १३९ |
| ४.४.९.२ संरचना | १३९ |
| ४.४.९.३ विषयवस्तु | १३९ |
| ४.४.९.४ उद्देश्य | १३९ |
| ४.४.९.५ भाषाशैली | १४० |

| | |
|---------------------------------------|-----|
| ४.४.१० जीवन: साभाबसको अन्तिम सिट | १४० |
| ४.४.१०.१ शीर्षक | १४० |
| ४.४.१०.२ संरचना | १४० |
| ४.४.१०.३ विषयवस्तु | १४१ |
| ४.४.१०.४ उद्देश्य | १४१ |
| ४.४.१०.५ भाषाशैली | १४१ |
| ४.४.११ नदी र जीवन | १४१ |
| ४.४.११.१ शीर्षक | १४१ |
| ४.४.११.२ संरचना | १४२ |
| ४.४.११.३ विषयवस्तु | १४२ |
| ४.४.११.४ उद्देश्य | १४२ |
| ४.४.११.५ भाषाशैली | १४२ |
| ४.४.१२ चोर बाटो हुँदै माडी | १४३ |
| ४.४.१२.१ शीर्षक | १४३ |
| ४.४.१२.२ संरचना | १४३ |
| ४.४.१२.३ विषयवस्तु | १४३ |
| ४.४.१२.४ उद्देश्य | १४३ |
| ४.४.१२.५ भाषाशैली | १४४ |
| ४.४.१३ सेप्टेम्बर एघारको ऐँठन | १४४ |
| ४.४.१३.१ शीर्षक | १४४ |
| ४.४.१३.२ संरचना | १४४ |
| ४.४.१३.३ विषयवस्तु | १४४ |
| ४.४.१३.४ उद्देश्य | १४५ |
| ४.४.१३.५ भाषाशैली | १४५ |
| ४.४.१४ प्रकट दाइ र पोखरा नोस्टाल्जिया | १४५ |
| ४.४.१४.१ शीर्षक | १४५ |
| ४.४.१४.२ संरचना | १४५ |
| ४.४.१४.३ विषयवस्तु | १४६ |

| | |
|-------------------------------|-----|
| ४.४.१४.४ उद्देश्य | १४६ |
| ४.४.१४.५ भाषाशैली | १४६ |
| ४.४.१५ साठी सालको डायरी | १४६ |
| ४.४.१५.१ शीर्षक | १४६ |
| ४.४.१५.२ संरचना | १४७ |
| ४.४.१५.३ विषयवस्तु | १४७ |
| ४.४.१५.४ उद्देश्य | १४७ |
| ४.४.१५.५ भाषाशैली | १४७ |
| ४.४.१६ साङ्गिलाको हृदय | १४८ |
| ४.४.१६.१ शीर्षक | १४८ |
| ४.४.१६.२ संरचना | १४८ |
| ४.४.१६.३ विषयवस्तु | १४८ |
| ४.४.१६.३ उद्देश्य | १४८ |
| ४.४.१६.५ भाषाशैली | १४८ |
| ४.४.१७ गोरखामा कविताको एकीकरण | १४९ |
| ४.४.१७.१ शीर्षक | १४९ |
| ४.४.१७.२ संरचना | १४९ |
| ४.४.१७.३ विषयवस्तु | १४९ |
| ४.४.१७.४ उद्देश्य | १४९ |
| ४.४.१७.५ भाषाशैली | १५० |
| ४.४.१८ हत्यारा सोच | १५० |
| ४.४.१८.१ शीर्षक | १५० |
| ४.४.१८.२ संरचना | १५० |
| ४.४.१८.३ विषयवस्तु | १५० |
| ४.४.१८.४ उद्देश्य | १५१ |
| ४.४.१८.५ भाषाशैली | १५१ |
| ४.४.१९ दुई महान् त्रासदी | १५१ |
| ४.४.१९.१ शीर्षक | १५१ |

| | |
|-----------------------------------------|-----|
| ४.४.१९.२ संरचना | १५१ |
| ४.४.१९.३ विषयवस्तु | १५२ |
| ४.४.१९.४ उद्देश्य | १५२ |
| ४.४.१९.५ भाषाशैली | १५२ |
| ४.४.२० पुजारी | १५२ |
| ४.४.२०.१ शीर्षक | १५२ |
| ४.४.२०.१ संरचना | १५३ |
| ४.४.२०.३ विषयवस्तु | १५३ |
| ४.४.२०.४ उद्देश्य | १५३ |
| ४.४.२०.५ भाषाशैली | १५४ |
| ४.४.२१. डिभाइन भ्यालीमा नास्तिक अनुभूति | १५४ |
| ४.४.२१.१ शीर्षक | १५४ |
| ४.४.२१.२ संरचना | १५४ |
| ४.४.२१.३ विषयवस्तु | १५४ |
| ४.४.२१.४ उद्देश्य | १५४ |
| ४.४.२१.५ भाषाशैली | १५५ |
| ४.४.२२ वेङ्लोरमा आँधीको चरा | १५५ |
| ४.४.२२.१ शीर्षक | १५५ |
| ४.४.२२.२ संरचना | १५५ |
| ४.४.२२.३ विषयवस्तु | १५५ |
| ४.४.२३.४ उद्देश्य | १५६ |
| ४.४.२२.५ भाषाशैली | १५६ |
| ४.४.२३ साइकलको क्यारियरमा समुद्र | १५६ |
| ४.४.२३.१ शीर्षक | १५६ |
| ४.४.२३.२ संरचना | १५६ |
| ४.४.२३.३ विषयवस्तु | १५७ |
| ४.४.२३.४ उद्देश्य | १५७ |
| ४.४.२३.५ भाषाशैली | १५७ |

| | |
|-------------------------------|-----|
| ४.४.२४ हरियो दिल्लीमा लेखकहरू | १५७ |
| ४.४.२४.१ शीर्षक | १५७ |
| ४.४.२४.२ संरचना | १५८ |
| ४.४.२४.३ विषयवस्तु | १५८ |
| ४.४.२४.४ उद्देश्य | १५८ |
| ४.२४.५ भाषाशैली | १५८ |
| ४.४.२४.६ निष्कर्ष | १५९ |

परिच्छेद पाँच

उपसंहार

| | |
|--------------------|-----|
| ५.१ परिचय | १६० |
| ५.२ सारांश | १६२ |
| सन्दर्भसामग्रीसूचि | १६५ |
| परिशिष्ट-१ | १६९ |
| परिशिष्ट-२ | १७० |

सङ्क्षेपीकृत शब्दसूची

यस शोधपत्रमा प्रयोग गरिएका सङ्क्षिप्त शब्दहरूको सूची यसप्रकार छ :

| सङ्क्षिप्त रूप | विस्तृत रूप |
|----------------|-------------------------|
| अं | अङ्क |
| अप्र | अप्रकाशित |
| आई.एस्सी. | इन्टर मिडियट इन साइन्स |
| उ.मा.वि | उच्च माध्यमिक विद्यालय |
| एस.एल.सी. | स्कूल लिभिङ् सर्टिफिकेट |
| क्र.सं. | क्रम संख्या |
| गा.वि.स. | गाउँ विकास समिति |
| चि.सा.प. | चितवन साहित्य परिषद |
| त्रि.वि. | त्रिभुवन विश्वविद्यालय |
| दो.स. | दोस्रो संस्करण |
| पी.एन. | पृथ्वी नारायण |
| पू. | पूर्णाङ्क |
| प्र. | प्रकाशन |
| पृ. | पृष्ठ |
| बी.एड. | ब्याचलर अफ इन एजुकेशन |
| मा.वि. | माध्यमिक विद्यालय |
| वि.सं. | विक्रम संवत् |
| सम्पा | सम्पादन |
| सा.प्र. | साभ्का प्रकाशन |

परिच्छेद एक

परिचय

१.१ विषय परिचय

नेपाली साहित्यको कविता र निबन्धमा उदीयमान युवा साहित्यकार भूपेन्द्र बहादुर खडकाको जन्म वि.सं.२०३० चैत्र ३० गते नारायणस्थान बलेवा बाग्लुङमा भएको हो । वि.सं.२०४० को दशकदेखि नै गजल लेखेर नेपाली साहित्यमा प्रवेश गरेका भूपिन सम-कालीन नेपाली साहित्यमा भिन्न अस्तित्व र पृथक् पहिचान बनाउन सफल भएका छन् । नेपाली साहित्यमा उनी भूपिन व्याकुलको नामले सुपरिचित छन् ।

वि.सं.२०४८ को नव कविता पत्रिकामा *एवं क्रमः दिन र रातहरू* शीर्षकको उनको पहिलो गद्य कविता प्रकाशन भएपछि उनी विधिपूर्वक नेपाली साहित्यको कविता क्षेत्रमा प्रवेश गरेको देखिन्छ । उनका हालसम्म **क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूल सडक** (कवितासङ्ग्रह - २०५३), **शब्दहरूको नेपथ्य** (संयुक्त कवितासङ्ग्रह-२०५६), **हजार वर्षको निद्रा** कविता सङ्ग्रह-२०६६) र **चौबीस रिल** (निबन्धसङ्ग्रह-२०६९) प्रकाशित भएका छन् । विभिन्न सङ्घसंस्थाबाट अभिनन्दित भूपिन व्याकुल **चौबीस रिल** निबन्धसङ्ग्रहका लागि उत्तम शान्ति पुरस्कार (२०६९) लगायत अनेक साहित्यिक पुरस्कार र पदकले सम्मानित भएका छन् भने आधा दर्जनभन्दा बढी साहित्यिक सङ्घसंस्थामा उनको आवद्धता रहेको देखिन्छ । उनको साहित्यिक सङ्घसंस्थाहरूसँगको आवद्धता, साहित्यप्रतीको लगाव, विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमा प्रकाशित लेख र रचना, टिप्पणी, भनाइ, समीक्षा आदिलाई हेर्दा उनी नेपाली साहित्यका एक अनुसन्धेय व्यक्तित्वको रूपमा रहेका छन् ।

नेपाली साहित्यमा उदीयमान कवि भूपिन व्याकुलको **हजार वर्षको निद्रा** (२०६६) कवितासङ्ग्रहको दीपेन्द्र पौडेलबाट २०६७ सालमा शास्त्री तहको शोधपत्रको रूपमा कृतिगत अध्ययन र विश्लेषण गरेको पाइन्छ । त्यसबाहेक अरू कसैले भूपिन र उनका अन्य कृतिहरूको बारेमा विस्तृत र गहन अध्ययन एवम् विश्लेषण गरेको देखिँदैन । केवल विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमा सामान्य टीकाटिप्पणी, समीक्षा, भूमिका लेखन र चर्चापरिचर्चा मात्र गरेको पाइन्छ । यसले मात्र उनको समग्र साहित्यिक पाटाहरूको मूल्याङ्कन हुन सकेको छैन । तसर्थ उनको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन विश्लेषण गर्न आवश्यक देखिएकाले

यस शोधकार्यका लागि भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन विषयक शीर्षक छनोट गरिएको छ ।

१.२ समस्या कथन

साहित्यको विविध विधामा उल्लेख्य योगदान पुऱ्याएका साहित्यकार भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन नै यस शोधकार्यको मुख्य समस्या रहेको छ । यस शोधकार्यका मूल समस्याकथनलाई निम्नानुसार बुँदाहरूमा उल्लेख गरिएको छ :-

- क) भूपिन व्याकुलको साहित्यिक जीवनयात्रा के-कस्तो रहेको छ ?
- ख) साहित्यकार भूपिन व्याकुलको व्यक्तित्व के-कस्तो छ ?
- ग) प्रवृत्तिगत रूपमा उनका साहित्यिक कृतिहरू र योगदानको अध्ययन विश्लेषण के कसरी गर्न सकिन्छ ?

यस शोधकार्यमा यिनै समस्याहरूको समाधान गरिएको छ ।

१.३ शोधकार्यको उद्देश्य

माथि उल्लिखित समस्याकथनमा केन्द्रित रही साहित्यकार भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन-अनुसन्धान र विश्लेषण गर्नु यस शोधकार्यको मुख्य उद्देश्य हो । यस शोधकार्यका उद्देश्यहरू यसप्रकार छन् :

- क) भूपिन व्याकुलको साहित्यिक जीवनयात्राको पहिचान गराउनु ।
- ख) साहित्यकार भूपिन व्याकुलको व्यक्तित्व केलाउनु ।
- ग) उनका प्रकाशित साहित्यिक कृतिहरू र योगदानको अध्ययन विश्लेषण गर्नु ।

यिनै उद्देश्यहरूको परिपूर्ति यस शोधकार्यमा गरिएको छ ।

१.४ पूर्वकार्यको विवरण र समीक्षा

साहित्यकार भूपिन व्याकुल नेपाली समकालीन कविहरूको माभ्रमा जुभारु, गतिशील, चिन्तनशील र फरक पहिचान भएका चर्चित कविको रूपमा देखापरेका बहुमुखी प्रतीभा हुन् । नेपाली साहित्यमा अनवरत रूपमा आफ्नो जीवनको समय खर्चिसकेको भूपिन व्याकुलका बारेमा समालोचक, समीक्षकहरूबाट विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमा लेख, रचना, टीका-टिप्पणी, कवि गोष्ठी गरेर समीक्षा गरेको भए तापनि त्यतिलेमात्र उनको सम्पूर्णतालाई

समेट्न सकदैन । तसर्थ अझ वृहत् रूपमा उनको समग्रपक्षको बारेमा ठोस, मूर्त सुव्यवस्थित र विस्तृत रूपमा अध्ययन अनुसन्धान हुनु जरुरी देखिन्छ । अतः साहित्यकार भूपिन व्याकुलका बारेमा आजसम्म गरिएका पूर्वकार्यहरूको विवरण कालक्रमिक रूपमा यसप्रकार प्रस्तुत गरिएको छ :

क) क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूल सडक (२०५३ कार्तिक-११) पुस्तकको क्षतिग्रस्त मनभिन्न कवि व्याकुल शीर्षकमा भूमिका लेख्ने क्रममा साहित्यकार प्रेम छोटाले व्याकुलका कवितामा मानवीय मूल्य, युग चेतना, सामाजिक विडम्बना, सचेतता, प्रेम प्रणय, आर्थिक विषमता, कुण्ठाग्रस्त जीवन, राजनीतिक पीडा, पीडित जनजीवनका सुस्केरा आदि लगायतका समाजोत्थान, सामाजिक मर्यादा, राष्ट्र र विश्व प्रेमको अतिरिक्त कुण्ठित मानवीय मनोदशालाई सङ्क्षेपमा आफ्नै शब्द र स्वरको माध्यमबाट विश्लेषण गर्न सक्ने सचेत कविको रूपमा उल्लेख गरेका छन् । (छोटा, २०५३ : भूमिका)

ख) क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूल सडक (२०५३) कवितासङ्ग्रहको बाहिरी कभरमा काजी रोशनले भूपिनभिन्न आफूले सृजनाको स्पष्ट रेखा देखेको र ती रेखाभिन्न दिव्यालोकको क्षमता रहेको तथा सुदूर क्षितिजसम्म प्रज्वलित पार्ने सङ्केत छ भनी टिप्पणी गरेको छन् । (रोशन, २०५३: आवरण पृष्ठ) ।

ग) क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक कवितासङ्ग्रह (२०५३) को मन्तव्यको क्रममा साहित्यकार सरुभक्तले कवि व्याकुललाई प्रचुर उत्साह, सामयिक जिज्ञासा, मूर्त सन्देही हार्दभाव र बुद्धिमत्तापूर्ण नवसर्जकको रूपमा चर्चा गरेका छन् (सरुभक्त, २०५३: आवरण पृष्ठ) ।

घ) शब्दहरूको नेपथ्य कवितासङ्ग्रह (२०५६) को भूमिकामा साहित्यकार सरुभक्तले कवि भूपिनलाई माटो-संवेदना र माटो-पीडाका कवि एवम् उनका प्रतीकहरू बिम्बात्मक र बिम्बहरू प्रतीकात्मक बन्नका साथै उनी क्षतिग्रस्त पृथ्वीमा शाश्वत मूल्यहरू सन्धान गर्ने संवेदनायुक्त कविका रूपमा चर्चा गरेका छन् (सरुभक्त, २०५६: भूमिका) ।

- ड) साप्ताहिक सारथि पत्रिका (२०५७) मा शब्दहरूको नेपथ्य शीर्षकमा साहित्यकार सरुभक्तले भूपिनलाई हेर्ने आफ्नै दृष्टिकोण रहेको र उनले भूपिनलाई पागल कविताहरूका कविको संज्ञा दिएका छन् (सरुभक्त, २०५७ :३) ।
- च) हजार वर्षको निद्रा (कवितासङ्ग्रह-२०६६) को आमुख समापनमा समालोचक लक्ष्मण-प्रसाद गौतमले कवितात्मक मूल्यका कविता लेख्ने भूपिनलाई युग चेतनाका कवि, संवेदनाका कवि, अलिकति अनुराग र विरागका कवि एवं त्यसभन्दा बढी चेतनाको पीडाबाट आहत भएर कलात्मक शैलीशिल्पको माध्यमबाट बाहिर अभिव्यक्त गरी पाठकीय संवेदना र मस्तिष्कलाई संवेदित बनाउने कविको रूपमा चित्रण गरेका छन् गौतम, २००९ : भूमिका) ।
- छ) हजार वर्षको निद्रा (कवितासङ्ग्रह २०६६) माथि युवा समीक्षक दुतेन्द्र चामलिङ्गले हजार वर्षको निद्रा र व्युँझाउने कविताहरू शीर्षक लेखमा अङ्गुरको वाइन पिएर पुरै एक पुस्ता निदाउने रिपमान विङ्कल कवि हुन्थ्यो भने उसले पनि यिनै हरफ लेख्थ्यो भनी उच्च प्रशंसा गरेका छन् (दुतेन्द्र फेसबुक ब्लग, २०६७)
- ज) गोरखापत्र (२०६६ श्रावण १३) मा नयाँ कृति स्तम्भमा समालोचक गीता त्रिपाठीले भूपिन जीवनका गायक, कवि र उनको कवि हृदय अनुभूतिको खेत र कवितालाई उर्वर खेती र उनको खेतमा आफ्नै मौसमको धुवाईरहेको चर्चा गरेकी छन् (त्रिपाठी, २०६६:५) ।
- झ) अन्नपूर्ण पोष्ट (२०६६ मङ्सिर १ शनिबार) ललितपुरको हार्ट क्लवमा एकल कविता वाचन कार्यक्रममा समालोचक गोविन्दराज भट्टराईले चोटिला कविता लेख्ने भूपिनको कविता सुन्न लायक छन् भनी प्रशंसा गरेका छन् (भट्टराई, २०६६:८) ।
- ञ) बुधबार साप्ताहिक (२०६६ पुस १) मा भूपिनका कविता र कृष्ण भीरको पहिरो शीर्षक लेखमा आर.एम.डङ्गोलले भूपिनको एकल कवितावाचन श्रवण पश्चात् बुधबारको

सस्मरण लेखमा उच्च प्रतिभा भएका, हृदय र मनलाई छुन सक्ने कविता लेख्ने कविको रूपमा चर्चा गरेका छन् (डङ्गोल, २०६६:१०) ।

ट) कवि भूपिन व्याकुलको **हजार वर्षको निद्रा** कवितासङ्ग्रह (२०६६) कृतिको विश्लेषण लघु शोधपत्रको रूपमा वि.सं. २०६७ सालमा दीपेन्द्र पौडेलबाट भएको छ ।

उनले **हजार वर्षको निद्रा** कवितासङ्ग्रहको विश्लेषण गर्दा शीर्षक, संरचना, विषय-वस्तु, भावविधान, लय, बिम्ब, प्रतीक, अलङ्कार र भाषाशैलीलाई मुख्य आधार बनाएका छन् साथै उनले कृतिलाई सात खण्डमा विभाजन भएको ४८ ओटा लामाछोटा कविताहरू समावेश गरिएको फुटकर गद्य कविताहरूको सङ्ग्रह भन्दै यस सङ्ग्रहको शीर्षक प्रतीकात्मक रूपमा आएको उल्लेख गरेका छन् । कविले आफ्ना कविताका विषयवस्तुमा जीवनयात्राको भोगाइ एवम् साहित्य साधनाबाट प्राप्त अनुभव र अनुभूतिलाई समेटेको पाइन्छ । उनका कवितामा मुख्य विषयवस्तुहरूमा मानवीय पीडा, सुखका अनुभूति, जीवनको सत्यता, प्राकृतिक चित्रण, सामाजिक कुरीति, मानवीयमूल्य, युगीन यथार्थ, ग्रामीण परिवेश जस्ता विविध विषयहरूलाई समेटेर अस्तित्ववादी एवम् विसङ्गतिवादी भावभूमि अँगालेर गद्यलयमा कविता रचेका छन् । प्रकृति, मानवीय जीवन एवम् सामाजिक जीवनसँग सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रबाट टिपिएका नवीन र पुरातन बिम्बप्रतीकहरूको प्रयोगले कविताहरूलाई सुन्दर बनाएको र विभिन्न अलङ्कारको समुचित प्रयोगले भावपक्ष गहन र सरल हुनुको साथै तत्सम्, तद्भव र भर्षा शब्दको प्रयोगले कविताको भाषाशैली सरल हुन पुगेको छ भन्दै उनका कवितामा स्वच्छन्दतावाद र प्रगतिवादका छनक पनि प्राप्त गर्न सकिने भएकाले कवि भूपिन भावपक्षमा भूपि शेरचनसँग नजिक छन् भनी टिप्पणी गरेका छन् (पौडेल, २०६७ : १-८९) ।

ठ) **अन्नपूर्ण पोष्ट** (२०६८) **हजार वर्षको निद्रामा** मस्त कवि भूपिन व्याकुल शीर्षक लेखमा नरेन्द्र परासरले **हजार वर्षको निद्रामाथि** गरेको समीक्षामा कवि व्याकुललाई वर्तमान सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, भौतिक परिवेश तथा जीवनका अनेकानेक अवयवको आरोह/अवरोहद्वारा उद्वेलित र व्याकुल हुँदै कविता रचना गर्न

सक्ने एक सशक्त अनि शाश्वत प्रतिभा हुन् भनी टिप्पणी गरेका छन् (परासर, २०६८ :३) ।

ड) गरिमा (२०६८ भदौ) मा साइबर सेक्स र मोमोका प्लेटमा ईश्वरहरू शीर्षकमा रोशन शेरचनले भूपिनका बारेमा टिप्पणी गर्दै ईश्वरहरूको शोकगीत मार्फत ईश्वरको मृत्युलाई सङ्केत गरी इन्टरनेटमा देवीहरूसँग कामुक लयमा साइबर सेक्सको कुरा गर्ने ईश्वरको दैवी सत्तामाथि प्रश्न खडा गर्ने र नेपाली साहित्यमा प्रविधि, संस्कृति र साइबर संस्कृति भित्राउने पचासको दशकमा देखापरेको प्रतिभा सम्पन्न कवि हुन् भनेर पुष्टि गरेका छन् (शेरचन, २०६८:८६) ।

ढ) मधुपर्क (२०६८ साउन) मा स्वादिला कविताहरूको सङ्ग्रह शीर्षक लेखमा रोशन थापाले हजार वर्षको निद्रा कृतिको समीक्षा गर्दै भूपिनलाई परिपक्व, सजग र सहज मानवीय चेतनाको सशक्त कविका रूपमा चिनाउनुको साथै यस कृतिका कविताहरू स्वादैस्वादले भरिपूर्ण रहेको छन् भनी चित्रण गरेका छन् (थापा, २०६८:१९,२२) ।

ण) सौर्य दैनिक (२०६९ असोज २०) मा प्रकाशित साहित्यिक वार्तामा दीपक सापकोटाले कवि भूपिनलाई कविताको ट्रेन्चभित्र छिरेर जीवनको आक्रमणहरूको सामना गर्न इच्छुक एक सिर्जनशील अराजक व्यक्ति हुनुको साथै नेपाली समकालीन कविताका गम्भीर हस्ताक्षर कविको रूपमा उच्च मूल्याङ्कन गरेका छन् (सापकोटा, २०६९:७) ।

त) गरिमा (२०६९ कार्तिक,वर्ष ३०, अङ्क ११, पूर्णाङ्क ३५९) मा युवा पत्रकार समीक्षक राजकुमार बानियाले कविता क्लिनिकमा भूपिन व्याकुल लेखमा उनलाई नयाँ पुस्ताका एकजना भर्भराउँदा प्रतिभा र चौबीस घण्टे कवि जस्ता उपमा दिएर चर्चा गरेका छन् । (बानिया, २०६९ : ७९)

थ) कोसेली पत्रिका (२०७० वैशाख ७) मा काव्यात्मक निबन्ध शीर्षकमा साहित्यकार निमेष निखिलले भूपिनको निबन्ध चौबीस रिलको सन्दर्भमा समीक्षा गर्दै कविको कलमले गद्य भाषालाई भन्नु सुन्दर, वजनदार बनाएको र भूपिनका सबै निबन्धहरूमा काव्यात्मक

रन्को पर्याप्त रहेको भन्दै विम्ब र प्रतीकको प्रयोगबाट कलात्मक सिर्जना गर्ने मोह रहेको चर्चा गर्दै केही लामो संरचनामा रहेका निबन्धहरू पनि चाँडै सकिएको अनुभूति पाठकलाई हुन्छ । यो भूपिनका निबन्धकलाको उल्लेखयोग्य र प्रशंसनीय पक्ष रहेको चर्चा गरेका छन् (निखिल २०७० : च) ।

द) नेपाल राष्ट्रिय साप्ताहिक पत्रिका (२०७० माघ २६) मा प्रकाशित गुरुड सुशान्तको चौबीस रिल कृतिको वैचारिक वृक्षमा भूपिन शीर्षक समीक्षात्मक लेखमा उनले लेखकको पदचाप, वैचारिक ध्वनि, समाजका स-साना पक्ष, दर्शनको रङ कम-बेसी सन्तुलन भएमा निबन्ध पठनीय हुन्छ भन्ने चर्चा गर्दै विभिन्न जीवनदर्शनबाट प्रभावित भूपिनको जीवनलाई हेर्ने आफ्नै प्रक्रिया छ भनी चर्चा गरेका छन् (गुरुड, २०७०:१) ।

ध) २०७० श्रावण २६ गते शनिवार ज्यान्डम रिडर्स सोसाइटी अफ नेपालद्वारा आयोजित पुस्तक परिचर्चा कार्यक्रममा चौबीस रिलभित्र भूपिनको दिल आलेखमा सुरेश रानाभाटले भूपिनलाई कविको सत्ताबाट निबन्धकारको कित्तामा सशक्त र भीडमा फरक अनुहार बनाएका भूपिनले निबन्धको मैदानमा पनि सुन्दर गोल गरेको भन्दै जीवन र जगत, समाज र मान्छे, अग्रज अनुज, समकालीन स्रष्टा र घटनालाई गतिशील चित्रमा रूपान्तरण गरेका छन् भनी चित्रण गरेका छन् (रानाभाट, २०७०:५) ।

न) कान्तिपुर (२०७१ भाद्र १४) भूपिनले सुनाए कविता शीर्षकमा पोखरामा भएको भूपिनको एकल कविता वाचन कार्यक्रममा कवि तीर्थ श्रेष्ठले पचासको दशकदेखि आफूसँग हिँडेका कवि भूपिनलाई शक्तिशाली कविको रूपमा चित्रण गरेका छन् (श्रेष्ठ, २०७१:८) ।

प) भूपिनमन परिलयो पोखरामा शीर्षक राखेर पोखरापत्र राष्ट्रिय दैनिक (२०७१ भाद्र १४) ले शब्द बलवान् हुन्छ र त्यसले हसाउँछ अनि रूवाउँछ पनि । हौस्याउँदैन मात्र उदासीन पनि बनाउने भएकाले ती शब्दलाई सापटी लिई बन्ने सिर्जना महान् बन्छ भन्दै भूपिनको मनले बनेका शब्दहरू कविता बनेर पोखरामा पोखिए भन्दै कवि तीर्थ श्रेष्ठले

भूपिनको अनुहार, हिँडाइ, बोलाइ सबै कविता भएको भनेर चर्चा गरेका छन् (श्रेष्ठ, २०७१ : १-४) ।

फ) आर्दश समाज दैनिक (२०७१ भाद्र १४) मा उज्यालै उज्यालाको 'अन्तिम कविता' लेख्न चाहने कवि भूपिन शीर्षकमा-मानिसका सुख-दुख, अभाव, मिलन-विछोड, प्रेम, समाजका असङ्गति, विसङ्गति र विकृतिप्रति व्यङ्ग्य गर्दै कविता लेख्ने भूपिन अब उज्यालै उज्यालोको अन्तिम कविता लेख्न चाहन्छन् भनि रञ्जन अधिकारीले टिप्पणी गरेका छन् (अधिकारी, २०७१:४) ।

ब) कान्तिपुर (१४ मङ्सिर २०७१) कला र शैली शीर्षकमा कवि सरुभक्तले भूपिनलाई राष्ट्र र प्रकृतिको यथार्थ जीवनका बिम्ब भएका, युग चेतनाका अगुवाका साथै संवेदनाका कवि भएको टिप्पणी गरेका छन् ((सरुभक्त, २०७१:१२) ।

भ) नागरिक दैनिक(२०७१ मङ्सिर १५) बिम्बमा भूपिनको एकल कविता वाचन शीर्षकमा बाग्लुङमा भएको कार्यक्रममा दिलीप पौडेलले भूपिनका कवितामा समसामयिक राजनीति, गाउँले परिवेश, वैदेशिक रोजगारमा जाँदाको पीडा, प्रेम र गाउँका समस्यालाई उजागर गरेको पाइन्छ भन्ने टिप्पणी गरेका छन् (पौडेल, २०७१:१०) ।

यसप्रकार विभिन्न लेखक, समालोचक समीक्षक र साहित्यकार तथा शोधकर्ताहरूले उनको बारेमा सामान्य चर्चा परिचर्चा गरे तापनि विस्तृत रूपमा अध्ययन, अनुसन्धान र विश्लेषण गरेको देखिँदैन, तसर्थ यस शोधकार्यमा भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन सुव्यवस्थित, मूर्त र विस्तृत रूपमा गरिएको छ ।

१.५ अध्ययनको औचित्य र महत्त्व

साहित्यका विविध विधामा कलम चलाउने भूपिन व्याकुलको बारेमा हालसम्म पनि साहित्यको समग्र पाटाहरूको ठोस, सघन, विस्तृत र सुव्यवस्थित रूपले अध्ययन अनुसन्धान र विश्लेषण हुन सकेको छैन । समालोचक, लेखक, समीक्षक, विज्ञ आदिले उनका कृति, उनको बारेमा समीक्षा टीका-टिप्पणी गरे पनि त्यसले मात्र उनको समग्र साहित्यिक

योगदानलाई समेट्न सकेको देखिँदैन । तसर्थ उनको छायामा परेको विशाल भागको गहिराइसम्म पुगेर अनुसन्धान, अध्ययन गर्न उनको जीवनी, व्यक्तित्व कृतित्वबाट मात्र सम्भव भएको हुँदा यो शीर्षक औचित्यपूर्ण र उपयोगी सिद्ध छ ।

यस शोधकार्यबाट प्राप्त हुने परिमाणले साहित्यकार भूपिन व्याकुलको बारेमा जान्न इच्छुक व्यक्ति, सङ्घसंस्था, समालोचक, समीक्षक, साहित्यकार, पाठक, विद्यार्थी, अनुसन्धानकर्ता, लेखक, प्रध्यापक आदिका लागि सैद्धान्तिक र व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हुनुको साथै भूपिन व्याकुलको प्रेरणा र प्रभाव ग्रहण गरी भावी पुस्ताहरू यसबाट लाभान्वित हुनगर्ने नेपाली साहित्यको विकासको क्षेत्रमा यसले एउटा सेतुको काम गर्ने भएको हुँदा यस शोधकार्यको औचित्य र महत्त्व पुष्टि हुन आउँछ ।

१.६ शोधकार्यको सीमा

यो शोध साहित्यकार भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वसँग सम्बन्धित छ । उनको जीवनका विविध पक्षहरूको साथै हालसम्म प्रकाशित साहित्यिक कृतिहरूको अध्ययन, विश्लेषण र मूल्याङ्कन गर्नु यस शोधकार्यको सीमा क्षेत्र रहेको छ । उनका प्रकाशित कृतिहरूको विश्लेषणका क्रममा अन्य समकालीन कविहरूका कृतिसँग तुलना प्रतितुलना नगर्ने यस शोधकार्यको सीमा हो ।

१.७ सामग्री सङ्कलन विधि

यस शोधकार्यलाई पूर्णता दिने क्रममा मूलतः पुस्तकालयीय विधिलाई आधार बनाएर सामग्री बटुल्ने कार्य गरिएको छ । सामग्री खोज्ने सिलसिलामा व्यक्तिगत, संस्थागत, पुस्तकालय, सम्बन्धित विज्ञ, कम्प्युटर, इन्टरनेट, शब्दकोश, विभिन्न पत्रपत्रिका, बुलेटिन, स्मारिका आदिको अध्ययनद्वारा शोधपत्रको लागि सामग्री एकत्रित गरिएको छ । यसको साथै थप जानकारीको लागि स्वयम् शोधनायकसँग, शोधनायकका नातागोताका साथै साहित्यिक व्यक्तित्वहरू साहित्येतर व्यक्तित्वहरूसँग औपचारिक अनौपचारिक छलफल, लिखित एवम् मौखिक प्रश्नावलीद्वारा प्राथमिक र द्वितीयक सामग्रीहरूको प्रयोग गरिएको छ ।

१.८ शोधविधि

साहित्यकार भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन, विश्लेषण र मूल्याङ्कन गर्ने क्रममा सङ्कलित तथ्याङ्क एवम् सामग्रीको विश्लेषणका लागि वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, वर्गीकरणात्मक, व्याख्यात्मक र परिचयात्मक विधि पद्धति अपनाइनुका साथै भूपिन व्याकुलको जीवनी र व्यक्तित्व अध्ययनको लागि जीवनीपरक समालोचना विधि र कृतिपरक वा कृतिपक्षको अध्ययनका लागि प्रभावपरक एवम् मूल्याङ्कनपरक समालोचना विधि अवलम्बन गरिएको छ ।

१.९ शोधपत्रको रूपरेखा

यस शोधकार्यलाई व्यवस्थित र सुसङ्गठित रूपमा प्रस्तुत गर्नको लागि निम्नलिखित रूपरेखामा विभाजन गरिएको छ :

परिच्छेद एक : शोधविषयको परिचय

यो परिच्छेद शोध परिचयमूलक रहेको छ । यस अन्तर्गत विषय परिचय, समस्या कथन, शोधकार्यको उद्देश्य, पूर्वकार्यको विवरण, शोधको औचित्य, महत्त्व र उपयोगिता, शोधकार्यको क्षेत्र र सीमा, सामग्री सङ्कलन विधि, शोधविधि, शोधपत्रको रूपरेखा समेत उल्लेख गरिएको छ ।

परिच्छेद दुई : भूपिन व्याकुलको साहित्यिक जीवन यात्रा

यस परिच्छेदमा भूपिन व्याकुलको जीवनी अन्तर्गत पृष्ठभूमि, जन्म र जन्मस्थल, वंश परम्परा, बसाइँ सराइ, बाल्यकाल, शिक्षादीक्षा, वैवाहिक पारिवारिक अवस्था, दाम्पत्य जीवन, पेशा र आर्थिक अवस्था, साहित्यको क्षेत्रमा प्रवेश र कार्य, सामाजिक क्षेत्रमा संलग्नता र कार्य, प्रेरणाको स्रोत, रुचि तथा स्वभाव, भ्रमण, सुख-दुखका क्षणहरू, अविस्मरणीय घटना, साहित्यिक मान्यता र जीवनदर्शन, सङ्घ संस्थासँगको उनको आवद्धता, सम्मान पुरस्कार र निष्कर्ष उल्लेख गरिनुका साथै नेपाली साहित्यमा भूपिन व्याकुलको आगमन, उनको साहित्यिक प्रसङ्ग, प्रेरणा र प्रभाव, साहित्यिक यात्रा चरणको अध्ययन, विश्लेषण र चर्चा गरिएको छ ।

परिच्छेद तिन : साहित्यकार भूपिन व्याकुलको व्यक्तित्व

यस परिच्छेदमा साहित्यकार भूपिन व्याकुलको व्यक्तित्वलाई प्रस्ट पार्ने पृष्ठभूमि, उनको बाह्य र आन्तरिक व्यक्तित्व, साहित्यिक र साहित्येतर व्यक्तित्वका विविध पाटाहरूको चर्चा गरिएको छ ।

परिच्छेद चार : भूपिन व्याकुलका प्रकाशित कृतिहरूको अध्ययन

यस परिच्छेदमा साहित्यकार भूपिन व्याकुलका कृतिहरूको विधागत संरचनाका आधारमा अध्ययन र विश्लेषण गरिएको छ । साथै छोटकरीमा/सङ्क्षेपमा उनका कृतिहरूको मूल प्रवृत्ति उल्लेख गरिएको छ ।

परिच्छेद पाँच : उपसंहार र निष्कर्ष

यस परिच्छेदमा अधिल्ला परिच्छेदमा चर्चा गरिएका भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन र विश्लेषण गर्नुको साथै प्रत्येक परिच्छेदको निष्कर्ष र अन्त्यमा समग्र निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ । यसप्रकार यस शोधपत्रको आदि भाग अगाडि र मध्यभाग शोधप्रतिवेदनको मुख्य अङ्गको रूपमा तथा अन्त्य भाग सन्दर्भ सामग्री वा परिशिष्ट र सन्दर्भसूचीका रूपमा समावेश गरी यो शोधपत्र प्रस्तुत गरिएको छ ।

परिच्छेद दुई

साहित्यकार भूपिन व्याकुलको जीवनी

२.१ जन्म र जन्मस्थान

भूपिन व्याकुलको जन्म वि.सं.२०३० साल चैत्र ३० गते धौलागिरि अञ्चल बाग्लुङ जिल्लामा अवस्थित नारायणस्थान गा.वि.स.वडा नं.-३, बलेवामा भएको हो । यिनका पिताको नाम सर्वजित खड्का र आमाको नाम वसुन्धरा खड्का हो । सामान्य लेखपढ गर्न जान्ने यिनै दम्पतीका आठौँ सन्तानका रूपमा जन्मिएका भूपिनको न्वारनको नाम भूपेन्द्र बहादुर खड्का हो भने साहित्यिक उपनाम भूपिन हो (दुर्गाबहादुर खड्कासँग लिइएको मौखिक अन्तर्वार्ता) ।

२.२ वंश परम्परा र बसाइँ-सराइ

भूपिनका पूर्खाहरू शुरूमा गोरखा जिल्लामा बसोबास गरेको र तत्कालीन शाहवंशीय राजाहरूबाट लखेटिएर पश्चिमतर्फ लाग्दा हालको बाग्लुङ जिल्लाको नारायण स्थान गा.वि.स.को वडा नं.-३, बलेवामा बस्न पुगेको देखिन्छ । उक्त ठाउँमा खड्का वंशको वीजारोपण गर्ने इन्द्रवीर र कुलदेवी खड्का हुन् । भूपेन्द्र बहादुर खड्का इन्द्रवीर र कुलदेवी खड्काका आठौँ पुस्ताका सन्तान हुन् । इन्द्रवीर र कुलदेवी पछिका तिन पुस्ताको पुस्त्यौलीको खोजी हुन सकेको छैन । चौथो पुस्ताका जिजु बाजे डम्बरसिङ्ग खड्का उनका छोरा नन्दलाल खड्का, नाति सर्वजित खड्का नै भूपिन व्याकुलका पिता हुन् । शाहवंशीय राजाहरूबाट लखेटिएको हुँदा भूपिनका पुर्खाहरूले शाहवंशप्रति हेर्ने दृष्टिकोण नराम्रो भएको पाइन्छ (दुर्गाबहादुर खड्कासँग लिइएको मौखिक अन्तर्वार्ता) ।

भूपिनका वंशजहरू गोरखाबाट बाग्लुङ जिल्लामा बसोबास गर्दै आएकोमा वि.सं.२०५५ सालमा उनको माइला दाजु देवेन्द्र खड्का बाग्लुङबाट वसाइ सरी चितवन भरतपुर उप-महानगरपालिका-१२, जागृति चोकमा स्थायी बसोबास गर्दै आएका छन् भने वि.सं.२०६० साल श्रावणदेखि भूपिन पनि सोही ठाउँमा बसोबास गर्दै आएको देखिन्छ (दुर्गा बहादुर खड्कासँग लिइएको मौखिक अन्तर्वार्ता) ।

२.३ बाल्यकाल

भूपिन निम्न मध्यम वर्गीय परिवारमा जन्मिएको र संयुक्त परिवारमा हुर्केबढेका हुन् । उनका पाँच जना दाजुभाइ तथा तिन दिदी बहिनी मध्ये उनी बा-आमाको आठौँ सन्तान हुन् । बृहत् परिवारमा हुर्कने क्रममा उनको बाल्यावस्थामा सुखदुःख, सजिलो, अष्टेरो भोगेको बताउँछन् । ठूलो परिवार र आर्थिक अवस्था भनेजस्तो नहुँदा भूपिनलाई पढ्न लेख्नको लागि कापी र कलम जुटाउन कठिन भएको देखिन्छ । कहिलेकाहीं कापी, कलम किन्न आमासँग पैसा हुँदैनथ्यो त्यस्तो अवस्थामा आमाले दिएको एउटा कुखुराको अण्डा घर नजिकैको दोकानमा दिएर कापी, कलम जुटाउनु पर्ने अवस्था रहेको बताउँछन् (शोध नायकसँग लिएको अन्तर्वार्ता अनुसार) । भूपिनको बाल्यकाल हावामा बतासिएको चराजस्तो रहयो । विदामा गाई चराउन जाँदा, गाई अरूको बारीमा पस्थे, उनले माछा समाएर र पौडी खेलेर दिन बिताएको देखिन्छ (बानिया, २०६९ :७९) ।

भूपिनले बाल्यकालमा कागजको डुङ्गा बनाएर वर्षातको बाढीमा बगाएको र चराहरू पक्रेको तथा आमाको आग्रहमा छोडिदिएको, साथीहरूसँग मिलेर भुम्राको बेहुला-बेहुलीको विहेमा जन्ती गएको, गाई चराउन जाँदा चौरमा धेरै पटक आफ्नो तस्विर बनाएको बताउँछन् (व्याकुल, २०६९:३५) ।

भूपिन बाल्यकालदेखि नै अन्तर्मुखी स्वभावका थिए, उनी साहित्य सङ्गीतका साथ - साथै खेलप्रेमी भएकोले स्कूल अवस्थादेखिनै भलिबल, दौड प्रतियोगिता र कवितावाचन आदि कार्यक्रममा भाग लिएको र पुरस्कार पनि प्राप्त गरेको बताउँछन् । भूपिन घर नजिकैको धापेखोलामा पौडी खेल्दै रमाइलो र खुसीका साथ मातापिताको काखमा उनको बाल्यकाल बितेको भए तापनि ठूलो परिवार, आर्थिक समस्याका कारण केही अभाव र समस्यालाई पनि सामना गर्नुपरेको थियो (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता) ।

२.४ शिक्षा दीक्षा

भूपिनका पिता भारतीय सेनामा कार्यरत थिए । उनले औपचारिक शिक्षा नलिए तापनि सेनामा रहँदाको अनुभव र तालिमले उनीमा अङ्ग्रेजी र हिन्दी भाषाको ज्ञान रहेको पाइन्छ । त्यसकारण भूपिनको अक्षर चिनारी पिताबाट नै भएको देखिन्छ । भूपिनको औपचारिक शिक्षाको प्रारम्भ वि.सं.२०३६ सालमा जनता मा.वि. हालको जनताधन उच्च मा.वि.बलेवाबाट भयो । सोही विद्यालयबाट वि.सं.२०४७ सालमा प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण

गरे पछि उनलाई विज्ञान विषय पढ्ने रहर जाग्यो तर गाउँमा विज्ञान विषयको उच्च शिक्षाको पढाइ थिएन । त्यसपछि उनी उच्च शिक्षाको लागि पश्चिमाञ्चलको सदरमुकाम पोखरामा रहेको पी.एन. क्याम्पसमा वि.सं.२०४७ सालदेखि आइ.एस्सीको अध्ययन गर्न थाले (पौडेल :२०६७ :७) । वि.सं.२०४९ सालमा विज्ञान विषयमा प्रवीणता प्रमाणपत्र तह उत्तीर्ण गरे । त्यसैगरी वि.सं.२०५२ सालमा सोही क्याम्पसबाट शिक्षाशास्त्र सङ्कायमा स्नातक उत्तीर्ण गरेपछि औपचारिक पढाइलाई केही वर्ष रोकेर शङ्कर पोखरी गा.वि.स.मा रहेको त्रिभुवन मा.वि.मा वि.सं.२०५० सालमा करिब ५ महिना पढाउने कार्यमा लागे । त्रिभुवन मा.वि.पछि गाउँको विद्यालय जनता मा.वि.मा वि.सं.२०५० साल भाद्रदेखि लगभग २ वर्ष पुनः पढाउने कार्यमा लागेको पाइन्छ । वि.सं.२०५७ सालदेखि औपचारिक अध्ययनलाई निरन्तरता दिँदै विश्वविद्यालय क्याम्पस कीर्तिपुर काठमाडौँबाट स्वास्थ्य विषयमा स्नातकोत्तर तह उत्तीर्ण गरे (शोधनायक सँगको अन्तर्वार्ता) । वि.सं.२०६० साल भाद्र ६ गतेदेखि भूपिन सप्तगण्डकी बहुमुखी क्याम्पस भरतपुरमा निरन्तर अध्यापन गराउँदै साहित्यको अध्ययन र लेखनमा पनि निरन्तर लागेका छन् । उनको रुचि विशेषतः अंग्रेजी, हिन्दी र नेपाली साहित्यको अध्ययन र लेखनमा रहेको पाइन्छ (ज्योति खड्कासँगको अन्तर्वार्ता) ।

२.५ वैवाहिक र पारिवारिक अवस्था

ठूलो परिवार भएका भूपिन लाहुरेको बस्तीमा जन्मे, हुर्केका हुन् । उनको घरमा रिटायर्ड भएका बाबासहित दुई दाजुहरू भारतीय सेनामा कार्यरत रहेको र माइलो दाजु दक्षिण भारतको पाण्डेचेरी स्थित एङ्ग्लो फ्रेन्च टेक्स्टायल नामको नामुद कम्पनीमा काम गरेको पाइन्छ (व्याकुल,२०६९:३५) ।

कान्छो भाइ दीपेन्द्र खड्का जनता धन उच्च मा.वि. बलेवामा अध्यापन कार्यमा लागेको देखिन्छ । पाँच दाजु भाइमध्ये तिन दाजुभाइ पुख्र्यौली थलो बाग्लुङमा बसेको देखिन्छ भने माइलो दाजु देवेन्द्र खड्का भरतपुर उप-महानगरपालिका वडा नं.-१२ जागृति चोकमा वि.सं.२०६० सालदेखि बसोबास गर्दै आएका छन् (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता) । सप्तगण्डकी बहुमुखी क्याम्पस भरतपुरमा जागिरको क्रममा भूपिनले सोही क्याम्पसका सहायक क्याम्पस चिफ कृष्ण तिवारीको प्रस्तावमा वि.सं.२०६१ सालमा ३१ वर्षको उमेरमा भरतपुर उप-महानगरपालिका वडा नं. १२ निवासी बुद्धिराम खतिवडा तथा

माता इन्द्रमाया खतिवडाकी छोरी ज्योती खड्कासँग वि.सं.२०६१ साल माघ ३ गते सामाजिक परम्परा अनुसार विवाह सम्पन्न गरेका थिए । (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता अनुसार) । वि.सं.२०६३ साल वैशाख १४ गते यी दम्पती कोखबाट छोरा अस्तित्व खड्काको जन्म भएको छ । हाल भूपिनको पारिवारिक र दाम्पत्य जीवन सानो र सुखी परिवारसँग खुसीसाथ बितेको देखिन्छ, (ज्योती खड्कासँगको मौखिक अन्तर्वार्ता) ।

२.६ पेशा र आर्थिक अवस्था

भूपिनको जन्म निम्न मध्यम वर्गीय परिवारमा भएको थियो । उनको पुख्र्यौली सम्पत्ति बाग्लुङ बलेवामा त्यति धेरै थिएन । भएको जग्गा जमिनको आयस्रोतले जेनतेन उनको परिवारको गुजरा चलेको देखिन्छ । उनका पिताको भारतीय सेनामा जागिर भएतापनि एउटाको जागिरले १० जनाको परिवारको लालन पालन गर्न धौ-धौ थियो (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता) । भूपिन २०६० भाद्र ६ गते देखि प्राध्यापकको रूपमा जागिर जीवन शुरु गरेता पनि हालसम्म स्थायी नभएको पाइन्छ । उनी भन्दा कनिष्ठ सहकर्मी साथीहरू स्थायी भई क्याम्पस प्रमुख जस्तो महत्त्वपूर्ण जिम्मेवारी पाएको तर उनलाई राजनीतिको रङ्गभेद, खुट्टातान्ने प्रवृत्तिले गर्दा उनी स्थायी हुनलाई पटक- पटक धोका भएको साथै चाप्लुसी गर्न नजानेको कारण क्याम्पस संस्थापन पक्षले स्थायी गराउन कहिल्यै सहयोग नगरेको बताउँछन् । उनको जीवनको लागि सबैभन्दा दुःखदायी र पीडाबोधको क्षणका रूपमा उनले यसलाई लिएको बताउँछन् (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता अनुसार) । उनको जीवनसाथी ज्योती खड्काले वि.सं.२०६० सालदेखि बालकुमारी इङ्लिस स्कूल लीलाचोकमा पढाउदै आएको र दुईजनाको तलबबाट उनको परिवारको गुजारा चल्दै आएको देखिन्छ । वि.सं.२०६० सालदेखि भूपिनको परिवार भरतपुर-१२ जागृतिचोकमा डेरामा बस्दै आएको पाइन्छ, (ज्योती खड्कासँग लिएको मौखिक अन्तर्वार्ता) ।

२.७ साहित्य क्षेत्रमा प्रवेश र कार्य

बाल्यकाल देखि नै लेखन र पठनमा रुचि भएका भूपिन व्याकुल स्कूल पढ्दा विद्यालयमा हुने कथा, कविता र निबन्ध लेखन जस्ता अतिरिक्त क्रियाकलापमा सहभागी हुँदा देखि नै साहित्यतर्फ झुकाव बढेको देखिन्छ (शोधनायकसँग लिएको अन्तर्वार्ता)।

विदेशमा बस्ने लाहुरे दाजुभाइहरूको चिट्ठी लेख्ने र पढ्ने काम तथा गाउँघरका, आमा, दिदी, बहिनीको दुःख देखेर साहित्य क्षेत्रमा प्रवेश गरेको पाइन्छ (व्याकुल, २०६९:३५) ।

भूपिनको बाल्यकाल अन्तर्मुखी स्वभावको रहेको र भावुक पनि उत्तिकै थियो । पारिवारिक सदस्यहरू र साथीहरूलाई मौखिक रूपमा व्यक्त गर्न नसकेका धेरै यस्ता अनुभूतिहरूको दबावमा उनको समय वितेको पाइन्छ । त्यही दबावलाई भेल्ने माध्यमका रूपमा उनले लेखनलाई अपनाएको देखिन्छ । बाबाले पैसा नदिएको भोकमा नाटक लेखेको, आमाको आँसुलाई मसी बनाएर कविता लेखेको, गरीबको जीवनलाई देखेर कथा लेखेको र प्रकृतिको भव्यतालाई देखेर निबन्ध लेखेको पाइन्छ । उनका यी सबै लेखनकार्य नजानी र नबुझिकन गरिएका काव्यिक ध्यानका प्रारम्भिक चरण भएको पाइन्छ (व्याकुल : २०६९ : ३५) । बाल्यकाल देखि नै अध्ययन र लेखनमा रुचि राखेको भएपनि भूपिनका सबैलेख सुरक्षित भएको पाइँदैन । आफ्ना लेख र रचनाहरूलाई सुरक्षित गर्ने तर्फ पनि उनको ध्यान पुगेको देखिँदैन । उनका प्रकाशित लेख रचनाहरूलाई हेर्दा उनी भित्र रहेको साहित्यिक मोह प्रस्ट देख्न सकिन्छ (शोध नायकसँग लिइएको अन्तर्वार्ता) । भूपिनले नौ कक्षामा पढ्दा ब्रह्माण्ड नामको उपन्यास लेखेको र दोस्रो पटक एस.एल.सी पछि अनाम शीर्षकमा उपन्यास लेखेको तर ती प्रकाशित हुन नसकी लेखनमा मात्र सीमित रहेको पाइन्छ (व्याकुल, २०६५:३५) ।

वि.सं. २०४० को दशक देखि नै गजल, गीत र मुक्तक लेखेर काव्ययात्रा थालेका बाग्लुङ्गे कवि भूपिनले २०४८को नवकविता पत्रिका एवम् क्रम : दिन र रातहरू शीर्षकको गद्य कविता प्रकाशित भएपछि परिपक्व कविका रूपमा चिनिन थालेका हुन् (गौतम, २०६६ : भूमिका) । भूपिनले राष्ट्रिय साहित्य सम्मेलन (२०५३) दमौलीमा भएको कविता प्रतियोगितामा प्रथम, खुला मुक्त प्रतियोगिता (२०५३) पोखरामा समेत प्रथम भई पदक र पुरस्कार पनि प्राप्त गरेका छन् । उनका हालसम्म **क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूल सडक** (कविता सङ्ग्रह) २०५३, **शब्दहरूको नेपथ्य** (संयुक्त कविता सङ्ग्रह) २०५३, **हजार वर्षको निद्रा** (कविता सङ्ग्रह) २०६६ र **चौबीस रिल** (निबन्ध) २०६९ गरी चारओटा कृतिहरू प्रकाशित भएका छन् ।

२.८ सामाजिक क्षेत्रमा संलग्नता र कार्य

भूपिनमा विद्यालय उमेरदेखि नै सामाजिक कार्यप्रति रुचि रहेको देखिन्छ । वि.सं.२०४८ सालमा उनको नेतृत्वमा साथीहरूको समूह बनाई गाँउमा तिहार पर्वमा देउसी भैलो खेली रु. १०,०००/- नगद जम्मा गरी आफू जन्मेको गाउँ बलेवामा प्रगतिशील पुस्तकालय स्थापना गरेको र उनी त्यस पुस्तकालयको संयोजकको रूपमा रहेर काम गरेको पाइन्छ । वि.सं.२०५३ सालमा उनी पोखरेली युवा सांस्कृतिक परिवारको साहित्यिक संयोजक रहेर साहित्यसँग सम्बन्धित विविध काम गरेको बताउँछन् (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता अनुसार) । भूपिनमा साहित्यको माध्यमबाट सामाजिक कार्य गर्न सकिन्छ भन्ने मान्यता रहेको र सो मुताबिक वि.सं. २०७१ सालमा मंगलपुर मा.वि. मंगलपुरलाई रु. ३५०००/- हजार मूल्य बराबरको विभिन्न विधाका पुस्तकहरू उनले वितरण गरेका छन् (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता अनुसार) । अरूको सुखदुःख र पिरमर्कालाई आफ्नै सुख दुःख सम्झने स्वभाव भएका भूपिनलाई चितवनको पहाडी इलाकाको चेपाङ वस्तीको विद्यालयमा गएर सामाजिक सेवा गर्ने तीव्र इच्छा रहेको तर समयको तारतम्य मिलाउन नसकेको हुँदा सो कार्य गर्न नसकेको बताउँछन् (शोध नायकसँग लिएको मौखिक अन्तर्वार्ता अनुसार) । फुर्सद भएसम्म सामाजिक संस्थामा समय दिने वानी भएको कारण सो क्षेत्रमा उनको संलग्नता उल्लेखनीय रहेको देखिन्छ ।

२.९ रुचि र स्वभाव

बाल्यकालदेखि नै साहित्यप्रति रुचि रहेका भूपिन अन्तर्मुखी स्वभावका हुनुको साथै भावुक पन उत्तिकै भएको पाइन्छ । शान्त स्वभावका सबैसँग हाँसेर बोल्नु, मित्रहरूसँग छिट्टै घुलमिल हुनु, साथीभाइसँग साहित्यको बारेमा घण्टौंसम्म कुरा गर्न सक्नु , एकान्तमा प्रकृतिसँग रमाएर सिर्जनाको खोजी गर्नुजस्ता स्वभाव उनीमा पाइन्छ (पौडेल, २०६७ : ३) । गजल, कविता, निबन्ध, उपन्यास जस्ता साहित्यका सबै विधामा उनको रुचि भएको देखिन्छ । पत्रपत्रिकामा कोसेली, कान्तिपुर, नागरिक दैनिक, अक्षर, मधुपर्क, गरिमाजस्ता पत्रिकाहरू पठनमा विशेष रुचि भएको बताउँछन् । खानामा दालभात तरकारी, अचारमा अमिलो, पिरो भएको मसलादार खाना खान रुचि भएको बताउँछन् । लगाउने वस्त्रमा माथि कोट तल जिन्स पाइन्ट र खुट्टामा स्पोर्ट्स सुज लगाउन मन पर्ने बताउँछन् (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता) । भूपिन खड्का प्रकृतिप्रेमी र वातावरण प्रेमी भएको

हुँदा भ्रमण गर्दा आनन्द हुनुको साथै साहित्य सिर्जना गर्न अनुकूल वातावरण मिल्ने उनको धारणा रहेको देखिन्छ । धेरै घुमेकै कारण घरमा श्रीमती र भाइहरूसँग, क्याम्पसमा क्याम्पस प्रशासनसँगको सम्बन्धमा कतिपय अवस्थामा द्वन्द्व सिर्जना हुने गरेको बताउँछन् । उनी खेलप्रेमी पनि भएको हुँदा भलिबल र ब्याटमिन्टन राम्रोसँग खेल्छन् र टेबलटेनिस, क्रिकेट र एथ्लेटिक्स जस्ता खेलहरूको अनुभव पनि उनीमा रहेको पाइन्छ (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता अनुसार) । भूपिन खडका गीत र सङ्गीत प्रति पनि उत्तिकै रुचि रहेको बताउँछन् । नारायण गोपाल, दीप श्रेष्ठ, तारादेवी, अरूणा लामा, प्रेमध्वज प्रधानका गीत बढी सुन्न मन पराएको पाइन्छ । पाश्चात्य गीतमा जोन लेलन, बबडिलन आदि गायककारका गीत मन पर्ने बताउँछन् । नेपाली गीतमा ऋसरोड, नेपथ्य ब्याण्डका गीतहरू उनका लागि छुट्टै स्वाद लाग्ने बताउँछन् । उनले नेपाली साहित्यकारहरूमा देवकोटा, पारिजात, गोपाल प्रसाद रिमालजस्ता साहित्यकार र पाश्चात्यमा गोर्की, लस्सुन, शेक्सपिएर गेटे, क्रोचे आदिका पुस्तकहरू पढ्न रुचि भएको बताउँछन् । गजलमा जगजीतसिंह, चित्रा, गुलाम अलि आदिका गजलहरू सुन्न विशेष मन पराएको पाइन्छ (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता अनुसार) ।

२.१० भ्रमण

बाग्लुङ जिल्लाको बलेवामा जन्मेका भूपिन वि.सं. २०६१ सालमा चितवनमा बसोवास गर्न थालेका हुन् । नयाँ-नयाँ ठाउँ घुम्नु, डुल्नु र एकान्तमा बसेर साहित्य रचना गर्नु उनको बानी रहेको बताउँछन् । भूपिन साहित्यक कामको अलवा व्यक्तिगत काम विशेषले देशभित्र र बाहिरका विभिन्न ठाउँहरू घुमेको बताउँछन् । सन् २०१० मा सार्क लिटिरेचर फेस्टिबलमा भागलिन भारतको नयाँदिल्ली पुगेको देखिन्छ । (व्याकुल, २०६९:२८) । सन् २०१५ मा पुनः सार्क लिटिरेचर फेस्टिबलमा भाग लिन भारतको आग्रा पुगेको पाइन्छ । सन् २०११ मा अमेरिकामा रहेको अन्तर्राष्ट्रिय नेपाली साहित्य समाजले दिएको सम्मान र पुरस्कार ग्रहण गर्न उनी अमेरिका पुगेको बताउँछन् (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता अनुसार) । भारतको सिलगुडीमा भानुभक्त समितिको निमन्त्रणामा भारतीय नेपाली काव्य सम्मेलनमा भाग लिन सिलगुडी पुगेको र घुमेको बताउँछन् (व्याकुल, २०६९:१७) । खासगरी संरक्षण कविता यात्राको सिलसिला र साहित्यिक प्रतियोगितामा भागलिने क्रमसँगै निजी र

स्वैच्छिक उद्देश्यले स्वदेश भित्रका करिब ३५ जिल्ला र भारतको दार्जलिङ आसाम वेङ्लोर लगायत विभिन्न ठाउँहरू घुमेको बताउँछन् (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता) ।

२.११ दुःख र सुखका क्षणहरू

दुःखसुख एकै सिक्काका दुई पाटाहरू हुन् । मानव जीवनमा दुःखसुख दुवै आउने गर्दछन् । दुःख बिनाको जीवन अपुरो र अधुरो हुन्छ । दुःखबिना सुखको अनुभूति गर्न सकिँदैन भन्ने मान्यता राख्ने भूपिनका जीवनमा दुःखको आँधी, तुफान आएको देखिन्छ । वि.सं.२०४८ सालमा ममतामयी हजुरआमा तथा २०६५ सालमा उनलाई धेरै प्यारो गर्ने बाबा सर्वजीत खडकाको मृत्युलाई उनले ठूलो पीडा र कठोर दुःखको क्षणका रूपमा लिएका छन् (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता) । साथी तीर्थ गुरुङको दुई मिर्गौलाले काम गर्न छोडेर पोखराको मनिपाल अस्पतालको विस्तारामा छटपटिरहेको साथी भेटेको दिन अत्यन्त दुःखित भएको र तीर्थको जीवनमा घटेको ठूलो दुर्घटनाको रूपमा उनले यस घटनालाई लिएका छन् (व्याकुल, २०६९:७२) ।

दुःखका क्षणसँगै उनको जीवनमा सुखका पनि क्षण आएका छन् । वि.सं.२०५३ सालमा राष्ट्रिय साहित्य सम्मेलन तनहुँ, दमौलीमा आयोजना भएको कविता प्रतियोगितामा प्रथम भई स्वर्णपदक प्राप्त गरेको क्षणलाई जीवनको सबैभन्दा खुसी र उपलब्धिमूलक क्षणको रूपमा लिएका छन् । यस प्रतियोगितामा भागलिँदा उनको उमेर २२ वर्ष मात्र रहेको र मदन पुरस्कार प्राप्त गरेका प्रतिस्पर्धी साहित्यकारहरूलाई पनि उनले पछि पारेका थिए (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता) । वि.सं.२०६९ सालमा चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रहका लागि उत्तमशान्ति पुरस्कार प्राप्त गरेको क्षण र वि.सं.२०६३ मा छोरा अस्तित्व खडकाको जन्म भएको दिनलाई उनले अत्यन्त खुसी र हर्षको क्षणको रूपमा लिएका छन् (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता) ।

२.१२ अविस्मरणीय घटना

भूपिनको जीवनमा घटेका केही त्यस्ता महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम छन् जसलाई उनले सधैं सम्झ्नेको बताउँछन् । वि.सं.२०५३ साल असोज महिनामा सरुभक्तको नेतृत्वमा अन्नपूर्ण बेसक्याम्प यात्रामा जाने दश कविहरूको सूचीमा उनको नाम रहेको घटनालाई उनले अविस्मरणीय क्षणको रूपमा लिएका छन् (व्याकुल, २०६९:१३०) । सन् २००४ उनको लागि

सपनामय दिन रहेको छ जुन दिन उनी समुद्रमा पहिलो पटक पौडिएका थिए । यस घटनालाई उनले जीवनमा बिसन नसक्ने क्षणको रूपमा लिएका छन् । अन्तर्राष्ट्रिय नेपाली साहित्य समाज (अमेरिका) ले सन् २०११ म उनलाई प्रदान गरेको पुरस्कार र सम्मान लिन अमेरिका जाँदाको क्षण पनि उनका लागि महत्त्वपूर्ण र अविस्मरणीय रहेको बताउँछन् साथै वि.सं.२०५३ सालमा छोरा अस्तित्व खडका जन्मेको दिनलाई खुसी र बिसन नसक्ने क्षण उनको लागि रहेको पाइन्छ (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता) ।

२.१३ साहित्यिक मान्यता

भूपिनका अनुसार साहित्य समाज सुधार गर्ने औजार हो । सुख र दुःखका समिश्रण साहित्य भएको हुँदा यसको माध्यमबाट आत्म सन्तोष लिन सकिन्छ । साहित्य केवल पढ्ने, लेख्ने र मनोरञ्जन लिने साधन मात्र नभई यो समाजको ऐना पनि हो । तसर्थ साहित्य समाजका लागि उपयोगी हुनुको साथै यसले समाज सुधार गर्ने औकात राख्न सक्नु पर्दछ भन्ने मान्यता उनीमा पाइन्छ (शोधनायक सँगको अन्तर्वार्ता) । साहित्य उपयोगिताको यात्रा र जीवनको समालोचना पनि हो भन्ने मान्यता उनीमा पाइन्छ । साहित्यले समाजको विसङ्गति, विकृति, विभेद र विद्रूपकताको अन्त्य गर्नसक्दछ भन्ने उनको धारणा रहेको छ । साहित्यमा प्रकृति, राष्ट्रियता, देशप्रेम, युगबोध, विश्व बन्धुत्व, मानवता जस्ता यथार्थको प्रस्तुति रहनु पर्छ र कवि तथा लेखकहरूले यसको लागि आशाको किरण देखाउन सक्नु पर्दछ । साहित्यले समाजको चित्रण मात्र नगरी समाज परिवर्तन गर्न सक्नु पर्दछ भन्ने धारणा उनको रहेको देखिन्छ (शोधनायकसँग लिएको मौखिक अन्तर्वार्ता) ।

२.१४ जीवन दर्शन

बुद्ध दर्शन र अस्तित्ववादी दर्शनबाट प्रभावित भूपिन व्याकुललाई जीवन रहस्यमय लाग्दछ । जीवन प्रति न आशावादी न निराशावादी, उनी आफूलाई यथार्थवादीको नजिक रहेको बताउँछन् । जीवन सुख मात्र होइन, दुःखै-सुखको जालो पनि होइन यो दुवैको संयोजन हो भन्दछन् (शोधनायकसँग अन्तर्वार्ता) । मानिसमा दुःख आइपर्ने थुप्रै कारणहरू छन् जस्तै सामाजिक, भौगोलिक, कानुनी, राजनीतिक, धार्मिक आदि विभेदको कारणबाट जीवन दुःखपूर्ण बन्दछ, र यस्तो दुःखबाट मुक्ति पाउन सकिन्छ तर यसको लागि मानिसले सकारात्मक सोच राख्नुपर्दछ भन्ने उनको धारणा रहेको पाइन्छ । उनलाई दुःखको मुख्य

कारण प्रश्न हो । जति प्रश्न गयो त्यति नै दुःख बढ्दै जान्छ भन्ने उनको दृष्टिकोण रहेको छ । तसर्थ मानव जीवनमा दुःख एक आपसमा बाँड्दै जाने हो भने दुःखको मात्रा घट्दै गएर मानवको निम्ति हित हुने र दुःखबाट छुटकारा पाउन सकिन्छ भन्ने उनको धारणा रहेको छ (शोधनायकसँग अन्तर्वार्ता) ।

२.१५ सङ्घसंस्थामा आबद्धता

भूपिन व्याकुल विभिन्न सङ्घसंस्थामा संलग्न रहेर काम गर्दै आएका छन् । समयले साथ दिएसम्म सामाजिक क्षेत्रमा रहेर काम गर्ने उनको बानी सराहनीय एवम् अनुकरणीय रहेको पाइन्छ । भूपिन संलग्न रहेर काम गरेका सङ्घसंस्था यस प्रकार रहेको छन् (व्याकुल: २०६६, हजार वर्षको निद्रा, पश्च पृष्ठ) ।

| क्र.सं. | सामाजिक संस्था | पद | साल |
|---------|--------------------------------|---------|------|
| १. | संरक्षण कविता यात्रा | सदस्य | २०५३ |
| २ | अक्षर समूह चितवन | अध्यक्ष | २०६४ |
| ३ | साहित्य सङ्गम चितवन | सदस्य | २०६४ |
| ४ | नेपाल साहित्यिक पत्रकार सङ्घ | सदस्य | २०६६ |
| ५ | अभिव्यञ्जना साहित्य प्रतिष्ठान | सदस्य | २०६६ |
| ६ | नारायणी कला मन्दिर | सदस्य | २०७० |

२.१६ सम्मान र पुरस्कार

नेपाली साहित्यको यात्रामा निरन्तर क्रियाशील र गतिशील प्रखर युवा भूपिनको साहित्य साधनाले वि.सं.२०५३ सालको संरक्षण कविता यात्रादेखि निरन्तरता पाएको देखिन्छ । बाल्यकालदेखि नै गीत गजल र मुक्तक लेखेर रेडियो नेपालको बालकार्यक्रममा आफ्ना रचनाहरू प्रेषित गर्दा ती रचनाहरूले स्थान पाउनुको साथै विद्यालयले आयोजना गरेको अतिरिक्त क्रियाकलापमा पनि उनले प्रथम, द्वितीय स्थान हासिल गरी पुरस्कार पाउन सफल भएको बताउँछन् । वि.सं.२०५३ मा दमौलीमा बृहत् साहित्य सम्मेलनद्वारा आयोजित प्रतियोगितात्मक राष्ट्रिय कवि गोष्ठीमा प्रथम भई उनले राष्ट्रिय स्तरमा आफ्नो कवित्वको परिचय दिएको देखिन्छ (शोधनायकसँग अन्तर्वार्ता) । भूपिनले हालसम्म प्राप्त गरेका पुरस्कार र सम्मान यस प्रकार रहेका छन् :-

| क्र.सं. | सम्मान/कदरपत्र | सम्मान गर्ने संस्थाको नाम | साल | कारण |
|---------|------------------|--------------------------------------------|----------|---------------------------------------------------------------|
| १ | सम्मान पत्र | पी.एन. क्याम्पस पोखरा | २०५३ | खुला मुक्तक प्रतियोगितामा सर्वोत्कृष्ट |
| २ | सम्मान, स्वर्णदक | गण्डकी वाङ्मय प्रतिष्ठान दमौली | २०५३ | कविता प्रतियोगितामा सर्वोत्कृष्ट |
| ३ | सम्मान पत्र/नगद | चितवन साहित्य परिषद | २०६६ | हजार वर्षको निद्रा कविता कृतिका लागि |
| ४ | कदरपत्र | अभिव्यञ्जना साहित्य प्रतिष्ठान, चितवन | २०६७ | साहित्यमा दिएको योगदान |
| ५ | नगद/सम्मान पत्र | अन्तराष्ट्रिय नेपाली साहित्य समाज, अमेरिका | सन् २०११ | हजार वर्षको कविता कृति सर्वोत्कृष्ट |
| ६ | सम्मान पत्र | पोखरेली युवा सांस्कृतिक परिवार | २०६७ | साहित्यमा पुऱ्याएको योगदान |
| ७ | नगद/सम्मान पत्र | उत्तम शान्ति पुरस्कार गुठी | २०६९ | चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रह गद्य विधामा सर्वोत्कृष्ट |
| ८ | नगद/कदरपत्र | साहित्य सङ्गम चितवन | २०७१ | साहित्यमा दिएको योगदान |
| ९ | सम्मानपत्र/नगद | रत्नश्रेष्ठ पुरस्कार गुठी, बाग्लुङ | २०७१ | पश्चिमाञ्चल क्षेत्रमा चौबीस रिल निबन्ध सर्वोत्कृष्ट |
| १० | सम्मानपत्र | हाम्रो मभेरी साहित्यिक प्रतिष्ठान | २०७१ | साहित्यमा दिएको योगदान |
| ११ | अभिनन्दन | नारायणस्थान गा.वि.स., बलेवा, बाग्लुङ | २०५३ | साहित्य सम्मेलन दमौलीमा भएको कविता प्रतियोगितामा सर्वोत्कृष्ट |
| १२ | सम्मानपत्र/नगद | जनताधन उच्च मा.वि., बाग्लुङ | २०६८ | साहित्यमा दिएको योगदान |

२.१७ नेपाली साहित्यमा भूपिन व्याकुलको आगमन र साहित्य यात्रा

२.१७.१ लेखनका लागि प्रेरणा र प्रभाव

रेडियोबाट प्रसारित 'को भन्दा को कम' स्तम्भमा बालकविहरूका कविताहरू कवितावाचन र प्रतियोगिता समेत हुन्थ्यो । बाल कार्यक्रममा वासुदेव मुनाल र नुपूर भट्टाचार्यले उनका कविता वाचन गरेर सुनाउँदा भूपिनको आमा खुसी थाम्न नसकेर रुनु भएको घटना र रेडियो नेपालको बालस्तम्भ प्रतियोगितात्मक बाल कार्यक्रमबाट नै आफूमा कविता प्रतिको अनुराग बढेको बताउँछन् । रेडियो नेपालको 'को भन्दा को कम' बाल स्तम्भ प्रतियोगितामा केही पुरस्कार नपाएतापनि उक्त कार्यक्रमले साहित्यको क्षेत्रमा अगाडि बढ्न उनलाई यथेष्ट प्रेरणा दिएको थियो (व्याकुल, २०६९:५०) ।

वि.सं.२०४७ सालमा अध्ययनको क्रममा पोखरा आएपछि पोखरेली युवा सांस्कृतिक परिवारको साहित्यिक संयोजक भई परिवारद्वारा सञ्चालित काव्य सन्ध्या र अन्य साहित्यिक कार्यक्रमहरूमा सक्रिय सहभागिता जनाउनुको साथै सरुभक्त, प्रेमछोटा, काजीरोशन, प्रकट पंगेनी शिव, प्रकाश सायमी जस्ता कवि तथा गजलकारको सान्निध्यले उनका कविता लेखनको कार्यक्रमलाई थप उर्जामय बनायो (पौडेल, २०६७ :९) । साहित्य लेखन र पठनकार्य प्रति अगाडि बढ्न घरपरिवार, साथीभाइ, तत्कालीन परिवेश, बुद्ध दर्शन, अस्तित्ववादी दर्शनको उल्लेख्य प्रभाव रहेको बताउँछन् साथै गोपाल प्रसाद रिमाल, देवकोटा, पारिजात, गोर्की, शेक्सपियर, लस्सुन, क्रोचे आदि साहित्यकारहरूको जीवनी र कृतित्वबाट उनी प्रभावित भएको र लेखनलाई पनि प्रेरणा मिलेको बताउँछन् (शोधनायकसँग अन्तर्वार्ता) ।

२.१७.२ नेपाली साहित्यमा भूपिनको आगमन र प्रकाशनको थालनी

वि.सं.२०४० देखि गजल विधाबाट साहित्य लेखन शुरू गरेका भूपिन व्याकुल वि.सं.२०४८ सालमा नवपत्रिकामा एवम् क्रमः दिन र रातहरू शीर्षकको गद्य कविता प्रकाशित गरेर औपचारिक रूपमा साहित्यको काव्य जगतमा प्रवेश गरेका हुन् । यस गद्य कवितालाई यिनको लेखन यात्राको पहिलो आधिकारिक रचना मानिन्छ । लेखन क्षेत्रको निरन्तर अभ्यास र अनुभवले परिपक्व बन्दै उनले वि.सं.२०५२ देखि २०५३ साल भित्र बाग्लुङ र पोखराबाट प्रकाशित हुने काँचुली, प्रयोग, हिमालय टाइम्स, परिक्रमा, तरङ्ग, कोपिला, सौगात जस्ता पत्रिकाहरूमा कविता, मुक्तक, गजल छपाउन थालेको पाइन्छ (शोधनायकसँग अन्तर्वार्ता) ।

समग्रमा भूपिनका हालसम्म विभिन्न पत्रिकामा प्रकाशित भएका तर छरिएर रहेका फुटकर कविताका अतिरिक्त मौलिक तिनओटा कविता सङ्ग्रह र एक निबन्धसङ्ग्रह गरी जम्मा चार पुस्तकाकार कृतिहरू प्रकाशित भएका छन्, जस अन्तर्गत क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूल सडक(कविता सङ्ग्रह-२०५३), शब्दहरूको नेपथ्य (संयुक्त कविता सङ्ग्रह-२०५६), हजार-वर्षको निद्रा-कविता सङ्ग्रह-२०६६) र चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रह-२०६९) रहेका छन् ।

२.१७.३ भूपिनको साहित्यिक यात्रा

भूपिन १२ वर्षको उमेरदेखि नै कविता लेख्ने, सुनाउने गर्थे । विद्यालयमा हुने अतिरिक्त क्रियाकलाप र रेडियोको बालकार्यक्रममा समेत भूपिन कविता, मुक्तक लेखेर आफ्नो सहभागिता जनाउँथे । त्यस्तै ९/१० कक्षामा पढ्दा उनले अनाम र ब्रह्माण्ड शीर्षकमा उपन्यास लेख्ने प्रयास गरेको पाइन्छ । वि.सं. २०४० तिर गजल विधाबाट आफ्नो काव्ययात्रालाई अगाडि बढाएका भूपिनले नव पत्रिकामा वि.सं. २०४८ प्रकाशित एवम् क्रम : दिन र रातहरू शीर्षकको गद्य कविता छापेर आफ्नो औपचारिक लेखनलाई मूर्तरूप दिएका थिए । भूपिनले आफ्नो तिनदशक लामो लेखन यात्रामा चारओटा महत्त्वपूर्ण कृतिहरू प्रकाशित गर्नुको साथै विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमा फुटकर कविता, लेख, रचना र समीक्षा लेखेर नेपाली साहित्यमा योगदान पुऱ्याएका छन् ।

भूपिनको तिन दशकभन्दा लामो साहित्यिक यात्रामा चार कृतिहरूमध्ये तिनओटा गद्यकविताहरूको सङ्ग्रह र एक निबन्ध सङ्ग्रह रहेका छन् । उनको ३० वर्षे साहित्यिक यात्रामा जे जति विधाका कृतिहरू प्रकाशित गरे तिनको आधारमा उनको साहित्ययात्राको चरण विभाजन गर्न सकिन्छ । साहित्ययात्राको चरण विभाजन गर्दा प्रकाशित कृतिहरू, कृतिको भाव, विषयवस्तु, भाषाशैली आधारमा उनको साहित्यिक यात्रालाई तिन चरणमा विभाजन गरी अध्ययन गर्न सकिन्छ :-

- क) पहिलो चरण - वि.सं. २०४८-वि.सं. २०५३ अभ्यास काल
- ख) दोस्रो चरण - वि.सं. २०५४ - वि.सं. २०६६ पुस्तक प्रकाशनकाल
- ग) तेस्रो चरण - वि.सं. २०६७ - वि.सं. २०६९ लेखनमा सक्रियता

क) प्रथम चरण (वि.सं. २०४८ - वि.सं. २०५३)

वि.सं.२०४० देखि नै गीत, गजल र कविता लेखेका भूपिनले वि.सं. २०४८ सालमा नव कविता पत्रिकामा एवम् क्रमः दिन र रातहरू शीर्षकको गद्य कविता प्रकाशित गरेर औपचारिक रूपमा नेपाली साहित्यमा प्रवेश गरेको पाइन्छ । वि.सं.२०४८ पछि वि.सं. २०५२ सम्म उनको कुनै कृतिहरू प्रकाशित भएको देखिँदैन, केवल फुटकर कविता मुक्तक र गजल विभिन्न पत्रपत्रिकामा प्रकाशित भएको पाइन्छ । वि.सं.२०४८ देखि अगाडि बढेको उनको साहित्यिक यात्रा वि.सं.२०५३ सम्म अभ्यासिककालको रूपमा रह्यो । वि.सं.२०५३ कार्तिकमा ३३ ओटा कविताहरू समावेश गरिएको क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक कविता सङ्ग्रह प्रकाशित भएको पाइन्छ । यस कविताको विषयवस्तु, भावशैली र संरचना आदिलाई हेर्दा अभ्यासिककालको रचना वा अभ्यास चरणको रचना मान्न सकिन्छ । यसरी हेर्दा वि.सं. २०४८ सालमा नवपत्रिकामा प्रकाशित एवम्क्रम : दिन र रातहरू कवितालाई उनको साहित्यिक यात्राको प्रस्थान बिन्दु मानिन्छ भने वि.सं. २०५३ मा प्रकाशित क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक कविता कृतिलाई प्रथम चरणको महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मान्न सकिन्छ ।

यस चरणका कविता सङ्ग्रहका बारेमा समीक्षकहरूबाट भएको समीक्षालाई यसरी देखाउन सकिन्छ -क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक पुस्तकको भूमिका लेखे क्रममा प्रेम छोटाले व्याकुलका कवितामा सामाजिक विसङ्गति, घात, प्रतिघात, जीवन र जगत, राष्ट्र र राष्ट्रियता, प्रेम प्रणय, कुण्ठित मानवीय मनोदशा, राजनीतिक पीडा, पीडित जन जीवनका सुस्केरा लगायत समग्र धरती नै क्षतिग्रस्त हुन पुगेको युगीन चेतनाका आवाजहरू बोलेका छन् साथै यस सङ्ग्रहका केही कवितामा भावुकतावश आफ्ना भावना र विचारलाई निर्धक्क रूपमा फुकाउन खोज्दा कता-कता शिल्पकारिता र विचार पक्षमा चिप्लिन गएका छन् भनी टिप्पणी गरेका छन् (प्रेम छोटा, २०५२:भूमिका) । माथिको समीक्षत्मक टिप्पणी र यस चरणको प्रवृत्तिगत अध्ययन गर्दा युगीन विसङ्गति, सामाजिक विकृति, मानवीय संवेदनाको अभाव, तत्कालीन व्यवस्थाप्रतिको असन्तुष्टिका स्वरहरू, बेथिति र विकृतिले युग नै क्षतिग्रस्त भएको विसङ्गतिपूर्ण भावको यथार्थ चित्रण गर्नु उनका यस चरणका प्रवृत्ति रहेका छन् । भूपिनको प्रथम चरणको साहित्यिक यात्राका कविताहरूमा कलापक्ष प्रबल भावपक्ष शिथिल भएको, विषयवस्तु र शैलीगत अभिव्यक्तिमा समन्वयको कमी र अभ्यासकालको रचना भएको हुँदा ठाउँठाउँमा भाषागत त्रुटिहरू रहेको देखिन्छ ।

ख) दोस्रो चरण (वि.सं. २०५४ - वि.सं. २०६६)

वि.सं. २०५६ मा **शब्दहरूको नेपथ्य** कविता सङ्ग्रह प्रकाशन पछि उनको साहित्ययात्राको दोस्रो चरण शुरू भएको मानिन्छ । यस चरणलाई पुस्तकाकार कृतिहरूको प्रकाशनको अवधि मान्न सकिन्छ । यस चरणमा उनले महत्त्वपूर्ण दुई कविता सङ्ग्रह प्रकाशन गर्न सफल भएका छन् । यो अवधि भूपिनको लेखन र प्रकाशनका दृष्टिले महत्त्वपूर्ण र उर्वरकालको रूपमा रहेको पाइन्छ । **शब्दहरूको नेपथ्य** भूपिनको संयुक्त कविता सङ्ग्रह हो । यस कविता सङ्ग्रहमा चार जना युवा कविहरूको कविता समावेश गरिएका छन् । यस कविता सङ्ग्रहमा भूपिनका १३ ओटा फुटकर कविताहरू सङ्कलित छन् ।

यस चरणको दोस्रो कृति **हजार वर्षको निद्रा कविता सङ्ग्रह-२०६६** हो । यो कृतिको प्रकाशन सँगै लेखकको बौद्धिक र काव्यिक क्षमताको उचाइ बढेको देखिन्छ । हजार वर्षको निद्रा कविता संग्रह यस चरणको एउटा अनुपम, कलात्मक निधिको रूपमा रहेको छ । हजार वर्षको निद्रा कविता सङ्ग्रह (२०६६) मा सातखण्डमा कुल ४८ ओटा फुटकर गद्य कविताहरू समावेश गरिएका छन् । यस चरणका कविताहरूमा विद्वान्हरूले गरेको समीक्षालाई यसप्रकार देखाउन सकिन्छ :-

शब्दहरूको नेपथ्य कविता सङ्ग्रह (२०५६) को भूमिकामा साहित्यकार सरुभक्तले भूपिनलाई माटो-संवेदना र माटो-पीडाको कवि एवम् उनका प्रतीकहरू विम्बात्मक र विम्बहरू प्रतीकात्मक बन्नको साथै उनलाई प्रखर संवेदना युक्त कविको रूपमा चर्चा गरेका छन् ।

हजार वर्षको निद्रा कविता सङ्ग्रह (२०६६) को भूमिकामा लक्ष्मण प्रसाद गौतम लेख्छन्- भूपिनले कवितामा सङ्गतिहीनता भित्र पनि सङ्गति खोज्छन् र कुरूपता भित्र पनि सौन्दर्यको खोजी गर्छन्, मान्छेलाई जीवनबाट भागेर होइन भोगेर बाँच्ने सल्लाह दिन्छन् । भूपिनका कविता जीवनकेन्द्री छन् । उनका कवितामा मान्छेलाई द्रवित, संवेदनशील चिन्तामग्न र चेतनामग्न बनाउने आसिम शक्ति छ, त्यसैले उनका कविता शक्तिशाली छन् (गौतम, २०६६ : भूमिका) ।

समीक्षक रोशन थापाले **हजार वर्षको निद्रा कविता सङ्ग्रह**माथि टिप्पणी गर्दै **मधुपर्क**मा लेख्छन्- भूपिनका कविता सिर्जनामा समकालीन परिदृश्यको उचित प्रयोग भएको पाइन्छ । आधुनिक युगका उपलब्धिलाई कवितामा उपयोग गर्दा कवि भूपिन आफ्नो राष्ट्र,

राष्ट्रियता, गाउँ, शहर स्वदेशी परिवेश सबैमा प्रेमभाव, स्थान विशेष, भाव विशेष, संवेदना विशेषको चित्रण गरी कविताको सौन्दर्यपक्षलाई सबल ढङ्गमा प्रस्तुत गरेका छन् (थापा, २०६८:१९,२२) ।

दुतेन्द्र चामलिङले हजार वर्षको निद्रा कविता सङ्ग्रह उपर टिप्पणी गर्दै फेस बुक ब्लगमा लेख्छन् - फरक शैली, बिम्ब, प्रतीक मिथकको उपस्थिति र कविको कविता प्रतीको विषयवस्तु स्पष्टताले कविताहरू सुन्दर र बेजोड हुन गएका छन् भनी चित्रण गरेका छन् (फेसबुक ब्लग) ।

माथिका लेखकहरूका समीक्षा र उनका कविताका, विषयवस्तु र स्वरलाई निक्यौल गर्दा भूपिनको दोस्रो चरणका कविताहरूमा सामाजिक, सहरीवातावरण, ग्राम्य परिवेश, उदात्तप्रेम, देशको रूग्णता, युगीन यथार्थ, सामाजिक, आर्थिक चित्रण, परिवर्तनको चाहना, मानवतावाद, विश्वबन्धुत्वको चाहना, जीवन र मृत्युको वास्तविकता, रूढ ईश्वरीय मान्यताप्रति विमति आदिको चित्रण यस चरणका कविता सङ्ग्रहमा गरेका छन् । कवितालाई सशक्त र भावप्रवल बनाउन कविले विभिन्न बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । लेखनको निरन्तर अभ्यासले परिपक्व बन्दै गएका भूपिन दोस्रो चरणसम्म आइपुग्दा कविताको विषयवस्तु, भाषा र प्रस्तुति शैली तथा अभिव्यक्ति शैलीमा सफल भएका छन् ।

तेस्रो चरण (वि.सं. २०६७ - वि.सं.२०६९)

यस चरणमा भूपिनले अघिल्ला दुई चरणभन्दा अलग्गै विधामा कलम चलाई पुस्तक प्रकाशन गर्न सफल भएका छन् । वि.सं. २०६७ देखि २०६९ सालसम्मको अवधि लेखन अनुसन्धानमा केन्द्रित रहेको पाइन्छ । उनले यस अवधिमा दैनिक तथा राष्ट्रिय पत्रपत्रिकाहरूमा फुटकर कविताहरू प्रकाशित गरेको देखिन्छ । त्यसैगरी नेपाली साहित्यका अन्य विधाहरू, कथा, उपन्यास र निबन्धलेखन तर्फ पनि उनी विशेष रूपमा लागि परेको पाइन्छ । फलस्वरूप वि.सं. २०६९ सालमा उनले चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रह प्रकाशित गर्न सफल भएका छन् । अघिल्ला चरणमा कविता सङ्ग्रह मात्र प्रकाशित गरी कविका रूपमा देखा परेका भूपिन चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रह प्रकाशन पश्चात् उनी निबन्धकारका रूपमा सुपरिचित भएका छन् । उनको लेखन यी दुवै विधामा समानान्तर रूपमा अगाडि बढेको देखिन्छ । भूपिनले चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रहको लागि उत्तम शान्ति पुरस्कार (२०६९)

लगायत विभिन्न सम्मान र पुरस्कारहरू प्राप्त गरेका छन् । **चौबीस रिल** निबन्ध सङ्ग्रहले उनलाई आधुनिक नेपाली निबन्धको समसामयिक धारामा स्थापित गरेको छ ।

भूपिनको **चौबीस रिल** निबन्ध सङ्ग्रह (२०६९) संस्मरण, नियन्त्रा र विचारको सङ्गालो हो । यस सङ्ग्रहमा २४ ओटा निबन्धहरू सङ्कलित छन् । भूपिनको चौबिस रिल निबन्ध सङ्ग्रह माथि समालोचक तथा समीक्षकहरूले आ-आफ्नो तरिकाले मूल्याङ्कन तथा समीक्षा गरेको पाइन्छ । सुरेश रानाभाटले **चौबीस रिल भित्र भूपिनको दिल** भन्ने शीर्षकमा समीक्षा गर्दै **चौबीस रिल** भित्र विचार संस्मरण र नियन्त्रा छन् जसमा आफूलाई लागेको कुरा कलात्मक विचारका माध्यमले प्रस्तुत गरेका छन् । अतितमा आफूले देखे भोगेका घटनालाई उत्खनन गर्दै शब्दमा लयबद्ध गरेका छन् । संस्मरणहरूमा आफूसँगै पाठकलाई पनि आफ्नो अतीत र विगत सम्झाउन सफल छन् । यात्रा सामाजिक सन्दर्भसँग जोडेर पात्रहरूको मनोविज्ञान उत्खनन गरेका छन् । भूपिनको लेखनले मन छुन्छ । असाध्यै रोचक पारामा कथालाई गीत बनाएर निबन्धमा गाएका छन् भनी समीक्षा गरेका छन् (रानाभाट, २०७० : १,५) ।

नेपाल पत्रिकामा समीक्षक गुरुङ सुशान्त **वैचारिक वृक्षमा भूपिन** शीर्षकमा भन्दछन्-भूपिन बिम्बमा कविता लेख्छन् । जराविहीन रूख नभएभै विचार विहीन कविता हुँदैन । कमजोर जरा भएको रूख न बलियो हुन्छ न हरियो नै । यो निबन्ध बलियो हुँदा हुँदै पनि अबै निजात्मकता रस भर्न नसकेको अनुभूति हुन सक्छ पाठकलाई भनी टिप्पणी गरेका छन् (गुरुङ, २०७० : २६ माघ) ।

समीक्षकहरूको समीक्षालाई अध्ययन गर्दा **चौबीस रिल** निबन्धसङ्ग्रहमा सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनको चाहना, माटोको मामता, प्रकृतिको मोह, अन्धविश्वास, रूढिवादी, ईश्वरीय सत्ताप्रति विमतिका स्वरलाई लयबद्ध गरेको देखिन्छ । समग्रमा भन्नुपर्दा यो निबन्ध सङ्ग्रहको विषयवस्तुमा नेपाली समाज, गाउँशहर, आफू जन्मे हुर्केको गाउँ, बाल्यकालको स्मृति, अवलोकन भ्रमण, साहित्ययात्रा, अध्ययनको समय, विदेशका विभिन्न ठाउँहरूका सम्झना, अध्ययन अनुसन्धानका अनुभूति आदि विषयवस्तुलाई **चौबीस रिल** निबन्ध सङ्ग्रहले समेटेको छ ।

विषयगत विविधता, प्रस्तुतिगत बौद्धिकता र भाषागत कलात्मकता यस सङ्ग्रहका विशेषता हुन् । निबन्धको प्रस्तुति सरल, सरस हुनुको साथै तेस्रो चरणमा आइपुग्दा उनको शैली र कलामा परिस्कृत र परिमार्जन हुँदै आएको छ ।

२.१७.४ निष्कर्ष

बसाई सराइका क्रममा गोरखाबाट बाग्लुङ पुगेका कुलदेवी र इन्द्रवीर खड्काका आठौँ पुस्ताका सन्तानको रूपमा वि.सं. २०३० साल चैत्र ३० गते बाग्लुङ बलेवामा जन्मेका भूपिनका पिता सर्वजित खड्का र माता बसुन्धरा खड्का हुन् । निम्न मध्यम वर्गिय ठूलो परिवारमा जन्मिएका भूपिनको आम्दानीको स्रोत न्यून हुँदा जीवनमा उनले केही आर्थिक अभाव र समस्या भेल्लु परेको थियो । पिताबाट अक्षर चिनेका उनले वि.सं. २०३६ सालमा जनता मा.वि. बाट औपचारिक शिक्षाको थालनी गरेका हुन् । उनले वि.सं. २०४७ सालमा सोही विद्यालयबाट एस.एल.सी.उत्तीर्ण गरे । वि.सं. २०४९ सालमा पी.एन. क्याम्पस पोखराबाट विज्ञान विषयमा प्रमाणपत्र तह र वि.सं. २०५२ सालमा शिक्षाशास्त्र सङ्कायमा स्नातक गरे । साथै वि.सं. २०५७ सालमा कीर्तिपुर काठमाडौँबाट स्वास्थ्य विषय लिएर स्नातकोत्तर तह उत्तीर्ण गरेका उनले वि.सं. २०६० भाद्र ६ गते देखि सप्तगण्डकी बहुमुखी क्याम्पस भरतपुरमा निरन्तर अध्यापन गराउँदै आएका छन् । भरतपुर उप-महानगरपालिका-१२ निवासी पिता बुद्धिराम खतिवडा तथा माता इन्द्रमाया खतिवडाकी छोरी ज्योती खतिवडासँग वि.सं. २०६१ माग ३ गते सामाजिक परम्परा अनुसार विवाह बन्धनमा बाँधिएका भूपिनका हाल एक छोरा रहेका छन् ।

वि.सं. २०४० को दशकदेखि गीत, गजल, मुक्तक लेखेर साहित्यमा लागेका भूपिन वि.सं. २०४८ सालमा नवपत्रिकामा *एवम् क्रमः दिन र रातहरू* शीर्षकको गद्य कविता प्रकाशित गरेर औपचारिक रूपमा नेपाली साहित्यमा प्रवेश गरेका हुन् । उनले हालसम्म तिन कविता सङ्ग्रह र एक निबन्ध सङ्ग्रह गरी चार कृतिहरू प्रकाशित गर्न सफल भएका छन् । विभिन्न पत्रपत्रिका पढ्ने, खेल खेल्ने, स्वदेश विदेशका विभिन्न ठाउँहरू घुम्ने, कविता वाचन गर्ने (कविता सुनाउने), रुचि भएका भूपिनले विभिन्न सङ्घ संस्थामा रहेर सामाजिक सेवा र कार्यपनि गरेका छन् । यसै क्रममा उनी विभिन्न सामाजिक सङ्घ संस्था मार्फत सम्मानित पनि भएका छन् ।

बुद्धदर्शन र अस्तित्ववादी दर्शनबाट प्रभावित भूपिनलाई जीवन रहस्यमय लाग्दछ । साहित्यले समाजको सुधार गर्नुपर्छ र विसङ्गति र विभेदको अन्त्य गर्नुपर्छ भन्ने मान्यताका पक्षधर भूपिन यथार्थवादको नजिक देखिन्छन् । मानव जीवनमा दुःख एक आपसमा बाँड्दै जाने हो भने दुःख घट्दै गएर यसबाट मुक्त हुन सकिन्छ भन्ने सकारात्मक सोच भएका भूपिनको जीवनी सबै पाठकको लागि अनुकरणीय रहेको छ ।

परिच्छेद तिन

साहित्यकार भूपिन व्याकुलको व्यक्तित्व

३.१ पृष्ठभूमि

व्यक्तिमा हुने निजी विशेषता वा गुणलाई व्यक्तित्व भनिन्छ (शर्मा, २०६२ : १२३१) । व्यक्ति भित्र अन्तर्निहित अनेक प्रतिभाहरू रहेका हुन्छन् । त्यस्ता व्यक्तित्वका विविध पाटाहरूको गहिराइमा पुगेर निजी विशेषता वा गुणलाई नियाल्ने काम आफैमा कठिन छ । तथापि एक व्यक्ति समाजको विभिन्न तह, तप्का र क्षेत्रमा संलग्न भएर आफ्नो भूमिका खेलेको पाइन्छ । समाजका विभिन्न क्षेत्रमा संलग्न व्यक्तिको प्रतिभा, क्षमता, रुचि, कार्यक्षेत्र, परिवेश लगनशीलता र काम गर्ने शैलीबाट उसको व्यक्तित्वको विविध पाटाहरूको आँकलन गर्न सकिन्छ । हरेक व्यक्तिमा आन्तरिक र बाह्य गरी दुई प्रकारका व्यक्तित्व रहेका हुन्छन् । बाह्य व्यक्तित्वको मूल्याङ्कन गर्न जति सजिलो छ आन्तरिक स्वरूपको व्यक्तित्वको मूल्याङ्कन गर्न उतिकै जटिल छ । त्यसो हुँदा हुँदै पनि भूपिनको बाह्य र आन्तरिक दुवै व्यक्तित्वलाई विभिन्न दृष्टिकोणबाट अध्ययन गरिएको छ ।

३.२ बाह्य व्यक्तित्व

बाह्य व्यक्तित्व कुनै पनि व्यक्तिको बाहिरी आवरण वा शारीरिक बनावटलाई बुझाउँछ, जुन बाहिरबाट हेर्दा छर्लङ्ग देखिन्छ । भूपिन व्याकुलको बाह्य व्यक्तित्व हेर्दा उनी गोरोवर्ण, ६ फुट अग्ला, सुसङ्गठित शरीर, सुन्दर मुहार, लामो नाक, शङ्खतुल्य सुडौल घाँटी भएका आकर्षक व्यक्तित्वका धनी व्यक्ति हुन् र मुहारमा सधैं मुस्कान मिश्रित गम्भीरता देखिनु उनको शारीरिक विशेषता हो । उनी सफा र सुन्दर पहिरनमा देखिन्छन् (पौडेल, २०६७ :१०)। अग्ला र गोरा भूपिनको शारीरिक बनावट सुन्दर लोभलाग्दो छ । स्वरमा मिठासपन भएका भूपिन कुनै कुरा व्यक्त गर्दा नलुकाई स्पष्ट भद्र र शिष्ट रूपले प्रस्तुत हुने गर्दछन् (बानिया, २०६९:७९, ८३) । सरल स्वभाव, दयालु भावना, फुर्तिलो शरीर, तार्किक तथा नेतृत्वदायी क्षमता चिन्तनशील स्वभाव, साथीभाइसँग छिट्टै घुलमिल हुन सक्ने खुबी भूपिनको प्रभावशाली व्यक्तित्व हो (सुमनराज श्रेष्ठसँगको अन्तर्वार्ता) । यिनै गुण र विशेषताहरूले यिनको बाह्य व्यक्तित्वको परिचय दिएको देखिन्छ ।

३.३ आन्तरिक व्यक्तित्व

व्यक्तित्वले व्यक्तिभिन्नको अन्तर्निहित क्षमता, गुण र प्रतिभालाई स्पष्ट पार्दछ । कुनै व्यक्तिको व्यक्तित्व निर्माणमा उसको पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक वातावरण, जीवन भोगाइको क्रममा देखिएका आरोह अवरोहले महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलेको पाइन्छ । यसको अतिरिक्त शिक्षा, रुचि, पेशा, स्वभाव, जीवन प्रतिको दृष्टिकोणले केही हदसम्म प्रभाव पारेको पाइन्छ । भूपिनका समग्र व्यक्तित्वलाई अध्ययन गर्दा उनको आन्तरिक व्यक्तित्व बहुमुखी प्रकृतिको देखिन्छ । उनको जीवनको समग्र पाटाहरूको अध्ययनबाट नै उनको व्यक्तित्वको अध्ययन गर्न सकिने भएको हुँदा उनका आन्तरिक व्यक्तित्वका पाटाहरूलाई साहित्यिक र साहित्येतर गरी दुई भागमा बाँडेर अध्ययन गरिएको छ ।

३.३.१ साहित्यिक व्यक्तित्व

वि.सं. २०४० को दशक देखि गजल मुक्तक लेखेर नेपाली साहित्यमा अगाडि बढेका भूपिन वि.सं. २०४८ सालमा *एवं क्रम : दिन र रातहरू* शीर्षकको गद्य कविता प्रकाशन गरी साहित्यिक यात्राको आरम्भ गरेको पाइन्छ । मुलतः कृति प्रकाशनको दृष्टिले उनी कविता विधामा बढी सक्रिय रहेको देखिएता पनि साहित्यको अन्य विधामा पनि उत्तिकै सक्रिय रहेको पाइन्छ । चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रह (२०६९) प्रकाशित गरी उनले यसको उदाहरण दिएका छन् । यद्यपि भूपिनले साहित्यिक आख्यानात्मक विद्यामा पनि कलम चलाउँदै आएका छन् (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता) ।

३.३.१.१ कवि व्यक्तित्व

१२/१३ वर्षको उमेरदेखि नै कविताप्रति आकर्षित भएका भूपिन विद्यालयमा सञ्चालन गरिने अतिरिक्त कार्यक्रमहरूमा कविता रचना र वाचन गर्ने गर्दथे । उनका प्रथम प्रकाशित कविता *एवम् क्रमः दिन र रातहरू* हो । उक्त कविता वि.सं. २०४८ सालमा पोखराबाट प्रकाशित हुने *नवपत्रिकामा* प्रकाशित भएको थियो । उनको कवि व्यक्तित्वलाई उजागर गर्ने अन्य कविता कृतिहरू *क्षितिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक* (२०५३), *शब्दहरूको नेपथ्य* (२०५६), *हजार वर्षको निद्रा* (२०६६) आदि रहेका छन् । यी बाहेक उनका फुटकर कविताहरू विभिन्न समयमा *मधुपर्क, कालचक्र, गरिमा, अन्नपूर्ण पोष्ट, कान्तिपुर, कालिका,*

सुसेली, मातृभूमि, नोबेल, नेपाली कला साहित्य उट कम, बुधवार, सिउडी, कलाश्री, नवकविता, शारदा, बगर, तन्नेरी जस्ता दर्जनौ पत्रिकामा प्रकाशित भएका छन् (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता) । उनका प्रकाशित कविता सङ्ग्रहको अध्ययन गर्दा स्वच्छन्दतावादी भावमा, आधारित रहेर युगीन विसङ्गति, सामाजिक विकृति, मानवीय संवेदना, राष्ट्र राष्ट्रियताप्रतिको प्रेम, सामाजिक विकृति, मानवीय संवेदना, राष्ट्र राष्ट्रियता प्रतिको प्रेम, राजनीतिक पीडा र मानवतावाद आदिको चित्रण गरेको पाइन्छ । भूपिन मुलतः गद्य कवि हुन् । उनका कविता सरल र सम्प्रेष्य छन् । विभिन्न विम्ब र प्रतीकको प्रयोगले कवितामा मौलिकपना र नविनता थपेको पाइन्छ ।

३.३.१.२ निबन्धकार व्यक्तित्व

बहुमुखी प्रतिभा भएका भूपिनले वि.सं.२०६९ सालमा चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रह प्रकाशित गरी आफूलाई निबन्धकारको रूपमा स्थापित गराएका छन् । भूपिनको चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रह (२०६९) संस्मरण र नियान्त्रा तथा विचारको संगालो हो । यस सङ्ग्रहमा २४ ओटा निबन्धहरू सङ्कलित छन् । निबन्धकारले यस निबन्धको विषयवस्तुको रूपमा नेपाली समाज, आफू जन्मे हुर्केको गाउँ, शहर, बाल्यावस्था, अवलोकन भ्रमण, साहित्यिक यात्रा, विदेशका विभिन्न ठाउँको सम्भना आदिलाई समेटेका छन् । उनको यो सङ्ग्रहले उत्तमशान्ति पुरस्कार (२०६९) प्राप्त गर्न सफल भएको छ । विषयगत विविधता, सरल भाषाशैली, प्रस्तुतिमा बौद्धिकता उनका निबन्धका मौलिकपन हुन् (रानाभाट, २०७० : १,५)

३.३.१.३ गीतकार व्यक्तित्व

भूपिनले कविता निबन्धका अतिरिक्त गीतकारका रूपमा पनि आफूलाई चिनाएका छन् । उनले रचना गरेका गीतहरू जनसत्ता २०५३ असार २२ बलेवा, प्रयोग २०५२ फागुन पोखराबाट प्रकाशित हुने पत्रिकामा छापिएका छन् । पछिल्लो समयमा उनले रचना गरेको गीत सङ्गीतबद्ध भई प्रसारण भएको पाइन्छ । उनका गीतमा सङ्गीत सहन प्रधान र राजु तुलाधरले दिएका छन् भने स्वर शैलेश सिंह र अनामिका मल्लले दिएको देखिन्छ । उनले रचना गरेका गीतका केही उदाहरण तल दिइएको छ :-

टिकट काटी राख्नु दाजै उडि आउनु यसैपाली
तिमी विना तिहारहरू बितीगए खाली खाली ।

गलती मेरा हजार होलान् बिन्ती छ है ! माफ गर
त्यो मन पनि अलि-अलि धमिलो छ, सफा गर ।

उनका गीतका शब्दहरू सरल सरस रहेका छन् । गीतको लय र भाव कर्णप्रिय हुनुका साथै मनलाई छुने किसिमको छ । यी माथिका आधारमा भूपिन एक गीतकार व्यक्तित्व हुन् भन्न सकिन्छ (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता) ।

३.३.१.४ गजलकार व्यक्तित्व

भूपिन २०४० को दशक देखि गजल विधाबाट काव्य यात्रा थालेको भए पनि उनका गजलहरू *परिक्रमा* वि.सं. २०५२ पोखरा, *तरङ्ग* वि.सं. २०५३ बाग्लुङ, *कोपिला* २०५३ पोखरा र *अंकुर* २०५३, पोखराबाट विभिन्न पत्र पत्रिकामा प्रकाशित भएको पाइन्छ । माछापुच्छ्रे पत्रिकामा प्रकाशित भूपिनको गजलको एक उदाहरण :-

दुःखरत्यो देश भनेर हतास हुनुभएन
नेताजी हो ! देश उडाउने बतास हुनु भएन
पूर्वाहरूले पौरखी यी हात छोडेको हामीहरूमा
पैसाको लागि नैतिकतामा त्रस हुनुभएन ।

उनका गजलमा विशेषगरी २०४७ सालको प्रजातन्त्र पछि, देशमा जनताद्वारा चुनेर सरकारमा पठाइएका नेताहरूबाट जनताको इच्छा आकाङ्क्षा बमोजिम जुन रूपमा काम गर्नुपर्ने हो सो बमोजिम नभई सत्तालिप्सा, व्यक्तिगत स्वार्थ, नातावादमा नेताहरू लागिपरेको र आफ्नो स्वार्थ र पैसाको लागि जे पनि गर्न पछि नपर्ने अकुशल नेतृत्व वर्गमाथि तिखो व्यङ्ग्य गरेका छन् ।

३.३.१.५ मुक्तककार व्यक्तित्व

भूपिन आइ.एस.सी पढ्न पोखरा आए पश्चात् उनमा गजल र मुक्तक लेखनमा रुचि बढेको देखिन्छ । हुनत उनले लेखको मुक्तकहरूको व्यवस्थित रूपले संरक्षण हुन नसकेको देखिन्छ । तथापि त्यस समयमा उनले लेखेका मुक्तकहरू विभिन्न पत्रपत्रिकाहरू जस्तै *कोपिला* (२०५३) बाग्लुङ, *सौगात* (२०५३) पोखरा, *प्रोत्साहन* (२०५४) बाग्लुङबाट प्रकाशित

भएको पाइन्छ । उनले प्रोत्साहन पत्रिकामा वि.सं. २०५४ भाद्रमा प्रकाशित गरेको मुक्तकको एक उदाहरण :-

कसैले भने पहिलेको बजेट
जनताको आखाँका छारो भयो
कसैले भने अहिलेको बजेट
परेवालाई हालेको चारो भयो ।

३.३.१.६ भूमिका लेखन

भूमिकाले कुनै कृतिमा लेखिएको विषयवस्तुको बारेमा सामान्य जानकारी दिन्छ । भूपिनले केही कृतिहरूको सम्बन्धमा भूमिका लेखेको पाइन्छ । भूपिनले खनाल रेवती रमणद्वारा लिखित तथा प्रकाशित 'जुनको रोटी' नामक कविता सङ्ग्रह कृतिमा समालोचनात्मक भूमिका लेखेका छन् । त्यसैगरी उनले सुमनराज श्रेष्ठद्वारा लेखिएको सपनाहरूको ट्याङ्ग ओभर (२०७२) कविता सङ्ग्रहको शीर्षकमा भूमिका लेखेको देखिन्छ । यी कृतिहरूमा भूमिका लेखी भूपिनले आफूलाई भूमिका लेखकको रूपमा अगाडि बढाएको पाइन्छ (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता) ।

३.३.१.७ सम्पादक व्यक्तित्व

भूपिनले सम्पादनको क्षेत्रमा पनि कलम चलाएको पाइन्छ । चितवनका कवि र कविता शीर्षकमा चितवनबाट प्रकाशित हुने चरैवेति साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिकाको सम्पादन गरेका छन् । त्यसैगरी चितवन महोत्सव स्मारिका (२०६८) र चितवन महोत्सव स्मारिका (२०७१) को सम्पादन गरेर उक्त पत्रिकाको सम्पादकको काम गरेको बताउँछन् (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता) ।

३.३.२ साहित्येतर व्यक्तित्व

भूपिनको साहित्यिक व्यक्तित्व सँगसँगै साहित्येतर व्यक्तित्व पनि उच्च रहेको छ । साहित्यिक गतिविधिका अतिरिक्त समाजका लागि गरिएको सकारात्मक कार्यबाट त्यस व्यक्तिको व्यक्तित्व बन्दछ । भूपिनको साहित्येतर व्यक्तित्वका विविध पाटाहरूलाई निम्नानुसार उल्लेख गरिएको छ ।

३.३.२.१ अध्यापक व्यक्तित्व

साहित्यकार भूपिनको प्रमुख व्यक्तित्वहरू मध्ये अध्यापक व्यक्तित्वले पनि महत्त्वपूर्ण स्थान लिएको देखिन्छ । वि.सं. २०५२ सालमा स्नातकको पढाइ सकेपछि उनले पोखरा बजारको मियाँटोल नजिकको बालविद्या मन्दिर बोर्डिङ्ग स्कूलमा केही समय शिक्षण गरेको पाइन्छ (व्याकुल, २०६९ : ७४) । त्यसपछि उनले बोर्डिङ्ग स्कूलको शिक्षण र आफ्नो पढाइलाई केही समय रोकेर आफ्नो गाउँ बलेवाको जनता मा.वि.मा वि.सं. २०५३ भाद्र देखि करिब दुई वर्ष पुनः शिक्षण कार्यका लागेको पाइन्छ । अध्यापनको क्रममा भूपिन २०६० भाद्र देखि सप्तगण्डकी बहुमुखी क्याम्पस भरतपुरमा हालसम्म निरन्तर अध्यापन गर्दै आएको देखिन्छ (शोधनायकसँगको मौखिक अन्तर्वार्ता) ।

३.३.२.२ खेलाडी व्यक्तित्व

भूपिन साहित्य सँगसँगै खेललाई पनि प्यार गर्दछन् । खेलकुद पनि उनको प्रमुख रुचिको विषय पर्छ । उनी भलिबल, फुटबल, व्याटमिन्टन राम्रोसँग खेल्दछन् (पौडेल, हजार वर्षको निद्रा, २०६६:८) । भूपिनको शारीरिक वनावट पनि खेलकुद खेल्न लायकको छ । उनको घरमा पाँचजना दाजुभाइबाट भलिबल खेल खेल्नको लागि लगभग एउटा समूह पुग्ने गरेको भूपिन बताउँछन् । जब उनी उच्च शिक्षाको लागि पोखरा आए पढाइसँगै खेलकुदमा पनि उनको सहभागिता समान रूपले अगाडि बढेको पाइन्छ । वि.सं. २०५० देखि वि.सं. २०५४ सम्म भलिबल खेलको उनी क्याप्टेनको भूमिकामा रहेर विभिन्न ठाउँमा खेल खेलेको बताउँछन् । वि.सं. २०५३ मा पी.एन.क्याम्पस पोखराबाट मध्यपश्चिमाञ्चल क्षेत्रीय भलिबल प्रतियोगितामा प्रथम भइ पुरस्कार पनि प्राप्त गरेको देखिन्छ । वि.सं. २०५४ सालमा पी.एन.क्याम्पसबाटै राष्ट्रिय भलिबल प्रतियोगिता खेल्ने अवसर मिलेको बताउँछन् । उक्त समयमा भलिबलको राष्ट्रिय खेलाडी बनेर खेलकुदलाई अगाडि बढाउने उद्देश्य रहेको बताउँछन् । भूपिन वि.सं. २०६० भाद्र ६ गते देखि सप्तगण्डकी बहुमुखी क्याम्पस भरतपुरमा शारीरिक स्वास्थ्य विषयको जनशक्तिको रूपमा कार्य गर्दै आएका छन् । यसबाट पुष्टि हुन्छ, उनी साहित्यिक क्रियाकलाप सँगसँगै खेलकुद व्यक्तित्वलाई पनि समान रूपले अगाडि बढाउन सफल भएका छन् (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता) ।

३.३.२.३ सामाजिक व्यक्तित्व

भूपिन विभिन्न सामाजिक संस्थाहरूमा रहेर काम गरेको पाइन्छ । उनले वि.सं.२०४८ सालमा आफ्नो गाउँ बलेवामा प्रगतिशील पुस्तकालयको स्थापना गरी आफू त्यस पुस्तकालयको संयोजक रहेर काम गरेको बताउँछन् । वि.सं.२०५३ सालमा उनी पोखरेली युवा साँस्कृतिक परिवारको साहित्यिक संयोजक रहेर काम गरेको देखिन्छ (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता) । वि.सं.२०७१ साल मंसिर महिनामा मंगलपुर मा.वि., मंगलपुर चितवनलाई रू.३५०००।- (पैंतिस हजार) मूल्य बराबरको विभिन्न विधाका पुस्तकहरू वितरण गरेर पुस्तकालय बनाउन सहयोग गरेको देखिन्छ । वि.सं. २०७२ साल वैशाख १२ गते गएको विनाशकारी भूकम्पले नेपालको विशेषगरी पाहाडी जिल्लामा अपूरणीय धनजनको क्षति पुऱ्याएको थियो । भूपिनको संयोजकत्वमा चितवनका लेखक तथा साहित्यकारहरूबाट उठेको रकम करिब ९०,०००।- (नब्बे हजार) रूपैयाँ भूकम्प पीडितलाई (गोरखा जिल्लाको खोप्लाङ गा.वि.स.का ४२ घरधुरी) चामल, दाल, त्रिपाल, नुन किनेर राहत स्वरूप बाँडेको बताउँछन् । त्यसैगरी विदेशमा वस्नुहुने नेपाली दाजुभाइबाट उठेको एकलाख रूपैयाँबाट चामल, दाल, नुन, त्रिपाल किनेर गोरखा भच्चेकका ६५ घरधुरी परिवारलाई मिति २०७२ साल वैशाख २२ गते भूपिनको संयोजकत्वमा वितरण गरेको देखिन्छ (शोधनायकसँगको अन्तर्वार्ता) ।

३.३.२.४ सञ्चारकर्मी व्यक्तित्व

सञ्चार जगत्मा उनले खेलेको महत्त्वपूर्ण भूमिकाको आधारमा भूपिन एक सफल सञ्चारकर्मी हुन् भनेर भन्न सकिन्छ । उनले सिनर्जी एफ.एम. रेडियो भरतपुरमा वि.सं. २०६३ देखि वि.सं. २०७१ सम्म हप्ताको दुइदिन बुधवार र विहिवार राति ९:४५ देखि १०:००वजेसम्म **शब्द संसार** रेडियो कार्यक्रम सञ्चालन गरेको देखिन्छ । उक्त कार्यक्रममा साहित्यका विविध विधामा अर्न्तक्रिया समीक्षा, साहित्यिक अनुभव आदानप्रदान, विविध लेख र रचनाको वाचन भएको पाइन्छ । (शोधनायक सँगको अन्तर्वार्ता अनुसार)

३.३.३ निष्कर्ष

व्यक्तित्वले कुनै पनि व्यक्तिको बाहिरी आवरण वा शारीरिक बनावटलाई मात्र नबुझाएर व्यक्ति भित्रको अन्तर्निहित क्षमता, गुण र प्रतिभा समेतलाई बुझाउँछ । एक

व्यक्ति समाजका हरेक क्षेत्रमा रहेर आफ्नो भूमिका खेलेको पाइन्छ । त्यसैको आधारमा उसको व्यक्तित्वको निर्माण हुने गर्दछ । एक व्यक्तिका पनि व्यक्तित्वका विविध स्वरूप हुन सक्दछन् । साहित्यकार भूपिनका व्यक्तित्वका पाटाहरूलाई अध्ययन गर्दा उनले नेपाली साहित्यमा खर्चेको जीवनको ३० वर्षे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि र प्राप्तिलाई आधार मान्नु पर्ने हुन्छ । भूपिनको व्यक्तित्वलाई आन्तरिक र बाह्य गरी दुई किसिमबाट अध्ययन गरिएको छ । बाह्य व्यक्तित्वको रूपमा उनी गोरो वर्ण ६ फुट अग्लो, शङ्खतुल्य सुडौलो घाँटी भएका आकर्षक व्यक्तित्वका धनी व्यक्ति हुन् । त्यसै गरी सरल स्वभाव, दयालु भावना, फूर्तिलो शरीर, स्वरमा मिठासपन, चिन्तनशील, साथीभाइहरूसँग छिट्टै घुलमिल हुन सक्ने खुबी भूपिनको प्रभावशाली व्यक्तित्व हो । उनको आन्तरिक व्यक्तित्व बहुमुखी प्रकृतिको रहेको छ । त्यसैले आन्तरिक व्यक्तित्वलाई साहित्यिक र साहित्येतर गरी दुई भागमा बाँडेर अध्ययन गरिएको छ । साहित्यिक व्यक्तित्व अन्तर्गत कवि व्यक्तित्व, निबन्धकार व्यक्तित्व, गीतकार व्यक्तित्व, गजलकार व्यक्तित्व, मुक्तककार व्यक्तित्व आदि रहेका छन् । यी व्यक्तित्व मध्ये उनको कवि व्यक्तित्व नै उच्च रहेको देखिन्छ । तापनि उनको निबन्धकार व्यक्तित्वले पनि नेपाली साहित्यमा निश्चित आकार ग्रहण गरिसकेको देखिन्छ । उनको साहित्येतर व्यक्तित्वमा सामाजिक व्यक्तित्व, अध्यापन व्यक्तित्व, खेलाडी व्यक्तित्व र सञ्चारकर्मी व्यक्तित्व रहेका छन् । यी मध्ये उनको अध्यापक व्यक्तित्वले नै अग्र स्थान लिएको देखिन्छ ।

समग्रमा भूपिन बहुआयामिक व्यक्तित्वका धनी भए पनि मूलतः उनी कवि र निबन्धकार हुन् । आफ्नो साहित्यिक कृतिहरू मार्फत नेपाली साहित्यका क्षेत्रमा महत्त्वपूर्ण योगदान पुऱ्याउने भूपिन सर्वदा अनुकरणीय र उदाहरणीय रहेका छन् ।

परिच्छेद चार

भूपिन व्याकुलका कृतिहरूको अध्ययन

४.१ विषय प्रवेश: क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक कविता सङ्ग्रह भूपिनको पहिलो कृतिको रूपमा वि.सं. २०५३ सालमा प्रकाशन भएको हो । यो विभिन्न आयामका तेत्तीसओटा फुटकर कविताहरू समावेश भएको ८० पृष्ठको मझौला आकारको कृति हो । यी कविताहरू वि.सं. २०५१ देखि वि.सं. २०५३ सालभित्र रचना गरेको देखिन्छ । यस सङ्ग्रह भित्रका कविताहरू कुनै छोटो आयामका १५/१६ पङ्क्तिका छन् भने कुनै ७९ पङ्क्तिसम्म विस्तार भएका लामा कविता रहेका छन् । यी सबै कविताहरू गद्य शैलीमा रचना गरिएका छन् । कविले उन्नाइसौं पृष्ठमा रहेको आठौं कविताको शीर्षक **क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडकलाई** नै यस कृतिको शीर्षकको रूपमा छनोट गरेका छन् (प्रेम छोटा, २०५३ : भूमिका) । कविताहरूको विषयवस्तुको रूपमा समाज, राष्ट्र र विश्वमा देखापरेका सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विकृति र विसङ्गति, मानवीय मूल्य र मान्यताको ह्रास, कुण्ठित मानवीय मनोदशा, शहरिया कु-संस्कृति, स्वार्थी र छाडा प्रवृत्ति, व्यक्तिवादी चिन्तन भ्रष्ट संस्कृति, नेपाली दाजुभाइबीचको द्वन्द्व र रक्तपातपूर्ण लडाइँ, शक्तिसम्पन्न राष्ट्रबाट साना राष्ट्रहरूमा गरिने हस्तक्षेप, शस्त्रास्त्रको होडबाजीले विश्वमा निम्ताएको मानवीय सडकट, विश्वमा भोकमरी, खडेरी र गृह युद्धले पुऱ्याएको मानवीय क्षति लगायत मानवीय जनजीवन राष्ट्र राष्ट्रियता अनि समग्र पृथ्वी नै क्षतिग्रस्त हुन पुगेको युगीन यथार्थलाई चित्रण गरेका छन् (प्रेम छोटा, २०५३ : भूमिका) ।

यस कृतिका कविताहरूमा कविले समसामयिक निजी, आर्थिक र राजनीतिक, विज्ञानसम्मत बिम्ब प्रतीक र अलङ्कारको प्रयोग कलात्मक रूपमा गरेका छन् । यसले गर्दा कविताहरू सरल, आकर्षक र सम्प्रेष्य बनेको देखिन्छ । कविले कविताहरूमा प्रतीकात्मक, व्यङ्ग्यात्मक र अभिधात्मक भाषा शैलीद्वारा विचार प्रवाह गरेका छन् । आजको मान्छेको वास्तविक युगीन यथार्थलाई **क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडकसँग** समरूपता देखाएर प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक रूपमा यस कृतिको नाम राखिएको हुँदा शीर्षकले सार्थकता र औचित्यता पाएको देखिन्छ । उनका यस सङ्ग्रहमा समावेश गरिएका

कविताहरूलाई क्रमशः शीर्षक, संरचना, लय, भाषाशैली, दृष्टिबिन्दु भाव, विम्ब प्रतीक र अलङ्कारका आधारमा अध्ययन गरिएको छ ।

४.१.१ मलाई अनुभव-अनुभूतिको गर्भाधारण मन पर्छ

कुनै लेख, रचना, ग्रन्थ आदिको नामलाई शीर्षक भनिन्छ (अधिकारी, २०६३ : ९४२)। कविले भूत,वर्तमान र भविष्यसँग रहेको अनुभव र अनुभूतिको समिश्रण मनपर्छ भन्दै उनले आफ्नो देशको सामाजिक र आर्थिक विसङ्गतिप्रति चिन्ता व्यक्त गरेका छन् । समकालीन कविताप्रतिको मोहबोधलाई मर्मस्पर्शी शैलीले प्रस्तुत गरेको हुँदा शीर्षक र विषयवस्तु बीच निकट सम्बन्ध देखिएकोले यो शीर्षक सार्थक देखिन्छ । पूर्णविरामलाई आधारमान्दा यस कवितामा तिन अनुच्छेद उन्चालीस पङ्क्तिमा संरचना भएको देखिन्छ । पङ्क्तिमा दुईशब्द देखि आठशब्द र अनुच्छेदमा सात पङ्क्तिदेखि पन्ध्र पङ्क्तिसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । हरेक अनुच्छेदको बीचमा र पछाडि शब्द र पङ्क्तिको वितरणमा एक रूपता देखिन्छ ।

कविता गद्य शैलीमा लेखिएको हुँदा यसको लयविधान गद्य ढाँचाको रहेको छ । गद्यलय रहेता पनि हरेक अनुच्छेदको दुई पङ्क्तिदेखि चार पङ्क्तिमा माध्य र अन्त्यानुप्रास ढाँचा र पङ्क्तिमा उही शब्दको बारम्बार आवृत्तिले कविताको लय आकर्षक र श्रुतिरम्य हुन पुगेको छ ।

यस कविताको भाषा र शैली गद्य रहेपनि सरल र सरस शब्दको चयन, युग-विद्यालय तत्सम, पार्टी आगन्तुक, काली ठेट जस्ता शब्दहरूको प्रयोगले भाषाशैली आकर्षक र लयात्मक बनेको छ । कविले आत्मपरक शैलीमा प्रथमपुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर आफ्ना मनका अनुभूतिहरू व्यक्त गरेको पाइन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा कविले आर्थिक अभाव र अशिक्षाको कारण विद्यालय जान नपाएको कालेको दुःखद कथा र कृपोषणले उमेरमै चाउरिएकी कालीको पीडा र व्यथाको चित्रणगर्दै समसामयिक सामाजिक, आर्थिक विसङ्गति, विकृतिको अवस्थालाई कारुणिक भावमा प्रस्तुत गरेका छन् । यस कवितामा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समसामयिक र निजी विम्ब र प्रतीकको प्रयोग कलात्मक रूपमा गरेको पाइन्छ । 'घोषणापत्र', नेताहरू/शासकहरूको द्वैध चरित्रको विम्बार्थको रूपमा, 'काली र काले' गरिवीको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.१.२ समय र कुपुत्रहरू

संसारको सबैभन्दा मूल्यवान् वस्तुको रूपमा समय भएको र त्यस्तो मूल्यवान् समयको महत्त्व र महिमालाई बुझी समय छँदै काम गर्न नसक्ने व्यक्ति, शासकहरूलाई कुपुत्रको संज्ञा दिइएको छ । यस कवितामा शीर्षक व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको देखिन्छ । कविताको भावभूमि शीर्षककै परिधिमा फन्को मारेको हुँदा शीर्षक औचित्यपूर्ण देखिन्छ ।

कुनै वस्तुको बाहिरी ढाँचा, आकारप्रकार, आकृति, रूपाकृति, प्रतिकृति आदिलाई संरचना भनिन्छ (अधिकारी, २०६३ :९५२) ।

यो कविता लामाछोटा तिन अनुच्छेदमा संरचना भएको देखिन्छ । उक्त तिन अनुच्छेद एकचालीस पङ्क्तिसम्म फैलिएको छ । पङ्क्तिमा एकशब्ददेखि नौ शब्दसम्म प्रयोग भएको देखिन्छ र पहिलो र दोस्रो अनुच्छेदको तुलनामा तेस्रो अनुच्छेद बढी लामो देखिन्छ । अनुच्छेदको विभाजनमा कुनै एकरूपता देखिँदैन । प्रस्तुत कविता गद्यमा लेखिएको हुँदा यसको लयविधान पनि गद्य नै रहेको छ । गद्यलय भएतापनि प्राय अनुच्छेदमा उही शब्द, वर्णको आवृत्ति, माध्य र अन्त्यानुप्रासीय शैलीले कवितालाई गेयात्मक बनाएको देखिन्छ । जस्तै :

समय पानी बन्छ र बग्छ

समय जवानी बन्छ र बग्छ

पहिलो अनुच्छेद, पृ:४ ।

छिटफुट रूपमा व्याकरणगत त्रुटि भेटिए तापनि यसको भाषाशैली सरल रूपमा अगाडि बढेको देखिन्छ । कविले भाषिक स्रोतको दृष्टिले परेड आगन्तुक, अवतरित, युग तत्सम, च्याँ-च्याँ, क्वाप्प ठेट जस्ता शब्दहरूको प्रयोगले कविताको भाषा सुन्दर सरल बन्न पुगेको र माध्य, अन्त्यानुप्रासका साथै पङ्क्तिमा उही वर्ण शब्दको बारम्बार आवृत्तिले कविताको शैली चमत्कृत भएको देखिन्छ ।

यस कवितामा समय आफ्नो गतिमा चलिरहन्छ यसले कसैलाई पखिँदैन, यसको बाल्य र प्रौढकाल पनि हुँदैन, यसलाई मुठी भित्र कैद गर्न सकिँदैन, यसको मृत्यु पनि हुँदैन र यो कसैको डर धाक र धम्की मान्दैन भन्ने कुरा जान्दा जान्दै पनि यस देशका शासक बुजुक व्यक्तिहरूले समयलाई बेवास्ता गरेको प्रति कविले चिन्ता व्यक्त गर्दै समयको महत्त्व बुझ्न नसक्ने व्यक्तिहरू कुपुत्रहरू हुन् भन्ने आशय कारुणिक भावमा व्यक्त गरेका छन् ।

यस कवितामा 'आकाशको फल', प्रजातन्त्रको विम्वार्थको रूपमा र कुपुत्रहरू शासकको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ । कविले कवितालाई चमत्कृत बनाउन पहिलो अनुच्छेदको पहिलो पङ्क्तिको 'एउटा अनुशासित सिपाही जस्तै' कथ्यमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग गरेका छन् ।

४.१.३ प्रजातन्त्र र अज्ञात देशवासीहरू

यस कवितामा कविले देशमा पटक पटक देखापरेको प्रजातन्त्रलाई सङ्केत गरेको र त्यसरी बारम्बार देशमा आएको प्रजातन्त्रबाट देशवासीहरूले राहत महसुस गर्न नसकेको, प्रजातन्त्रप्रति जनताहरू अनभिज्ञ रहेको कुरा व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक सार्थक देखिन्छ । यो कवितामा छ ओटा पूर्णविराम रहेको र यसैको आधारमा लामा छोटो आयामका छ ओटा अनुच्छेद र पैतीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । दुई पङ्क्ति देखि तेह्र पङ्क्तिका योजनामा यस कविताको अनुच्छेद विस्तार भएको छ । पङ्क्ति दुई शब्ददेखि पाँचशब्द सम्म फैलिएको छ ।

यो कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषा शैलीको प्रयोग भएको छ साथै जस्तो भाषा छ त्यसै प्रकारको शैली निर्माण कविताको प्राप्ति बनेको छ । भाषिक स्रोतका दृष्टिले आगन्तुक, तत्सम र ठेट शब्दको प्रयोगबाट कविताको भाव व्यञ्जनामा सामार्थ्य रहेको पाइन्छ र यसमा कविले तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग मार्फत आफ्ना भनाइहरू व्यक्त गरेका छन् । प्रस्तुत कवितामा तिनदशक सम्म पञ्चायती व्यवस्थाले जनताको इच्छा र चाहनाको रूपमा रहेको प्रजातन्त्रलाई निषेध गरेको र २०४६ सालमा जनताको त्याग र बलिदानबाट आएको प्रजातन्त्र पनि सीमित व्यक्तिहरूको स्वार्थ र सत्ता प्राप्तिको लुछाचुँडीले गर्दा देशवासीले त्यसको अनुभूत गर्न नपाउनुको साथै सर्वसाधारण जनताको घरदैलोमा प्रजातन्त्र पुग्न नसकेको हुँदा जनता प्रजातन्त्रप्रति अनभिज्ञ रहेको भाव कारुणिक शैलीमा व्यक्त गरेका छन् ।

यहाँ कविले समसामयिक, निजी विम्व र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । 'टुडिखेल' संसद भवनको प्रतीकको रूपमा 'पर्खाल' पञ्चायती व्यवस्थाको विम्वको रूपमा आएको पाइन्छ । यसकविताको तेस्रो अनुच्छेदको प्रथम र दोस्रो पङ्क्तिमा उत्प्रेक्षा, अलङ्कारको आएको देखिन्छ ।

४.१.४ म यो शहरभिन्न मेरो गाउँ भेट्दिन

यस कवितामा स्वाभिमान र सभ्य बन्ने भ्रम र लहडमा दुवैथोक गुमाएर अनावश्यक भिडभाडहरूमा दिनदाहडै सस्तो अश्लीलता र महङ्गा सभ्यता बेसाएर विचारका अस्पष्टताले ग्रस्त यो शहर गाउँसँग तुलना गर्न लायक नभएको विचार व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षकको सार्थकता देखिन्छ ।

लामा छोटो आयामका छ अनुच्छेद उत्पत्तास पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको छ । अनुच्छेदमा पाँचदेखि दश पङ्क्ति रहेको र पङ्क्ति दुई शब्ददेखि आठशब्दसम्म फैलिएको पाइन्छ । यस कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्य लय भएतापनि माध्य प्रास अन्त्यानुप्रास र अनुच्छेदहरूमा उही शब्द वर्णको आवृत्तिको कारण गेयात्मक बन्न पुगेको देखिन्छ । जस्तै :-

दिनभर साहूको खेतवारीमा पसिना चुहाएर
आफ्नै छिना र घनहरूमा समय गुमाएर

पाँचौ अनुच्छेद, पृ.१० ।

प्रस्तुत कवितामा सटर, चर्च, गुम्बा रेस्टुरेन्ट, डिस्को, टि.भी., टामीगन, कल जस्ता प्रचलित अंग्रेजी आगन्तुक शब्द, स्वाभिमान, दीर्घायु, मृगतृष्णा वाल्मीकि तत्सम शब्द र अन्य ठेट शब्दहरूको प्रयोगले कविताको भाषा शैली सरल बनेको छ । कविले प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दु मार्फत आफ्ना भावनाहरूलाई यसरी व्यक्त गरेको देखिन्छ :-

म अलपत्रे सडकतिर खोज्छु
कोलाहलले बलात्कार गरेको मध्याह्न

पाँचौ अनुच्छेद , पृ. ९ ।

यस कवितामा कविले गाउँ र शहरको भेद देखाउँदै शहरिया स्वार्थी प्रवृत्ति, व्यक्तिवादी र पैसामुखी चिन्तन, भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति मानवीय मूल्य मान्यताको ह्रास, शहरको अश्लील र छाडा प्रवृत्तिको विकृत पक्षलाई देखाउँदै स्वच्छ, परिश्रमी र सहयोगी परिवेशको चित्रण गर्नु नै यस कविताको केन्द्रीय कथ्य रहेको छ ।

यसमा कविले निजी, समसामयिक, आर्थिक, विम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । 'छिना र घन' परिश्रमी र 'धमिरो' भ्रष्टाचारी सामन्तको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा पहिलो अनुच्छेदको छैठौँ पङ्क्तिको 'टामीगन बोकेर फुस्स हाँसेकी युवती भैं' कथ्यमा उपमा अलङ्कार प्रयोग भएको पाइन्छ ।

४.१.५ भो अब दुखे जस्तो नगरे हुन्छ

देशमा सङ्कट र समस्या आइपरेको बेला इमान्दार र सच्चा नागरिक भएर देश र जनताको हितमा काम गर्नुको सट्टा सत्ता प्राप्तिको लागि नाङ्गेभार भएर एक आपसमा लडेको प्रति आक्रोस व्यक्त गर्दै जनतालाई भाषण र नाराको भ्रममा मात्र सीमित राख्ने शासकप्रति व्यङ्ग्य गरेको हुँदा विषय र शीर्षक बीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ ।

तिनओटा पूर्णविरामलाई आधार मान्दा प्रस्तुत कवितामा तिन अनुच्छेद एकचालिस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको छ । अनुच्छेदमा सातपङ्क्तिदेखि उन्नाईस पङ्क्तिका लामा पङ्क्ति विधान रहेको पाइन्छ । पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि पाँच शब्दसम्मको योजना रहेको छ ।

लय कविताको महत्त्वपूर्ण तत्व अन्तर्गत पर्दछ । सङ्गीतमा ताल भए जस्तै कविताको भित्री सङ्गीत लयलाई भनिन्छ (गैरे, २०५९:३३४) । यस कवितामा गद्य विधान रहेको छ । गद्य लय विधान रहेता पनि माध्यप्रास अन्त्यानुप्रासको साथै कोमल शब्दावलीको प्रयोग स्वर र व्यञ्जनवर्ण र उही शब्दको आवृत्तिले कविता श्रुतिरम्य र लयात्मक बन्न पुगेको छ :-

मेरो देशको इतिहासको दन्त्यकथा पढ्छु

मेरो देशको दन्त्यकथाको इतिहास पढ्छु

पहिलो अनुच्छेद, पृ. ११ ।

कविले तत्कालीन परिवेश र विषयलाई आधार बनाएर कविता रचेको हुँदा उनको कवितामा क्रान्ति, शहीद, कुर्ची, प्रजातन्त्र, कर्पु, नारा, जुलुस, युद्ध, भाषण जस्ता राजनीतिक शब्दावलीको बढी प्रयोग भएको देखिन्छ । डिउटी, न्यूमोर, स्किन जस्ता आगन्तुक, युग युद्ध, प्रजातन्त्र, शब्दकोश तत्सम अनि ठेट शब्दहरूको प्रयोगले भाषा र भाव बीच तादात्म्यता भएको हुँदा कविताको भाषा सरल बनेको छ । यस कवितामा तत्कालीन शासक वर्गहरूले शहीदको सम्मानमा चोट पुऱ्याएको, देशप्रति उत्तरदायी हुन नसकेको, देशमा सङ्कट आइपरेको समयमा राष्ट्र र जनताको हितमा काम गर्नु पर्नेमा असत्य, भ्रुट र छलपकटको भाषण गरेर जनतालाई भ्रममा राख्ने नेतृत्ववर्गबाट देश र जनताको कल्याण र हित नहुने भएको हुँदा अब राष्ट्रलाई हाँक्ने एक सच्चा युग पुरुषको खोजीमा जनता रहेको रोषपूर्ण अभिव्यक्तिको भाव यसको केन्द्रीय कथ्य रहन गएको देखिन्छ । यस कवितामा रानीतिक, क्रान्ति र समसामयिक बिम्ब र प्रतीकको प्रयोगले कविता शसक्त बनेको देखिन्छ ।

यस कविताको प्रथम अनुच्छेदको तेह्रौँ पङ्क्तिमा 'कुखुरे युद्ध' कथ्यमा श्लेश अलङ्कारको प्रयोग गरेर कवितालाई स्वभाविक बनाएको देखिन्छ ।

४.१.६ अन्तरपीडा

यस कवितामा भूपरिवेष्टित देशले भोग्नुपरेको पीडा र समस्याले कविको जीवनलाई पनि प्रभाव पारेको यथार्थलाई सूक्ष्म तरिकाले व्यङ्ग्य गरेको हुँदा शीर्षक र विषय बीच निकट सम्बन्ध रहेकाले शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा तिन अनुच्छेद र सोह्र पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि सात शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । पहिलो अनुच्छेदमा छ, दोस्रो र तेस्रो अनुच्छेदमा पाँच/पाँच पङ्क्ति रहेको देखिन्छ ।

यस कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । प्राय अनुच्छेदमा गाएको, भएको, गर्नुपर्ला, राख्नुपर्ला जस्ता अन्त्यानुप्रासीय ढाँचाले कविताको लय कर्णप्रिय बनेको देखिन्छ । अदृश्य, अन्तरपीडा, विश्व, घाइते जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द र ठेट शब्दहरूको प्रयोगले कविताको भाषा सरल र आत्मकथन शैली रहेको पाइन्छ ।

यस कवितामा कविले प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग मार्फत आफ्ना भावनाहरू व्यक्त गरेका छन् । कविले भूपरिवेष्टित भएको कारणबाट देशले भोग्नुपरेको आर्थिक सङ्कटको प्रभाव उनको जीवनका पनि परेको र कविले देशको पीडासँग आफ्नो मनको अन्तरपीडा तुलना गर्दै देशले भोगेको युगीन यथार्थलाई चित्रण गरेका छन् ।

४.१.७ एउटा अनुत्तरित प्रश्न

कविले जीवनमा अनेकौँ सुख र दुःखका उतार चढावको सामना गर्नुपरेको र त्यसो हुँदा हुँदै पनि जीवनलाई समृद्धिका आँखाले चिन्ने प्रयास गर्ने क्रममा एक प्रेमीले प्रेम गर्ने बहानामा पीडा मात्र दिएको आशय बिम्बात्मक र प्रतीकात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

यस कवितामा लामा छोटो आयामका नौ अनुच्छेद उनन्यचास पङ्क्तिमा यो कविताको संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्तिदेखि सोह्र पङ्क्तिसम्म विस्तार भएको पाइन्छ भने पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म फैलिएको पाइन्छ । यस कविताको भाषा आलङ्कारिक र शैली वर्णनात्मक प्रयोग भएको पाइन्छ । सूर्य, शून्य, प्रलय, पीडा

जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द, सुमेकर लेभी, हाइड्रोजन जस्ता आगन्तुक शब्द र ठेट नेपाली शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल सुबोध्य रहेको छ ।

यसको लयविधान गद्यात्मक अनुच्छेदमूलक रहेको छ । गद्यलय भएतापनि हरेक अनुच्छेदको ठाउँ ठाउँमा अन्त्यानुप्रास शैली अपनाएको हुँदा लयविधान रोचक हुन पुगेको छ । यस कवितामा प्रथम पुरुष कथन पद्धतिको प्रयोग गरिएको छ ।

जीवनको उकाली ओरालीमा सुख, दुःख र समस्याहरू आएका, ती समस्याका बावजुद पनि लक्ष्य प्राप्तिको लागि सङ्घर्ष गर्दै गर्दा एकजना प्रेमी छद्म भेष लिएर कविको जीवनसँग खेलबाड गरी पछि टाढा भएको कारण पीडा, दुःख, रोदनको भार सहेर बाँच्नु परेको कारुणिक भाव व्यक्त गरेका छन् । यहाँ 'गुरुत्व' प्रेमी र प्रेमिकाको एक अर्काको बीच नजिक रहेको बिम्बको रूपमा आएको छ भने 'सूर्य' प्रेमीको प्रतीकको रूपमा आएको छ ।

४.१.८ गुनासाहरू : आफैसँग

यो शीर्षक बिम्वात्मक रूपमा आएको छ । कविले जसरी ह्याङ्गरमा भुन्डिएको कपडा निष्प्राण हुन्छ । त्यसरी नै कविको जीवन पनि महत्वाकाङ्क्षाको ह्याङ्गरमा भुन्डिएर निरर्थक निरस जीवन जिउन बाध्य भएको र सार्थक जीवन जिउन नसकेको आशय व्यक्त भएको हुँदा विषय र शीर्षक बीच निकट सम्बन्ध भई शीर्षक सार्थक बनेको देखिन्छ ।

चौबीस पङ्क्ति र तिन अनुच्छेदमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा पङ्क्ति र शब्दको वितरणमा एकरूपता पाइँदैन । पङ्क्तिहरू दुई शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएका छन् । यो कविता गद्यलयमा रचिएको छ । गद्यलय भए तापनि, अन्त्यानुप्रास ढाँचा र उही शब्द र वर्णको आवृत्तिले लयलाई गेयात्मक बनाएको देखिन्छ । जस्तै :

पानी पर्छ म भिज्छु

घाम लाग्छ म डढ्छु

दोस्रो अनुच्छेद, पृ. १७ ।

प्रेम छोटाले क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडकको भूमिकामा कविताको भाषाशैली अपेक्षाकृत सुन्दर एवम् ती कविताहरूमा बौद्धिकता तथा कलात्मकताले सिंगारिएको पाइन्छ भनेर टिप्पणी गरेका छन् (प्रेम छोटा, २०५३ : भूमिका) । यस कविताको भाषा, बौद्धिक र तार्किक रहेको देखिन्छ । ह्याङ्गर, बटन, फगत जस्ता आगन्तुक शब्द शिशिर, अगम, आभाष, मृत्यु, आत्मसमर्पण जस्ता प्रचलित तत्सम शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल

र सहज बन्न पुगेको छ । यो कवितामा कविले आत्मालाप शैलीमा आफ्ना मनका भावनाहरूलाई प्रथम दृष्टिबिन्दु मार्फत व्यक्त गरेका छन् ।

शिशिर आउँछ, म चिसिन्छु

हुरी आउँछ, म डगमगिन्छु

दोस्रो अनुच्छेद, पृ.१७ ।

कविले आफूलाई ह्याङ्गरमा भुन्डाइएको कपडासँग तुलना गर्दै आफू अस्तित्वविहीन र निस्सार जीवन जिन्दगीको ह्याङ्गरमा भुन्डिएर बाँचेको र सार्थक र सङ्गतिमूलक जीवन जिउन नसकेको करुणभाव व्यक्त गरेका छन् ।

यस कवितामा 'ह्याङ्गर' मानवीय जीवनको मूल्यहीनताको प्रतीकको रूपमा र 'जीवनको रङ्ग फुस्किनुमा' विसङ्गत र निरर्थक जीवनको विम्बको रूपमा आएको छ ।

४.१.९ क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूल सडक

यस कविताको शीर्षक प्रतीकात्मक रूपमा आएको छ । कवितामा सांस्कृतिक र आर्थिक विसङ्गति र विकृति, मानवीय मूल्य मान्यताको ह्रास, घात प्रतिघात, राष्ट्र र राष्ट्रियता लगायत समग्र धरती नै क्षतिग्रस्त हुन पुगेको युगीन यथार्थलाई चित्रण गरेको हुँदा शीर्षक विषय बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहेको छ ।

यस कवितामा दिएका दुईओटा पूर्ण विरामलाई आधारमान्दा लामा दुई अनुच्छेद र बयालीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । पहिलो अनुच्छेदमा तेइस पङ्क्ति र दोस्रो अनुच्छेदमा उन्नाईस पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । यो कविता मुक्तलय ढाँचामा लेखिएको छ । मुक्त लय रहेता पनि माध्य, अन्त्यानुप्रास ढाँचा पङ्क्ति र अनुच्छेदमा उही वर्ण र शब्दको आवृत्तिले कवितामा नवीन लयको सिर्जना हुन पुगेको छ :-

दोस्रो मान्छेलाई अवरोध ठान्छ

तेस्रो मान्छेलाई खलनायक ठान्छ

पहिलो अनुच्छेद, पृ.१९ ।

यस कवितामा आन्दोलनकारी, जुलुस, मुठभेड, आन्दोलन जस्ता राजनीतिक शब्दावलीको प्रयोग हुनुको साथै ब्यानर, प्ले कार्डहरू, एक्सरे, इन्डोस्कोपी, हस्पिटल जस्ता

अंग्रेजी आगन्तुक शब्द, मृत्यु, अनन्त, आकाश, रक्तपात विक्षिप्त जस्ता प्रचलित तत्सम शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल बनेको छ ।

सामाजिक विसङ्गति विकृतिको चित्रण, नेपाली दाजुभाइ बीचको द्वन्द्व, होडवाजी, रक्तपातपूर्ण लडाइँ, घात-प्रतिघात साथै समग्र जीवन र जगत् राष्ट्र-राष्ट्रियता लगायत पृथ्वी नै क्षतिग्रस्त हुन पुगेको, विसङ्गत भाव नै यसको केन्द्रीय कथ्य रहेको छ ।

यस कवितामा कविले समसामयिक, निजी, राजनीतिक, ब्रह्माण्ड जस्ता विम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेर कवितालाई सम्प्रेष्य बनाएका छन् । प्रस्तुत कविताको दोस्रो अनुच्छेदको दशौं पङ्क्तिको 'विजेताभै चिच्याउने' कथ्यमा तुल्यता बुझाउने शब्द 'भै' आएको हुँदा उपमा अलङ्कारको प्रयोग गरेको पाइन्छ ।

४.१.१० युगधर्म : एउटा महान धर्म

आफ्नो योग्यता क्षमताले भन्दा पनि नाता र कृपाको भरमा आफ्नो स्थान बनाउने व्यक्तिहरू जति ठूलो पदमा पुगे पनि बुद्धिजीवी हुन नसक्ने आशय प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ । यो कविता पाँच अनुच्छेद तेतीस पङ्क्तिमा रचना भएको छ । पङ्क्तिमा तिन शब्ददेखि सात शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ ।

प्रस्तुत कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्यलय भए पनि अन्त्यानुप्रास शैली, अनुच्छेद र पङ्क्तिमा उही शब्द, वर्ण र पदावलीको बारम्बार आवृत्तिले कवितालाई गेयात्मक बनाएको छ ।

यस कविताको भाषाशैली वर्णनात्मक, प्रश्नात्मक र अन्तर नाटकीकरणको रूपमा आएको छ । शब्दकोश, युद्ध दुष्प्रयास, श्वास प्रश्वास जस्ता तत्सम शब्दहरू खुर्खुराइ रहेछन् डामिएका जस्ता ठेट शब्दको प्रयोगले भाषा शैली सरल र सुबोध्य बनेको पाइन्छ ।

यस कवितामा योग्य, सक्षम, इमान्दार र कर्तव्यनिष्ठ पढेलेखेको दक्ष व्यक्ति भए पनि अयोग्य ठहरिने चाकडी, चाप्लुसी नाताले र कृपाले भेटेका व्यक्तिले हरेक क्षेत्रमा मौका पाउनुको साथै योग्य ठहरिने विडम्बना विसङ्गति प्रति व्यङ्ग्य भाव प्रस्तुत गरेका छन् ।

यस कवितामा कविले 'धमिरा', राजनीतिज्ञ वा नेताको प्रतीक र 'गुनासाहरूले डामिएका जिन्दगीहरू' आजको मान्छेको विद्रूप विकृत पक्षको विम्बको रूपमा आएको पाइन्छ ।

यस कविताको दोस्रो अनुच्छेदको अन्तिम पङ्क्ति 'कीरा जस्तै कथ्यमा' र तेस्रो अनुच्छेदको पाँचौं पङ्क्तिमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग भएको पाइन्छ ।

४.१.११ म कविता लेख्न सकिदैन

देश सङ्कटपूर्ण आर्थिक अनुशासनहीनताले जर्जर भएको अवस्थामा, द्वन्द्वले विश्व थिलथिलिएको र मानवता, स्वतन्त्रताको गला निमोठिएको बेला नेपालीहरूले आफ्नो अस्तित्व र स्वाभिमान जोगाउन नसकेको समयमा कलाको नवीन सिर्जना हुन नसक्ने आशय प्रतीकात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक सार्थक सिद्ध छ ।

यो कविता छ अनुच्छेद पैतीस पङ्क्तिमा संरचना भएको छ । अनुच्छेदमा चार पङ्क्तिदेखि आठ पङ्क्तिसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । पङ्क्तिमा तिन शब्ददेखि सात शब्द रहेको देखिन्छ ।

यस कविताको लय विधान गद्य भए तापनि अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रासको ढाँचा, छोटो वाक्य, कोमल शब्दावलीको चयनका साथै हरेक अनुच्छेदको अन्तिम पङ्क्तिमा म कविता लेख्न सकिदैन भन्ने उक्तिले कवितामा नवीन लयको सिर्जना गरेको छ । पङ्क्तिहरूमा उही वर्ण र शब्दको आवृत्तिले भाव र भाषा बीच तादात्म्यता रहेको छ ।

प्रस्तुत कवितामा बम, हिरोसिमा, फेटा, ह्याट, फतवा आगन्तुक शब्द, युग, घाउ, पाखा, जल तत्सम, चौपारी, बुड - बुड, भट्टी जस्ता ठेट शब्दहरूको प्रयोगले कविताको भाषालाई सरल बनाएको छ । कविले युगीन विसङ्गति र विकृतिको उल्लेख गर्नुको साथै जुनसुकै ठाउँ वा क्षेत्रमा नैरश्य, निस्सारताले ढाकेको अवस्थामा कविता लेख्न साहित्य सिर्जना गर्न नसक्ने आशय करुण भावमा व्यक्त गरेका छन् । कविले समसामयिक विसङ्गति र विकृतिलाई प्रथम पुरुषको माध्यमबाट यसरी व्यक्त गर्दछन् :

हो यतिबेला

कुनै नयाँ शीर्षक कुनै नयाँ परिवेश जनाएर

म कविता लेख्न सकिदैन

म कविता लेख्न सकिदैन

अन्तिम अनुच्छेद, पृ. २४ ।

यस कवितामा 'घाउ' देशको पीडाको 'टेबल मुनि र माथि' अवैध आर्थिक लेनदेनको प्रतीक र 'मानवता लास बनेर' कथ्यमा मानवीय संवेदनहीनताको विम्बार्थको रूपमा आएको छ ।

४.१.१२ बीसौं शताब्दी : प्रत्येक मनको क्यानभासमा

बीसौं शताब्दीको वरपर आणविक शस्त्रास्त्रको बलले विश्व विजय बन्न खोज्ने शक्ति सम्पन्न राष्ट्रका कारण विश्वमा ठूलो सामरिक सङ्कट उत्पन्न भएको र ठूला शक्तिसम्पन्न राष्ट्रहरूको कारण कमजोर राष्ट्रको अस्तित्व सङ्कटमा परेको साथै भोकमरी खडेरी र गृहयुद्धका कारण विश्वमा देखा परेका युगीन जटिलतालाई व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषय बीच निकट सम्बन्ध देखिँदा शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

छ ओटा पूर्ण विरामलाई आधारमान्दा यस कवितामा छ अनुच्छेद सन्ताउन्न पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेद तिन पङ्क्तिदेखि अठार पङ्क्तिसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ ।

यो कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्यलय भए तापनि अनुच्छेद र पङ्क्तिमा अन्त्यानुसप्रास आयोजना तथा कतिपय पङ्क्तिमा शब्द र वर्णको आवृत्तिले कविता लयात्मक हुन पुगेको छ । यस कवितामा बीसौं शताब्दीको आसपासका विश्वमा देखा परेका समस्यालाई अभिधात्मक भाषा र वर्णनात्मक शैलीको माध्यमबाट कविले व्यक्त गरेका छन् । त्यसैगरी जीवन, आलोचित, विषाक्त, सूर्य जस्ता तत्सम लिटल ब्वाय, फ्याटमेन, पोष्टमार्टम, आगन्तुक र अन्य ठेट नेपाली शब्दहरूको प्रयोगको कारण भाषाशैली सरल बन्न पुगेको छ ।

यस कवितामा कवि प्रौढोक्ति कथन पद्धतिमार्फत समाज, देश र विश्वमा देखा परेका विकृति र विसङ्गतिलाई चित्रण गरेका छन् । कविले विसौं शताब्दीमा जापानको हिरोसिमा र नागासाकीमा घटाइएको मानव विरुद्धको विनाशकारी घटना, बहुराष्ट्रिय सेनाद्वारा इराकमाथि भएको आक्रमण, इथियोपिया र सोमालिया बीचको गृहयुद्ध र भोकमरीले पुऱ्याएको मानवीय क्षति रूस र चेचेनियाको युद्धले सिर्जना गरेको विषम परिस्थितिप्रति कविले चिन्ता व्यक्त गर्दै विज्ञानको सिर्जना र रचनाले मानवहित भन्दा विनाशतर्फ बढी सक्रिय भएको यथार्थको चित्रण करुण रसभावमा व्यक्त गरेका छन् ।

यहाँ समसामयिक निजी, विज्ञान, धार्मिक, आर्थिक विम्ब तथा प्रतीकको प्रयोग कविले कलात्मक रूपमा गरेका छन् । यस कवितामा तेस्रो अनुच्छेदको तेस्रो पङ्क्ति 'चाल हल्लाउँदै सौदामिनी भैं' कथ्यमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.१.१३ मनहरू

प्रस्तुत कविताको शीर्षक प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको छ । मनहरू मानवीय स्वभाव र व्यक्ति अनुसार फरक हुने भएतापनि वर्तमान अवस्थामा मानवीय हित भन्दा अहित गर्ने मनहरू बढी सक्रिय रहेको प्रति कविले चिन्ता व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषय बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहेकोले शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ । पन्ध्र पङ्क्ति रहेको यस कविता तिन अनुच्छेदमा संरचना भएको देखिन्छ र प्रत्येक अनुच्छेदमा पाँच/पाँच पङ्क्ति रहेका छन् । पङ्क्ति एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म फैलिएको पाइन्छ ।

यो कविता मुक्त लयमा रचना गरिएको छ । मुक्त लय भएतापनि कतिपय अनुच्छेदमा उही वर्ण र शब्दको आवृत्ति, पाँच/पाँच पङ्क्तिको प्रत्येक अनुच्छेदको ढाँचाले कवितामा विशेष लयको सिर्जना हुन पुगेको छ ।

यस कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषाको प्रयोग गरिएको छ र कतिपय अनुच्छेदको भाषा बौद्धिक र तार्किक पनि देखिन्छ । लिभर फ्लुक, टेपवर्म, ग्राभिटी जस्ता अंग्रेजी आगन्तुक शब्द, अन्तर, प्रतिष्ठा तत्सम शब्द र विज्ञान सम्मत भाषाको पनि प्रयोग भएको छ । मनहरू धेरै विचारका हुने र मानवको हितगर्ने भन्दा उसको विरुद्ध जुकाले जस्तै रगत चुस्ने महत्वाकाङ्क्षी लहडी मनहरू मानिसको वरपर भुमिरहने आजको वास्तविक परिवेशको यथार्थ चित्रण नै यस कविताको केन्द्रीय कथ्य हो । यसमा कविले निजी, समसामयिक, विज्ञान विम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेको पाइन्छ । 'टेपवर्म' शोषक र सामन्तको प्रतीक र 'स्याउ' निरीह मान्छेको विम्बको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.१.१४ काग, ब्वाँसो र समय

कागले परिश्रमले टिपेर ल्याएको हाड र मासुको टुक्रा परिश्रम विना नै ब्वाँसोको मुखमा पर्न गए जस्तै सोझा सिधा नेपाली जनताले परिश्रम गर्ने तर त्यसको फल भने फटाहा, धूर्त, जाली, शोषक र सामन्तले लिने कुरालाई काग-ब्वाँसोको माध्यमबाट प्रतीकात्मक रूपमा व्यक्त भएको हुँदा शीर्षक र विषय बीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ ।

यस कवितामा आठ अनुच्छेद उनन्यचास पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको छ । पङ्क्ति र अनुच्छेदको वितरणमा एकरूपता देखिँदैन । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्ति देखि पन्ध्र पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि सात शब्दसम्मको पङ्क्ति विधान योजना भेटिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा मुक्तलय विधान रहेको छ । मुक्तलय विधान रहे तापनि कतिपय अनुच्छेदमा शब्द, वाक्यको आवृत्ति, आध्य, माध्य र अन्त्यानुप्रास शैलीले कविता लयात्मक बनेको छ :-

अलिकति बाँच्ने सपना देख्ने

अलिकति हाँस्ने सपना देख्ने

तेस्रो अनुच्छेद, पृ. ३०

लक्ष्मण प्रसाद गौतमका अनुसार भावना, अनुभूति, घटना, विचार आदिलाई पाठक समक्ष प्रभावकारी रूपमा सम्प्रेषण गर्ने माध्यम नै भाषा हो । कविताको भाषा साङ्केतिक प्रतीकात्मक र व्याख्येय प्रकारको हुने भएकाले यो विशिष्ट हुन्छ (गौतम, २०६६ : ५२७) ।

यस कवितामा प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक भाषा शैलीको प्रयोग भएको पाइन्छ । वरदान अभ्यस्त, आकासिएको, दिग्भ्रमित तत्सम, मार्क्स, लिङ्कन, न्यूटन, ग्यालिलियो आगन्तुक शब्द र अन्य प्रचलित ठेट शब्दको प्रयोगले भाषालाई सरल र सम्प्रेष्य बनाएको छ ।

यसमा कविले तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर आफ्ना मनका भावनाहरू व्यक्त गरेका छन् । धूर्त शासकहरूले सोभा जनतालाई चिप्ला र गुलिया अर्थहीन कुरामा अल्मलाएर सधैं राज र मस्ती गर्ने, सिधा जनता जो परिश्रम र मिहिनेत गर्दछन् उनीहरूले त्यसको फल उपभोग गर्न नपाउने आशय करुण भावमा प्रस्तुत गरेका छन् । यहाँ 'मिठो गीत' जनतालाई भ्रममा पार्ने विम्बको रूपमा 'ब्वाँसो' धूर्त शासक, 'काग' सोभा जनताको प्रतीकको रूपमा आएका छन् ।

प्रस्तुत कवितामा रूपक र उपमा अलङ्कारको प्रयोग भएको पाइन्छ । तेस्रो अनुच्छेदको दोस्रो पङ्क्ति 'ब्यँभिएर भैं भान पारिरहेछ' कथ्यमा उपमा अलङ्कार र पहिलो अनुच्छेदमा हामीलाई काग नै भन्नु, उनीहरूलाई ब्वाँसो नै भन्नु र रूखलाई समय नै हो भन्नु रूपक अलङ्कारको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.१.१५ हामीहरूले आफ्नो-आफ्नो अनुहार हराएका छौं

चुनावी समयमा नेताहरूले कार्यकर्ताहरूलाई अनेक लोभ लालच र भ्रममा पार्ने, जनतालाई एक आपसमा लडाएर आफ्नो व्यक्तिगत स्वार्थ पूरा गर्ने तर जनता र देशको पिर मर्का र समस्या प्रति जिम्मेवार नहुने नेताहरूको धूर्त र छलकपटमा परेर जनताले आफ्नो पहिचान गुमाएको समसामयिक राजनीति विसङ्गति प्रति तिखो व्यङ्ग्य गरिएको हुँदा शीर्षक छनोट औचित्यपूर्ण देखिन्छ ।

चालिस पङ्क्ति रहेको यस कवितामा पूर्णविराम चिह्न देखिँदैन । कवितामा देखिएको अन्तरलाई आधारमान्दा यो तिन अनुच्छेद चालिस पङ्क्तिमा संरचना भएको छ । अनुच्छेदमा पाँच पङ्क्तिदेखि छब्बीस पङ्क्ति रहेका छन् । पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि सात शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । यस कविताको लय विधान गद्य रहेको र गद्यलय विधान रहे तापनि अन्त्यानुप्रासशैली, अनुच्छेदमा उही वर्ण, शब्दको बारम्बार आवृत्तिले लयलाई गेयात्मक बनाएको छ ।

यस कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषा शैलीको प्रयोग देखिन्छ । आवश्यकता अनुसार लामा छोटो पङ्क्तिको योजना साथै अनुहार, वाक्ययुद्ध, स्वाभिमान जस्ता तत्सम शब्द लगायत अन्य ठेट शब्दहरूको प्रयोग र वर्णनात्मक शैलीले भाषालाई सरल बनाएको छ । कविले चुनावको समयमा हुने राजनीतिक विकृति र विसङ्गति, अस्वच्छ प्रतिस्पर्धा र नेताहरूको स्वार्थी प्रवृत्तिको कारणले आजको मानव (हामी) ले आफ्नोपन, स्वाभिमान गुमाएर अर्थहीन, मूल्यहीन, जीवन जिउन बाध्य भएको र आफ्नो विवेकले चलन नसक्ने आजको अस्तित्व विहीन चरित्रप्रति दुःखद भाव व्यक्त गरेका छन् ।

यस कवितामा विविध विम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेको पाइन्छ । 'पार्टीका घोषणापत्रहरू' जनतालाई ढाँट्ने र भ्रममा पार्ने विम्बको रूपमा र 'पुरानो भोला' नेताहरूप्रतिको इमान्दारीको प्रतीकको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.१.१६ सभ्यता (?), सभ्यता(!) र सभ्यता (I)

समाजको विविध क्षेत्रमा देखापरेका अव्यवस्था, अराजकता अनैतिकता दुराचार शहरिया कुसंस्कृति लगायत यावत् विकृति विसङ्गति र गतिहीनता जस्ता भावलाई प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिएको हुँदा यो शीर्षक अर्थयुक्त देखिन्छ । यस कवितामा छ अनुच्छेद छयालीस पङ्क्तिमा यसको संरचना बनेको छ । तिन पङ्क्तिका

अनुच्छेददेखि बाह्य पङ्क्तिसम्मका अनुच्छेद रहेको पाइन्छ । पङ्क्तिविधानमा एक शब्ददेखि आठ शब्दसम्म विस्तार भएको छ । प्रस्तुत कविता मुक्त लय विधानमा रचना भएको छ । कतिपय अनुच्छेद र पङ्क्तिमा शब्द र वर्णको आवृत्तिले कवितामा नवीन लय सिर्जना हुन पुगेको छ । जस्तै :-

अलिकति भिसमिसे/मस्त निद्रालु मान्छेहरू

शान्त सडक र श्रुतिमधुर भालेका डाँकाहरू

तेस्रो अनुच्छेद, पृ.१६

यस कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषा र शैलीको प्रयोग भएको पाइन्छ । अनुच्छेदहरूमा देखिएको योजक, प्रश्नवाचक, अल्पविराम चिह्नले नवीनता थपेको छ । घाइते, निस्तब्ध, युग, निमेष, श्रुति तत्सम स्टेज, माइकल ज्याक्सन, म्याडोना आगन्तुक र अन्य ठेट शब्दहरूको प्रयोगले भाषा र शैलीलाई सरल र सम्प्रेष्य बनाएको छ । कविले 'ऊ' तृतीय पुरुष समाख्याताका माध्यमबाट आफ्ना अन्तर्मनका भावनाहरूलाई व्यक्त गरेका छन् ।

वर्तमान परिवेशमा आधुनिकताको नाममा भित्रिएको पाश्चात्य संस्कार र संस्कृतिको प्रभावको कारण नेपाली युवा युवतीमा आएको विकृति र विसङ्गतिप्रति व्यङ्ग्य भाव प्रस्तुत गरेका छन् । यहाँ 'भालेको डाँक' विहानीको सङ्केत, 'रक्स्याहा मान्छे', शहरिया गलत कुसंस्कृतिको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ । यस कविताको पहिलो अनुच्छेदको छैठौँ पङ्क्तिमा 'रक्स्याहा मान्छे भैं' कथ्यमा उपमा अलङ्कार आएको पाइन्छ ।

४.१.१७ काली, तँ यसरी नै बाँच्नु

यस कविताको शीर्षक सम्बोधनात्मक रूपमा आएको छ । कालीलाई सम्बोधन गरी तँ यसरी नै बाँच्नु भनी आग्रह गरिएको ढाँचामा शीर्षक चयन गरिएको छ । कालीको जीवन शैलीसँग युगीन विसङ्गतिहरूको चित्रण गरिएको छ । शीर्षक जति साङ्केतिक र विम्बात्मक छ कविताको विषयवस्तु त्यत्तिकै गहन प्रकृतिको छ । कविताको भावभूमि शीर्षककै परिधिमा फन्कोमारी काली तँ यसरी नै बाँच्नु सम्बोधनमा नै टुङ्गिएको हुँदा शीर्षकको सार्थकता प्रस्ट हुन्छ ।

यो कविता पचास पङ्क्ति चार अनुच्छेदमा संरचना भएको छ । अनुच्छेदमा वाक्य र शब्दको वितरणमा एकरूपता छैन । यो कविता मुक्तलयमा रचिएको छ । मुक्तलय भए

तापनि कवितामा माध्यप्रास, अन्त्यानुप्रास, उही शब्द र वर्णको बारम्बार आवृत्तिले लयलाई श्रुतिमधुर बनाएको पाइन्छ ।

यस कविताको भाषाशैली कतै सम्बोधन, कतै आत्मालाप, कतै प्रश्नात्मक त कतै इच्छात्मक हुँदै अगाडि बढेको पाइन्छ । गद्यलयमा रचिएको यो कविता आन्तरिक लय चेतना, कोमल वर्ण र शब्दहरूको चयनले झन रम्य बनेको छ । भाषिक स्रोतको दृष्टिले तत्सम, आगन्तुक भर्सा शब्दले कविताको भाषा उत्कृष्ट बनेको छ ।

कवितामा कविका भाव, विचार, अनुभूति, वस्तु आदिलाई पाठक सामु उपस्थित गर्ने तरिका नै दृष्टिबिन्दु हो (लुइटेल्, २०६२ : २३७) । प्रस्तुत कवितामा तृतीय पुरुष 'तँ'/काली को माध्यमबाट आफ्ना अनुभूतिहरू कविले व्यक्त गरेका छन् ।

कविले प्रकृतिपरक विषयवस्तु लिएर त्यसलाई मानवीकृत गर्दै कालीको जीवन गाथासँग आफ्नो आत्मकथा जोड्दै तत्कालीन शासक वर्ग र तिनका मातहतमा रहेका भ्रष्ट कर्मचारी योग्य र उत्कृष्ट भनेर चिनिने तर सक्षम, असल व्यक्ति पछि पर्ने साथै नेता र हाकिमका आसेपासेहरूले अवसर प्राप्त गर्ने प्रवृत्तिको व्यङ्ग्यात्मक शैलीमा करुणभाव व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा कविले कुर्सी, नेत्रलाल, कर्णकान्त, बैशाखी जस्ता निजी र समसामयिक बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् ।

४.१.१८ एउटा युगलाई अर्को युग कोरल्ल दिनुपर्छ

यस कवितामा शीर्षक व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको छ । समय र युग परिवर्तनशील छ । समय सापेक्ष हरेक चिजहरू परिवर्तन हुँदै जान्छन् भन्दै विभिन्न समयमा देशमा भएका राजनीतिक परिवर्तनलाई सङ्केत गर्न खोजिएकोले शीर्षक र विषय बीच निकट सम्बन्ध छ ।

पैतीस पङ्क्ति छ अनुच्छेदमा यस कविताको संरचना देखिन्छ । अनुच्छेद र पङ्क्ति वितरणमा कुनै एकरूपता भएको पाइँदैन । दुई पङ्क्तिका अनुच्छेददेखि चौध पङ्क्तिसम्म र पङ्क्तिमा एकशब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ ।

यस कविताको भाषा व्यङ्ग्यात्मक प्रकृतिको छ । लामा अनुच्छेददेखि छोटो अनुच्छेद रहेको यस कवितामा वर्णनात्मक शैलीको प्रयोग देखिन्छ । युग, नवजात, वात्सल्य, शिशु प्रचलित तत्सम शब्दको बहुल प्रयोगको साथै आगन्तुक र ठेट शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल सम्प्रेष्य बनेको छ ।

समय परिवर्तनशील छ तर समाजमा परिवर्तन नचाहने तत्त्व यथास्थितिवादीहरू र समय सापेक्ष परिवर्तन चाहने बीच द्वन्द्व हुने र अन्त्यमा यथास्थितिवादीहरू परिवर्तनका पक्षधरसँग आत्मसमर्पण गर्न पुग्छन् भन्ने आशय व्यक्त गरेका छन् ।

यस कवितामा शिशु बिम्ब, निजी, राजनितिक र समसामयिक बिम्बको प्रयोग भएको पाइन्छ । 'रासलीला' यौन सम्पर्कको बिम्बको रूपमा र 'भ्रूणहत्या' प्रजातन्त्र माथिको आक्रमणको प्रतीकको रूपमा आएको देखिन्छ । गद्यलय विधान रहेको यस कवितामा कतिपय अनुच्छेदमा माध्य र अन्त्यानुप्रासको ढाँचा र पङ्क्तिमा उही शब्द र पदावलीको आवृत्तिले लयलाई श्रुतिमधुर बनाएको छ ।

४.१.१९ ग्यालिलियोको दूरबिन मौन छ

प्रस्तुत कवितामा देशमा चरम गरिबी, अभाव, विपन्नता, अनिकाल, आर्थिक दरिद्रता, भोकमरी र खडेरीले आक्रान्त बनेको विषम परिस्थितिमा, नेताहरूमा भने संस्कारहीन मूल्यहीन जनउत्तरदायित्वरहित राजनीतिक अवस्था बढ्दै गएको आशयलाई व्यङ्ग्यात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षकको सार्थकता प्रस्ट हुन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा लामा, छोटा र मझौला आयामका तिन अनुच्छेद, तीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको पाइन्छ । एकशब्द देखि सात शब्दको पङ्क्ति विधान रहेको छ । प्रस्तुत कवितामा गद्यलय विधान रहेको छ । गद्यलय रहेपनि हरेक अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास, ढाँचा र पङ्क्ति तथा अनुच्छेदमा उही शब्द, वर्ण र पदावलीको बारम्बार आवृत्तिले लयमा नवीनता थपेको छ । यस कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषाको प्रयोग देखिन्छ । त्यसैगरी ग्लोब, सुडान, एड, सेलेक्सन जस्ता प्रचलित अंग्रेजी आगन्तुक अभियान, दूरबिन, युद्ध तत्सम र ठेट शब्दको प्रयोगले कविता भाषालाई स्वभाविक र सरल बनाएको छ ।

'म' समख्याता रहेको यस कवितामा कविले प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर देशको समसामयिक विकृति र विसङ्गतिको चित्रण गरेका छन् । कविले 'डढेका अनुहार' आर्थिक सङ्कटले ग्रस्त जीवनको बिम्बको रूपमा "बबगोल्डेफ" सङ्कट र दुःखबाट मुक्ति दिने दाताको प्रतीकको रूपमा देखाएका छन् । यस कविताको दोस्रो अनुच्छेदको पाँचौं पङ्क्तिमा 'जनाए भैं' कथ्यमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.१.२० एउटा यस्तो संविधान

प्रजातन्त्रको पुनर्स्थापना र संविधानको निर्माण पश्चात् देशमा राजनीतिक सुधार हुन नसकेको, यथास्थिति प्रवृत्ति कायमै रहेको, राज्य सञ्चालनमा अव्यवस्था, देशको नियम कानून शासकहरूबाट पालना नभएको, सर्वसाधारण जनताले चरम यातना र शोषण एवम् पीडा भोग्नु परेको युगीन यथार्थलाई भरियाको माध्यमबाट व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिएको हुँदा शीर्षक उपयुक्त रहेको छ ।

यो कवितामा पाँच अनुच्छेद अठ्चालीस पङ्क्तिमा रचना भएको छ । पाँच पङ्क्तिका अनुच्छेददेखि बाईस पङ्क्तिका अनुच्छेद र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । यसको लय विधान गद्य रहेको भए पनि प्रत्येक अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास शैली, पङ्क्तिमा उही शब्द वर्ण र वाक्यको आवृत्ति, भाव र भाषा बीच तादात्म्य रहेको हुँदा कवितामा अन्तरलयको सिर्जना हुन पुगेको देखिन्छ ।

व्यङ्ग्यात्मक भाषाको प्रयोग, छोटो र खण्डित वाक्य गठन, प्रदेशी, विदेशी, जीवन, आर्यघाट जस्ता तत्सम शब्द साथै ठेट शब्दहरूको प्रयोगले भाषा सरल र सहज बनेको छ । कविले 'ऊ' तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दु मार्फत समसामयिक राजनीतिक विकृति र विसङ्गति प्रस्तुत गरेका छन् । यस कवितामा नेपाली जनताको जीवनमा गरिबीले निम्त्याएको दुःख र पीडाको चर्चा गरिएको छ भने, अर्कोतर्फ राज्य सञ्चालन गर्ने शासकहरूको स्वार्थी प्रवृत्ति र सत्ता तथा कुर्सीको लागि मरिहत्ते गर्ने दरिद्र चरित्र प्रति विकृति र विसङ्गतिपूर्ण भाव प्रस्तुत भएको छ । यस कवितामा कविले विभिन्न विम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । 'विदशी पोको' अवैध धन सम्पत्ति, 'सेतो र कालो' असहमति र विमतिको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ ।

प्रस्तुत कविताको दोस्रो अनुच्छेदको तेस्रो पङ्क्तिको 'माग र पूर्तिका रेखाहरू जस्तै' कथ्यमा उपमा अलङ्कार प्रयोग भएको पाइन्छ ।

४.१.२१ स्वाभिमानको चिया साटिएको छ

पूर्वाहरूले धानीराखेको विरासत, स्वाभिमान, मौलिकपन र नेपाली पहिचानलाई यो देशको राज्य सञ्चालन गर्ने ठेकदार र बुभुक्कड वर्गले चियापसलमा चियाको चुस्कीको भरमा स्वाभिमान बेचेको आशय व्यङ्ग्यात्मक रूपमा व्यक्त गरेकोले शीर्षक र विषयवस्तु बीच अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहेको हुँदा शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

यो कविता लामा छोट्टा तिनओटा अनुच्छेद र पचास पङ्क्तिमा रचना भएको छ । अनुच्छेदमा दश पङ्क्तिदेखि उन्नाईस पङ्क्ति र पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि सात शब्दसम्म फैलिएको पाइन्छ । मुक्तलय विधान रहेको प्रस्तुत कवितामा अन्त्यानुप्रास, पङ्क्तिमा वर्ण र शब्दको आवृत्तिले कवितामा अन्तरलयको सिर्जना हुन पुगेको छ । जस्तै :

उनीहरू विज्ञ भएर पनि अनभिज्ञ छन्
कोही अनभिज्ञ भएर पनि विज्ञ छन्

तेस्रो अनुच्छेद, पृ. ४९ ।

यस कविताको भाषा गद्यात्मक र शैली वर्णनात्मक रहेको छ । पूर्ण विराम, अल्पविराम, योजक चिह्न, उद्गार चिह्नको प्रयोगले भाषालाई छरितो बनाएको पाइन्छ, साथै आगन्तुक तत्सम र ठेट शब्दको प्रयोगले भावपक्ष सुदृढ, सबल र सरल बनेको छ । कविले प्रथम दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर आफ्ना भावनाहरू व्यक्त गरेको पाइन्छ ।

पूर्वाहरूले धानी राखेको नेपालीहरूको स्वाभिमान, पहिचान, अस्तित्व र मौलिकपन विदेशीको डलरमा जो आफूलाई विद्वान, बुझ्कड ठान्दछन् उनीहरूबाटै चियाको भट्टीमा चिया बेचिए जस्तो नेपालीको स्वाभिमान बेचिएकोमा करुणभावमा चिन्ता व्यक्त गरेका छन् ।

यस कवितामा 'कोक्रो' स्वतन्त्रता विरुद्धको प्रतीक, 'डाँफे हराउनु' देशको स्वाभिमान हराउनु, 'जुनेली नकराएको', विदेशी हस्तक्षेप विरुद्ध शासकहरू नबोल्नु बिम्ब र प्रतीकको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.१.२२ आमोद थिग्रिएका तालहरू

नेपालका कतिपय राजनीतिक पार्टीहरू तुलनात्मक रूपमा अन्य पार्टी भन्दा राम्रो असल कार्यले गर्दा जनताको माझ स्थापित भई लोकप्रिय भएका छन् । अर्कोतिर बाँकी अन्य पार्टीहरू शोषकीय मनोवृत्ति, सत्तालोलुपता र भोगविलासी प्रवृत्तिहरूको कारण उनीहरूको अस्तित्व जनताको माझबाट हराएर गएको यथार्थलाई प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक रूपमा व्यक्त भएको हुँदा शीर्षक सार्थक छ ।

प्रस्तुत कवितामा कविता पङ्क्तिमा आएको अन्तरलाई आधार मान्दा तिन अनुच्छेद सताईस पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको पाइन्छ । अनुच्छेदमा पाँच पङ्क्तिदेखि तेह्रपङ्क्ति र पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि सात शब्दसम्म फैलिएको पाइन्छ ।

यस कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक भाषा-शैलीको प्रयोगका साथै प्रचलित तत्सम शब्दहरूको प्रयोगले भाषालाई सरल सहज बनाएको पाइन्छ । यस कवितामा कविले तृतीय पुरुष दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरेर आफ्ना भावनाहरू प्रस्तुत गरेका छन् ।

यहाँ नेपालका राजनीतिक पार्टीहरूलाई घोडा र राजनीतिक पार्टीले जनताका माझ स्थापित र लोकप्रिय हुन गरेको सङ्घर्षलाई आमोद को उपमा दिएका छन् , जसअनुरूप एकाध पार्टी बाहेक अधिकांश राजनीतिक दलहरू अनैतिक, भ्रष्टाचार भोगविलासी, सत्ताप्राप्तिको खिचातानी र खलनायक चरित्र र उनीहरूकै अदूरदर्शी राजनीति गतिविधिका कारणबाट नेपाली जनताबाट तिरस्कृत र बहिस्कृत भएर उनीहरूको अस्तित्व सङ्कटमा परेर राजनीतिबाटै पलायन भएको यथार्थलाई प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक रूपमा व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा 'घोडाले' नेपाली राजनीतिक दलको प्रतीक र 'आमोद'ले पार्टीले आफ्नो अस्तित्व जोगाउन गरेको सङ्घर्षको बिम्बको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.१.२३ आमा माग्ने भाँडो भएकी छिन्

यस कवितामा युगीन शासन व्यवस्थाले नेपाली समाज, देश र जनतालाई सन्तुष्टि दिन नसकेको भाव व्यक्त गर्दै शासकहरूले राज्य सञ्चालन गर्दा नेपाली आमाको अस्मितालाई विदशी सामु बन्धक राखी आफ्नो स्वार्थ पूरा गर्न माग्ने भाँडो बनाएको विषय व्यङ्ग्यात्मक रूपमा व्यक्त भएको हुँदा शीर्षक र विषय बीच घनिष्ठ सम्बन्ध देखिन्छ ।

यस कवितामा चार अनुच्छेद उनासी पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको छ । अनुच्छेद छ पङ्क्तिदेखि तेत्तिस पङ्क्तिसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि सातशब्द रहेको, पङ्क्ति र अनुच्छेदको वितरणमा एकरूपता देखिँदैन । कवितामा गद्यलय भए तापनि आद्य, माध्य र अन्त्यानुप्रासले लयलाई यसरी लयात्मक बनाएको पाइन्छ :-

छोरा-छोरीहरू कोही गाउँमा बस्थे

छोरा-छोरीहरू कोही शहरमा बस्थे

आमा गाउँमा पनि बस्थिन्/शहरमा पनि बस्थिन्

पहिलो अनुच्छेद,पृ.५१

यस कवितामा अभिधात्मक भाषाको प्रयोगको साथ-साथै साङ्केतिक, सौन्दर्यमूलक र आलङ्कारिक भाषाशैली,तत्सम ठेट शब्दहरूको प्रयोगले भाषालाई सरल र सम्प्रेष्य

बनाएको छ । कविले यस कवितामा तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेका छन् । नेपालको विभिन्न कालखण्डमा शासन गर्ने शासकहरू (राणा, पञ्च, बहुलवादी) ले आफ्नो अभीष्ट स्वार्थ पूरा गर्न नेपाल आमा (राष्ट्र) लाई पटक-पटक विदेशीको सामु मार्गने भाँडोको रूपमा प्रयोग गरेको तितो यथार्थलाई करुणभावमा व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा कविले राजनीतिक र निजी तथा समसामयिक बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग कलात्मक रूपमा प्रयोग गरेका छन् ।

प्रस्तुत कविताको पहिलो अनुच्छेदको 'आँशु कोशी बन्थ्यो र बग्थ्यो' कथ्यमा बन्थ्यो र बग्थ्यो मा दोहोरिएको 'यो' वर्णले वृत्यानुप्रास अलङ्कारको प्रयोग भएको देखाउछ ।

४.१.२४ तिन दिन जिन्दगीका

प्रस्तुत कविताको शीर्षक बिम्बात्मक रूपमा आएको छ । कविले समग्र जीवनलाई तिन दिन (बाल्य ,यौवन र प्रौढ) मानेर सूक्ष्म र गहन विश्लेषण गरेको हुँदा कविताको शीर्षक र विषय बीच भावनात्मक सम्बन्ध रहेकोले शीर्षक अर्थपूर्ण देखिन्छ ।

तिनओटा पूर्ण विरामलाई आधारमान्दा यो कविता तिन अनुच्छेद पच्चीस पङ्क्तिमा संरचना भएको पाइन्छ । अनुच्छेदमा छ पङ्क्तिदेखि दश पङ्क्ति र पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि छ शब्दसम्म फैलिएको देखिन्छ ।

यसको लय विधान गद्य रहेको छ, तर प्रत्येक अनुच्छेदको अन्तिम पङ्क्तिमा भइरहेको छ, चम्किरहेको छ, र चलिरहेछ जस्ता अनुप्रासले अन्तर्लयको सिर्जना गरेको भेटिन्छ । कविले 'म' पात्र प्रथम पुरुषको माध्यमबाट आफ्ना अनुभूतिहरू व्यक्त गरेको पाइन्छ । कविले जीवनका तिन दिन मध्ये पहिलो, दोस्रो र तेस्रो क्रमशः बाल्यकाल, यौवन र प्रौढ अवस्थालाई मान्दै बाल्यजीवन सङ्घर्षमय, यौवन अवस्था महत्वाकाङ्क्षी र प्रतिष्ठित जीवनको चाहना र प्रौढ अवस्थाको जीवन मृत्युसंगको सङ्घर्षमा बित्ने करुणभाव व्यक्त गरेका छन् ।

प्रस्तुत कविताको भाषा सरल छ साथै प्रतिष्ठा, मृत्यु तत्सम, अखेटो, सुस्केरा, ठेस, ठेट शब्द, टुक-टुक द्वित्व शब्दको प्रयोगले भाषा शैली लयात्मक र उत्कृष्ट बन्न पुगेको छ । प्रस्तुत कवितामा 'ठाडो र कठोर उकाली' मानवीय जीवनको यात्राको जटिलता र कठिनताको बिम्बको रूपमा 'कुटेलौरी' जीवनको सहाराको प्रतीक, अखेटो, सङ्घर्षमय जीवनको उपलब्धिको सङ्केतको प्रतीकका रूपमा आएका छन् ।

४.१.२५ बहिनीलाई चिठी

प्रस्तुत कविताको शीर्षक प्रतीकात्मक र बिम्बात्मक रूपमा आएको छ । पुरुषको हैकमवादी प्रवृत्तिको कारण नारीहरूले आफ्नै घर परिवार, समाजबाट भोग्नुपरेका पीडा, यातना, शोषण, अन्याय र अत्याचारको चित्रण गर्दै अवसर पाएको खण्डमा नारी पनि पुरुष भन्दा कम शक्तिशाली छैनन् भन्दै नारी र पुरुषको समानताबाट मात्रै सार्थक र उपलब्धिमूलक जीवन प्राप्त हुने आशय व्यक्त भएको हुँदा शीर्षकको सार्थकता देखिन्छ । छ, ओटा पूर्ण विरामलाई आधारमान्दा यस कवितामा छ, अनुच्छेद पचहत्तर पङ्क्तिमा यसको रचना भएको र अन्तिममा दाजुले बहिनीको चिठीको जवाफ पढ्दै 'तिम्रो दाजु' ! भनी पत्र टुङ्ग्याएको पाइन्छ । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्तिदेखि पैतीस पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि आठ शब्दसम्म वितरण भएको यो कविता पचहत्तर पङ्क्तिमा रचना भएको छ ।

यसको लय विधान गद्य रहेता पनि हरेक अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास शैली पङ्क्ति र अनुच्छेदमा उही शब्द र वर्णको बारम्बार आवृत्तिको कारण पङ्क्ति अनुच्छेदका बीच तादात्म्यता भई नवीन लयको सिर्जना भएको छ । यस कवितामा अभिधात्मक भाषाको प्रयोग भएको देखिन्छ भने चिठी पत्रात्मक शैली अपनाइएको पाइन्छ । आत्मकथन, अन्तर नाटकीकृत र संवदात्मक शैली समेत अपनाएको हुँदा भाषा शैली सरल र रोचक भएको पाइन्छ साथै नाइटिङ्गेल, मेडमक्यूरी, तावेइ प्रचलित आगन्तुक अन्तः, आदिम, अस्मिता, वर्षिने तत्सम र अन्य ठेट शब्दहरूको प्रयोगले भाषाशैली उत्कृष्ट र सम्प्रेष्य बन्न पुगेको छ ।

पुरुषले महिलालाई गर्ने व्यवहार, हेर्ने दृष्टिकोण, असहाय, अबला, तल्लो स्तरको रूपमा रहेको र महिला भएकै कारण समाजले महिलामाथि विभेद गरेर मानवहित विपरीत कार्य गर्नुभन्दा महिलाले पनि समान अवसर पाएको खण्डमा पुरुष भन्दा कम नहुने आशय व्यक्त गर्दै दुवैको समन्वयबाट मात्रै सार्थक र उपलब्धिमूलक जीवन जिउन सक्ने विचार करुण भावमा व्यक्त गरेका छन् । यहाँ कविले निजी र समसामयिक बिम्ब र प्रतीकहरू प्रयोग गरेका छन् । 'चौकोस', पियानोको धुन, चेतनाको प्रतीक, 'बादलको टुक्रा' उत्पीडन नेपाली नारीको प्रतीक र 'चट्याड' पुरुषको हिंस्रक वृत्तिको प्रतीकको रूपमा आएको छ । प्रस्तुत कविताको तेस्रो अनुच्छेदको उनाइसौं पङ्क्तिको 'साविक भैं हुन्मुनिरहनेछन्- आकाशमा' कथ्यमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग देखिन्छ ।

४.१.२६ आक्रमण जारी छ

प्रस्तुत कवितामा शीर्षक प्रतीकात्मक र बिम्बात्मक रूपमा आएको छ । आफ्नो देशको विषम परिस्थितिको फाइदा उठाएर शक्ति सम्पन्न छिमेकी राष्ट्रहरूले गरेको वैदेशिक हस्तक्षेप र हेपाहा प्रवृत्तिलाई सङ्केत गर्न खोजिएको हुँदा शीर्षक र विषय बीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ । यस कविता लामा छोटो आयामका छ, अनुच्छेद बाउन्न पङ्क्तिमा संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा चार पङ्क्तिदेखि तेह्र पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । अनुच्छेद र पङ्क्ति वितरणमा कुनै एकरूपता देखिँदैन । यो कविता मुक्त लयमा रचना गरिएको भए तापनि पहिलो अनुच्छेदमा घरमा-घरमा, हुन्छ-हुन्छ, तेस्रो अनुच्छेदमा गरिरहेछ-दिइरहेछ, अन्तिम अनुच्छेदमा चपाइ रहेछन् -खोसि रहेछन् जस्ता अन्त्यानुप्रासीय ढाँचा र पङ्क्तिमा उही शब्द र उही वर्णको आवृत्तिले कवितामा अन्तर्लयको सिर्जना भएको छ ।

यस कवितामा प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ । रगत, सूर्य, दारुण, युग, खलित तत्सम, टेथिस, करेण्ट, आगन्तुक र ठेट शब्दहरूको प्रयोगले भाषाशैली सरल बनेको पाइन्छ । कविले देशको कमजोर परिवेश, सङ्कटमा रुमलिएको अवस्थालाई अवसरको रूपमा प्रयोग गर्दै विदेशीहरूले आफ्नो अभीष्ट स्वार्थ पूरा गर्न, हैकम जमाउन र देशको स्वतन्त्रता-अखण्डता माथि बेला बेलामा आक्रमण गर्ने गरेको तितो सत्यलाई करुणभावमा व्यक्त गरेका छन् । सर्जकको मानसपटलमा रहेको मानसिक तस्वीरलाई सम्मूर्तित बनाउने चित्रात्मक भाषा नै बिम्ब हो । प्रतीकको उद्देश्य भाव र विचारलाई साङ्केतिक गर्नु मात्र हो (गौतम, २०६० :१, ४४) । यस कवितामा 'धमिराको आक्रमण' विदेशीहरूको हेपाहा प्रवृत्तिको बिम्बको रूपमा 'उडुस र उपियाँ', शोषक सामन्तको प्रतीकको रूपमा आएका छन् ।

४.१.२७ बुद्ध देखियो/अमरसिंह भेटियो

नेपाल र नेपालीहरू बुद्ध जन्मेको देश वीर स्वाभिमानी अमरसिंहको देश भनेर विश्वमा जुन ख्याति र कृति थियो, हाल आएर हामीले बुद्धत्व, वीरत्वको ख्याति कायम राख्न नसकेको आशय व्यङ्ग्यात्मक रूपमा व्यक्त भएकोले शीर्षक र विषयवस्तु बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहेको हुँदा शीर्षक उपयुक्त छ । दुईओटा पूर्णविरामलाई आधारमान्दा यस कवितामा दुई अनुच्छेद सहित बाइस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा

चार पङ्क्तिदेखि सोह्र पङ्क्ति र पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि छ शब्दसम्म फैलिएको छ । गद्यलय वा मुक्तलय यस कविताको लय विधान रहेको छ । पहिलो र दोस्रो अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रासीय ढाँचा र शब्द तथा वाक्यको आवृत्तिले लयमा मधुरता थपेको पाइन्छ ।

गद्य भाषा शैलीको प्रयोग, अनुहार, प्रतिबिम्ब, स्वाभिमानी जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द तथा ठेट शब्दको प्रयोग करण र अकरण क्रियापदको प्रयोगले भाषा सरल बनेको छ । हामी नेपाली आफूलाई बुद्धको देश, अमरसिंहको देश भनेर गर्व गर्छौं तर हामीसँग न बुद्धको बुद्धत्व बाँकी छ न अमरसिंहको वीरत्व र स्वाभिमान नै । यी दुवैको ख्याति गुमेकोमा कविले गहिरो दुःख भाव व्यक्त गरेका छन् । यस कविताको तेस्रो अनुच्छेदको आठौं पङ्क्ति 'यतिबेला-जतिबेला' वाक्यमा बेला-बेला आवृत्ति भएको हुँदा वृत्यानुप्रास अलङ्कारको प्रयोग भएको पाइन्छ ।

४.१.२८ समकालीन कवि र कविता

ठूलो र महान् कवि बन्ने उच्च महत्वाकाङ्क्षा बोकेर लेखिएका समकालीन कविका कविताहरू जसमा बा, आमा, समाज र देशले बुझ्न नसक्ने शब्दजालका बक्ररेखाहरूले कविताको स्थान लिन नसक्ने व्यङ्ग्य भाव प्रस्तुत गरिएको हुँदा शीर्षक र भाव बीच घनिष्ठ सम्बन्ध भएकोले यो शीर्षक औचित्यपूर्ण देखिन्छ ।

प्रस्तुत कविता तिन अनुच्छेद चौतीस पङ्क्तिमा संरचित भएको छ । अनुच्छेदमा सात पङ्क्तिदेखि सोह्र पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि सात शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । अनुच्छेद र पङ्क्तिमा शब्द र वाक्य वितरणमा एकरूपता देखिँदैन । मुक्तलय विधान रहेको यस कवितामा अन्त्यानुप्रास शब्द र उही वर्णको बारम्बार आवृत्तिले कविता लयात्मक बनेको छ ।

प्रस्तुत कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषाको प्रयोग भएको छ । बुझ्नु हुन्न, बुझ्दैन, हुनुहुन्न, छैन जस्ता अकरण र द्वित्व शब्दको प्रयोगको साथै शब्द, कवि, मृगमरीचिका पृष्ठ जस्ता तत्सम र ठेट शब्दको प्रयोग भएको देखिन्छ, जसको कारण कविताको भाषालाई सम्प्रेष्य बनाएको पाइन्छ । कविले आफ्ना विचार वा भावलाई पाठक समक्ष प्रस्तुत गर्नका लागि जुन पद्धतिको प्रयोग गर्दछन् त्यो पद्धति वा तरिकालाई नै कथन पद्धति भनिन्छ (आचार्य, २०६३:१७) । यस कवितामा कविले प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेका छन् ।
जस्तै :-

लेख्दा लेख्दै म
लेख्नुको नाममा
मैले न्याय गरेको छु वा अन्याय ?

दोस्रो अनुच्छेद, पृ. ६८ ।

समाज र राष्ट्रलाई देश काल, परिस्थिति अनुकूल सही मार्गमा डोच्याउने शक्ति समकालीन कविका कवितामा हुनुपर्ने र उच्च महत्वाकाङ्क्षा सहित केवल विख्यात कवि हुन् मात्र लेखिएका कविताले सही अर्थमा समाज र देश बुझ्न नसक्ने हुँदा त्यो कविता हुन नसक्ने भाव व्यक्त गरेको पाइन्छ ।

यस कवितामा 'शब्दजालका बक्ररेखाले' समकालीन कविताको जटिलता र दुर्वोध्यताको विम्बको रूपमा 'गुणस्तरहीन कागज र कलमले' समकालीन कविताको स्तरलाई बुझाउने प्रतीकको रूपमा आएको छ । यस कविताको दोस्रो अनुच्छेदको तेस्रो पङ्क्ति 'मैले न्याय गरेको वा अन्याय' कथ्यमा सन्देह व्यक्त गरेको हुँदा यसमा सन्देह अलङ्कारको प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.१.२९ कलम, आवाज र आस्था

रचना, कृति आदिको मुख्य नाम वा टाउकोलाई शीर्षक भनिन्छ (नेपाल, २०५८ : १२४९) । युगीनका कुनै पनि शासन व्यवस्थाबाट नेपाली समाज र देशले सन्तुष्टि प्राप्त गर्न नसकेको स्वरहरू यस कवितामा मुखरित भएको र राणा, पञ्च र बहुदलवादीहरू समेतले जनताका विचार, आवाज र आस्थालाई टुटाउने, भाँच्ने काम गरेको हुँदा यो शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा चार अनुच्छेद र एकतीस पङ्क्ति रहेका छन् । यसको प्रथम र दोस्रो अनुच्छेदमा सात-सात पङ्क्ति तेस्रो र चौथोमा क्रमशः आठ र नौ पङ्क्ति योजना रहेको देखिन्छ । पङ्क्तिमा तिन शब्ददेखि सात शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ ।

यस कवितामा गद्यलय विधान रहेको छ । गद्यलय भए पनि हरेक अनुच्छेदको अन्त्यमा 'भाँचे' शब्दको बारम्बार आवृत्तिका साथै अन्य शब्द र वर्णको आवृत्तिले छुट्टै र नवीन लय विधानको सिर्जना हुन पुगेको देखिन्छ । यस कवितामा प्रतीकात्मक भाषा शैलीको प्रयोग र समसामयिक राजनीतिक विसङ्गति प्रति व्यङ्ग्य भावको प्रयोग देखिन्छ ।

प्रजातन्त्र, आवाज, अनसन, अभियोग तत्सम र सडक-सडक, गल्ली-गल्लीमा, वस्ती-वस्तीमा जस्ता द्वित्व शब्दको प्रयोगले भाषालाई सरल बनाएको छ ।

यस कवितामा कविले तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर समसामयिक विसङ्गतिप्रति व्यङ्ग्य गरेका छन् । जनताको विचार, आवाज र आस्थालाई इतिहासको विभिन्न कालखण्डमा शासन सञ्चालन गर्ने शासकहरू चाहे ती राणा, पञ्च र प्रजातन्त्रवादी नै किन नहुन् तिनीहरूले भाँच्ने प्रतिबन्धित गर्ने, रोक्ने र भत्काउने गरेको कार्यप्रति कविले गहिरो दुःख भाव व्यक्त गरेका छन् । प्रतीक शब्दले कुनै चिजलाई प्रतिनिधित्व गर्ने सजीव निर्जीव वस्तुलाई बुझाउँछ भने बिम्बले कुनै दृश्यचित्र वा वस्तुको वर्णन गरिएको शब्द चित्रलाई बुझाउँछ (शर्मा, २०६३ : ३१६, ३२७) । यस कवितामा 'पिजडाको सुगा' नेपाली जनता, 'कलम', विचारको प्रतीकका रूपमा आएको देखिन्छ भने 'ठूलो आवाजमा चिच्याउनु' वाकस्वतन्त्रताको मागको बिम्बको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.१.३० हिउँको मूर्ति पग्लिनु पछि एक दिन

शक्तिसम्पन्न राष्ट्रहरूको होडबाजीको कारण विश्वमा ठूलो सङ्कट उत्पन्न भएको र साना र कमजोर राष्ट्र ठूला राष्ट्रको छायामा परेर अस्तित्व विहीन बन्न पुगेको अवस्था र शक्तिसम्पन्न राष्ट्रलाई हिउँको मूर्तिको उपमा दिएको र यहाँ शीर्षक बिम्बात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक र विषय बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहेकोले शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ । चार अनुच्छेद छत्तीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा छ पङ्क्तिदेखि बाह्रपङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि सात शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । चारओटा पूर्णविराम, आवश्यकता अनुसार योजक चिह्नले कविताको संरचनालाई मूर्तता प्रदान गरेको पाइन्छ ।

गद्यलय विधान रहेको यो कविता गद्यलय भएतापनि उही शब्द र पदावलीको बारम्बार आवृत्ति र अन्त्यानुप्रासीय शैलीले कवितामा लयको सिर्जना भएको पाइन्छ :-

जुन पटक-पटक आकर्षण हुने गर्थे

जुन पटक पटक विकर्षण हुने गर्थे

दोस्रो अनुच्छेद, पृ. ७२ ।

प्रस्तुत कवितामा कविले प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन् । शून्य, पृथ्वी, आकर्षण पाण्डव, युग जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द, एस्ट्रोनोमिस्टहरू,

टावर, कन्सटेन्ट, जापान, कोरिया जस्ता आगन्तुक र ठेट भाषाको प्रयोगको साथै आत्मकथन शैलीको प्रयोग रहेको देखिन्छ । यस कवितामा 'म' समाख्यता रहेको प्रथमपुरुषको दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेको पाइन्छ ।

विश्व शक्ति र हतियारको होडबाजीले नराम्रोसँग थिलथिलिएको र शक्तिसम्पन्न राष्ट्रहरूले आफूभन्दा साना र कमजोर राष्ट्रमाथि विभिन्न बहानामा ती राष्ट्रहरूको र अस्मितामाथि हस्तक्षेप र सम्मानमा चोट पुऱ्याउने कार्य गरेको प्रति चिन्ता व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा 'बिरालो' शक्ति सम्पन्न राष्ट्रको प्रतीकको रूपमा र 'हिउँको मूर्ति' दिगो र स्थायी नहुने बिम्ब, 'माकुरे जाल' ठूला राष्ट्रले साना राष्ट्रलाई आफ्नो काबुमा राख्ने बिम्बको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.१.३१ गुञ्जिरहेछ मेरो बैँसको मध्याँठे

आफूले आदर र माया गरेको बैँसको अनुभव र अनुभूतिलाई नजिकबाट नियाल्दै यौवन अवस्थामा माया, प्रेम, घाउ, चोट, पीडा सपना, आकाङ्क्षा र असन्तुष्टिको समिश्रणबाट उनको बैँस गुञ्जिरहेको भए तापनि बैँसको आवेगलाई विवेकले नियन्त्रण गर्न सक्नु पर्दछ नत्र दुर्घटना हुन सक्छ भन्ने आशय व्यङ्ग्यात्मक र बिम्बात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक र विषयबीच निकट सम्बन्ध देखिएकोले शीर्षक उपयुक्त छ ।

तिनओटा पूर्णविरामलाई आधार मान्दा यस कवितामा तिन अनुच्छेद उनन्तीस पङ्क्तिमा यसको रचना विस्तार भएको पाइन्छ । अनुच्छेदमा दश पङ्क्तिदेखि चौध पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको छ । छोटो-छोटो वाक्य र पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको छ ।

यस कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्यलय रहेता पनि अन्त्यानुप्रास , पङ्क्ति र अनुच्छेदमा उही शब्द र वाक्यको आवृत्ति, मुक्तक र गजल शैलीको अनुच्छेद ढाँचाका कारण विषय र भावबीच तादात्म्यता रहनुको साथै अन्तरलयको सिर्जना हुन पुगेको देखिन्छ ।

मुक्तकशैलीको लयविधान :-

घरि घाउ बन्दै

घरि चोट बन्दै

गुञ्जिरहेछ मेरो बैँसको मध्याँठे !

गजलशैलीको लयविधान :-

बैस, जसलाई मैले खुब माया गरें

बैस, जसलाई मैले खुब आदर गरें

दोस्रो अनुच्छेद, पृ. ७४ ।

यस कवितामा प्रतीकात्मक र बिम्बात्मक भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ । अन्त्यानुप्रास, काव्यात्मक भाषा, गजल र मुक्तक शैलीले भाषालाई सरल र सहज बनाएको छ ।

कविले 'म' समाख्याता रहेको प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर बैसको अनुभूतिहरू व्यक्त गरेका छन् । कविले यौवन अवस्थामा आउने अनुभव र अनुभूतिलाई नियाल्दै बैस विवेकशील हुनुपर्ने, कलङ्कित हुनु नहुने र बैसको आवेगलाई नियन्त्रण गर्न सक्नुपर्छ नत्र बैस कलङ्कित हुनसक्छ भन्दै सचेत रहनुपर्ने भाव व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा 'बैस' यौवन अवस्थाको प्रतीक र 'खहरेजस्तो बैस' क्षणिक भाववेग वा वासानात्मक प्रेमको बिम्बको रूपमा आएको छ ।

४.१.३२ समुद्रका छालहरू र भाववेगहरू

समुद्रका छालसँग कविले आफ्ना अन्तर्मनका भावनाहरूलाई तुलना गर्दै छालहरू किनारा, पहरा चट्टानसँग ठोकिँदै बज्रँदै आफ्नो गन्तव्यमा पुग्न निरन्तर अगाडि बढिरहेको आशय व्यक्त गरेको हुँदा विषय शीर्षकको तादात्म्यता देखिएको हुँदा शीर्षक उपयुक्त छ ।

तिनओटा पूर्ण विरामलाई आधारमान्दा यस कवितामा लामा छोटो तिनओटा अनुच्छेद र तीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । मुक्त लयविधान रहेता पनि हरेक अनुच्छेदको अन्त्यमा डलहरू, आवेगहरू, कपडाहरू, धाडरहन्छन्-फर्कन्छन् जस्ता अन्त्यानुप्रास र उही वर्ण र शब्दको आवृत्तिले कवितामा लयको सिर्जना हुन गएको छ । यस कवितामा बिम्बात्मक र प्रतीकात्मक भाषाको प्रयोग भएको छ । आत्मकथन र वर्णनात्मक शैली तत्सम आगन्तुक र ठेट शब्दहरूको प्रयोग, गुटुमुटु, चुर्लुम्म जस्ता अनुकरणात्मक शब्दले भाषा र शैलीलाई आकर्षण र सरल बनाएको छ । यस कवितामा कविले प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर अन्तर्मनका भाववेगहरू प्रस्तुत गरेका छन् । कविले समुद्रका छालसँग आफ्ना भाववेगहरूलाई तुलना गर्दै छालहरू निरन्तर किनारामा पुगेर ठोकिँदै

निराश भएर फर्के पनि छालले आफ्नो यात्रा निरन्तर जारी राख्छ, त्यस्तै मानवको जीवनमा पनि सुख, दुःख, हर्ष, पीडा, चोट जस्ता अनुभूतिका भाववेगहरू आए पनि निराश नभइ निरन्तर आफ्ना लक्ष्यमा पुग्न यात्रा जारी राख्नु पर्ने करुण भाव प्रस्तुत गरेका छन् ।

४.१.३३ म, मालिक र अभाषिक खेतलाहरू

प्रस्तुत कवितामा शीर्षक प्रतीकात्मक रूपमा आएको देखिन्छ । राष्ट्र निर्माणको असारे रोपाइँमा सबै एकजुट भएर लाग्नुपर्ने यो देशका राष्ट्र नायकहरू भोगविलासमा मस्त रहेका र जनताहरू भट्टी र चियापसलमा मातिएर अमूल्य समय खेर फालेको प्रति कविले व्यङ्ग्य आक्रोश व्यक्त गरेको हुँदा विषय र शीर्षक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहेको हुँदा शीर्षक सार्थक छ ।

चारओटा पूर्णविरामलाई आधारमान्दा यो कविता चार अनुच्छेद अन्ठाउन्न पङ्क्तिमा संरचना भएको देखिन्छ । छ पङ्क्तिका अनुच्छेददेखि बीस पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि सात शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ ।

मुक्तलय यसको लयविधान रहेको छ । मुक्तलय भए तापनि दोस्रो अनुच्छेदमा सम्भरेर-सम्भरेर, खन्छ-खन्छ, जहानहरू-परिवारहरू, तेस्रो अनुच्छेदमा आउँछन्-आउँछन्, भरमा-खेतबारीमा जस्ता अन्त्यानुप्रास शैली र पङ्क्ति र अनुच्छेदमा उही शब्द र वर्णको आवृत्तिले सङ्गीतात्मक लयको सिर्जना भएको पाइन्छ । यस कवितामा प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक भाषाको प्रयोग र वर्णानात्मक शैलीको साथै अलङ्कारिक भाषाको प्रयोग पनि भेटिन्छ । वर्षा, ऋतु, सृष्टि, युद्ध, युवा तत्सम, निथुक्क अनुकरणात्मक, कार्टन आगन्तुक, हलो, भुन्टी, कोदाली, फाली, भट्टी जस्ता ठेट शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल बनेको छ । यस कवितामा 'म' समाख्याता रहेको प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर आफ्ना अनुभूतिहरू पोखेका छन् ।

राज्य सञ्चालन गर्ने नेताहरूलाई अयोग्य मालिकको उपमा दिँदै देशको विकास र निर्माण कार्यमा सबै एकजुट भएर काम गर्नुपर्नेमा शासकहरू सत्ता प्राप्ति र भत्ताको मोजमस्तिमा समय खेरफाल्ने देशका नागरिकहरू चियापसल र भट्टीमा रमाएर मात्तिने र आफ्नो देशको विकास निर्माणको लागि विदेशी राष्ट्रहरूलाई (खेतलाहरू) गुहार्नु पर्ने परनिर्भर रहनुपरेको तथ्यलाई उजागर गर्दै विदेशीहरूले हाम्रो देशको विकास र उन्नति गर्न भन्दा पनि सीप, पैसा कमाउन र निजी आनन्दको लागि काम गर्ने तितो यथार्थलाई चित्रण

गर्नु यसको केन्द्रीय कथ्य रहेको देखिन्छ । यहाँ 'खेतला' विदेशी राष्ट्र, 'मालिक' देशको शासकको प्रतीक रूपमा आएका छन् । 'हलो', 'कोदालो', 'फाली', परिश्रम र मिहिनेतको बिम्बको रूपमा आएका छन् ।

४.१.३४ सारांश

क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक कविता सङ्ग्रह भूपिनको २०५३ सालमा प्रकाशित भएको पहिलो पुस्तककार कृति हो । यस कृतिमा लामा छोटो र मध्यम आकारका ३३ ओटा फुटकर कविताहरू समावेश गरिएको ८० पृष्ठमा विस्तार भएको मझौला आकारको कृति हो । यी कविताहरू वि.सं.२०५१ देखि वि.सं.२०५३ साल भित्र रचना गरेको पाइन्छ । यी कविताहरूलाई संरचनागत रूपले हेर्दा घटीमा चार बढीमा छ अनुच्छेद रहेका छन् भने पङ्क्ति आयामका दृष्टिले छोटोमा दश-प्रन्धदेखि लामोमा उनसी पङ्क्तिसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । कविले यस कविताको विषयवस्तुको रूपमा सामाजिक, राजनीतिक विकृति, हासोन्मुख मानवीय चरित्र, सन्नास एवम् आतङ्कमय परिस्थितिको चित्रण, देशको आर्थिक, सास्कृतिक दूरवस्था, राजनीतिक व्यवस्थाले ल्याएको खराब प्रवृत्ति, भ्रष्टाचार र आर्थिक अनुशासनहीनता, राजनीतिक शासन व्यवस्थाप्रति असन्तुष्टि, राष्ट्रप्रेम शस्त्रास्त्रको होडबाजी, युद्धको होडबाजी त्यसले मानवमा पुऱ्याएको नोक्सान, भोकमरी खडेरी र अनिकालले पुऱ्याएको क्षति, सामाजिक विभेद प्रति आक्रोश व्यक्त गरेका छन् ।

यी कवितामा कला र भावभन्दा विचार पक्ष प्रबल रहेको छ । भाषागत रूपमा केही त्रुटिहरू पनि रहेको देखिन्छ । यो पहिलो प्रयास भएर पनि हुन सक्छ । यस कृतिका कविताहरूले सामाजिक र राजनीतिक विषयलाई आधार मानेको देखिन्छ । कविले प्रथम प्रयासमै सफल र सबल कृति दिएर नेपाली साहित्यलाई माथि उकास्न उनले पुऱ्याएको योगदानलाई उपलब्धि मूलक ठान्नु पर्ने हुन्छ ।

४.२ विषय प्रवेश : शब्दहरूको नेपथ्य कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

शब्दहरूको नेपथ्य कवि भूपिनको संयुक्त कविता सङ्ग्रह हो । यो कविता सङ्ग्रह वि.सं.२०५६ सालमा प्रकाशित भएको हो । यस कृतिमा पाँच जना युवा साहित्यकारका कविताहरू समावेश गरिएका छन् , जसमध्ये भूपिनका तेहओटा कविताहरू रहेका छन् । यी कवितामा कविले नयाँ सोच, नयाँ दृष्टिकोण र नयाँ अभिमतका साथ मन छुने

किसिमबाट प्रयोगात्मक तवरले आफ्ना भावहरू प्रस्तुत गरेका छन् । भूपिनले यस कृतिमा युगीन परिस्थिति, त्रास, जीवनको विसङ्गति र विकृत मानवीय मूल्यहीनताको चित्रणका साथै प्रेम, सामाजिक, राजनीतिक कुरीति आदी विविध विषयवस्तुको संयोजन गरी मानवीय अस्तित्वको खोजीका लागि नेपथ्यमा रहेका शब्दहरूलाई कविले आफ्नो सिर्जना मार्फत उजागर गरेका छन् । यस कृतिमा लामा छोटो र मध्यम आकारका तेह्र ओटा फुटकर कविताहरू समावेश भएको ११४ पृष्ठको मध्यम आकारको कृति हो । यस कृतिको सबैभन्दा लामो कविता *मान्छे, खोला र एक्युरिम* हो जसमा छपन्न पङ्क्ति (पृ.८०/८१) र छोटो कवितामा *अनुभूति-४* जसमा तेइस पङ्क्ति (पृ.८७) रहेका छन् । भूपिनको यस सङ्ग्रहमा समावेश गरिएका तेह्रओटा कविता मध्ये ६ ओटा कविताको शीर्षक मान्छेसँग जोडिएर आएको देखिन्छ । तसर्थ उनका कविताको केन्द्रविन्दु मान्छे रहेको र मान्छेलाई नै सर्वोपरि ठानी मानवीय अस्तित्वको खोजी गर्नु नै यी कविताको मूलमर्म रहेको देखिन्छ ।

४.२.१ नदीहरू मान्छेजस्ता हुँदैनन्-२

शीर्षक कविता कृतिको नामकरण मात्र नभई कृतिको सारभूत भाव विचारको सूचक, सङ्केत वा उद्घाटक समेत हो (त्रिपाठी, २०६०:१७) । प्रस्तुत कविताको शीर्षक व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको छ । नदीको प्रवृत्ति र स्वभावसँग मान्छेको स्वभाव तुलना गर्दै नदीसँग मानवले धेरै कुरा सिकेर आफ्नो जीवनमा लागु गर्नु पर्ने भाव व्यक्त गरिएको हुँदा शीर्षक र विषयवस्तु बीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ । यस कविताको पूर्ण विरामलाई आधार मानेर हेर्ने हो भने यो कवितामा एक अनुच्छेदमा संरचित भएको छ भने कविताको पङ्क्ति वितरणको अन्तरलाई हेर्ने हो भने चार अनुच्छेद एकतीस पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा चार पङ्क्तिदेखि एघार पङ्क्तिसम्म र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि पाँच शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ ।

पारसमणि भण्डारीका अनुसार कवितालाई साहित्यका अन्य विधाबाट अलग गराउने तत्व लय विधान नै हो । कविताका पङ्क्तिभिन्न र पङ्क्तिका अन्त्य-अन्त्यमा क्रमशः वृत्त्यानुप्रास एवम् अन्त्यानुप्रास मिलेमा कविताको लय अझ बढी मिठासयुक्त बन्दछ (भण्डारी, २०६८:७,९) । मुक्तलयको विधान रहेको यस कवितामा अन्त्यानुप्रासीय ढाँचा र हरेक अनुच्छेदमा उही वर्ण र शब्दको बारम्बार आवृत्तिले सङ्गीतात्मक लयको सिर्जना हुन पुगेको देखिन्छ । उदाहरण :

नदीहरू मूर्तिमा विश्वास गर्दै नन्
नदीहरू फूर्तिमा विश्वास गर्दै नन्

दोस्रो अनुच्छेद, पृ. ७५ ।

प्रस्तुत कविताको भाषा प्रतीकात्मक र बिम्बात्मक रूपमा आएको छ । साथै अकरण क्रियापदको प्रयोग नदी, अभिमान, विश्वास जस्ता प्रचलित तत्सम शब्दको प्रयोग, हरेक अनुच्छेदमा रहेको मध्य र अन्त्यानुप्रास शैलीले कविताको भाषाशैली सरल बन्न गएको छ । कविले 'मान्छे' समाख्याता (पात्र) तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग मार्फत आफ्ना विचार व्यक्त गरेको पाइन्छ । कवितामा नदीको निर्मल, स्वच्छ, सफा र सरल विचार तथा स्वभावसँग मानिसको कुटिल, छलछाम र विभेदकारी प्रवृत्तिसँग तुलना गर्दै मानिस भएर नदीको जस्तो भेदभावरहित स्वच्छ र सरल विचार हुनुपर्ने मानवतावादी भाव व्यक्त गरेको पाइन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा कविले प्रकृति, निजी र समसामयिक बिम्ब र प्रतीक प्रयोग गरेका छन् । 'नदीहरू' स्वच्छ र सरल विचारको प्रतीकको रूपमा आएका छन् भने 'नदीहरू मान्छेजस्ता बाङ्गा हुँदै नन्' कथ्यमा मानिसको अवसरवादी प्रवृत्तिको बिम्बको रूपमा आएको देखिन्छ । यस कवितामा पहिलो, दोस्रो, चौथो, सातौं र आठौं तथा अन्तिम अनुच्छेदमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग भएको पाइन्छ । जस्तै :-

नदीहरू
मान्छेले भै प्रार्थना गर्दै नन्
नदीहरू

पहिलो अनुच्छेदको, पृ. ७५ ।

'नदी' उपमेय 'मान्छे' उपमान 'भै' वाचक र 'प्रार्थना' धर्मको रूपमा आएको हुँदा यसमा उपमा अलङ्कार पर्न गएको छ ।

४.२.२ मान्छेको कथा

प्रस्तुत कवितामा शीर्षक प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको देखिन्छ । वर्तमान मान्छेमा देखिएको वैयक्तिक मनोवृत्तिको कारण मानिसमा मानवीय संवेदना र चेतना हराउँदै गएको कारण मान्छेको आँखाबाट दृष्टि, दिमागबाट विचार र विवेक गुमाएको युगीन मान्छेको समसामयिक विसङ्गतिको चित्रण गरेको हुँदा शीर्षक सार्थकता देखिन्छ ।

यस कवितामा पाँच अनुच्छेद र एकतीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा चार पङ्क्ति देखि आठ पङ्क्ति र पङ्क्तिमा तिन शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । यी कविता गद्य शैलीमा लेखिएको हुँदा यसको लयविधान गद्यात्मक अनुच्छेद मूलक रहेको छ । हरेक अनुच्छेदमा उही शब्द वर्ण र पदावलीको आवृत्तिका साथै पुराण-कुरान, स्लेट-स्टेइलस् पठिरहन्छन्, लेखिरहन्छन् जस्ता शब्दहरूको मध्यानुप्रास र अन्त्यानुप्रास तथा काव्यात्मक भाषाको प्रयोगले यसको लयविधानलाई गेयात्मक बनाएको पाइन्छ ।

कवितामा प्रतीकात्मक भाषा शैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ । कोमल शब्दावलीको प्रयोग, वर्णनात्मक शैलीको साथै बिफर, अभ्यास जस्ता तत्सम शब्द, ब्रेललिपि, बाइबल जस्ता आगन्तुक र ठेट शब्दहरूको प्रयोगले कविताको भाषाशैली उत्कृष्ट बन्न पुगेको छ । कविले तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर आफ्ना मनका अनुभूतिहरू व्यक्त गरेका छन् ।

अर्थविहीन धार्मिक रुग्णताले ग्रस्त भएका धार्मिक किताबका अक्षर पठेर आँखाबाट दृष्टि र दिमागबाट विचार गुमाएर मानिस अन्धो र विवेक शून्य भएको मानवीय संवेदनहीनता र दिशाहीनताको चित्रण यस कविताको केन्द्रीय कथ्यको रूपमा रहेको छ । यसमा अद्भुत रसको प्रयोग भएको देखिन्छ । यसमा कविले मिथकीय बिम्ब निजी बिम्बको प्रयोग गरेका छन् । 'ब्रेललिपि' दृष्टिबिहीनको प्रतीकको रूपमा र 'बिफर लागेका अक्षर छाम्न थाले' कथ्यमा अर्थहीन विचार र भावहीन पढाइको बिम्बको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.२.३ प्रेमी-हातहरू

प्रस्तुत कवितामा कविले प्रेयसीको आँसु पुछ्छन्, दुखिरहने छाती छाम्न, सारङ्गी र गितारका तारहरूमा प्रेमको शोकधुन बजाउन प्रेमीहातहरू काम लाग्ने आशय बिम्बपरक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषयवस्तु बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहेको हुँदा शीर्षकको सार्थकता देखिन्छ । यस कवितामा पङ्क्तिहरूको वितरण अन्तरलाई आधार मान्दा उनन्तीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा चार पङ्क्तिदेखि सोह्र पङ्क्ति र पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि चार शब्दसम्म फैलावट रहेको पङ्क्ति विधान देखिन्छ ।

यो कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्यलय भएता पनि छोटो वाक्य, मुक्तक र गजल शैलीको प्रयोग, अन्त्यानुप्रास ढाँचा पङ्क्ति र अनुच्छेदमा उही शब्द, वर्ण र वाक्यको आवृत्तिले कवितामा अन्तर्लयको सिर्जना भएको देखिन्छ ।

कवितामा काव्यात्मक भाषा, कोमल शब्दावलीको प्रयोग आँसु, प्रेम, रगत जस्ता तत्सम शब्द पियानो, भ्वायलिन जस्ता आगन्तुक शब्दको प्रयोगका साथै ठेट शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल र उत्कृष्ट बनेको छ । जसरी प्रेमीहातहरूले आँखाबाट खसेको आँसु, दुःखि रहने छाती, गितार र पियानोको मधुर धुन बजाउन र प्रेमपत्र लेख्न काम लागे जस्तै त्यही हातले लेखेको सुन्दर र पवित्र प्रेममय कविता पढेर मानव भित्रका अमानवीय कुरूपता विक्षप्तताका साथै दुःखबाट मुक्ति पाउन सकिने आशय करुण रसभावमा व्यक्त गरेका छन् ।

यस कवितामा 'पियानो' प्रेयसीको मधुर आवाजको प्रतीक रूपमा 'शोकधुन' प्रेयसीसँगको विछोडको विम्बको रूपमा आएको छ । यस कविताको 'गितारका तारहरूमा' भन्ने कथ्यको गितार शब्दमा 'आर' र तार शब्दमा पनि 'आर' आवृत्ति भएको हुँदा वृत्यानुप्रास अलङ्कारको प्रयोग भएको पाइन्छ ।

४.२.४ ग्लोब, नदी र बगरहरू

यस कवितामा नदीहरूमा नयाँ आकाश र प्रकाशको खोजी हुन्छ, भन्ने आशय देखाएर राजनीतिक परिवर्तनको चाहनालाई अभिव्यक्ति गरिएको छ । उक्त परिवर्तनको चाहनालाई महाबगरहरूले (शासक) रोक्न नसक्ने कुरालाई प्रतीकात्मक रूपमा नदी र बगरहरूको माध्यमबाट व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक औचित्यसिद्ध देखिन्छ । लामा छोटो आयामका आठ अनुच्छेद र एकचालीस पङ्क्तिमा प्रस्तुत कविता संरचित छ । पङ्क्ति र अनुच्छेदको वितरणमा एकरूपता भएको पाइँदैन । अनुच्छेदमा एक पङ्क्तिदेखि सात पङ्क्तिसम्म, पङ्क्तिमा एकशब्द देखि सातशब्द सम्म यसको संरचना विस्तार भएको छ । भोजराज ढुङ्गेलका अनुसार लय भनेको सङ्गीतको ताल हो । लयको माध्यमबाट कवितामा अभिव्यक्त भएका भावहरूलाई आस्वादन गर्ने कार्य गर्दछ । कविताका पङ्क्ति योजना र तिनमा स्वर व्यञ्जन वर्णको साम्य वैषम्यबाट प्राप्त हुने सङ्गीत नै कविताको लय हो (ढुङ्गेल, २६८:६,८) । यसको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्यलय रहेतापनि उही शब्द वर्ण र वाक्यको बारम्बार आवृत्ति, प्रत्येक अनुच्छेदमा माध्य र अन्त्यानुप्रासको ढाँचाले कविताको

भाव र भाषाबीचको तादात्म्यता र सुन्दर साङ्गीतिक भाषाको प्रयोगले कवितालाई गेयात्मक बनाएको छ । जस्तै :-

त्यतिबेला

नदिमा / बगरहरू

एउटा नयाँ प्रकाश पाउँछन्

एउटा नयाँ आकाश पाउँछन् ।

अन्तिम अनुच्छेद, पृ. ७९ ।

स्वर र व्यञ्जनवर्णको आवृत्ति, गीतात्मक, गजल शैलीको भाषा, अन्त्य, माध्य अनुप्रास, छोटो वाक्यगठन र सरल भाषाशैलीको प्रयोग 'ग्लोब' आगन्तुक, प्रकाश, नदी रक्ताम्य जस्ता प्रचलित तत्सम शब्दको साथै ठेट शब्दहरूको प्रयोगले कविताको भाषालाई सरल र उत्कृष्ट बनाएको छ । नदी आफ्नो यात्राको क्रममा बाधा र अवरोध आए पनि आफ्नो यात्रा रोक्दैन लक्ष्य र उद्देश्यमा पुगेरै छाड्छ । मानिस पनि आफ्नो उद्देश्य लक्ष्यमा पुग्न नदीले जस्तै निरन्तर अथक प्रयास गर्नुपर्ने आशयलाई सङ्केत गर्दै समाजमा यथास्थितिवादीहरूको हार र परिवर्तन चाहनेहरूको जित हुने विचार करुण रसभावमा व्यक्त गरेका छन् ।

यस कवितामा 'ग्लोब' पृथ्वीको प्रतीकको रूपमा 'नदी' मानवीय जीवन यात्राको बिम्बको रूपमा, 'पुरानो आकाश च्यातिनेगरी' राजतन्त्रको शासन व्यवस्थाको उन्मुलनको बिम्बको रूपमा, 'नयाँ प्रकाश' प्रजातन्त्रको प्रतीकको रूपमा 'महाबगर' शासकको प्रतीकको रूपमा आएका छन् ।

४.२.५ मान्छे, खोला र एक्युरियम

स्वतन्त्रता प्राप्ति, मुक्ति र लोकतन्त्र स्थापनाको चाहनालाई व्यक्त गरिएको भाव प्रतीकात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक र विषयवस्तु बीच निकट सम्बन्ध देखिएको हुँदा शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

पाँचओटा पूर्णविरामलाई आधारमान्दा यस कवितामा पाँच अनुच्छेद र छपन्न पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको पाइन्छ । अनुच्छेदमा पाँच पङ्क्तिदेखि अठार पङ्क्ति र पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि सात शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । अनुच्छेद र पङ्क्तिको वितरणमा एकरूपता देखिँदैन तथापि हरेक अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास ढाँचा रहेको छ । यस

कविताको लयविधान गद्यात्मक अनुच्छेदमूलक मुक्तलय रहेको छ । अन्त्यानुप्रास, काव्यात्मक भाषा, कोमल शब्दावलीको प्रयोग रहेको अनुच्छेदको बीचमा 'माभीदाइ' शब्दको आवृत्ति, कुनै - कुनै पङ्क्तिमा वर्ण र शब्दको बारम्बार आवृत्तिले एउटा नवीन ढाँचाको अन्तरलयको सिर्जनाले गर्दा कविता विशेष छन्दको नजिक पुगेको छ ।

कविताको भाषाशैली प्रतीकात्मक रहेको छ । प्रतीकात्मक भाषा भए तापनि काव्यात्मक भाषा, आत्मकथन पद्धति, अन्त्यानुप्रास शैली, युद्ध, आकाश, अशिष्ट, किरणहरू जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द जाल, माभीदाइ, मँहगो जस्ता ठेट शब्द, एक्युरिम जस्ता आगन्तुक शब्दको प्रयोगले भाषाशैली सरल र सम्प्रेष्य बनको छ ।

वर्तमान युगीन परिवेशमा मानिसमा दया र माया तथा मानवीयता नभएको आफ्नो अभिष्ट इच्छा र स्वार्थ पूरा गर्न अरूको स्वतन्त्रता इच्छा र आकाङ्क्षालाई समाप्त गर्न उद्धत हुने मानिसको क्रुरताप्रति कविले तीव्र आक्रोश व्यक्त गर्नु नै यस कविताको केन्द्रीय कथ्य रहेको छ । यस कवितामा वीभत्स रसको प्रयोग भएको देखिन्छ । यहाँ 'माभीदाइ' ! निरङ्कुश शासकको प्रतीक 'खोला' स्वतन्त्रताको 'एक्युरियम' प्रतिबन्धित शासन प्रणालीको विम्बको र 'घामको किरण' प्रजातन्त्र र स्वतन्त्रताको प्रतीकको रूपमा आएको देखिन्छ । यस कवितामा अनुप्रास, दृष्टान्त र उपमा अलङ्कारको प्रयोग भएको पाइन्छ ।

४.२.६ चराहरूको गीत

मान्छेको गीत (आवाज) भन्दा चराहरूको आवाज बढी शिष्ट, शालीन र सभ्य हुनुको साथै चराको आवाजमा जुन अथाह शक्ति छ त्यो मान्छेको गीत र आवाजमा नभएको आशय प्रतीकात्मक रूपमा व्यक्त गरिएको हुँदा शीर्षक अर्थपूर्ण देखिन्छ । प्रस्तुत कविता चार अनुच्छेद चौबीस पङ्क्तिमा संरचित भएको छ । पहिलो अनुच्छेदमा एघार पङ्क्ति, दोस्रोमा दश, तेस्रोमा सात र अन्तिम अनुच्छेदमा छ पङ्क्ति विधान रहेको देखिन्छ । पङ्क्तिमा तिन शब्ददेखि छ शब्दसम्म रहेको पाइन्छ ।

मुक्तलय विधान रहेको यस कवितामा हरेक अनुच्छेदमा मध्यानुप्रास अन्त्यानुप्रास भएको कारणबाट लयमा सुमधुरता रहेको पाइन्छ । यस कवितामा प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ साथै शान्ति, प्रेम, शालीन, आँखा जस्ता तत्सम र तद्भव तथा भर्त्सा शब्दको प्रयोगले भाषा शैली सरल र सुबोध्य रहेको देखिन्छ ।

यसमा कविले चराहरूमा जुन खुबि छ मानिसमा त्यो छैन । चराको गीतमा शिष्ट मर्यादित, शान्तिको जागरण ल्याउने, दयामाया प्रेमको आभाष पाइने साथै पहाड हिमाललाई ब्यँभाउने शक्ति छ भने मानिसको गीतमा लोभ, मोह, छलकपट, हिंसा, घृणा र स्वार्थका साथै अशिष्टपनको अस्तित्व विहीन गीतले रुमलिएर नब्यँभने स्थितिमा पुगेको यथार्थलाई व्यक्त गरेका छन् । प्रस्तुतहरू र अप्रस्तुतहरूका बीच एउटै धर्मद्वारा सम्बन्ध देखाइने अलङ्कारलाई तुल्ययोगिता अलङ्कार भनिन्छ (शर्मा, २०६३:६९) । यस कवितामा तुल्ययोगिता अलङ्कारको प्रयोग गरेको पाइन्छ ।

मान्छेले भन्दा बढी शालीन रूपमा

चराहरूले गाएका छन् प्रेमका गीतहरू

पहिलो अनुच्छेद, पृ. ८२ ।

यहाँ मान्छेले गाउने गीत र चराले गाउने गीतको तुलना गरिएको छ । यस कवितामा कविले निजी समसामयिक बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग कलात्मक रूपमा गरेका छन् । 'घाम जन्मन्छ' ले बिहानीको सङ्केतको बिम्बको रूपमा र 'चराको गीत' शान्ति र प्रेमको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.२.७ पागल कविताहरू.....

यस कवितामा मानवीय विकृति र विसङ्गतिका साथै हासोन्मुख मानवीय चरित्रको चित्रण गरिएको छ । पर्यावरणीय प्रदूषण भन्दा मानवीय प्रदूषण बढी हानिकारक हुने आशय प्रस्तुत कविता व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक औचित्य सिद्ध छ ।

यस कवितामा लामा छोटो आयामका छ अनुच्छेद र चौसठ्ठी पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको पाइन्छ । प्रस्तुत कवितामा बाह्रओटा पूर्णविराम तिनओटा प्रश्नात्मक चिऌे, चारओटा उद्गार चिऌे, अन्तिम अनुच्छेदको अन्तिम कविता १ र कविता २ चिऌे प्रयोगलाई हेर्दा यो कविताको संरचना अन्य कविताको भन्दा पृथक् र भिन्न देखिन्छ । यस कविताको सबैभन्दा छोटो तेस्रो अनुच्छेद र लामो अनुच्छेद अन्तिम रहेको छ, जसमा सत्र पङ्क्ति रहेको छ । पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ ।

मुक्त लय विधान रहेको प्रस्तुत कवितामा अन्त्यानुप्रास मध्यप्रासको साथै उही शब्द वर्ण र पदावलीको आवृत्तिको कारण अन्तर्लयको सिर्जना हुन पुगेको छ । प्रस्तुत कविताको भाषाशैली बिम्बात्मक र व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको छ । करण क्रियापदको प्रयोग अधिक्य

देखिन्छ । अन्त्यानुप्रासीय ढाँचाले भाषालाई पनि सरल बनाएको छ साथै शून्यमा, किरण, अहङ्कार, आवाज जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द इकोसिस्टम जस्ता आगन्तुक र ठेट शब्दको प्रयोगले भाषालाई भावनाकुल बनाएको छ ।

खगेन्द्र प्रसाद लुईटेलका अनुसार काव्यको रचनाको लागि चयन गरिएको भाव विचार कथ्य वा वस्तुलाई नै विषयवस्तु भनिन्छ । कविलाई जीवन भोगाइका क्रममा जुन वस्तुले अभिप्रेरित गर्दछ, त्यहीँ उत्प्रेरक वस्तु नै कविताको विषय हुन्छ (लुईटेल, २०५४: ६) ।

विश्वमा असल मानिसहरूको भन्दा खराब मानिसहरूको बाहुल्य रहेको र खराब मानिसहरू लोभ, मोह, घमण्ड र अहंकारले ग्रसित हुने हुँदा मानवीय जीवनमा अनेक समस्याहरू सिर्जना भएका छन् जसले गर्दा मानवीय सहिष्णुताको पर्खाल भत्केको र विश्वमा जतासुकै मानवीय प्रदूषण बढेको र यो पर्यावरणीय प्रदूषण भन्दा बढी हानिकारक हुने हुँदा कविले भावि सन्ततिलाई मानवीय प्रदूषण मुक्त उज्यालो हस्तान्तरण भएको देख्न चाहेको गम्भीर भाव व्यक्त गरेका छन् ।

कविले यहाँ विज्ञान वातावरण निजी बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । 'घामका सेता किरण' प्राकृतिक सुन्दरताको प्रतीकको रूपमा 'भोकहरू' अभाव र गरिबीको, 'मानवीय प्रदूषण' विकृति र विसङ्गतिको प्रतीकको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.२.८ मान्छेको परिभाषा

प्रस्तुत कविताको शीर्षक बिम्बार्थको रूपमा आएको छ । कवितामा मानवीय जीवनको अस्तित्वको चिन्तन गर्दै मान्छे हुनुको भाव र अर्थको खोजी गर्दै आँखा, कान, हात र खुट्टा हुँदैमा मान्छे भन्न नसकिने भावलाई व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषयको घनिष्ठ सम्बन्ध रहेकोले यसको औचित्य सिद्ध देखिन्छ ।

प्रस्तुत कविता चार अनुच्छेद बत्तीस पङ्क्तिमा संरचना भएको छ । पङ्क्ति र अनुच्छेदको वितरणमा एकरूपता देखिँदैन । पाँचपङ्क्तिको अनुच्छेददेखि एघार पङ्क्तिका अनुच्छेदसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि बढीमा छ शब्दसम्म पङ्क्ति विधान रहेको छ । यस कवितामा गद्यलय विधान रहेको पाइन्छ । गद्यलय भएता पनि प्रत्येक अनुच्छेदमा माध्य र अन्त्यानुप्रास शैली, कोमल पदावलीको प्रयोगले कविताको लयलाई सङ्गीतयमय बनाएको छ ।

पारसमणि भण्डारी र माधवप्रसाद पौडेलका अनुसार कुनै पनि काव्यको भाव विचार भाषाका शब्द वाक्य आदिमा नै अभिव्यक्ति हुने र व्यक्ति अनुसार शैलीमा विविधता देखिने वर्ण, शब्द, पदावली वाक्य र अनुच्छेद प्रयोगको चयन कौशल नै कवित्वको भाषा शैली हो (भण्डारी, २०६८:७,९) ।

प्रस्तुत कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषाको प्रयोग देखिन्छ, साथै अभ्यस्त, आँखा, आवाज जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द र ठेट शब्दको प्रयोगले भाषा सरल सहज बन्न पुगेको छ । यस कवितामा 'मैले' 'म' समाख्यता बनेर आफ्नो अर्न्तमनको भाव व्यक्त गरेको हुँदा प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग भएको देखिन्छ । कविले जो मानिस व्यक्तिवादी र स्वार्थी चिन्तन भएको एकलै बाँच्न, हाँस्न खोज्ने आफ्नो राष्ट्र र राष्ट्रियताप्रति कुनै कर्तव्य नभएको मानवीय प्रवृत्तिको सट्टा दानवीय प्रवृत्तिको हावि भएको कारणबाट आवाज र अनुहार गुमाएको मानिसमा आँखा, कान, हात र खुट्टा भए पनि मान्छे हुन नसक्ने व्यङ्ग्यभाव व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा 'एकजोर आँखा र कान' हुने मान्छे मानवीय अस्तित्व विहीन भावको बिम्बको रूपमा 'ढुङ्गाको मूर्ति' मानवीय संवेदनहीनता, 'काँडा ओच्छयाउने मान्छे' हासोन्मुख मानवीय चरित्रको प्रतीकको रूपमा आएका छन् । प्रस्तुत कविताको अन्तिम अनुच्छेदको अन्तिम पङ्क्तिमा 'पानी हराएभैँ' भन्ने कथ्यमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग गरिएको छ ।

४.२.९ मृत्यु र मान्छे

मानिसको जीवनमा मृत्यु अन्तिम र निर्विकल्प सत्य हो । मान्छेले आफ्नो जीवनको विषम परिस्थितिहरूसँग सङ्घर्ष गर्नुको सट्टा जीवनदेखि पलायन, निरीहता र मृत्युमुखी चेतना अँगालेर सङ्गतिहीन र निरर्थक जीवन बाँच्नु परेको वर्तमान मान्छेको यथार्थलाई चित्रण गरेको हुँदा यो शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

यो कविता पाँच अनुच्छेद तेत्तीस पङ्क्तिमा विस्तार भएको छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि दश पङ्क्तिसम्म रहेका छन् । पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि छ शब्दसम्मको पङ्क्ति विधान रहेको देखिन्छ ।

प्रस्तुत कविता मुक्त लय विधानमा रचिएको छ । प्रत्येक अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास शैली रहेको देखिन्छ । जस्तै :-

जो मृत्युसँग बारम्बार डराइरहन्छन्
जो मृत्यु सोचेर हरपल तर्सिरहन्छन् ।

दोस्रो अनुच्छेद, पृ. ८६ ।

उनीहरूको आइमा कहिल्यै घाम लाग्दैन
उनीहरूको आँगनमा कहिल्यै सपना जाग्दैन ।

चौथो अनुच्छेद, पृ. ८६ ।

उही शब्द र पदावलीको बारम्बार आवृत्तिले सुन्दरलयको सिर्जना भएको छ । यस कवितामा प्रतीकात्मक भाषाशैलीको प्रयोग देखिन्छ, साथै विसङ्गति भित्र सङ्गति एवम् मृत्युबोध भित्र जीवनबोधको अस्तित्ववादी भाव झल्कने भाषा शैलीको पनि प्रयोग भएको देखिन्छ । मृत्यु, प्रेम, निस्सार योद्धा जस्ता तत्सम लगायत प्रचलित ठेट शब्दको प्रयोगले भाषा सरल बन्न गएको छ ।

यस कवितामा 'उनी' को माध्यमबाट आफ्ना अनुभूतिहरू व्यक्त गरको हुँदा तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग भएको पाइन्छ । कविताको संरचना, कथन पद्धति, भाषाशैली र अन्य रूपात्मक तत्वको माध्यमद्वारा कवितामा भाव प्रकट हुन्छ । आख्यानिकृत वा नाटकीकृत जुनरूपमा जीवनजगतको कथन गरिए पनि त्यसको केन्द्रीय तत्त्व भाव नै रहेको हुन्छ (त्रिपाठी, २०६०:२०) । कविले जीवन र मृत्यु बीचको एक आपसको सम्बन्ध देखाउँदै मानिस जन्मे पछि, मर्नुपछि, मृत्युसँग डराउने र भाग्ने मानिसलाई आफ्नो जीवनको बाटो र परिवेश पनि थाहा नहुने त्यस्ता व्यक्तिले जीवनमा केही गर्न नसक्ने कविको तर्क यस कविताको केन्द्रीय कथ्य र भावको रूपमा रहेको देखिन्छ । यस कवितामा 'जीवनका तमाम् भयालढोका बन्द गर्नु' कथ्यमा जीवनदेखि पलायन हुने विम्बको रूपमा र 'मृत्यु' विसङ्गतिको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.२.१० अनुभूति-४

प्रस्तुत कविताको शीर्षक विम्बात्मक रूपमा आएको छ । यस कवितामा जीवनका अनुभूतिहरू, पीडाहरू, भोगाइहरू, संवेदनाहरू र प्रेमिल भावनाहरूलाई स्मृति विम्बको माध्यमबाट अभिव्यक्त गरिएको हुँदा कविताको शीर्षक र विषय बीच निकट सम्बन्ध रहेको छ ।

छ ओटा पूर्ण विरामलाई आधार मान्दा यस कवितामा छ अनुच्छेद तेइस पङ्क्तिमा यसको रचना भएको पाइन्छ । अनुच्छेद दुई पङ्क्तिदेखि छ पङ्क्तिसम्म र पङ्क्तिहरू दुई शब्ददेखि चार शब्दमा विस्तार भएका छन् । यस कवितामा गद्यलय विधान रहेको छ । गद्यलय रहेता पनि चढ्दा-चढ्दै, बग्दा-बग्दै, पहाडहरू-नदीहरू, आक्रमणहरू-सङ्क्रमणहरू जस्ता अन्त्यानुप्रास ढाँचा, गजल र मुक्त शैलीका कविता पुञ्जले कविताको लय श्रुतिरम्य बनेको छ ।

यस कवितामा अभिधात्मक भाषा शैली प्रयोग देखिन्छ । सरल भाषा, स्पर्श, प्रेम, निर्वस्त्र जस्ता तत्सम शब्द छोटो मिठो काव्यात्मक भाषाको प्रयोग र द्वित्व शब्दको आधिक्यले भाषा र शैली सरल र सम्प्रेष्य बनेको छ । यस कवितामा 'म' प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग मार्फत आफ्ना अनुभूतिहरू व्यक्त गरेको पाइन्छ । कविले यस कवितामा जीवनका हरेक क्षणमा अनुभूतिका आक्रमणहरू सङ्क्रमणहरू, अतिक्रमणहरू र परिक्रमणहरूलाई चाहेर वा नचाहेर पनि स्पर्श गर्नु र प्रेम गर्नु मानवीय नियति बनेको यथार्थ यस कविताको केन्द्रीय कथ्य र भाव विचार रहेको देखिन्छ । यसमा कविले प्राकृतिक विम्ब, निजी र समसामयिक विम्बको प्रयोग गरेका छन् । 'अनुभूतिका नदीहरू' अनुभूतिको सोचाइ नदी जस्तै लामो हुने विम्बको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.२.११ ओ, तमाम स्वघोषित मान्छेहरू

प्रस्तुत कविताको शीर्षक विम्बात्मक रूपमा आएको छ । मानवीय अस्तित्वको चिन्तन गर्दै मान्छे बन्न स्वाभिमान, इमान, सङ्कल्प, शान्ति, नयाँ दृष्टि र सृष्टि चाहिन्छ । अन्यथा मानिसको कुनै मूल्य नहुने अस्तित्ववादी र विसङ्गतिवादी भावको प्रस्तुति हुँदा यो शीर्षक उपयुक्त छ ।

चारओटा अनुच्छेद र अठचालीस पङ्क्तिमा यो कविताको संरचना भएको पाइन्छ । अनुच्छेदमा चार पङ्क्तिदेखि सोह्र पङ्क्तिसम्म विस्तार भएको छ । पहिलो अनुच्छेदमा बाह्र , दोस्रो र तेस्रो अनुच्छेदमा सोह्र-सोह्र र अन्तिम अनुच्छेदमा चार पङ्क्ति मात्र रहेको छ । पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि सात शब्दसम्म विस्तार भएको छ ।

प्रस्तुत कविता मुक्त लयमा रचिएको छ । मुक्तलय भएतापनि हरेक अनुच्छेदमा माध्य र अन्त्यानुप्रासको लय विधान र कोमल शब्दावलीको प्रयोग, पहिलो र दोस्रो पङ्क्तिमा 'मान्छे बन्न' भन्ने वाक्यको पुनरावृत्तिले मूलकथ्य एउटै सूत्रमा बाँधिएको देखिन्छ । पङ्क्ति र

अनुच्छेदमा उही शब्द र लय र पदावलीको बारम्बार आवृत्तिले एउटा नवीन ढाँचाको अन्तर्लयको सिर्जना हुन पुगेको देखिन्छ ।

यसको भाषाशैली प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको छ । कविताको विषयवस्तु वर्णनात्मक शैलीमा अगाडि बढेको देखिन्छ । चलनचलितको शब्द, तत्सम, ठेट शब्दको प्रयोगले भाषा सरल र कलात्मक बन्न पुगेको छ ।

कवितामा कविका भाव विचार, अनुभूति, वस्तु आदिलाई पाठक सामु उपस्थित गर्ने तरिका नै दृष्टिबिन्दु हो (लुईटेल, २०६२ :२३६) । कविले 'मान्छे' तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको माध्यमबाट आफ्ना भावनाहरू व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा स्वघोषित मान्छेहरू मान्छे बन्न नसक्ने भन्दै असल मान्छे बन्नको लागि इमान, स्वाभिमान, अर्थपूर्ण आवाज, छुट्टै बाटो आफ्नो देशको माटो सहितको सङ्कल्प नयाँ दृष्टि समेतको सृष्टि गर्ने सपनाको साथै त्याग र कठिन तपस्याको खाँचो पर्ने भाव यस कविताको केन्द्रीय कथको रूपमा रहेको छ । प्रस्तुत कवितामा 'बगरमा पल्टिएको ढुङ्गा' मानवीय जीवनको मूल्यहीनताको प्रतीकको रूपमा 'सुवास हराएको फूल' मानवीय खोक्रोपनको बिम्बको रूपमा आएको छ ।

४.२.१२ ईश्वरहरूको युद्ध

प्रस्तुत कविताको शीर्षक प्रतीकात्मक रूपमा आएको छ । ईश्वरलाई मिथकीय पात्रको रूपमा प्रस्तुत गर्दै विश्वमा बढ्दै गइरहेको अशान्ति, आतङ्क, सन्त्रासका कारण विश्वमा धेरै मुलुक पीडित भएको र विश्वको समस्यालाई ईश्वरहरूको युद्ध नाम दिएर ईश्वरीय सत्तामधि प्रश्न गरिएको हुँदा शीर्षक र विषयवस्तु बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहेकोले शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा सात अनुच्छेद बाउन्न पङ्क्तिमा संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेद र पङ्क्तिको वितरणमा एकरूपता देखिँदैन । यसमा लामा छोटो सात अनुच्छेद रहेको छन् । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि चौध पङ्क्तिसम्म र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि पाँच शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा गद्यलय विधान रहेको छ । गद्यलय रहेता पनि प्रत्येक अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास र मध्यानुप्रास रहेको र उही वर्ण शब्द र वाक्यको बारम्बार आवृत्तिले कविताको भावलाई गेयात्मक बनाएको पाइन्छ । यस कवितामा प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ । हिँड्नेछ, जानेछ, हुनेछन्, देख्नेछौँ जस्ता करण

क्रियापदको बहुल प्रयोगको साथै सूर्य, आकाश, युद्ध, ईश्वर, नूतन जस्ता तत्सम, ब्यालकहोल, अल्लाह, जिजस जस्ता आगन्तुक साथै ठेट नेपाली शब्दको प्रयोगले कविताको भाषाशैली सरल र उत्कृष्ट बन्न पुगेको छ । यस कवितामा 'ईश्वर', 'मान्छे' समाख्याता रहेको तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर आफ्ना मनका अन्तर भावना व्यक्त गरेका छन् ।

विज्ञान प्रविधिको अत्याधिक विकास र उन्नतिले शस्त्रास्त्रको होडबाजी चलेको, संसारभरी सन्त्रास एवम् आतङ्क फैलिएको र धर्मको नाम वा ईश्वरको नाममा गरिएको युद्ध, हत्या र हिंसाले समेत विश्वको धेरै मलुकहरू पीडित भएको युगीन यथार्थको भाव नै यस कविताको केन्द्रिय कथ्यको रूपमा रहेको छ । यसमा रौद्र र करुण रसको प्रयोग भएको देखिन्छ ।

कुनै पनि अर्थ वा वस्तुको प्रतिच्छायाका रूपमा आउने अर्को सहवर्ती अर्थ वा वस्तु नै बिम्ब हो । प्रतीक भनेको समान गुणका आधारमा दृश्य वा अदृश्य अन्य कुनै वस्तुको कल्पना गरी प्रतिबिम्बका रूपमा राखिएको वस्तु वा चिनो हो (आचार्य, २०६३ :१६) ।

यस कवितामा 'गोलीलागेको सूर्य' घाइते प्रजातन्त्रको प्रतीक 'ईश्वर' 'निरङ्कुश' (शासक) राजतन्त्रको प्रतीक, "अप्रत्यासित ईश्वरीय विश्वास लास परेको" कथ्य तानाशाही निरङ्कुश राजतन्त्रको समूल अन्त्य भएको बिम्बको रूपमा आएको छ ।

४.२.१३ निदाएका बगरहरू

प्रस्तुत कविताको शीर्षक प्रतीकात्मक रूपमा आएको छ । मानवीय जीवन विविध किसिमका असङ्गति र विसङ्गतिका कारण दीशाहीनता, उदासीनता, गन्तव्यहीनताले ग्रस्त भई अन्योलपूर्ण जीवन बाँच्न विवश वर्तमान मान्छेको यथार्थ निदाएका बगरहरूको माध्यमबाट व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक औचित्यपूर्ण देखिन्छ । चारओटा पूर्ण विरामलाई आधारमान्दा प्रस्तुत कवितामा चार अनुच्छेद तीस पङ्क्तिमा संरचित भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि तेह्र पङ्क्तिसम्म र पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि पाँच शब्दसम्मका आयाममा विस्तार भएको पाइन्छ । यो कविता मुक्तलयमा रचिएको छ । प्रत्येक अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास, शैली, उही शब्द, वर्ण र पदावलीको बारम्बार आवृत्तिले लयमा मधुरता थपेको पाइन्छ । प्रतीकात्मक भाषाको प्रयोग, वर्षात शून्य, निस्तेज, नदी जस्ता तत्सम शब्द र केही आगन्तुक र केही भर्रा शब्दको प्रयोगले भाषा सरल सहज बन्न पुगेको छ ।

कविले नदीलाई शासक र बगरलाई जनता मान्दै नदीले बगरमाथि मनपरी रूपमा अन्याय अत्याचार गरेको छ । बगरले अत्याचारलाई सहनु आफ्नो नियति सम्भएको छ । यसरी सोभा सिधा नेपाली जनताले निरङ्कुस शासकको दमन, पीडा अत्याचार हैकम बगरले जस्तै भोगेको देखाउनु र भोग्नु उनीहरूको नियति बनेको यथार्थलाई कविले प्रतीकात्मक रूपमा प्रकट गर्नु यसको केन्द्रीय कथ्य वा भाव रहेको छ । यस कवितामा 'बगरहरू' जनताको प्रतीक र 'नदीहरू' निरङ्कुस शासकको प्रतीकको रूपमा आएको छ । मोहनराज शर्मा र खगेन्द्र प्रसाद लुइटेलका अनुसार जसरी सुनचाँदी आदि गहनाले शरीरको शोभा बढाउँछ, त्यसैगरी भाषिक गहना अलङ्कारले काव्यको सौन्दर्य बढाउँछ (शर्मा, २०६३ :५८) ।

प्रस्तुत कविताको तेस्रो अनुच्छेदमा 'जब परेड खेलिरहेका सैनिकहरू भैं' कथ्यमा उपमा अलङ्कार आएको छ ।

४.२.१४ सारांश

शब्दहरूको नेपथ्य कविता सङ्ग्रह कवि भूपिनको दोस्रो सयुक्त कविता सङ्ग्रह हो । यस सङ्ग्रहमा उनका तेह्रओटा कविताहरू सङ्कलित छन् । करिब तिन दशकको बीचमा लेखिएका उनका कविताका विषयवस्तुको रूपमा मान्छे र उसको जीवन र जगत् रहेको पाइन्छ । यस कविता सङ्ग्रहको भाषा शैली शिष्ट, स्तरीय र परिष्कृत रहेको पाइन्छ । विशेष गरी अत्यधिक विम्ब र प्रतीकको प्रयोग र तत्सम, तद्भव, आगन्तुक र ठेट शब्दहरूको प्रभावकारी समन्वयले कविताको शैली गद्य भए पनि सम्प्रेष्य र प्रभावकारी भएको पाइन्छ । यस कृतिसम्म आइपुग्दा कविताको काव्यिक उच्चता बढेर गएको देखिन्छ । यस कृतिले मानवीय मूल्यको उपेक्षा, मानवीय संवेदनहीनता, युगीन राजनीतिक व्यवस्थाप्रति असन्तुष्टि, क्रान्ति र विद्रोह, स्वतन्त्रता र मुक्तिको चाहना, सामाजिक असमानता, धार्मिक र सांस्कृतिक विकृति जातीय विभेदको साथै मानवीय अस्तित्वको खोजलाई अभिव्यक्त गरेको पाइन्छ । यस कृतिका कविताको आन्तरिक लय विधान र विषयवस्तुको भावको तादात्म्यताले कवितालाई सबल र आकर्षक बनाएको छ ।

४.३ विषय प्रवेश : हजार वर्षको निद्रा कविता सङ्ग्रहको अध्ययन

कवि भूपिन व्याकुलद्वारा लिखित 'हजार वर्षको निद्रा' कविता वि.सं. २०६६ मा प्रकाशित भएको हो । यस सङ्ग्रहमा प्रगीतात्मक शैलीमा लेखिएका अठचालिस ओटा फुटकर गद्य कविताहरू रहेका छन् । यी कविताहरूलाई सात खण्डमा विभाजन गरिएको छ । जस अनुसार *मान्छेको अन्तिम गीत, आत्महत्यादेखि जीवनसम्म, कुरूप कविताको सौन्दर्य, एम्बुलेन्स भित्र देश, ईश्वरः केही शोकगीतहरू, गाउँमा कविता, कमजोर शब्दहरूमा प्रेमको ध्वनि* रहेका छन् । प्रायः हरेक खण्डका कविताका विषय वस्तु र भाव फरक फरक किसिमका देखिन्छन् । यस सङ्ग्रहका कविताहरू दुईदेखि चार पङ्क्तिका अनुच्छेदमा संरचित हुँदै छुट्टै आठ पङ्क्तिका अनुच्छेदसम्म विस्तार भएका पाइन्छन् । यी कविताका अनुच्छेद र पङ्क्तिमा शब्द, वर्ण र पदावलीको वितरणमा एकरूपता देखिँदैन । यस सङ्ग्रहको सबैभन्दा सानो कविता *प्रेमीहरू* (पृ.२७) देखिन्छ भने सबैभन्दा लामो कविता *आवजहरूको बन्दीगृह* (पृ.५१) र *कुरूप कविता* (पृ.५९) हुन् । यो कृति एकसय बिस पृष्ठ भएको मझौला आकारको कृतिको रूपमा रहेको छ ।

समालोचक लक्ष्मण प्रसाद गौतमका अनुसार कविले यस कवितामा आफूले देखेको, भोगेको, अनुभव गरेको, जीवन र जगत्का विभिन्न क्षेत्रबाट विषयवस्तु टिपेर कविता रचना गरेका छन् । उनले कवितामा आजको मान्छेको विकृति र विसङ्गति प्रस्तुत गरेका छन् । यसैगरी मान्छेको कुण्ठित मनोदशा, हताश, निराश, उदासीन वितृष्णाले ग्रस्त वर्तमान मान्छेको अन्योलग्रस्त जीवनको साथै मान्छेको दिशाहीनता, मूल्यहीनता र संवेदनहीनता-ग्रस्त हासोन्मुख मानवीय चरित्र गतिहीन अवस्थामा रहेको र अब मान्छे हुनुको भाव र अर्थको खोजी गर्दै मान्छेलाई नै केन्द्रमा राखी मानवीय अस्तित्वको खोजीको लागि लामो निद्राबाट व्युत्थित पने भाव व्यङ्ग्यात्मक र प्रतीकात्मक रूपमा व्यक्त गरेको पाइन्छ भनी चित्रण गरेका छन् (गौतम, २००९ : भूमिका) । यस कवितामा निजी, समसामयिक, मिथकीय, विज्ञान बिम्ब र प्रतीकको प्रयोगका साथै कलात्मक भाषाको प्रयोगले कविताको भाषा शैली सरल र लयात्मक बनेको देखिन्छ ।

४.३.१ मान्छेको अन्तिम गीत खण्डका कविता

मान्छेको अन्तिम गीत खण्डमा चारओटा कविताहरू समेटिएका छन् । यी कवितामा कविले जातीय भेदभावको विरोध, हासोन्मुख मानवीय चरित्रप्रति चिन्ता,

समानता, स्वच्छ, सरल र गतिशील जीवनको चाहना, युगीन शासकहरूको अदूरदर्शीता र निकम्मा पनका कारण देशले भोग्नु परेको पीडा र समुद्रको प्रवाहसँग मान्छेको जीवनको प्रवाहलाई तुलना गरिएको भाव प्रस्तुत गरेका छन् ।

४.३.१.१ नदीहरू मान्छेजस्ता हुँदैनन्

पारसमणि भण्डारी र माधवप्रसाद पौडेलका अनुसार कविले कविताको जे नामकरण गरेको हुन्छ, त्यही नै त्यस कविताको शीर्षक हो (भण्डारी, २०६८ :७) । यस कवितामा मान्छेलाई नदीसँग तुलना गर्दै मान्छेमा पनि नदी जस्तै स्वच्छ, पवित्र, उदात्त र भेदभाव रहित गुण हुनुपर्ने भन्दै रङ्ग भेद, जातिभेद र वर्णभेदका सिमानाहरूलाई भत्काएर समतामूलक समाजको निर्माण गर्नुपर्ने अभिप्रायलाई प्रस्तुत गरिएको छ । शीर्षक र विषयवस्तु बीच निकट सम्बन्ध भएको हुँदा शीर्षक सार्थक रहेको छ । यस कवितामा लामा छोटा गरी पाँच अनुच्छेदमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । तिनपङ्क्ति देखि सोह्र पङ्क्ति सम्म अनुच्छेद विस्तार भएको पाइन्छ । एकशब्द देखि छ शब्दसम्मको पङ्क्ति विधान रहेको छ । यो कविता गद्यमा लेखिएको हुँदा यसको लय विधान गद्यात्मक रहेको छ । हरेक अनुच्छेदमा माध्य र अन्त्यानुप्रासीय ढाँचालाई अपनाइएको हुँदा लय र भावबीच समन्वय भई कविता गेयात्मक बनेको छ ।

यस कवितामा नदीहरू मान्छे हुँदैनन् भनेर व्यङ्ग्यात्मक भाषाको प्रयोग गरिएको छ । नदी, अहम् तत्सम शब्द, मंगोलियन, बुद्धिष्ट आगन्तुक, छयापाछयाप, पुड्का ठेट शब्दको प्रयोगले भाषाशैली सरल बनेको छ । कविले 'मान्छे' तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग मार्फत आफ्ना अनुभूतिलाई व्यक्त गरेको पाइन्छ । धर्म, वर्ण र जातको आधारमा गरिने भेदभावले समाजलाई विकृत र प्रदूषित बनाउने हुँदा मान्छेमा नदी जस्तै स्वच्छ, सरल र भेदभावरहित स्वभाव रहनुपर्ने मानवतावादी भाव व्यक्त गरेका छन् । प्रस्तुत कवितामा प्रकृति, निजी र समसामयिक बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् ।

यस कवितामा कविले पूर्ण रूपमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग कलात्मक रूपमा गरेको पाइन्छ ।

४.३.१.२ समुद्र हेरिरहेको मानिस

यस कवितामा समुद्र हेरिरहेको मानिस शीर्षक बिम्बको रूपमा आएको छ । समुद्रमा दृश्य र अदृश्य स्वरूपमा जुन शक्ति छ, त्यत्तिकै बेजोड शक्ति समुद्र अघि उभिएको मानिससँग पनि रहेको आशय व्यक्त गरिएकोले शीर्षक र भावबीच सम्बन्ध देखिएको हुँदा शीर्षक औचित्यपूर्ण छ । एकचालिस पङ्क्तिमा विस्तार भएको कवितामा लामा र छोटो गरी छ अनुच्छेदमा यस कविताको संरचना भएको छ । यो कविता दुई पङ्क्तिका अनुच्छेददेखि बाह्र पङ्क्तिका अनुच्छेद देखिन्छन् । पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि छ शब्दसम्म फैलिएका छन् । प्रस्तुत कविताको लयविधान गद्यात्मक रहेको र कुनै अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास रहेको हुँदा कविताको लय रम्य बन्न पुगेको छ ।

कवितामा समुद्र, जीवन, मृत्यु, अभेद तत्सम शब्द सुनामी, अफिस आगन्तुक र केही ठेट शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल र सुबोध्य देखिन्छ । कविले आफ्ना अनुभूतिहरूलाई तृतीय पुरुष 'ऊ' दृष्टिबिन्दुको प्रयोगबाट प्रस्तुत गरेका छन् । यस कवितामा कविले समुद्र र मानिस बीच तुलना गर्दै अथाह शक्ति बोकेको समुद्रमा जस्तै मानव जीवनको सागरमा पनि थुप्रै चुनौती र सम्भावना रहेको भावलाई प्रस्तुत गरेका छन् ।

यहाँ मानिसलाई 'हिम पहिरोबाट बग्ने बरफको ढिक्का जस्तै' भनेर बरफको ढिक्कालाई बिम्बको रूपमा प्रयोग गरेका छन् । त्यसैगरी 'मन्दिर र घण्ट' शान्तिको प्रतीकको रूपमा आएको देखिन्छ । यस कविताको प्रत्येक अनुच्छेदमा तुल्यता बुझाउने शब्द 'भैँ' आएको हुँदा उपमा अलङ्कारको प्रयोग कलात्मक रूपमा गरेको देखिन्छ ।

४.३.१.३ छालहरू

प्रस्तुत कवितामा शीर्षक प्रतीकात्मक रूपमा आएको छ । छालहरू परिवर्तनका बाहक र परिवर्तनका सन्देश भएको तर परिवर्तनको चाहनालाई नबुझे सत्ताको अग्लो घुम्ने कुर्सी माथि निदाइरहेको देशको प्रतीकीकरणले नेताहरूको दुश्चरित्रलाई व्यङ्ग्य गरेको हुँदा यो शीर्षक उपयुक्त छ । यो कविता पाँच अनुच्छेदमा संरचना भएको भेटिन्छ । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्तिदेखि बाह्र पङ्क्तिसम्म र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि पाँच शब्दसम्म फैलिएको देखिन्छ ।

यसको लय विधान गद्य रहेको छ । गद्य कविता भए पनि कतिपय अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास ढाँचा र उही शब्द वर्णको आवृत्तिले कविता लयात्मक रहेको देखिन्छ । प्रस्तुत

कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषाशैलीको प्रयोगका साथै काव्यात्मक कोमल पदावलीको प्रयोग, तत्सम, आगन्तुक र ठेट शब्दको प्रयोगले भाव र भाषाबीच तादात्म्यता भएको हुँदा कविताको भाषाशैली लयात्मक बनेको छ ।

कविले आफ्ना भाव र विचारहरू प्रथम पुरुष कथन पद्धति मार्फत पाठक समक्ष पोखेका छन् । परिवर्तनको चाहनालाई बोकेर नदीमा आइरहेका छालले यथास्थितिवादी र निदाइरहेका देशका शासकहरूप्रति तिखो व्यङ्ग्य प्रस्तुत गरेको भाव अभिव्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा प्रकृति समसामयिक र निजी बिम्ब प्रतीकको प्रयोग भएको देखिन्छ । यहाँ 'छालहरू' परिवर्तनको संवाहक र 'नदीहरू' गतिशीलताको प्रतीकको रूपमा 'हुलाकी' चेतना र युगबोधको बिम्बार्थको रूपमा आएको पाइन्छ । कवितालाई आकर्षक र चमत्कृत बनाउन कविले अर्थालङ्कार अन्तर्गतको रूपक अलङ्कारको प्रयोग पहिलो अनुच्छेदमा गरेको पाइन्छ ।

४.३.१.४ म नदी बग्न चाहन्छु

प्रस्तुत कवितामा नदी जस्तै स्वच्छ, प्रवाहशील, निरन्तर गतिशील र नदीले भै जीवनको किनाराहरू फेरिरहने जीवनको चाहना रहेको आशय व्यक्त गरेको हुँदा विषयवस्तु र शीर्षक बीच अभिधात्मक सम्बन्ध भएको हुँदा शीर्षक अर्थपूर्ण देखिन्छ ।

संरचना दुई किसिमको हुन्छ - आन्तरिक र बाह्य । कविता कृतिको बाह्य संरचना त्यसका लयात्मक खण्ड/गण र विश्राम भई पाउ/चरण वा पङ्क्तिविधान तथा पङ्क्तिपुञ्ज (श्लोक वा अनुच्छेद योजना) सँगै थालिन्छ र त्यसका विविध भाग, परिच्छेद हुँदै विस्तारित हुन्छ अनि खण्ड काव्यमा पुग्दा सर्ग योजना पनि देखा पर्न सक्छ । अनि महाकाव्य सर्गबन्ध (सर्ग योजना) अपरिहार्य नै रहन्छ (त्रिपाठी, २०६० : १७,१८) ।

उनन्तीस पङ्क्ति रहेको यस कविता तिन अनुच्छेदमा संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा छ पङ्क्तिदेखि लिएर चौधपङ्क्ति सम्म विस्तार भएको पाइन्छ । पङ्क्तिमा दुईशब्द देखि छ शब्दसम्म फैलिएको देखिन्छ । यो कविता अनुच्छेदमा लेखिएको गद्य कविता हो तापनि यसको प्रत्येक अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रासको ढाँचा भेटिन्छ । कविता स्वच्छन्दता तर्फ उन्मुख रहेपनि कुनै-कुनै अनुच्छेदमा उही वर्ण र शब्दको बारम्बार आवृत्तिले नवीन ढाँचाको अन्तरलय सिर्जना हुन पुगेको यथार्थलाई कविले यसरी प्रस्तुत गरेका छन् :-

निश्चित सीमानाभिन्न जमिरहुँ
निश्चित आयतनभिन्न रमिरहुँ

पहिलो अनुच्छेद, पृ. ३१ ।

यस कवितामा कविले आत्मपरक शैलीमा जीवनभर जमिरहुँ-रमिरहुँ, फेरिरहन-बदलिरहन जस्ता अनुप्रास युक्त शब्दको साथै जीवन, नूतन, अदृश्य जस्ता प्रचलित तत्सम र ठेट शब्दको प्रयोगले भाषाशैली सुन्दर र सरल बनेको देखिन्छ । कविले आत्मपरक शैलीमा प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरी आफ्नो मनका भावनाहरू यसरी व्यक्त गर्दछन् ।

म नदी बन्न चाहन्छु
र दिनहुँ जीवनका किनाराहरू फेरिरहन चाहन्छु
म नदी बग्न चाहन्छु ।

तेस्रो अनुच्छेद, पृ. ३१ ।

प्रस्तुत कवितामा कवि आत्मालाप शैलीमा आफू गतिहीन कुवाजस्तो अथवा सीमित विचारको अर्थात् गतिहीन जीवन नचाहने नदी भन्ने बग्न चाहने र जीवनको किनारा फेरिरहने अस्तित्ववादी विचार (भाव) प्रस्तुत गरेका छन् । यस कवितामा कविले प्रकृति, परम्परित र निजी बिम्ब र प्रतीक प्रयोग गरेर कवितालाई अर्थपूर्ण बनाएको पाइन्छ ।

यस कवितामा 'नदी' र 'जीवनको किनारा फेरिरहन चाहन्छु' कथ्यमा गतिशील जीवनको चाहनाको बिम्बको रूपमा र 'तलाउ' र 'कुवा' स्थिर र गतिहीन जीवनको प्रतीकको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.३.२ आत्महत्यादेखि जीवनसम्म खण्डका कविता

हजार वर्षको निद्रा कविता सङ्ग्रह भित्रको दोस्रो खण्डको रूपमा रहेको **आत्महत्या-देखि जीवनसम्म** उपशीर्षकमा तेह्रओटा कविताहरू समावेश गरिएका छन् । यी कविताहरूमा विशेषतः जीवनवोधी र मृत्युवोधी चेतनाका भावहरू प्रकट भएको पाइन्छ । मान्छेको जीवनमा मृत्यु निर्विकल्प सत्य हो भन्ने जान्दा-जान्दै पनि मानिस जीवनदेखि निराश भएर आत्महत्याको बाटो रोज्न पुग्छन् यस्तो हताश र निराशको क्षणमा मान्छेको चेतना अत्यन्त पीडित हुनपुग्छ भन्दै उनको कविताको मुख्यकेन्द्र मान्छे, र उसले भोगेका जीवनलाई लिएको

हुँदा यी कविताहरूमा मृत्युबोधी चेतनाभिन्न मानवीय अस्तित्व र जीवनवादी सौन्दर्यको पनि खोजी गरिएको मानवतावादी भाव व्यक्त गरेको पाइन्छ ।

४.३.२.१ आत्महत्या

मानवीय मूल्यहीन र विसङ्गतिपूर्ण जीवनको चित्रण गर्दै तिनै विसङ्गतिपूर्ण जीवनको माझबाट मानवीय मूल्य र अस्तित्वको खोजी गरिएको आशय बिम्बात्मक र प्रतीकात्मक रूपमा आएको हुँदा यो शीर्षक सार्थक देखिन्छ । यो कविताको संरचना अन्यकविताको तुलनामा पृथक र भिन्न रहेको छ । यो कविता यात्रा एक र यात्रा दुई खण्डमा विभाजन गरिएको छ । यात्रा एकमा देखिएको पूर्णविराम चिह्नलाई आधारमान्दा यसमा एक अनुच्छेद सैतीस पङ्क्ति पुञ्ज रहेको जसमा शुरूको दुई पङ्क्ति अंग्रेजी भाषामा रहेको देखिन्छ । यात्रा दुई खण्डमा पूर्णविराम चिह्न देखिँदैन केवल प्रश्नार्थक, विस्मयादिबोधक चिह्नको प्रयोग भएको र कवितामा देखिएको अन्तरलाई आधारमान्दा पाँच अनुच्छेद र चौबीस पङ्क्तिमा यसको विस्तार भएको पाइन्छ । प्रस्तुत कविता मुक्तलय विधानमा रचना भएको देखिन्छ । कुनै-कुनै पङ्क्तिमा आद्य र अन्त्यानुप्रास शैली पनि रहेको देखिन्छ । यस कविताको भाषा प्रतीकात्मक रहेको छ । यात्रा एकमा मानवीय विसङ्गति र विकृति भावभूमि रहेको भाषा र यात्रा दुईमा मानिसले अस्तित्वको खोज र बोध तिनै निरर्थकता र विसङ्गतिका माझबाट गर्नुपर्ने भावरहेको भाषाको प्रयोग गरेका छन् । त्यसैगरी फिचर प्लान्ट, फेन्टासी, डेटा, फायल आगन्तुक शब्द, आत्म, जीवन, मृत्यु, कुरूपता, ईश्वर, त्याग जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द र अन्य ठेट नेपाली शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल बनेको छ ।

कविले आफ्ना विचार वा भावलाई पाठकसामु प्रस्तुत गर्नका लागि जुन पद्धतिको प्रयोग गर्दछ, त्यो पद्धति वा तरिकालाई नै कथन पद्धति भनिन्छ (आचार्य, २०६३ :१०) । प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दु 'म' को माध्यमबाट कविले मानवीय मूल्य मान्यता र अस्तित्वको खोजी गरिएको आशय यसरी व्यक्त गरेका छन् :-

म जीवनको नयाँ दुर्व्यसनी भएको छु !

म जीवनको नयाँ अम्मली भएको छु !

प्रस्तुत कवितामा वर्तमान मान्छेले सङ्गतिहीनता र निरर्थक जीवन बाँच्नु परेको छ, जसबाट जीवनमा निराशा र वितृष्णा पैदा भएको छ । त्यही निराशा र विसङ्गतिका माझबाट आशाको नयाँ घामको खोजी गरिएको करुण भाव व्यक्त गरिएको छ ।

यस कवितामा कविले सामाजिक, निजी, मिथकीय बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । 'मृत्युको भरी' मानवीय विसङ्गतिको प्रतीक 'चङ्गा' जीवनको दीशाहीनताको प्रतीक, 'विरामी पहाड' जीवनको असङ्गति र विप्ल्याँटाको बिम्बको रूपमा र 'नयाँघाम' जीवनको अस्तित्वको खोजीको बिम्बको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.३.२.२ हजार वर्षको निद्रा

आजको युगीन मान्छे दर्शनका बोझिला किताबहरूका बीचबाट ब्युँभने नाममा हजारवर्षको निस्सासिदो अन्धकारमा रुमलिएर लामो चिर निद्रामा परेको र अब निरर्थक निद्राबाट ब्युँभने चाहना भएको आशय प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक छनोट उपयुक्त देखिन्छ ।

यस कवितामा देखिएको उद्गार चित्र र कविताको पङ्क्ति वितरणको अन्तरलाई आधारमान्दा तिन अनुच्छेद, उन्नाईस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । यस कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । दोस्रो अनुच्छेदका पङ्क्तिमा हालेर-भनेर, गएको छ, सिकाएको छ, जस्ता अन्त्यानुप्रास शैलीको साथै उही शब्द र पदावलीको आवृत्तिले लयमा सुमधुरता सिर्जना भएको पाइन्छ ।

यस कवितामा प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको छ साथै प्रचलित तत्सम आगन्तुक र ठेट शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल एवम् सहज देखिन्छ । प्रथम पुरुष 'म' दृष्टिबिन्दुको प्रयोगबाट ब्युँभन चाहेको कुरा व्यङ्ग्यात्मक रूपमा यसरी व्यक्त गरिएको छ :-

ब्युँभन चाहन्छु अब म

हजारौँ वर्षको गाढा निद्राबाट

अन्तिम अनुच्छेद, पृ. ३८ ।

आजको मानव कर्तव्यच्युत भएर गतिहीन अवस्थामा लामो हजार वर्षको चिर निद्रामा परेको र आफ्नो कर्तव्यपथको लागि लामो निद्राबाट ब्युँभन चाहना राखेको आशय यसको केन्द्रीय कथ्य र भाव रहेको पाइन्छ । यस कवितामा 'कोक्रो' जनताको हक अधिकार,

स्वतन्त्रताको नियन्त्रणको प्रतीकको रूपमा, 'पुतली च्यापिए भै' मान्छेको समस्या जटिलता र सङ्कटको बिम्बको रूपमा आएको पाइन्छ ।

प्रस्तुत कविताको दोस्रो अनुच्छेदको एघारौँ पङ्क्तिमा 'पुतलीहरू च्यापिएभै' भन्ने कथ्यमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग भएको छ ।

४.३.२.३ दिवङ्गत कविको नाममा

यस कवितामा कविले वैयक्तिक मृत्युबोधको पूर्व आभाषको चित्रण गर्नुको साथै कवि तथा साहित्यकारको जीवन आफूले लेखेको काव्य जस्तै रहस्यमय र विसङ्गत रहेको आशयलाई बिम्बात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिएको हुँदा शीर्षक र विषयवस्तु बीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा पङ्क्ति वितरण अन्तरलाई हेर्दा आठ अनुच्छेद सैतीस पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि सात शब्दसम्म रहेको देखिन्छ । अनुच्छेद र पङ्क्तिमा शब्द वितरणमा एकरूपता रहेको पाइँदैन ।

यस कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्यलय भएतापनि अनुच्छेदको अन्तिम पङ्क्तिमा तार्नु छ, पुग्नु छ, हुनु छ जस्ता शब्दको आवृत्ति र अन्त्यानुप्रास ढाँचा, उही शब्द र वर्ण लगायत व्यञ्जन वर्णको आवृत्तिले अन्तर्लयको सिर्जना हुन पुगेको छ । यस कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषा र वर्णनात्मक शैलीको प्रयोग देखिन्छ । वेडरूम, एब्सट्रयाक्ट आगन्तुक शब्द कवि, अञ्जुली, क्षितिज, ईश्वरीय जस्ता प्रचलित तत्सम शब्दको प्रयोगले कविताका भाषा सरल र सम्प्रेष्य देखिन्छ । यो कवितामा प्रथम दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । जस्तै:

एक दिन

यस धर्तीबाट

म पनि मेरो बाबाभैँ लापत्ता हुनुछ !

'म' समाख्याता बनेर जीवन प्रतिको विसङ्गति र मृत्युबोधको पीडा व्यक्त गरिएको छ । यस कवितामा कविको जीवन बाँचुन्जेल अभाव, पीडा, तनाव बीच रुमलिएको र कविको कला बाँचेर सर्वत्र लेखिएर पोतिए तापनि त्यसले कविको वैयक्तिक जीवनका कुनै अर्थ नराखेको आशय करुण भावमा व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा 'तुलसीको मठ' मृत्युबोधको बिम्बको रूपमा 'दुब्लो' बाँसुरी कविको जीवनको सङ्कट र विपन्नताको 'नक्सा' उदासीनता र दिशाहीनताको प्रतीकको रूपमा आएका छन् ।

यस कविताका 'पर्यटकभै' र 'बाबाभै' कथ्यमा तुल्यता बुझाउने शब्द भै प्रयोग भएको हुँदा उपमा अलङ्कारको प्रयोग गरिएको छ ।

४.३.२.४ उल्टोरूख

बाल्यवस्थामा परेको छाप र संस्कृतिको प्रभाव पछिसम्म स्मृतिमा रहने कुरा उल्टो रूखको माध्यमबाट प्रस्तुत गर्दै उनले सम्पूर्ण विश्वलाई प्यार गर्न चाहन्छन् भने जीवन र मृत्युलाई माया र घृणा गर्न चाहने कुरा बिम्बात्मक रूपमा आएको हुँदा यो शीर्षक सार्थक देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा लामा छोटा आयामका छ अनुच्छेद र पैतालीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको पाइन्छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि पन्ध्र पङ्क्तिसम्म फैलिएको छ भने पङ्क्तिमा एकशब्द देखि सातशब्दसम्म रहेका छन् । यस कवितामा पङ्क्ति, शब्द, पदावली र अनुच्छेदको वितरण योजनामा शृङ्खलित र एकरूपता देखिँदैन ।

भागवत आचार्यका अनुसार लयको योजना गर्नु नै लयविधान हो । कवितामा स्वर, व्यञ्जन वर्णको उच्चारण क्रममा समविषय वितरणबाट लयको सिर्जना हुन्छ । लय सिर्जनाबाट श्रुतिमधुर सङ्गीतको सिर्जना हुन्छ (आचार्य, २०६३ : १५) ।

यो कविता गद्य लयविधानमा रचिएको देखिन्छ । गद्य कविता भएपनि अन्त्यानुप्रास शैली उही शब्द वर्ण र पदावलीको आवृत्तिले कवितामा सङ्गीतमय लयको सिर्जना हुन पुगेको देखिन्छ । जस्तै:-

माया या घृणा गर्न लागेको छु जीवनलाई

माया या घृणा गर्न लागेको छु मृत्युलाई

चौथो अनुच्छेद, पृ. ४२ ।

लक्ष्मणप्रसाद गौतमका अनुसार भावना, अनुभूति, घटना, विचार आदिलाई पाठक समक्ष प्रभावकारी सम्प्रेषण गर्ने माध्यम नै भाषा हो । कविताको भाषा साङ्केतिक, प्रतीकात्मक र व्याख्येय प्रकारको हुने भएकाले यो विशिष्ट हुन्छ (गौतम, २०६६:५२७) ।

यस कवितामा प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक भाषाको प्रयोग भएको छ । मृत्यु, भयभीत, अज्ञान, विश्व जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द र ठेट शब्दको प्रयोगले भाषा सरल बनेको छ । प्रश्नात्मक संवादात्मक शैलीको प्रयोगले कवितामा भिनो आख्यानात्मक सुत्रलाई नाटकीकृतरूपमा प्रस्तुत गरिएको हुँदा शैली आकर्षक बनेको छ । प्रथम पुरुष 'म' दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर कविले मृत्युबोध र विसङ्गतिबोधका भावनाहरू व्यक्त गरेका छन् ।

कविले मृत्युलाई अवश्यम्भावी ठानी विघटित अभिशप्त, मूल्यहीन र दिशाहीन जीवनको बीचबाट सुन्दर देश र विश्वलाई मनपराउन थालेको र जीवन मृत्युलाई माया र घृणा गर्न चाहेको भाव व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा समसामयिक बिम्ब, निजी बिम्ब, स्मृति बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । उल्टो रूख, बियाँ जस्ता प्रतीकको प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.३.२.५ नक्सा

कविले जीवनलाई सीमाविहीन नक्सासँग तुलना गर्दै जीवनको अनुभूतिको गहिरो आभाष पनि अनिश्चित मापदण्ड विहीन छ भन्ने कुरा नक्सा कवितामा बिम्बात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक अनुसार भाव आएकोले शीर्षक औचित्यपूर्ण रहेको देखिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा तिन अनुच्छेद एकतिस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको छ । अनुच्छेदमा नौदेखि बाह्र पङ्क्तिसम्म विस्तार भएको छ । पङ्क्ति र अनुच्छेदको वितरणमा एकरूपता पाइँदैन । यस कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्य विधान भए पनि प्रत्येक अनुच्छेदमा माध्य र अन्त्यानुप्रासको ढाँचा र पङ्क्तिमा उही शब्द वर्ण र वाक्यको बारम्बार आवृत्तिले कवितामा अन्तर्लयको सिर्जना यसरी हुन पुगेको देखिन्छ :-

नभएका सिमानाहरू काट्नु छ

नभएका बाटोहरू छिचोल्नु छ

दोस्रो अनुच्छेद, पृ. ४३ ।

यस कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषाको प्रयोग देखिन्छ साथै असमापिका क्रियाको प्रयोग पनि उत्तिकै भएको देखिन्छ । ग्लोब आगन्तुक, अनुभूति, प्रेमिका अनाम जस्ता तत्सम र ठेट शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सम्प्रेष्य र सरल देखिन्छ । नक्सा कवितामा कविले विविध किसिमका विसङ्गतिका कारण वर्तमान मान्छेको जीवन अन्योलग्रस्त, दिशाहीन, भ्रामक रहेको र भ्रमको बीचबाट मानवीय जीवनको गन्तव्यको खोजी गरिएको भावको चित्रण गरेका छन् । ग्लोब, नक्सा, भोला जस्ता बिम्ब र प्रतीकको साथै निजी र समसामयिक बिम्ब र प्रतीकको कलात्मक प्रयोग गरेका छन् ।

४.३.२.६ नीद

कविले मानव जीवनमा अमनचयन, सुख र समृद्धिको अवस्था चिरस्थायी र दीर्घ नहुने नीद कविता मार्फत बिम्बात्मक रूपमा व्यक्त गरेकोले शीर्षक र विषयबीच निकट

सम्बन्ध देखिएको हुँदा शीर्षक सार्थक छ । प्रस्तुत कविता पाँच अनुच्छेद छबिबिस पङ्क्तिमा संरचना भएको छ । दुई पङ्क्तिका अनुच्छेददेखि नौ पङ्क्तिसम्म विस्तार भएका अनुच्छेद रहेका छन् । पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । कवितामा ध्वन्यात्मक आरोह-अवरोहको स्थितिबाट लयको उत्पादन हुन्छ, र लयले नै कवितालाई साङ्गीतिक बनाउँछ (गौतम, २०६६:५७६) ।

प्रस्तुत कविता मुक्तलयात्मक रहेको देखिन्छ । मुक्तलयात्मक रहेता पनि कतिपय अनुच्छेदमा माध्य र अन्त्यानुप्रास रहेको हुँदा लय रम्य हुन पुगेको देखिन्छ । जस्तै:-

त्यो नूतन र चुपचाप रातमा

त्यो फरक र सुनसान रातमा

चौथो अनुच्छेद, पृ. ४४ ।

यस कवितामा अभिधात्मक भाषाशैलीको प्रयोगको साथै आत्मपरक र वर्णनात्मक शैलीको प्रयोग पनि देखिन्छ । क्षितिज, अनुहार, आकाश, नूतन जस्ता तत्सम र ठेट शब्दले भाषा सरल, सुबोध्य बनेको छ । 'म' प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर कविले आफ्ना मनका अन्तर्भावनाहरूलाई व्यक्त गरेका छन् । कविले सुत्ने वेलामा सग्लो जून देखेको त्यसपछि जीवनको लामो रात्रीमा बादल नलागेको र जुन डुब्ने बेला नभएको अवस्थामा पनि जुन देख्न नसकेको भन्दै मानव जीवन पनि भ्रम र अन्योलको कारणवश मानिस सही विचारमा पुग्न नसक्ने भाव प्रस्तुत गरेका छन् । प्रतीकले अभिव्यक्तिको सङ्केत भन्ने अर्थ बुझाउँछ र यो कुनै वस्तु तत्वको प्रतिनिधित्व गर्ने साङ्केतिक प्रयोग हो (गौतम, २०६६:५६७) ।

प्रस्तुत कवितामा 'बादल' अन्योल र भ्रमको बिम्ब रूपमा, 'जून' उज्यालोको प्रतीक र 'घडी' यान्त्रिक बन्दै गएको मानवीय जीवनको प्रतीकको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.३.२.७ फोहर

कविले सुन्दरताको प्रादुर्भाव पनि फोहरबाटै हुने हुँदा फोहरलाई घृणा गर्न नहुने र विसङ्गतिपूर्ण जीवनमा पनि सङ्गतिको आशा गर्नु पर्दछ भन्दै कुरूपताभिन्न पनि सौन्दर्यको खोजी गरिएको आशय व्यङ्ग्यात्मक र प्रतीकात्मक रूपमा व्यक्त भएकाले शीर्षक र विषयबीच निकट सम्बन्ध हुँदा शीर्षकको औचित्य प्रस्ट हुन्छ ।

प्रस्तुत कविता छ अनुच्छेद, चौतिस पङ्क्तिमा संरचना भएको पाइन्छ । अनुच्छेद दुई पङ्क्तिदेखि बाह्र पङ्क्तिसम्म विस्तार भएको छ । पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि पाँच शब्दसम्म विस्तार भएको छ । यस कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्यलय भएता पनि खुट्टाहरू, आँखाहरू, गाउँहरू-शहरहरू जस्ता अन्त्यानुप्रास शैली र कतिपय पङ्क्तिमा उही शब्द वर्णको बारम्बार आवृत्ति र काव्यात्मक भाषाको प्रयोगले नवीन लयको सिर्जना हुन पुगेको देखिन्छ । यस कवितामा कविले व्यङ्ग्यात्मक भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन् साथै स्पर्श, हृदय, तृष्णा, आवाज जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द, टिम्टिमाउँछन्, ठेट नेपाली शब्दको प्रयोगले भाषा सरल र उत्कृष्ट रहेको देखिन्छ । कविले प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरेर फोहरको बीचमा पनि सम्भावनाका थुप्रै जूनतारा हुन सक्छन् भन्ने भाव प्रस्तुत गरेका छन् । कविले फोहरविना सफा, राम्रोविना नराम्रो, अँध्यारोविना उज्यालोको कल्पना गर्न नसकिए जस्तै विसङ्गतिपूर्ण मानव जीवनबाट सङ्गतिपूर्ण जीवन खोज्नुपर्ने र बाँच्नको लागि फोहर आवश्यक भएको व्यङ्ग्यात्मक भाव प्रस्तुत गरेका छन् ।

यस कवितामा कविले समसामयिक, निजीबिम्ब र प्रतीकको कलात्मक रूपमा प्रयोग गरेका छन् । यस कविताको तेस्रो अनुच्छेदको दोस्रो पङ्क्ति 'लौरीलाई भैं' चौथो अनुच्छेदको अगाडिको तिनओटा पङ्क्ति र एघारौँ पङ्क्तिमा तुल्यता बुझाउने शब्द 'भैं' आएको हुँदा उपमा अलङ्कारको प्रयोग रहेको देखिन्छ ।

४.३.२.६ समय-नासिया

यो शीर्षक बिम्बार्थको रूपमा आएको छ । कसैको स्वप्निल यादमा निरर्थक र मिलनको आशामा मूल्यवान् समय खेर गइरहेको प्राप्तहीन उपेक्षित जीवनलाई व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिएको हुँदा विषयवस्तु अनुसार शीर्षक छनोट उपयुक्त भएकोले शीर्षकको सार्थकता देखिन्छ ।

प्रस्तुत कविता पाँच अनुच्छेद छतिस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएकोले पाइन्छ । चारपङ्क्तिदेखि दश पङ्क्तिसम्मको अनुच्छेद र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि आठ शब्दसम्म विस्तार रहेका छन् । सबै अनुच्छेदको वितरणमा एक रूपता नदेखिए तापनि कुनै कुनै पङ्क्तिमा शब्दको वितरणमा एक रूपता भएको देखिन्छ । जस्तै:

कहिल्यै बत्ती बाल्न नआउने उसलाई
कसैले बालेर गएका बत्तीहरू निभ्छन् ।

तेस्रो अनुच्छेद, पृ. ४७ ।

माथिको पङ्क्तिमा पाँच/पाँच शब्दको वितरण योजना रहेको छ । यो कविता गद्यलयमा रचिएको भएता पनि कतिपय अनुच्छेदको पङ्क्तिमा अन्त्यानुप्रास ढाँचा, मुक्तक र गजल शैलीका अनुच्छेदको रचना, कोमल शब्दावलीको प्रयोग, शब्द र वर्णको आवृत्तिले कवितामा अन्तरलयको सिर्जना रहेको देखिन्छ ।

यस कवितामा वैचारिक चिन्तन, परिष्कृत र परमार्जित भाषाशैलीको प्रयोग, अनुहार, नदी, जीवन अस्वीकार जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द र ठेट शब्दको प्रयोगले भाषा शैली सहज र सरल बन्न पुगेको देखिन्छ ।

कविले प्रथम पुरुषको दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर मूल्यवान् समय थाहानपाइकन खेर गइरहेको भावलाई यसरी व्यक्त गरेका छन्:

मानौं मलाई जीवनभरी
समय-नासिया भएको छ

मानिसको जीवन आरोह-अवरोहमा कसैको अर्थहीन र सारहीन प्रतीक्षाको आशामा रहेर जीवनको अमूल्य समय खेर गइरहेको प्रति कविले चिन्ता प्रकट गरेका छन् । यस कवितामा 'पानीको थोपा' 'लास' 'सालिक' 'निभेको बत्ती' जस्ता बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग रहेको छ । यहाँ तेस्रो अनुच्छेदको छैठौँ पङ्क्ति 'सङ्गीतको धुन भैँ' कथ्यमा उपमा अलङ्कार आएको देखिन्छ ।

४.३.२.९ अँध्यारोको मौनतामा

प्रस्तुत कवितामा कविले आवाजलाई शक्तिको रूपमा प्रस्तुत गर्दै जीवनको अन्धकारको सघन गहिराइमा परेर हरेक चिजको अस्तित्व हराए पनि आवाज नहराउने र आवाज मान्छेको साहरा हुने आशय बिम्बात्मक रूपमा प्रस्तुत गरेका हुँदा शीर्षक उपयुक्त र तर्कसङ्गत देखिन्छ ।

यस कविताको पङ्क्तिमा आएको अन्तरलाई आधार मान्दा लामा छोटो आयामका पाँच अनुच्छेद, चौबीस पङ्क्ति रहेको देखिन्छ । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्तिदेखि पाँचपङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ, शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । प्रस्तुत कवितामा मुक्तलय

विधान रहेको छ । कुनै अनुच्छेद गजल र मुक्तक शैलीका रहेका छन् । अन्त्यानुप्रास ढाँचा, कोमल पदावलीको प्रयोगले कविताको लयलाई सुन्दर बनाउनुको साथै उही शब्द वर्णको बारम्बार आवृत्तिले कविता लयबद्ध देखिन्छ । जस्तै:-

एक अर्कालाई चिन्न असमर्थ भइरहेको बेला

एक अर्कालाई बुझ्न असमर्थ भइरहेको बेला

दोस्रो अनुच्छेद, पृ. ४९ ।

यस कवितामा बिम्बात्मक भाषाको प्रयोग भएको छ । प्रेम, जीवन जस्ता प्रचलित तत्सम र अन्य ठेट शब्द लगायत वर्णनपरक काव्यात्मक भाषाको प्रयोगले कवितालाई सरल बनाएको छ । लक्ष्मण प्रसाद गौतमका विचारमा दृष्टिबिन्दुमा कविको विचारधाराको अभिव्यक्ति हुन्छ र यो मुख्य रूपमा प्रथम पुरुष र तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दु गरी दुई प्रकारको हुन्छ (गौतम, २०६६:२४९) ।

प्रस्तुत कवितामा कविले 'म' प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर आफ्ना मनका भावनाहरू व्यक्त गरेका छन् । जस्तै :-

सिर्फ बोलिदिनु तिमि

म तिम्रो आवाजलाई पछ्याउनेछु ।

कविले आवाजलाई शक्तिको रूपमा हेर्दै मानव जीवनको अन्धकारको सागरमा मूर्त वस्तुहरूको अस्तित्व नभेटिए पनि मानवको विकल्पमा रहेका आवाजहरू नहराउने आशय व्यक्त गरेका छन् ।

४.३.२.१० जीवनको गति

मानव जीवन गतिशील रहेको र जीवनको गतिसँगै आफ्ना भोगाइ, सङ्गति र विसङ्गतिलाई एउटा सिकारु फोटोग्राफले चट्याङको कला क्यामरामा लिन खोजेको भैं हृदयमा खिचन चाहेको आशय बिम्बात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक युक्तिसङ्गत देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा पङ्क्ति वितरणको अन्तरलाई आधारमान्दा पाँच अनुच्छेद बीस पङ्क्तिमा संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्तिदेखि सातपङ्क्ति सम्म र पङ्क्तिमा एकशब्ददेखि पाँचशब्दसम्म विस्तार भएको छ । यस कविताको गद्य लय विधान रहेको छ ।

आत्मपरक शैलीमा जीवनको गतिशीलताको भाव, सरल र सहज भाषाको माध्यमबाट व्यक्त गरेका छन् । 'फोटोग्राफर', 'क्यामरा' 'अप्रेसन', 'सर्जन', 'बटन' जस्ता

आगन्तुक शब्द, जीवन, आकश, वर्षा जस्ता तत्सम शब्द र अन्य ठेट शब्दको प्रयोगले भाषा सरल बनेको छ । यस कवितामा कविले 'म' समाख्यता रहेको प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर आफ्नो मनका भावनाहरू व्यक्त गरेका छन् । कविले हरदम गतिशील जीवनको चाहना गरेको, गतिशील जीवनलाई समाउन खोजेको तर त्यसकार्यमा उनी पूर्ण सफल हुन नसकेको यथार्थतालाई व्यक्त गरेका छन् । साहित्य तथा भाषामा सादृश्य वा साहचर्यद्वारा कुनै चिजको प्रतिनिधित्व गर्ने वस्तुलाई प्रतीक भनिन्छ । यसले कुनै विचार वा गुणको प्रतिनिधि गर्दछ (शर्मा २०६३:३१६)।

प्रस्तुत कवितामा 'डरलाग्दो आवाज' र 'चट्याडले' मान्छेको जीवनमा देखा पर्न सक्ने आसन्न विपत्ति, दुःख र भयको बिम्बार्थको रूपमा र 'कालो बादल' अँध्यारो गतिहीन जीवनको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ ।

यस कवितामा 'पक्रन चाहे भैं' कथ्यमा तुल्यता बुझाउने शब्द 'भैं' आएको हुँदा उपमा अलङ्कार आएको देखिन्छ ।

४.३.२.११ आवाजहरूको बन्दीगृह

परिवर्तनको आवाजलाई कसैले नसुनेपछि आवाजहरूलाई समय विहीन एउटा बन्दीगृहमा बन्द गरेको एउटा विद्रोही जीवनको चित्रण गर्दै जुन ओठमा आवाज हुन्छ त्यो मानवको मृत्यु छिटो नहुने कुरा स्वैरकल्पना र व्यङ्ग्यात्मक रूपमा आएको हुँदा विषय र शीर्षक बीच निकटता देखिन्छ । अन्य कविताको तुलनामा यो कविताको संरचना फरक प्रकृतिको छ । आख्यान विधाजस्तो देखिने यो कवितामा दिएका पूर्ण विरामलाई आधार मान्दा बाह्य अनुच्छेद चवालिस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । अन्य कविताको भन्दा यसका पङ्क्ति लामा-लामा रहेका छन् र यो लामो कविता अन्तर्गत पनि पर्दछ । एकपङ्क्ति देखि आठपङ्क्तिका अनुच्छेद र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि एघार शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । यसको लयविधान गद्यात्मक अनुच्छेदमूलक रहेको छ ।

प्रस्तुत कवितामा स्वैरकल्पनात्मक भाषाशैलीको प्रयोग देखिन्छ । यसमा लामा-लामा पङ्क्तिविधान रहेका छन् । कतै आत्मलाप, कतै संवादात्मक, प्रश्नार्थक हुँदै नाटकीकृत र वर्णनात्मक भाषाशैलीको प्रयोग गरेको देखिन्छ । त्यसैगरी आगन्तुक, तत्सम र ठेट शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल र श्रुतिरम्य बनेको छ । प्रथम पुरुष 'म' दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर कविले अन्तर्मनका भावनाहरू व्यक्त गरेका छन् ।

यस कवितामा स्वैरकल्पनाको माध्यमबाट परिवर्तनको चाहनालाई कसैले नसुनेपछि आवाजहरूलाई एउटा बन्दीगृहमा कैद गरी एउटा विद्रोह जीवनको चित्रण गरिएको भाव व्यङ्ग्यात्मक रूपमा व्यक्त गरेका छन् ।

४.३.२.१२ घामजूनको माझमा

जसरी काँडा र पातको बीचमा एउटा सुन्दर फूल भएजस्तै घाम र जूनको बीचमा उज्यालो दिन हुन्छ, त्यसैगरी जन्म र मृत्यु बीचमा एउटा प्रिय जीवन हुन्छ भन्दै आशावादी जीवनदृष्टि बिम्बात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषय बीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा प्रयोग भएको तिनओटा पूर्णविरामलाई आधारमान्दा तिन अनुच्छेद त्रिचालीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा नौ पङ्क्तिदेखि अठार, पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि आठ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । प्रस्तुत कवितामा मुक्तलय विधान रहेको छ । मुक्तलय विधान रहेता पनि अन्त्यानुप्रास शैली, पङ्क्ति र अनुच्छेदमा उही शब्द, वर्णको बारम्बार आवृत्ति, द्वित्व शब्दको प्रयोगले अन्तर्लयको सिर्जना हुन पुगेको छ । यस कविताको भाषा बिम्बात्मक रूपमा आएको छ । अन्त्यानुप्रास शैली, असमापिका क्रियापदको प्रयोग, अकरण क्रियापद र द्वित्व शब्दको प्रयोगको साथै नदी, प्रिय, नृत्य युद्धजस्ता तत्सम शब्दको प्रयोगले भाषा जटिल नभई सरल बनेको छ । कविले यस कवितामा दुई किनाराबीच नदी, काँडा र पातबीच सुन्दर फूल भएभैं मान्छेको असङ्गति बीच पनि सुन्दर जीवन हुनसक्छ भन्दै कविले जीवनप्रति आशावादी रहेको भाव प्रस्तुत गरेका छन् ।

कुनै कृतिमा मुख्य कथ्य (कथन गरिएको प्रस्तुत) अर्थको सहचर प्रतिच्छायाको रूप आउने अर्को सह प्रस्तुत वा सहवर्ती अर्थ बिम्ब हो (त्रिपाठी, २०६०:२०) ।

यहाँ 'काँडा र पात बीचको जीवन' कथ्यमा मानवीय विसङ्गत जीवनको बिम्बार्थको रूपमा र 'निलानिला हस्तक्षेप' निरीह जीवनको प्रतीक र 'अजिङ्गर' अल्छी र हिंस्रक वृत्तिको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ । दोस्रो अनुच्छेदको दोस्रो पङ्क्ति 'सूर्यमुखीफूल भैं' चौथो अनुच्छेदको छैठौँ पङ्क्ति 'अजिङ्गर भैं' 'पागलखाना भैं' मा उपमा अलङ्कारको प्रयोग गरिएको देखिन्छ ।

४.३.२.१३ एउटा लोरी-गीत छोराको लागि

लोरी गीतमा घाम तिम्रो ढोका ढक-ढकाउन आउनेछ, र उत्सवमय दिन खेल्दै रमाउँदै हामीहरू बिताउने छौं भन्दै सुन्दर आशाको कल्पना गर्दै मान्छेमा मानवता र सकारात्मक सोच हुनुपर्ने आशय बिम्बात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक चयन उपयुक्त छ ।

प्रस्तुत कविता पङ्क्तिमा रहेको अन्तरलाई आधार मान्दा छ अनुच्छेद सतचालीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेद दुई पङ्क्तिदेखि एक्काईस पङ्क्तिसम्म विस्तारित लामा आयामका रहेका छन् । पङ्क्तिमा एकशब्ददेखि सातशब्दसम्म रहेका छन् ।

मुक्तलय विधानमा यो कविताको रचना भएको छ । मुक्तलय रहेता पनि अन्त्यानु-प्रास शैली, पङ्क्ति र अनुच्छेदमा उही शब्द, वर्णको बारम्बार आवृत्ति र द्वित्व शब्दको प्रयोगले कविताको लयलाई गेयात्मकता बनाएको छ । यस कवितामा प्रतीकात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ । शब्द र वर्णको आवृत्ति, वर्णनात्मक र संवादात्मक शैली, तत्सम आगन्तुक शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल र सहज बनेको छ ।

यस कवितामा छोरालाई मानव जीवनको प्रतिनिधि पात्र बनाएर मानव जीवनमा दुःख, पिर, व्यथा र अशान्ति मात्रै आउँदैनन् सुख, शान्ति र खुसी लिएर घामले बिहानको ढोका उघार्न आउने छ त्यसपछि एक आपसमा मिलेर उत्सवमय दिन बिताउन पाइने छ भन्दै आशावादी जीवन दृष्टि प्रस्तुत गरेका छन् । यस कवितामा 'घाम' क्रान्ति, 'भालेडाक' विहानीको सङ्केतको प्रतीक र 'चराको गीत' शान्तिको बिम्बको रूपमा आएको पाइन्छ । यस कविताको तेस्रो अनुच्छेदको दोस्रो पङ्क्तिमा 'अँध्यारो चराभैँ पखेटा' कथ्यमा उपमा अलङ्कार आएको देखिन्छ ।

४.३.३ कुरूप कविताको सौन्दर्य खण्डका कविता

कुरूप कविताको सौन्दर्य उप शीर्षकको तेस्रो खण्डमा पाँचओटा कविताहरू समावेश गरिएका छन् । यी कवितामा कविले मानवीय संवेदनहीनता र ह्यासोन्मुख चरित्रको उजागर गर्नुको साथै जीवनलाई जति विसङ्गतिपूर्ण बनाए पनि मानव जीवन मृत्युको अधीनमा रहेको यथार्थलाई स्वीकार गर्दै विसङ्गतिपूर्ण र निराश जीवन भित्र जीवनवादी सौन्दर्यको खोजी गर्न सक्नु पर्दछ र मानिसले अँध्यारोलाई घृणा नगरी उज्यालोलाई प्रेम गर्नु पर्ने र मृत्युलाई घृणा नगरी जीवनलाई प्रेम गर्नुपर्ने युगीन यथार्थलाई अभिव्यक्त गरेका छन् ।

४.३.३.१ कुरूप कविता

समाजमा भएका विसङ्गति, विकृति एवम् कुरूपताबाट कलाको सुन्दरतालाई जोगाउन र बचाउन एउटा नयाँ विद्रोहको शुरूवात गरिएको आशय प्रतीकात्मक रूपमा आएको हुँदा विषय र शीर्षक बीच निकट सम्बन्ध रहेको छ । प्रस्तुत कवितामा प्रयोग गरिएका चारओटा उद्गार चित्रेलाई आधार मान्दा यो कविता चार अनुच्छेद, पचास पङ्क्तिमा रचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा छ पङ्क्तिदेखि उन्नाईस पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि सात शब्दसम्म फैलिएको पाइन्छ ।

प्रस्तुत कविता मुक्तलयमा रचिएको पाइन्छ । मुक्त लय रहेता पनि अनुच्छेदमा उही वर्ण र शब्दको आवृत्तिले अन्तर्लयको सिर्जना यसरी हुन पुगेको देखिन्छ :-

सुन्दरताको दासताबाट मुक्त पारौँ

कलाको अनन्त बन्धनबाट मुक्त पारौँ

तेस्रो अनुच्छेद, पृ. ५९।

प्रस्तुत कविताको भाषाशैली प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक रहेको छ । मुक्तक, गजल र गीतिशैली, कोमल सुन्दर पदावलीको प्रयोगका साथै प्रिय, सौन्दर्य, कविता, मृत्यु, कुरूप जस्ता प्रचलित तत्सम शब्दको प्रयोगले भाषा र शैली सरल बनेको छ । यस कवितामा सबैभन्दा कुरूप राज्यसत्तामा पनि कविता सुन्दर देखिए जस्तै हिंसाको समुद्रमा पनि कविता सफा भएको र कलाको सुन्दरता बोकेको कवितालाई कुरूप बनाउने हासोन्मुख मानवीय चरित्र र संवेदनहीनतालाई उजागार गर्नु यसको मुख्य भाव रहेको छ । यस कवितामा 'मासुपसलको क्रूरता' मानवीय संवेदनहीनताको विम्बको रूपमा 'हिंसाको समुद्र' मानवीय मूल्यहीनताको प्रतीक र 'मन्दिर र वेश्यालय' विकृति र विसङ्गति एवम् छाडा प्रवृत्तिको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.३.३.२ किरणहरूको खेलभूमि

कविले जीवनलाई किरणको खेलभूमिको संज्ञा दिँदै बालक एवम् सम्पूर्ण मानव उज्यालो अथवा किरणलाई आफ्नो अधिनमा पार्न चाहन्छन् र असफलतासंग सङ्घर्ष गर्दै किरणको लठ्ठी टेकेर धर्तीमा उभिन चाहने भाव विम्बात्मक रूपमा व्यक्त गरेका हुँदा शीर्षक औचित्यपूर्ण देखिन्छ । यस कवितामा छ अनुच्छेद बाईस पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक

शब्ददेखि नौ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । अनुच्छेद र पङ्क्ति विधानको वितरणमा एकरूपता देखिँदैन ।

प्रस्तुत कविताको लयविधान गद्य वा मुक्तलय रहेको छ । पहिलो र चौथो अनुच्छेदमा पाँचपङ्क्ति दोस्रो र तेस्रोमा चार पङ्क्ति र छैठौँमा दुई/दुई पङ्क्ति विधानको योजना रहेको हुँदा एक किसिमको नवीन लयको सिर्जना भएको छ । यस कविताको भाषाशैली बिम्बात्मक रूपमा आएको छ साथै आँखिभ्याल, किरण, क्षितिज सुन्दर जस्ता तत्सम, ट्वाइलेट, आगन्तुक शब्दको प्रयोगले भाषा सुबोध्य र सरल बन्न पुगेको छ ।

कविले 'म' प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर कविता र जीवनको सौन्दर्यलाई व्यक्त गरेका छन् । कविले कविताप्रतिको मोह देखाउनुको साथै हरेक मानवले उज्यालोलाई आफ्नो अधीनमा राख्न चाहने र जीवनका चुनौतीसँग सङ्घर्ष गर्दै किरणको लठ्ठी टेकेर धर्तीमा उभिन चाहन्छन् भन्ने आशय व्यक्त गरेका छन् । उपमेय र उपमानका बीच रूप, गुण, क्रिया आदिको समानता देखाइएमा उपमा अलङ्कार हुन्छ (उपाध्याय, २०६१:११५) । यस कविताका पङ्क्तिहरू 'ट्वाइलेट भैँ' र 'उसले लठ्ठी भैँ' कथ्यमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.३.३.३ शब्दका सुरुङहरू

कवि शब्दलाई सहयात्री बनाएर जीवनमा नदीभैँ बगिरहने र सितारको मधुर ध्वनिभैँ बजिरहने गतिशील जीवनको चाहना गरेको आशय बिम्बात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा विषय र भावबीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहेकोले शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा आएको अन्तरलाई आधारमान्दा यस कवितामा छ अनुच्छेद सत्ताइस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको, अनुच्छेदमा एघार पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि पाँचशब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । यो कवितामा मुक्तलय विधान रहेको देखिन्छ । मुक्तलय भएतापनि गजल शैलीका पङ्क्ति विधान अन्त्यानुप्रास शैली शब्द र वर्णको बारम्बार आवृत्तिले लयको सिर्जना हुन पुगेको छ ।

कविताको भाषाशैली सरल सम्प्रेष्य देखिन्छ । तत्सम र भर्रा शब्दको प्रयोग काव्यात्मक भाषा, कोमल शब्दावलीको प्रयोग, अन्त्यानुप्रास शैलीले भाव र शैलीबीच एकरूपता देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा 'म' प्रथमपुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर कविले अन्तर्मनका चैतन्य पीडाको अभिव्यक्ति यसरी दिएका छन् :-

जब जीवनले घातक हमला गर्छ
म शब्दका सुरुङहरू भित्र छिर्छु !

अन्तिम अनुच्छेद, पृ. ६२।

यस कवितामा कविले जीवनका घातक हमलाबाट बँचन शब्दका सुरुङभित्र पस्ने, जीवनको हजारौँ सुखदुःखमा सितारको मधुर धुनभैँ बज्दै कविताको शब्दलाई सहयात्री बनाएर नदीभैँ बगिरहने गतिशील जीवनको चाहना गरेको भाव व्यक्त भएको पाइन्छ । विष्णुप्रसाद पौडेलका अनुसार अलङ्कार करण र कारकका रूपमा आउँदा यो सौन्दर्य साधन वा साहित्यको शोभावर्द्धक तत्व भन्ने सीमित अर्थ बुझिन्छ (पौडेल, २०५७:७०)।

प्रस्तुत कविताको दोस्रो अनुच्छेदको दोस्रो पङ्क्तिको 'बेवारिसे चिठीभैँ' र तेस्रो अनुच्छेदको दोस्रो पङ्क्ति 'सितारभैँ र नदीभैँ' कथ्यमा उपमा अलङ्कार प्रयोगमा आएको देखिन्छ ।

४.३.३.४ कवि नभएको भए

यो सङ्गतिहीन समाजमा आफू कवि भएको कारणबाट नै जीवनको क्रूर प्रहारलाई प्रेममय अभिव्यक्तिमा बदल्ने सामर्थ्य प्राप्त भएको र आफ्ना मनको बन्द ढोका काव्यको स्पर्शले खोलेको अनुभूतिजन्य भाव व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक छनोट उपयुक्त देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा देखिएको अन्तरलाई हेर्दा एघार अनुच्छेद, तेत्तिस पङ्क्तिमा यसको संरचना देखिन्छ । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्तिदेखि सात पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि आठ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । प्रस्तुत कविताको लय गद्य रहेको छ, तापनि कतिपय अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास ढाँचा र उही शब्द र वर्णको आवृत्तिले अन्तर्लयको सिर्जना भएको छ ।

प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर कविले आफ्नो जीवनको अन्तरपीडालाई यसरी व्यक्त गरका छन् :-

म समयको हमलासँग भयभीत भएर

समयलाई गीत बनाएर गाउन असमर्थ हुने थिएँ

पाँचौँ अनुच्छेद, पृ. ६३ ।

कवितामा प्रतीकात्मक र बिम्बात्मक भाषाशैलीको प्रयोग देखिन्छ । प्रचलित शब्द र पदावलीको प्रयोग, अन्त्यानुप्रास, गजलशैलीका पङ्क्ति विधानको प्रयोग र आत्महत्या, आमा सूर्य जस्ता तत्सम र ठेट शब्दको प्रयोगबाट भाषाशैली सरल सम्प्रेष्य बनेको छ ।

यस कवितामा कविको पागल हुने, आत्महत्या गर्ने र कविता लेख्ने तिनओटा विकल्प रहेका र कवि भूपिनले अन्ततः स्वभाविक मान्छे बन्नलाई कविता लेख्ने बाटो अँगालेको भन्दै कवि नभएको भए ईश्वरलाई गाली गर्न र मानिसलाई माया गर्न असमर्थ हुने धारणा व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा कविले निजी र समसामयिक बिम्ब र प्रतीकको कलात्मक रूपमा प्रयोग गरेको देखिन्छ ।

प्रस्तुत कविताको दोस्रो अनुच्छेदको दोस्रो पङ्क्तिको 'तपाईंहरूभैँ' र आठौँ अनुच्छेदको दोस्रो पङ्क्तिको 'कुनै अपराधभैँ' कथ्यमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग गरेका छन् ।

४.३.३.५ पाठकको हत्या

वर्तमान समयमा कविहरू पाठकको संवेदनाहरूको व्यापार गर्दछन् । सत्ताको समर्पणमा कविताको बलि चढाएर आफू महान् कवि भएको गर्व गर्छन् भन्दै कवि र काव्यजगत्मा देखिएका विकृति एवम् विसङ्गतिप्रति व्यङ्ग्यात्मक भाव व्यक्त भएको हुँदा शीर्षक बीच अन्योन्याश्रित सम्बन्ध भएकाले शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा एउटा उद्गार चिह्न र सातओटा पूर्णविराम चिह्नलाई आधारमान्दा यो आठ अनुच्छेद र अठ्चालिस पङ्क्तिमा संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि नौ पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको छ । पङ्क्ति र अनुच्छेदको वितरणमा कुनै एकरूपता देखिँदैन । यो कविता गद्यमा रचिएको हुँदा यसको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्यलय भए तापनि कतिपय अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास र उही शब्द र वर्णको आवृत्तिले लयको सिर्जना भएको देखिन्छ । यसमा प्रतीकात्मक भाषाको प्रयोग देखिन्छ । छोटो शब्द र वाक्य, अकरण क्रिया पदको प्रयोग, गजल, मुक्तक शैलीका अनुच्छेद ढाँचा, शोकगीत, सूर्य ईश्वरजस्ता तत्सम शब्द, एडिक्ट, सिरिन्ज पोट्रेट जस्ता आगन्तुक शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल भएको देखिन्छ ।

यस कवितामा कविले तृतीय पुरुष दिष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेको पाइन्छ । कवि र कविताको दुनियामा देखिएका विकृति र विसङ्गतिप्रति व्यङ्ग्य गर्दै आजका कविहरू अमूल्य प्रेमका सस्ता कविताहरू लेखेर पाठकको संवेदनामा चोट पुऱ्याउँछन् र सत्ताको समर्पणमा आफू महान् कवि भएको गर्व गर्छन् भन्ने करुण भाव व्यक्त गरेका छन् । यस कविताको

दोस्रो अनुच्छेदको चौथो पङ्क्ति 'सुन्दरी वेश्यालाई भैं' कथ्यमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग गरिएको छ ।

४.३.४ एम्बुलेन्सभित्र देश खण्डका कविता

यस कविता सङ्ग्रहको चौथो खण्डमा एम्बुलेन्स भित्र देश भित्र सातओटा कविताहरू रहेका छन् । यी कविताहरूमा जनतामा लोकतन्त्र र प्रजातन्त्र प्रतिको चाहना बढेको, देशको गरिबी आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक असमानताको साथै दारुण र कारुणिक अवस्थाको चित्रण, राजनीतिक विकृति र मानवीय मूल्यहीनताको सन्दर्भबाट वर्तमान बोधलाई अभिव्यञ्जित गर्ने यस खण्डका कविताहरूले समग्रदेशका रुग्णता जर्जर र विद्रूप अवस्थाको यथार्थलाई देखाएका छन् ।

४.३.४.१ लोकतन्त्रलाई प्रश्न

जनताले तनमन र आफ्नो प्राणसमेत अर्पण गरेर ल्याएको लोकतन्त्र माथि जनताका असीम आस्थाहरू रहेको र ती आस्था र चाहनालाई पूरागर्न के लोकतन्त्र सक्षम छ भनी प्रश्नात्मक शैलीमा व्यङ्ग्यात्मक भाव व्यक्त गरिएको हुँदा शीर्षक र विषयवस्तु बीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ । यस कवितामा प्रयोग भएका प्रश्नवाचक चित्रेलाई आधार मान्दा तेह्र अनुच्छेद र कविता पङ्क्तिको अन्तरलाई आधार मान्दा आठ अनुच्छेद सतचालिस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको पाइन्छ । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्तिदेखि एघार पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । उनका कवितामा शिल्प र संरचना, भाव र संरचना बीचमा सन्तुलन रहेको पाइन्छ । सन्तुलित भाव र शब्द एवम् वर्णको पुनरावृत्तिले कविताको लयलाई आकर्षक बनाएको छ (पौडेल, २०६७:७०-७१) ।

मुक्तलय विधानमा यो कविताको रचना भएको छ । मुक्तलय भएतापनि अन्त्यानुप्रास ढाँचा, गजलशैलीका पङ्क्ति, अनुच्छेदमा उही शब्द, वर्ण र पदावलीको बारम्बार आवृत्तिले कवितालाई लयात्मकता बनाएको छ । जस्तै :-

नानीमा आशा टाँसिएका आँखाहरू छन्

परेलीमा निराशा टाँगिएका आँखाहरू छन्

पहिलो अनुच्छेद, पृ. ६९ ।

यस कविताको भाषाशैली प्रश्नात्मक देखिन्छ । आँखाहरू, दृश्य, जीवन, विम्ब, आँसु जस्ता तत्सम र तद्भवका साथै आगन्तुक शब्दको प्रयोगले भाषाशैली लालित्यमय बन्न पुगेको छ ।

जनमुखी शासन व्यवस्थाको लागि देशमा लोकतन्त्रको आवश्यकता रहेको र जनताको त्याग र बलिदानबाट आएको लोकतन्त्रसँग जनतालाई दिने चिजहरू के के छन् भनी प्रश्नात्मक शैलीमा कविले आफ्ना भावहरू व्यक्त गरेका छन् । प्रस्तुत कवितामा 'पसिना रङ' त्याग र बलिदानको प्रतीक, 'जून र घाम' नयाँ व्यवस्थाको प्रतीक, 'बन्दुक' द्वन्द र हिंसाको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.३.४.२ शब्दकोश

कर्णालीको स्थानिक परिवेशलाई आधार बनाएर त्यहाँका जनताले भोग्नु परेको पीडा विपन्नता, अभाव र गरिबीलाई देखाई नेपालको अभाव, गरिबी, आर्थिक विपन्नता पछ्यौटेपन, भौगोलिक विकटता र चरम आर्थिक विपन्नतालाई व्यङ्ग्यात्मक र प्रतीकात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिएको हुँदा शीर्षक छनोट उपयुक्त छ । प्रस्तुत कवितामा लामाछोटा आयामका छ अनुच्छेद छत्तिसपङ्क्तिमा यसको संरचना भएको छ । अनुच्छेद तिन पङ्क्तिदेखि एघार पङ्क्तिसम्म र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि आठ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ ।

गद्यलयमा यस कविताको रचना भएको छ । गद्य वा मुक्तलय भएतापनि उही शब्द, वर्ण र पदावलीको आवृत्तिले कवितामा अन्तरलयको सिर्जना हुन गएको देखिन्छ । जस्तै :-

जीवनका किनाराहरूमा

भोकका लहरहरू लेख्नुनपरोस्

अभावका लहरहरू लेख्नुनपरोस्

अन्तिम अनुच्छेद, पृ. ७२ ।

प्रस्तुत कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको छ साथै मृत्यु, शब्दकोश, समय, अश्लील जस्ता तत्सम शब्द कालापहाड, यासाँगुम्बा, तुइन, मधुस जस्ता ठेट शब्द, डिपो, लाइन जस्ता आगन्तुक शब्दको प्रयोगले भाषाशैली सरल आकर्षक बनाएको छ । सातकिलो चामल र एकपोका नूनको लागि खाद्य डिपोमा लामो लाइनमा लागेर रिक्तो मधुसको हावा भिकी दशैं मनाउनुपर्ने कर्णालीको व्यथालाई करुणभावमा यस कवितामा व्यक्त गरिएको छ भन्ने लक्ष्मणप्रसाद गौतमले उल्लेख गरेका छन् (गौतम, २००९:भूमिका) ।

नेपालको आर्थिक विषमता, असमानता, भौगोलिक विकटता साथै गरिबी, दरिद्रता र पछाँटेपनका कारण कर्णाली प्रदेशको मान्छेले भोग्नुपरेको चरम आर्थिक सङ्कटलगायत विविध समस्याहरूलाई कारुणिक भावमा व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा 'तुइन' जीवनको सङ्कट, कठिन अवस्था, 'रित्तो मधुसको हावा' आर्थिक सङ्कटको बिम्बको रूपमा र 'खाद्यडिपो र नुन' गरिबीको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.३.४.३ परिवर्तन

प्रस्तुत कवितामा हामीहरू सङ्कुचित विचारका गुफाहरूमा मस्त निदाइरहेका छौं तर विश्व परिवर्तन तथा विकासको बाटोमा गतिशील छ । हामीसँग परिवर्तनका आवाजहरू सुन्ने कान छैनन् परिवर्तनका उत्सव देख्ने आँखाहरू छैनन् भन्ने आशयलाई व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । यस कवितामा लामा छोटा गरी चार अनुच्छेद उनन्तीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि एघार पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एकशब्ददेखि पाँच शब्दसम्मको विस्तार रहेको छ । पहिलो अनुच्छेद र अन्तिम अनुच्छेदको संरचना समान रहेको देखिन्छ ।

प्रस्तुत कविता गद्यलयमा रचना गरिएको छ । यस कवितामा प्रतीकात्मक भाषा-शैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ भने शैली वर्णनात्मक रहेको छ । गल्लीहरूमा-क्यालेण्डरमा, कानहरू छैनन्, -आँखाहरू छैनन् जस्ता अन्त्यानुप्रासको साथै क्यालेण्डर आगन्तुक, नदी, कवि, आदिम जस्ता तत्सम शब्दको प्रयोगले भाषाशैली सरल बनाएको छ । कविले 'म' समाख्याता प्रथम पुरुष पात्रको माध्यमबाट देशमा राजनीतिक परिवर्तनको आभाष हुन नसकेको भावहरू व्यक्त गरेका छन् । सङ्गतिहीनता र नकारात्मक विचारबाट निर्देशित भएर जीवनको अँध्यारो गुफामा हामी सुतिरहेका छौं तर समय परिवर्तनशील, गतिशील छ । यस्तो परिवर्तन र गतिशील समयको आवजलाई सुन्ने कान र उत्सवलाई देख्ने आँखा छैनन् भन्दै युगीन राजनीतिक परिवर्तनको चाहनाको आभाष हुन नसकेको भावको चित्रण गरेका छन् ।

प्रस्तुत कवितामा कविले निजी, समसामयिक बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । 'युगका अँध्यारा गुफा' मानवीय जीवनको विसङ्गत बिम्बको रूपमा, "क्यालेण्डर" अर्थहीन रूपमा खेर गइरहेको समयको, र "आवाजका लस्कर" परिवर्तनको चाहनाको प्रतीक रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.३.४.४ सडक र एम्बुलेन्स

रोग, भोक, शोक र अशान्ति जस्ता विभिन्न विसङ्गतिका कारण देश विरामी परेको र देशलाई उपचारको आवश्यकता परेको हुँदा सम्पूर्ण जनतालाई देशको उपचार अर्थात् देश विकासको लागि जुट्न आग्रह गरिएको व्यङ्ग्यात्मक भाव व्यक्त गरिएकोले शीर्षक उपयुक्त र सार्थक देखिन्छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि नौ पङ्क्तिसम्म र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि पाँच शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ ।

मुक्त लय रहेको भएतापनि यस कवितामा गजल, मुक्तक शैलीमा काव्यात्मक अभिव्यक्तिका कारण लयमा मधुरता सिर्जना भएको छ ।

व्यङ्ग्यात्मक भाषाशैली र कोमल शब्दावलीको प्रयोगका साथै एम्बुलेन्स, अस्पताल, सिट जस्ता आगन्तुक शब्दको प्रयोगले भाषाशैलीलाई सरल बनाएको छ ।

यस कवितामा प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दुको प्रयोग मार्फत कविले देशको रुग्ण र जर्जर अवस्थाको बारेमा आफ्ना भावनाहरू व्यक्त गरेको पाइन्छ । नेपाली समाज र देशले भोग्नुपरेको विविध समस्याका कारण देश विरामी भई रुग्ण र जर्जर अवस्थामा पुगेको दारुण र कारुणिक भावलाई गम्भीर रूपमा व्यक्त गरेको पाइन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा 'साइरन' चेतनाको, 'विरामीदेश' रुग्ण र जर्जर अवस्थाको प्रतीकको रूपमा 'भत्किएको सडक' विकृत देशको युगीन जटिलताको बिम्बको रूपमा प्रयोग भएको छ ।

४.३.४.५ उल्टो जुलुस

युगीन मानवहरू असङ्गतिलाई नै सङ्गति मान्दै जिउँदो आशाको दीप जलाएको पृथ्वीलाई नै मृत घोषणा गरेको तितो यथार्थलाई उल्टो जुलुसको प्रतीकका रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षकको सार्थकता प्रस्ट हुन्छ । प्रस्तुत कवितामा देखिएको अन्तरलाई आधार मान्दा सात अनुच्छेद बाउन्न पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि तेह्रपङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि सात शब्दसम्मका पङ्क्ति विधान रहेको पाइन्छ । पङ्क्ति र अनुच्छेदको वितरणमा एक रूपता भएको पाइँदैन ।

प्रस्तुत कविताको लयविधान गद्यात्मक मुक्त लयमा भएको छ । मुक्तलय रहेतापनि कतिपय अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास ढाँचा, उही शब्द वर्ण र वाक्यको बारम्बार आवृत्तिले कवितामा अन्तरलयको सिर्जना भएको देखिन्छ । जस्तै :-

जुलुससंग नयाँ खुट्टाहरू छन्

जुलुससंग नयाँ सपनाहरू छन्

तेस्रो अनुच्छेद, पृ. ७५ ।

यस कवितामा प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ । साथै ह्वाह्वार्ती, फन्फनी जस्ता अनुकरणात्मक शब्द, पृथ्वी, शोकदिवस, कुरूप जस्ता तत्सम शब्दको प्रयोगले भाषा सरल र बोधगम्य बन्न पुगेको देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा कविले राजनीतिक मूल्यहीनता सङ्गतिहीनतालाई चित्रण गरेका छन् । उल्टो जुलुस (उल्टो पाइला) ले लक्ष्य र गन्तव्यको शिखरमा पुऱ्याउने योग्य पाइला होइन त्यसैले जति हिँडेपनि उल्टो पाइला हुनेहरू फेदीतिरै अलमलिन्छन् र गन्तव्यमा पुग्दैनन् । देशमा पछिल्लो समय विनाकारण हडताल, बन्द, चक्काजाम गर्ने गलत कार्यप्रति कविले व्यङ्ग्यभाव व्यक्त गरेका छन् ।

यस कवितामा 'उल्टोजुलुस' राजनीतिक मूल्यहीनताको विम्बको रूपमा, 'घडी' यान्त्रिक, 'कात्रो' मान्छेको विद्रूप र विसङ्गत पक्षको र 'भन्डा सल्काउनु' राजनीतिक विकृति र मूल्यहीनताको प्रतीकको रूपमा आएका छन् । प्रस्तुत कवितामा "मुहान तिरै फर्किएको कुलाको पानी भैँ" कथ्यमा 'भैँ' तुलना गर्ने शब्द आएको हुँदा उपमा अलङ्कार देखिन्छ ।

४.३.४.६ हस्ताक्षर

शरीरका निमित्त टाउकाको जुन स्थान छ रचनाका निमित्त शीर्षकको त्यही स्थान छ । (खनाल, २०६८:१७६) । यस कवितामा निरङ्कुश शासन व्यवस्थाप्रति आक्रोश एवम् विद्रोहको आवाज बुलन्द गर्ने परिवर्तनकर्मी जनताको आवाजलाई उजागर गर्दै निरङ्कुशताको पक्षधरलाई तिखो व्यङ्ग्यात्मक वाण प्रहार गरिएको हुँदा शीर्षक र विषय बीच घनिष्ठ सम्बन्ध देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा लामाछोटा आयामका सात अनुच्छेद तीस पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको पाइन्छ । यस कविताको लय विधान गद्य रहेको छ । गद्यलय भए तापनि कतिपय अनुच्छेदमा उही शब्द र वर्णको आवृत्तिले कविता गेयात्मक बनेको छ । यस कवितामा प्रतीकात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ साथै गजल र मुक्तक शैलीको अलङ्कारिक भाषाको पनि प्रयोग देखिन्छ । शताब्दी, नरभक्षी,

आमा, युग, जस्ता तत्सम शब्द र अन्य भर्त्ता शब्दको प्रयोगले भाषालाई सरल र सम्प्रेष्य बनाएको छ ।

प्रस्तुत कवितामा प्रथमपुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर निरङ्कुश शासन व्यवस्थाप्रति आक्रोश व्यक्त गरेको पाइन्छ । निरङ्कुश शासन व्यवस्थाका पक्षपोषकहरूको जरा उखेलेर फ्याँक्नुपर्ने कुरामा कविलाई हस्ताक्षर गर्ने रहर रहेको तिखो व्यङ्ग्यभाव व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा 'नरभक्षीरूख' निरङ्कुश शासक, रूख उखेल्लु, निरङ्कुश राजतन्त्र उन्मूलन गर्नु, 'हुरी' जनविद्रोहको प्रतीकका रूपमा आएका छन् भने 'पर्खाल' निरङ्कुश शासन व्यवस्थाको विम्बको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.३.४.७ अन्तिम कविता

यस कवितामा कविले मिठो सपना देख्दै जहाँ शान्ति, सुव्यवस्था, उज्यालो, अमनचयन, खुसीमात्र हुनेछन् विसङ्गति र विकृति देख्न सुन्न पाइँदैन भन्दै उदात्तभाव व्यक्त गरेका छन् । यहाँ शीर्षक अनुसार विषयको तादात्म्यता रहेको हुँदा शीर्षकको सार्थकता देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा दिएका उद्गार, पूर्णविराम र प्रश्नवाचक चिह्नलाई आधार मान्दा कवितामा छ अनुच्छेद पैतालीस पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म रहेको देखिन्छ ।

यस कवितामा गद्यलय विधान रहेको छ । गद्यलय रहेतापनि डबलीहरूमा, भुपडीहरूमा जस्ता अन्त्यानुप्रास शैली र प्राय अनुच्छेदमा उही शब्द, वर्ण एवम् पदावलीको बारम्बार आवृत्तिको कारण कविताको लयविधानलाई सङ्गीतमय बनाएको पाइन्छ ।
जस्तै:-

हे ईश्वर
म जताततै उज्यालै उज्यालो देखिरहेछु
जताततै उज्यालै उज्यालो देखिरहेछु
जताततै उज्यालै उज्यालो देखिरहेछु ।

अन्तिम अनुच्छेद, पृ. ८०।

यस कविताको भाषा गद्य प्रधान आत्मकथन शैलीका रूपमा प्रयोग भएको देखिन्छ । प्रचलित तत्सम र ठेटशब्द, द्वित्वशब्दको प्रयोगले भाषा सरल र लयात्मक बन्न पुगेको छ ।

यस कवितामा प्रथम पुरुष पात्रको प्रयोग मार्फत कविले आफ्ना भावनाहरू व्यक्त गरेका छन् ।

यो कविता कविको मिठो सपनाको रामराज्य हो, जहाँ शान्ति, अमनचयन, भाइचारा, मेलमिलाप, खुसी, हर्ष उल्लास विश्वबन्धुत्वको भावनामात्र जताततै भेटिन्छन् भने मानवीय हित, विपरीतका विसङ्गतिहरूको छाप कहीं कतै अनुभव गर्न, देख्न पाइँदैन भन्दै उदात्त करुण भाव व्यक्त गर्दछन् । यस कवितामा कविले निजी र समसामयिक बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । भोला, अँध्यारो, नयाँलुगा, जस्ता शब्दहरू बिम्ब र प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.३.५ ईश्वर: केही शोकगीतहरू खण्डका कविता

यस कविता सङ्ग्रहको पाँचौं खण्डको रूपमा रहेको *ईश्वर: केही शोकगीतहरू* उप-शीर्षकमा चारओटा कविताहरू समावेश भएका छन् । यी कवितामा उत्तरआधुनिक प्रवृत्ति र साइबर संस्कृतिको प्रभाव रहेको देखिन्छ । चारवटै कवितामा ईश्वर सम्बन्धी मिथक, बिम्ब र प्रतीक प्रस्तुत गर्दै विश्व शान्तिबाट अशान्तितर्फ लम्किरहेको प्रति कविले चिन्ता व्यक्त गर्दै ईश्वर सम्बन्धी रूढ मान्यताप्रति विमति, ईश्वरप्रति पुनर्मूल्याङ्कनका प्रश्नहरू *ईश्वर: केही शोकगीतहरू* अन्तर्गतका कविताले अगाडि सारेका छन् ।

४.३.५.१ कम्प्यूटरमा ईश्वर

साइबर संस्कृतिको कारण मानिसले मौलिक संस्कार गुमाएको र मान्छे यान्त्रिक, जड, शुष्क, हृदयहीन, संवेदनाहीन बनेकोप्रति कविले चिन्ता व्यक्त गर्दै प्रविधि संस्कृतिले ल्याएको विसङ्गतिप्रति मिथकीय पात्र ईश्वरको प्रयोग गरी व्यङ्ग्य गरिएको हुँदा यो शीर्षक छनोट उपयुक्त देखिन्छ । ज्ञान विज्ञान सम्बन्धी कुनै पनि शब्द रचना, भावरचना, वस्तुसंरचना आदिलाई संरचना भनिन्छ (पोखरेल, २०४०: १२०६) ।

प्रस्तुत कविता छ अनुच्छेद पैतीस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको छ । अनुच्छेद र पंक्ति वितरणमा कुनै एकरूपता देखिँदैन । अनुच्छेदमा चार पङ्क्तिदेखि चौध पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एकशब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । यस कवितामा गद्यलय विधान रहेको पाइन्छ । गद्यलय भएतापनि मुक्तक शैली, कोमल पदावली, अन्त्यानुप्रास ढाँचा, शब्द,

वर्णको आवृत्ति साथै पहिलो र अन्तिम अनुच्छेदमा शब्द र पङ्क्तिको वितरणमा एकरूपता देखिएको हुँदा नवीन लयको सिर्जना हुन पुगेको छ ।

यस कवितामा व्यङ्ग्यात्मक र प्रतीकात्मक भाषाको प्रयोग भएको देखिन्छ । कम्प्युटर, इमेल, इन्टरनेट, माउस, कन्ट्रोल, रिमोट जस्ता आगन्तुक शब्द ईश्वर, देवी, तृष्णा आदिम नीतिसास्त्र जस्ता तत्सम शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल भएको पाइन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा कविले तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर आफ्ना भावनाहरू व्यक्त गरेका छन् । कविले विज्ञान प्रविधिले किचेको यान्त्रिक समाजमा ईश्वरलाई मिथकीय पात्रको रूपमा प्रस्तुत गर्दै ईश्वरहरूले इन्टरनेटमा देवीहरूसँग साइबरसेक्सका कुरागर्दै डिजिटल कोठा भित्रका आधुनिक द्रौपदीसँग ब्लुफिल्म हेर्नुजस्ता सन्दर्भबाट आजको भूमण्डलीकरण, प्रविधि र संस्कृतिले ल्याएको प्रभावलाई व्यक्त गरेका छन् ।

यस कवितामा कविले निजी समसामयिक, विज्ञान प्रविधिसँग सम्बन्धित बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । 'ब्लुफिल्म' सामाजिक विकृति र विसङ्गतिको बिम्बको रूपमा इमेल, इन्टरनेट, डिजिटल जस्ता साइबर र विज्ञान प्रविधिसँग सम्बन्धित प्रतीक प्रयोग गरेको पाइन्छ ।

यस कवितामा उत्प्रेक्षा अलङ्कारको प्रयोग भएको देखिन्छ । जस्तै:-

कम्प्युटरमा

नभएको स्वर्गबाट

देवीले पठाएका इ-मेल पढिरहेछन्

ईश्वरहरू !

यहाँ प्रस्तुत देवी, ईश्वर र अप्रस्तुत प्रेमी-प्रेमिका हो । यहाँ देवी ईश्वरमा प्रेमी र प्रेमिकाहरूको कलात्मक सम्भावना देखिएको हुँदा उत्प्रेक्षा अलङ्कारको प्रयोग देखिन्छ ।

४.३.५.२ ईश्वरहरूको युद्ध

प्रस्तुत कविताको शीर्षक प्रतीकात्मक रूपमा आएको छ । सूर्यलाई रक्सी पिएर मातेको मान्छेसँग समरूपता प्रदान गरी मानवीकरण गरिएको छ र यसको माध्यमबाट विश्वमा देखा परेको आसन्न विपत्तिप्रति सङ्केत गरिएको हुँदा यो शीर्षकको सार्थकता सिद्ध छ ।

प्रस्तुत कवितामा देखिएका छ ओटा पूर्णविराम चिह्नलाई आधारमान्दा लामाछोटा आयामका छ अनुच्छेद र बाउन्न पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि चौध पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । प्रस्तुत कविताको लयविधान गद्यात्मक अनुच्छेदमूलक रहेको छ । गद्यलय भएतापनि कतिपय अनुच्छेदमा उही शब्द वर्ण र पदावलीको बारम्बार आवृत्ति र अन्त्यानुप्रास शैलीको कारण कवितामा सङ्गीत र लयको तादात्म्यता पाइन्छ । जस्तै:

हाम्रा घरहरू भत्काइरहेका हुनेछन्

हाम्रा कटेराहरू जलाइरहेका हुनेछन्

पाँचौ अनुच्छेद, पृ. ८६।

यस कवितामा प्रतीकात्मक र व्यङ्ग्यात्मक भाषा शैलीको प्रयोग रहेको छ । भविष्यत् कालीन क्रियापदको प्रयोग, क्षितिज, सूर्य पृथ्वी, आवाज, आकाश, नूतन जस्ता प्रचलित तत्सम शब्दको प्रयोगले कविता जटिल नभई सरल सहज बन्न पुगेको छ ।

कविले 'मान्छे' तृतीय पुरुष पात्रको माध्यमबाट आफ्ना भावनाहरू व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा कविले मान्छेभित्रको चरम अहमलाई ईश्वरमान्छन् र आफूलाई त्यसको विपक्षमा उभ्याउन कोसिसरत छन् । त्यसैले ईश्वरहरूको युद्धमा ईश्वरहरू मरिरहँदा पनि मान्छेहरू बाँचेका छन् । त्यही अहमको शून्यता नै मान्छेको जन्म र ईश्वरको मृत्यु हो भन्ने कुरा ईश्वरलाई मिथकीय पात्रको रूपमा प्रयोग गरेर विश्वशान्ति र अमनचयनबाट अशान्ततर्फ अग्रसर भएको भाव काव्यात्मक शैलीमा व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा 'मातेको सूर्य' मान्छेको जीवन माथिको आसन्न विपत्तिको विम्बको रूपमा 'लालटिन' उज्यालो र समन्तको प्रतीक, 'गोलिलागेको सूर्य र ब्याकहोल', सन्त्रास र आतङ्कको, प्रतीकको रूपमा आएको छ ।

४.३.५.३ ईश्वरका नदीहरू

ईश्वरहरूद्वारा शासित नदी एवम् मानवद्वारा शासित नदीहरू बीच तुलना गर्दै कविले ईश्वरद्वारा शासित नदीहरू आज्ञाकारी अनुशासित हुन्छन् भने मानवमनका नदीहरू विद्रोही अनुशासनहीन, युद्धलडिरहने आशयलाई व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषयबीच घनिष्ठ सम्बन्ध देखिन्छ । प्रस्तुत कविता लामाछोटा सात अनुच्छेद तीस पङ्क्तिमा संरचित

छ । अनुच्छेदमा दुई पंक्तिदेखि चौधपङ्क्तिसम्म र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि पाँच शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा गद्य लय विधान रहेको छ । गद्य लय रहेता पनि अन्त्यानुप्रासका साथै अनुच्छेदमा उही शब्द वर्ण र वाक्यको बारम्बार आवृत्तिले गद्य कविता पनि छन्दोबद्ध कविता जस्तै लयबद्ध र श्रुतिरम्य हुन पुगेको छ । यस कवितामा प्रतीकात्मक भाषाशैलीको प्रयोगका साथै टक्क, स्वाट्ट, ह्वात्तजस्ता अनुकरणात्मक शब्द, ईश्वर, अनुशासित, युद्ध, स्वयं जस्ता तत्सम शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा लयात्मक बनेको छ । ईश्वरका नदी र मान्छेका नदीहरूबीच तुलना गर्दै मान्छेको नदी भन्दा ईश्वरका नदीहरू अनुशासित, निरन्तर बग्ने गतिशीलतालाई रुचाउने रूपान्तरणलाई आत्मसात् गर्दै समुद्रमा मिल्न उत्सव मनाउँदै पुनः नदी बन्ने चक्रमा घुमिरहन्छन् तर मान्छेका नदीहरू आज्ञाकारिता र अनुशासित नहुने, विद्रोह र युद्ध गरिरहने फरक-फरक रूपमा रूपान्तरित भइरहने भाव व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा कविले निजी र समसामयिक बिम्ब र प्रतीक अतिरिक्त प्रकृतिबिम्ब, ईश्वरबिम्ब आदिको कलात्मक रूपमा प्रयोग गरेका छन् । प्रस्तुत कविताको छैठौँ अनुच्छेदको दोस्रो पङ्क्ति 'स्वयम् ईश्वर भौँ' कथ्यमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग गरेको पाइन्छ ।

४.३.५.४ आविष्कार

गतिहीन बनाइराख्ने रूढ ईश्वरप्रतिको मान्यता विरुद्ध भक्तहरूले गरेका विद्रोहको भावध्वनि पाइन्छ । कविले गतिशीलताको पूजा गर्दै यही धर्तीलाई स्वर्गतुल्य बनाउने र अभाव दुःख दरिद्रताले पिल्सिएका जनतालाई स्वर्गीय न्यानो बाँड्ने उच्च देवदूतको चाहना भएको भाव व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षकको सार्थकता देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा सात अनुच्छेद पचास पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको छ । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्तिदेखि तेह्र पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि आठ शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । यो कविता गद्यलयमा रचना गरिएको भएतापनि अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास उही शब्द र वर्णको आवृत्तिले कविताको लयलाई यसरी श्रुतिरम्य बनाएको देखिन्छ । जस्तै:-

अब हामी यही जन्ममा

किरणहरूको लठ्ठी टेकेर उभिन चाहान्छौँ

रडहरूको उज्यालो आविष्कार गर्न चाहान्छौँ

यस कवितामा व्याङ्ग्यात्मक भाषाशैलीको प्रयोग देखिन्छ । तत्सम, भर्त्सा आगन्तुक शब्दको प्रयोगले भाषालाई सरल बनाएको छ । तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर कविले आफ्नो मनका भावनाहरू व्यक्त गरेको पाइन्छ । यस कविताले मान्छेको जन्म र ईश्वरको मृत्युको कथा बोकेको छ, जहाँ मान्छेहरू किरणको लट्टी टेकेर उभिन चाहन्छन्, श्यामश्वेत अहम त्यागेर रङहरूको उज्यालो आविष्कार गर्ने र जीवनलाई तेस्रो आयामिक ढङ्गले स्पर्श गर्दै बाँच्न चाहन्छन् र गतिहीन बनिराख्ने रूढ ईश्वरप्रतिका मान्यता विरुद्ध असहमति जनाउँदै भक्तहरूले गरेको विरोधको भाव प्रकट गरेका छन् । यस कवितामा 'उज्यालो रङ' प्रजातन्त्रताको बिम्बको रूपमा 'ईश्वर' निरङ्कुश शासकको प्रतीकका साथै न्यानो, चिसावस्ती, आगो, किरणका लट्टी जस्ता अन्य बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग भएको पाइन्छ ।

४.३.६ गाँउमा कविता खण्डका कविताको अध्ययन

यस सङ्ग्रहको छैठौँ खण्डमा रहेको गाँउमा कविता उप-शीर्षक खण्डमा ग्राम्यताका विविध भावलाई अभिव्यञ्जित गर्ने आधा दर्जन कविता छन् । यी कवितामा हिंसा र द्वन्द्वबाट सिर्जित मानवीय सङ्कट र अन्योल ग्रस्त भविष्यको चित्रण, नेपालीले भोगेको बेरोजगारी र आर्थिक समस्याका कारण युवायुवतीहरू विदेश पलायन हुने प्रवृत्ति, आर्थिक, भौगोलिक समस्याका कारण शिक्षाबाट वञ्चित बालबालिकाको कारुणिक अवस्था, शक्तिसम्पन्न राष्ट्रहरूको होडवाजीले विश्वमा ठूलो सङ्कट पैदा भई साना राष्ट्रहरूको अस्तित्व सङ्कटमा परेको युगीन यथार्थलाई यस खण्डका कविताले चित्रण गरेका छन् ।

४.३.६.१ कहीं नपुगेका यात्रीहरू

हिंसा र द्वन्द्वग्रस्त बस्ती बीचका मान्छेको मानवीय संवेदना हराउँदै गई मानवीय अस्तित्व सङ्कटमा पर्न गएको र मान्छे जीवन्मृत भएर बाँच्नु परेको युगीन यथार्थलाई प्रतीकात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषयवस्तु बीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा लामा छोटा आयामका छ, अनुच्छेद पैतिस पङ्क्तिमा यसको संरचना गरिएको छ । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्तिदेखि दश पङ्क्ति र पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि सात शब्दसम्म फैलिएको देखिन्छ ।

प्रस्तुत कविताको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्यलय रहेतापनि कतिपय अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास ढाँचा, पङ्क्ति र अनुच्छेदमा उही शब्द वर्णको आवृत्ति, कोमल शब्दको प्रयोगले लयमा नवीनता थपेको पाइन्छ । यस कवितामा प्रतीकात्मक भाषाशैलीको प्रयोग देखिन्छ । अन्त्यानुप्रास सरल प्रचलित शब्दावलीको प्रयोग, फ्रेसहाउस, टायर, टि.भि.एम्बुस, ब्रेकजस्ता प्रचलित आगन्तुक शब्दावलीको प्रयोग, भग्नावशेष, यात्री तत्सम शब्द साथै द्वित्व र अनुक-रणात्मक शब्दको प्रयोगले भाषाशैली लयात्मक बनेको छ ।

प्रस्तुत कवितामा कविले 'म' समाख्याता बनेर आफ्ना अनुभूतिहरू आत्मकथन शैलीमा व्यक्त गरेका पाइन्छ । कविले हत्या हिंसा र द्वन्द्व अशान्ति र आतङ्कग्रस्त बस्ती बीचका मानिसहरूलाई फ्रेस हाउसमा काटिनको लागि पालो कुरेर बसेका निरीह कुखुरासँग तुलना गर्दै शसस्त्र द्वन्द्वका कारण नेपाली परिवेश र समाजको भविष्य अत्यन्त जटिल र अनिश्चितभई मानवीय जीवन सङ्कटमा परेको मानवीय संवेदनहीनता बढ्दै गएको यथार्थलाई उल्लेख गर्दै सन्त्रास एवम् असुरक्षाले सिर्जिएको परिस्थिति भोगेर बाँच्न विवश मानिसहरूको पीडालाई करुण भावमा व्यक्त गरेका छन् ।

बिम्बले कवितालाई बढी खँदिलो बनाउँछ र यिनका कवितामा चेतनाका बिम्बहरूको प्रयोग बढी भएकाले कविता सघन छन् । बिम्बले यिनका कविता जटिल नभई सरलतामा पनि भावगम्भीर छन् । यिनका कवितामा बिम्बहरूको सोभो प्रयोग नभई कलात्मक प्रयोग भएकाले कविता आकर्षक भएका छन् (गौतम, २००९:भूमिका) । यस कवितामा 'फ्रेसहाउसमा काटिनको लागि पालो पर्खेर बसेका कुखुराहरू' कथ्यलाई निरीहजनताको बिम्बको रूपमा प्रस्तुत गर्दै कविले समसामयिक र निजी बिम्ब प्रतीकको प्रयोग कलात्मक रूपमा प्रस्तुत गरेको छन् ।

४.३.६.२ सपनाहरूको रङ

प्रस्तुत कवितामा बेरोजगारीका कारण विपन्न युवा युवतीहरू कामको खोजीमा विदेश पलायन हुने मर्म र वेदनालाई प्रस्तुत गरिएको छ । विदेशिएका युवा युवतीहरूको दुःखद यात्रा भएकोले शीर्षक औचित्य सिद्ध देखिन्छ । प्रस्तुत कविता पङ्क्तिमा देखिएको अन्तरलाई आधार मान्दा तिन अनुच्छेदमा पाँच पङ्क्तिदेखि सोह्र पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एकशब्ददेखि आठ शब्दसम्म कविको अनुभूतिहरू फैलिएको देखिन्छ । हरेक अनुच्छेदमा बेग्लामेग्लै पङ्क्ति योजना रहेकोले अनुच्छेद विभाजनमा कुनै सङ्गति देखिँदैन । प्रस्तुत

कवितामा मुक्तलय विधान रहेको छ । मुक्तलय भएपनि भाषामा मिठासपन, शब्द र वर्णको आवृत्तिले सङ्गीतमय नवगद्यको छनक देखिन्छ । यस कवितामा आत्महत्या, प्रिय, आशा, हृदय जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द, पार्लियामेन्ट जस्ता आगन्तुक शब्दको प्रयोग र वर्णनात्मक आत्मपरक शैलीको कारण कविताको भाषामा मिठासपन र सरलता भेटिन्छ ।

तृतीय पुरुष 'ऊ' समाख्याताको माध्यमबाट कविले आफ्ना भावनाहरू व्यक्त गरेका छन् । नेपालीहरूले भोग्नुपरेको गरिबी बेरोजगारी, आर्थिक समस्याका कारण, विदेशगई प्रसस्त धनकमाउने महत्त्वाकाङ्क्षाका कारण विदेश पलायन हुने युवायुवतीहरूको, मर्मलाई प्रस्तुत गरिएको छ । विदेशमा सोचेजति धन कमाउन नसकेपछि बिलखबन्दमा परी जीवनको खोजीबाट शुरू भएको यात्रा आत्महत्याको अवस्थामा पुगेर जीवन टुङ्गिने कारुणिक भाव व्यक्त गरेका छन् ।

यस कवितामा कविले 'प्रियसपनाहरू' युवायुवती विदेश पलायन हुने बिम्बको रूपमा 'विदेशी आकाश' 'उज्यालोधन' महत्त्वाकाङ्क्षाको बिम्बको र 'घामको मलामी' राष्ट्रप्रतिको गैर जिम्मेवारीको प्रतीकको रूपमा आएका छन् । यस कविताको अन्तिम अनुच्छेदको अन्तिम पङ्क्तिमा 'सपनाहरू भैं सुन्दर बन्न' कथ्यमा उपमा अलङ्कार प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.३.६.३ तामागी *

गाउँको युवा शक्ति जीवन खोज्न विदेश पलायन भएपछि उज्यालो विहीन हुन पुगेको गाउँको दारुण र कारुणिक स्थितिको चित्रण गरेको हुँदा विषय अनुसार शीर्षकको घनिष्ठ सम्बन्ध रहेको हुँदा शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा देखिएको अन्तरलाई आधार मान्दा पाँच अनुच्छेद एकचालीस पङ्क्तिमा संरचना भएको छ । पहिलो र अन्तिम अनुच्छेदमा छ पङ्क्ति, दोस्रो अनुच्छेदमा एघार पङ्क्ति, तेस्रो र चौथोमा नौ/नौ पङ्क्ति रहेको देखिन्छ । पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । सङ्गीतमा तालभए जस्तै कविताको भित्री सङ्गीत लय हो । कवितामा लयका माध्यमबाट भावहरूको संयोजन गर्ने गरिन्छ । वार्षिक मात्रिक भित्री बाहिरी लय मिलेको पद्य कविता हुन्छ भने गद्यमा भित्री लय प्रधान बनाएर लेखिएको अन्तर्लय प्रधान गद्य कविता हुने गर्दछ (गैरे, २०५९: ३३४) ।

यस कवितामा गद्यलयमा रचना गरिएको छ । गद्यलयमा भएता पनि मध्यानुप्रास, अन्त्यानुप्रास अनुच्छेदमा उही शब्द वर्णको बारम्बार आवृत्तिले सङ्गीतमय लयको भाव सिर्जना हुन पुगेको देखिन्छ । जस्तै:-

युवतीहरू सपना खोज्न सहर पसेका छन्
युवाहरू जीवन खोज्न विदेश पसेका छन्

दोस्रो अनुच्छेद, पृ.९७ ।

प्रस्तुत कविताको भाषा सरल र अभिधात्मक छ । आते, तमागी जस्ता गुरुङ भाषिकाको प्रयोग, मुक्तक र गजल शैलीका काव्यात्मक भाषाको प्रयोग, अनुहार, आत्मा, आँगन, मृत्यु जस्ता प्रचलित तत्सम शब्दको प्रयोगका साथै प्रश्नात्मक शैलीको प्रयोगले भाषा सरल सुबोध्य बन्न पुगेको छ । जस्तै :

खोई बिहान जगाउन
भालेहरू बासेका यो गाउँमा ?
खोई गाउँ व्युँझाउन
हिमालहरू हाँसेको यो गाउँमा ?

तेस्रो अनुच्छेद, पृ.९९।

यस कवितामा कविले प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरेर आफ्ना भावनाहरू पोखेका छन् । उनले देशको आर्थिक असमानता र चर्को बेरोजगारी समस्याका कारण थोरै समयमा धेरै धन कमाउने अभिलाषा सहित गाउँमा बुढा बा आमालाई घर रुड्न लगाई युवाहरू सपना र जीवन खोज्न विदेश पलायन भएपछि पुरै गाउँको उज्यालो निभेको र शून्य भएको कारुणिक भावको चित्रण गरेका छन् ।

यस कवितामा 'जीवन खोज्न' नयाँ अवसरको बिम्बार्थ, 'भालेहरू', चेतना र उज्यालोको प्रतीक 'हिमाल' स्वाभिमान र अटलताको प्रतीकको रूपमा आएको पाइन्छ । प्रस्तुत कविताको पहिलो अनुच्छेदको अन्तिम पङ्क्तिमा वृत्यानुप्रास र दोस्रो अनुच्छेदको पहिलो र दोस्रो पङ्क्तिमा रूपक अलङ्कार आएको छ ।

४.३.६.४ गाउँको सानो भाइ

समाजमा विद्यमान गरिबी, आर्थिक असमानताका कारण सिर्जना हुन पुगेको विषम परिस्थितिको चित्रण गर्दै शिक्षा विहीन गाउँमा शिक्षाको उज्यालो पुऱ्याउन नसक्ने

सरकारप्रति तिखो व्यङ्ग्य प्रस्तुत गरिएको हुँदा शीर्षक र विषयवस्तुहरूको निकट सम्बन्ध देखिन्छ । यस कवितामा आएको अन्तरलाई आधार मान्दा छ अनुच्छेद अठार पङ्क्तिमा संरचना विस्तार देखिन्छ । अनुच्छेदमा दुईपङ्क्ति, पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । यसको लयविधान गद्य रहेको भएपनि दोस्रो र तेस्रो र अन्तिम अनुच्छेदमा गजलशैलीको ढाँचा रहेको हुँदा साङ्गीतिक लयको अनुभूति भेटिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा अभिधात्मक भाषाको प्रयोग भएको देखिन्छ । काव्यात्मक भाषा, कोमल शब्दको प्रयोगले भाषा र शैलीमा लयात्मकता देखिन्छ । कविले प्रथम पुरुष 'म' को माध्यमबाट आफ्ना अनुभूतिहरू पाठक समक्ष व्यक्त गरेको पाइन्छ । नेपाली समाजमा व्याप्त गरिबी, आर्थिक असमानताको चित्रण गर्दै गाउँको सानो भाइको माध्यमबाट शिक्षा पाउनुपर्ने बालबालिकाको अधिकार कुण्ठित हुन पुगेको र राज्यले सबै तह र तप्काका बाल बालिकालाई शिक्षा दिने विषयमा संवेदनशील हुन नसकेकोप्रति कविले चिन्ता व्यक्त गरेको पाइन्छ ।

कविले यहाँ आर्थिक साँस्कृतिक, समसामयिक र निजी बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । यस कविताको पहिलो अनुच्छेदमा उपमेय वर्णनीय वस्तु बाल अधिकार हो उपमान वा कल्पित वस्तु सानोभाइ हो । यसमा उपमेयको चर्चा नगरी उपमानको बढी चर्चा गरिएकोले अतिशयोक्ति अलङ्कार प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.३.६.५ कुमारी गाउँ

शक्ति सम्पन्न राष्ट्रहरूबाट फैलाइने अशान्ति र आतङ्क एवम् अँध्यारोका दमित चिन्तनहरूले मेरो सुन्दर र शान्तिपूर्ण एवम् मानवताका भजन गाउने बन्धुत्वको भावनाको उद्गमस्थल गाउँलाई अशान्तिको राज्य नवनाओस् भनी शान्तिको कामना प्रस्तुत गरिएको हुँदा शीर्षक अनुसार भाव प्रस्तुत भएकोले शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ । कविता भित्र, भित्री बाहिरी तहमा एउटा संरचना हुने गर्दछ । यस प्रकार कविता संरचक तत्त्वहरूबाट निर्मित एक विशिष्ट प्रकारको रचना हो (गैरे, पूर्ववत्, पृ. ३३४) ।

यो कविता पङ्क्ति पुञ्जमा आएको अन्तरलाई आधार मान्दा सात अनुच्छेद तेइसपङ्क्तिमा यसको संरचना भएको छ । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्तिदेखि चार पङ्क्ति र पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको पाइन्छ । प्रस्तुत कविता मुक्तलयमा रचना गरिएको पाइन्छ । मुक्तलय भएतापनि भवनबाट-आँखाहरूबाट, लहरहरू-

तरङ्गहरूजस्ता अन्त्यानुप्रास शैली, अनुच्छेदमा उही वर्ण र शब्दको बारम्बार आवृत्तिले कविता नव छन्दको नजिक पुगेको देखिन्छ । यस कवितामा व्यङ्ग्यात्मक भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । प्रचलित तत्सम आगन्तुक र ठेट शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल देखिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा कविले विश्वव्यापीकरणको असर, धार्मिक द्वन्द्व, जातीय युद्ध र अमेरिकाको दादागिरीबाट पूर्णमुक्त गाउँको कल्पना गरेको भाव व्यक्त गरेका छन् । यस कवितामा कविले स्मृति विम्ब, ग्राम्य, प्रकृति र निजीविम्ब र प्रतीकको प्रयोग आकर्षक रूपमा गरेका छन् ।

४.३.६.६ हिँड्ने रूखको कथा

सुखपूर्वक जीवनयापन गर्ने आशामा आफू जन्मेको गाउँ छोडेर सहर पसेको व्यक्ति विभिन्न सहरिया कु-संस्कृति र विसङ्गतिको जञ्जालमा फसेर ऊ सहरमा हराउँछ र पुराना गाउँका सम्झनाहरूले उसलाई हरपल सताइरहन्छन् । आफ्नो प्यारो गाउँको सम्झना र सरल जीवन शैली उसलाई भन प्यारो लागे पनि परिवेशगत कारण आफ्नो गाउँ फर्कन नसकेको भाव व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक अनुसार भावको घनिष्ठ सम्बन्ध देखिन्छ ।

सात अनुच्छेद उनन्चालीस पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि आठ पङ्क्तिसम्म विस्तार भएको र पङ्क्तिमा दुईशब्द देखि छ शब्दसम्म फैलिएको देखिन्छ । अभिधात्मक भाषाशैली, भूतकालिक क्रियापद, स्थान विशेष भाषिकको प्रयोग र प्रचलित तत्सम शब्द र चौतारी, लेउ, खोरिया, रत्यौली जस्ता ठेट शब्दको प्रयोगले कविता सरल र सुबोध्य बनेको छ । यस कवितामा कविले प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दु प्रयोग गरेको देखिन्छ ।

आफू जन्मे, हुर्केर खाईखेलेको ठाउँलाई चटकै मायामारी सुखपूर्वक जीवन बिताउन शहर पसेको मान्छे जो परिस्थितिवश परिचयहीन, बिरानो, एकलो, भएर शहरमा बाँच्नु परेको अवस्थामा उसलाई गाँउको पुरानो सम्झना, सरल, स्वच्छ, जीवनशैलीले तड्पाइरहेको यथार्थ भावको प्रस्तुत गरेका छन् । यसमा कविले स्मृतिविम्ब, प्रकृतिविम्ब र अलङ्कारिक, निजी र समसामयिक विम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् ।

४.३.७ कमजोर शब्दहरूमा प्रेमको ध्वनि खण्ड कविता

यस कविता सङ्ग्रहको सातौँखण्ड *कमजोर शब्दहरूमा प्रेमको ध्वनि* उपशीर्षकभित्र नौओटा कविताहरू समावेश गरिएका छन् । यस खण्डका प्रायःसबै कविताहरूमा रागात्मक चेतनाको प्रबलता र अनुभूतिको तीव्रता रहेको पाइन्छ । हृदय पवित्र नभई सुन्दर कविताको सिर्जना हुन सक्दैन भन्दै कतिपय कवितामा कविले प्रेमको महत्त्वलाई अत्यन्त गम्भीर र उच्च निरूपण गरेका छन् । वैयक्तिक, भौतिक प्रेमभन्दा माथि उठेको उनको विशाल प्रेम सुन्दर कविता हो । उनका कविताहरू नारीपुरुष बीचको सामान्य प्रेमको सत्ताभन्दा माथि उठेर शाश्वत र उच्च उदात्त प्रणय चेतनाको रागात्मक अन्तर्वस्तुमा केन्द्रित छन् ।

४.३.७.१ पोखरा

जीवनका विकृति र विसङ्गतिले जीवनको रङ्ग मधुरो लागेपनि आफ्नो कर्मभूमिको स्मृति र माया भ्रम गाढा रहने कुराको आशय बिम्बात्मक रूपमा व्यक्त भएको हुँदा शीर्षक र विषय बीच घनिष्ठ सम्बन्ध देखिन्छ ।

प्रस्तुत कविता चार अनुच्छेद छबिस पङ्क्तिमा संरचित छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि एघारपङ्क्ति र पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि नौ शब्दसम्म विस्तार भएको छ । अनुच्छेद र पङ्क्तिको वितरणमा कुनै एकरूपता देखिँदैन । यस कवितामा गद्यलयविधान रहेको छ । गद्यलय रहेतापनि अन्त्यानुप्रास शैली, कोमल शब्दावलीको प्रयोग, उदात्तप्रेममय अनुभूति, उही शब्द र वर्णको आवृत्तिले अन्तर्लयको सिर्जना हुन पुगेको देखिन्छ । जस्तै:

मलाई थाहा हैन

मलाई नै मन नपर्ने मलाई

यो शहर किन मन पराउँछ

यो पोखरा किन मन पराउँछ !

अन्तिम अनुच्छेद, पृ.१०५ ।

यो कविताको भाषा सरल छ । यस कवितामा कविले स्थानविशेष आसक्ति अनुरागको वर्णन र रागात्मक अलङ्कारी भाषाको प्रयोग संवादात्मक शैलीको साथै प्रचलित तत्सम शब्दको प्रयोगले भाषाशैली उत्कृष्ट बनेको देखिन्छ । यो कवितामा प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग भएको पाइन्छ ।

जुन ठाउँले कविलाई नेपाली साहित्यतर्फ लाग्ने अवसर प्रेरणा, वातावरण दियो र नेपाली साहित्यमा यो (हाल) स्थान सम्म आइपुग्न पोखरा शहरको महत्त्वपूर्ण योगदान रहेको हुँदा पोखरासँग कविको गहिरो अनुराग र माया रहेको भाव काव्यात्मक शैलीमा व्यक्त गरिएको छ । यस कवितामा कविले स्मृति बिम्ब, निजी बिम्ब, अलङ्कारिक बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेको देखिन्छ ।

४.३.७.२ साँचो

बन्दकोठाको रूपमा रहेको जीवन जिउने र बाँच्ने क्रममा विभिन्न किसिमका विसङ्गति र जटिलताले जीवन अस्तव्यस्त हुन पुगेको र त्यसको निराकरणको लागि एकजना मित्र वा प्रेमीको आवश्यकता परेको आशयलाई प्रतीकात्मक रूपमा व्यक्त गरिएको हुँदा शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

यो कविता चार अनुच्छेद, उनन्तिस पङ्क्तिमा संरचना भएको छ । अनुच्छेदमा दुई पङ्क्तिदेखि बाह्र पङ्क्तिसम्म र पङ्क्तिमा एकशब्ददेखि छ शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । गद्यलय विधान रहेको प्रस्तुत कवितामा कतिपय अनुच्छेदमा उही वर्ण, शब्दको बारम्बार आवृत्ति, कतिपय पङ्क्तिमा समान शब्दयोजना, माध्यप्रास योजनाले कवितालाई गेयात्मक बनाएको छ । जस्तै:-

बन्द आफूलाई सम्पूर्ण खोल्न
कोही एकजनाको हात चाहिँदो रहेछ
कोही एकजनाको साथ चाहिँदो रहेछ

तेस्रो अनुच्छेद, पृ. १०६ ।

यस कवितामा प्रतीकात्मक भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ । प्रचलित तत्सम र केही ठेट शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा सरल बनाएको छ । कविले प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको माध्यमबाट मान्छेभिन्नको पीडा र अनुभूति यसरी व्यक्त गरेका छन् :-

म आफैँ एउटा बन्द ढोका हुँ
कहिलेकाहीं
आफैँ खोल्न सकिदैन कोठाको ताल्चा

पहिलो अनुच्छेद, पृ.१०६ ।

साँचो जीवनको प्रतीकका रूपमा आएको देखिन्छ । यस कवितामा सामान्य विषय-वस्तुको उपस्थितिमा जीवनको विशिष्ट भावलाई अभिव्यक्त गरिएको छ । मानिसको जीवन भोगाइको क्रममा विभिन्न जटिलता र समस्याहरूका कारण जीवन चुनौतीपूर्ण हुने र ती चुनौतीलाई जीवनमा एकलै समाधान गर्न कठिन हुने हुँदा एकजना जीवनसाथीको साथ र हात आवश्यकता परेको भाव काव्यात्मक रूपमा व्यक्त भएको पाइन्छ ।

यहाँ 'बन्दकोठा' मान्छेभित्रको अन्तर्मनको कोठाको प्रतीकको रूपमा 'तन्किने भित्ताहरू' उदार हृदय र विशाल भावनाको बिम्बार्थको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.३.७.३ यो सहर

कविताभित्र अनेक संरचना हुन्छन्, कविले ती संरचनाहरूको प्रतिनिधित्व हुने गरी एउटा युक्तियुक्त सारपूर्ण र औचित्य भएको प्रतिनिधिमूलक कलात्मक शीर्षकको छनोट गर्दछ (गैरे, पूर्ववत् : ३३४) । कविले सहरको प्रेमभन्दा वास्तविक प्रेम गाउँमा रहेको र शहरको आत्माले चाहना गरेको अमर र हार्दप्रेमका साथै यौवनभरी शहरी प्रेमीहरूले गाएका प्रिय गीतहरू गाउँमा रहेको आशय व्यङ्ग्यात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषयबीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ ।

यो कविता छ अनुच्छेद उनन्तिस पङ्क्तिमा रचना भएको पाइन्छ । अनुच्छेदमा चार पङ्क्तिदेखि छ पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि सात शब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । यो कविता गद्यलय विधानम रचिएको छ । पहिलो र दोस्रो अनुच्छेदमा पङ्क्ति र शब्दको वितरणमा एकरूपता भेटिन्छ

यस कविताको भाषाशैली सरल छ । कोमल शब्द र पदावलीको प्रयोग प्रचलित तत्सम र ठेटशब्दले भाषा सरल, सम्प्रेष्य बनेको छ । सहरमा र गाउँमा हुने प्रेमको भेद देखाउँदै सहरमा कृत्रिम र बनावटी प्रेम हुन्छ भने गाउँमा यथार्थ र वास्तविक प्रेम पाइन्छ । सहरको जीवन यान्त्रिक र विविध जटिलताले एकलो, विरानो र निस्सासिँदो हुन्छ तर गाउँमा सरल, सहज र स्वच्छ जीवनशैली व्याप्त रहने हुँदा जीवनको एकान्तमा शहरी प्रेमीहरूले गाएको प्रियगीतहरूको वास्तविक स्वरूप गाउँमा रहेको यथार्थ स्वरूपको भाव व्यक्त गरिएको छ । यस कवितामा कविले निजी, ग्राम्य, स्पर्श र समसामयिक बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरिएको छ ।

४.३.७.४ प्रिय आँखाहरू

स्वप्नजीवी कविलाई सपनाको उपस्थितिमा आँखाहरू प्रिय र सुन्दर लाग्ने भन्दै रागात्मक चेतनाको प्रबलता र अनुभूतिको तीव्रता रहेका प्रेमिल भावनाहरू बिम्बात्मक रूपमा व्यक्त गरिएको हुँदा शीर्षक र विषयको निकट सम्बन्ध हुँदा शीर्षक उपयुक्त छ ।

प्रस्तुत कविता छ, अनुच्छेद एकचालीस पङ्क्तिमा संरचना भएको पाइन्छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि बाह्र पङ्क्तिसम्म विस्तार भएको छ । पङ्क्तिमा दुई शब्ददेखि आठ शब्दसम्म विस्तार देखिन्छ । पङ्क्ति र अनुच्छेदको वितरणमा एकरूपता देखिँदैन ।

प्रस्तुत कवितामा गद्यलयको प्रयोग गरिएको छ । गद्यलय भएतापनि अनुच्छेदमा अन्त्यानुप्रास ढाँचा, शब्द र वर्णको आवृत्ति र काव्यात्मक भाषाको कारण कविताको लय श्रुतिरम्य हुन पुगेको देखिन्छ । यस कवितामा प्रतीकात्मक भाषा र वर्णनात्मक शैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ । कवितामा आँखा, नृत्य, ध्वनि, प्रेमपूर्ण, अमूर्त जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द, प्रोफाइल, सेक्स, अपिलजस्ता आगन्तुक र अन्य ठेट शब्दको प्रयोगले भाषा सरल र सम्प्रेष्य बन्न पुगेको छ ।

यस कवितामा कविले प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर रागात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेका छन् । यस कवितामा कवि मृत्युबोधभित्र जीवनको प्यारो रङ देख्छन् । जीवनका सपनासँग प्रेम गर्न चाहन्छन् भन्ने विसङ्गति भित्र सङ्गति र अस्तित्वको खोज गरिएको भाव व्यक्त गरिएको छ । यस कवितामा कविले स्वप्न बिम्ब, दृश्य, निजी बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेका छन् । 'मृत्युका मूलायमध्वनिहरू' मानवीय जीवनको मूल्यहीनताको प्रतीकको रूपमा 'प्रोफाइल' र 'अराजक नृत्यहरू' बिम्बको रूपमा आएको देखिन्छ । प्रस्तुत कविताको चौथो अनुच्छेदको पहिलो पङ्क्ति 'कुनै जादुई कथाको राजकुमार भैं' कथ्यमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.३.७.५ एउटा प्रतीक्षाको विपक्षमा

कवि प्रेममा गतिहीन प्रतीक्षाको विरोध गर्दछन् । गतिहीन प्रतीक्षा जीवनको गलत बाटो र उपलब्धि विहीन प्रयास हुने हुँदा यस्तो प्रतीक्षाले जीवन सङ्गतिविहीन र निरर्थक बन्ने आशय प्रतीकात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषयबीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ । यो कविता चार अनुच्छेद पैतालीस पङ्क्तिमा विस्तार भएको छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि दश पङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि आठ शब्दसम्म फैलिएको देखिन्छ ।

यो कवितामा गद्यलय विधान रहेको छ । गद्यलय भएतापनि प्रायः सबै अनुच्छेदमा उही शब्द र वर्णको बारम्बार आवृत्ति, अन्त्यानुप्रास शैलीले कविता लयात्मक बनेको छ । कवितामा भाव र भावबाट उत्पन्न हुने अनुभूतिलाई बोक्नका लागि भाषाको प्रयोग गरिन्छ । यस्तो भाषाको वर्ण, पद शब्दले रागात्मक लयमयता, लालित्य र माधुर्य संयोजन गर्न सक्नु नै शैली हो (गैरे, पूर्ववत्: ३३६)।

यस कविताको अनुच्छेदहरूमा प्रतीकात्मक भाषाको प्रयोग देखिन्छ, साथै 'उज्यालो ब्युँभिएर आकाशको दैलो लिप्छ' जस्ता अलङ्कारिक भाषाको प्रयोग पनि पाइन्छ । सौन्दर्य, अनुहार, शोक जस्ता तत्सम शब्दहरूको प्रयोगले कविता सम्प्रेष्य र सरल देखिन्छ । यस कवितामा कविले प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरेर आफना अनुभूतिहरू व्यक्त गरेका छन् । कविले जीवनमा सबै प्राथमिकताहरूलाई विर्सिएर गरेको लामो दीव्य प्रतीक्षाको कुनै अर्थ नहुने र यसले जीवनलाई निरर्थक गतिहीन, उपलब्धि विहीन बनाउँछ भन्ने करुण भाव व्यक्त गरेका छन् ।

यसमा कविले निजी, समसामयिक बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग गरेको पाइन्छ । 'सपनाको बीउलाई ढुङ्गामा छरेर' कथ्य अर्थहीन सारहीन परिश्रमको बिम्बको रूपमा आएको पाइन्छ । उप भनेको नजिक वा छेउ हो । एउटा वस्तुको छेउमा अर्को वस्तुलाई राखेर त्यसको समानता प्रस्तुत गर्नु नै उपमाको अर्थ हो (थापा, २०६६: २३८) । प्रस्तुत कविताको पहिलो अनुच्छेदको आठौँ र नवौँ पङ्क्तिको बुलेट्ट्रेनभैँ, समयभैँ कथ्यहरूमा उपमा अलङ्कारको प्रयोग देखिन्छ ।

४.३.७.६ किताब

कविले हृदयलाई एउटा पुरानो एवम् रहस्यमय किताबको रूपमा परिभाषित गर्दै रहस्यमय किताबमा सदैव नयाँ-नयाँ शब्दका छालहरू आउने र सुख-दुःखको अनुभूतिमय शब्दहरू आउने, हराउने क्रममा चलिरहने र अर्थका गम्भीर घामहरू उदाउने र किताबको क्षितिजमा डुब्ने आशय बिम्बात्मक रूपमा आएको हुँदा यो शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा चार अनुच्छेद उनन्तीस पङ्क्तिमा संरचना भएको छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि दशपङ्क्ति र पङ्क्तिमा एक शब्ददेखि आठशब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । कतिपय अनुच्छेदको पङ्क्ति वितरणमा एकरूपता भएको देखिन्छ ।

गद्यभाषामा लेखिएको हुँदा यसको लयविधान गद्य रहेको छ । गद्यलय विधान रहेता पनि कुनै पङ्क्तिमा समान शब्दको वितरण, अन्त्यानुप्रास शैली, उही शब्द र वर्णको आवृत्तिले कवितामा नविनतम लयको सिर्जना हुन पुगेको छ । कोमल भाषाको प्रयोग प्रचलित तत्सम, आगन्तुक र ठेट शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा शब्द र शैली सरल बनेको छ ।

प्रस्तुत कवितामा कविले 'म' प्रथम पुरुषपात्रको माध्यमबाट आफ्ना अनुभूतिहरूलाई व्यक्त गरेका छन् । कविले उनको हृदयको दराजमा उनलाई मनपर्ने रहस्यमय किताब रहेको र त्यस किताबमा नयाँ-नयाँ शब्दको छालहरू आउने, रूप बदलिरहने, सुखदुःख अनुभूतिका तरङ्गहरू देखापर्ने, शब्दहरू आउने, हराउने र भेटिने क्रम चलिरहने अर्थहरूको घामलाग्ने र क्षितिजमा डुबने गम्भीर रहस्यमय अर्थहरूले भरिएको प्रेमको भावको चित्रण गरेको पाइन्छ । यसमा कविले प्रणय, निजी र समसामयिक विम्ब र प्रतीकको प्रयोग आकर्षक तरिकाले गरेको पाइन्छ ।

४.३.७.७ म तिमीलाई प्रेम गर्छु

वर्तमान अवस्थामा मानवको निःस्वार्थ प्रेम हराएर, प्रेम समर्पणको धरालतलबाट धेरै टाढा पुगेको र प्रेम स्वार्थ प्राप्तिको लागि मात्र देखावटी रूपमा गर्न लागेकोप्रति व्यङ्ग्य प्रहार गर्दै उदात्त प्रेमको चाहना गरेको आशय प्रकट गरिएको हुँदा भाव र शीर्षक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध देखिएको हुँदा शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

प्रस्तुत कवितामा छ अनुच्छेद उनन्तीस पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको छ । दुई पङ्क्तिदेखि उन्नाईस पङ्क्तिका लामा अनुच्छेद छन् भने पङ्क्तिमा एकशब्ददेखि आठशब्दसम्म विस्तार भएको देखिन्छ । अनुच्छेद र पङ्क्ति वितरण कुनै एकरूपता देखिँदैन ।

प्रस्तुत कवितामा अभिधात्मक र अलङ्कारिक भाषाशैलीको प्रयोग देखिन्छ । धुजा-धुजा जस्ता पूर्णद्वित्व शब्दको प्रयोग, प्रेम निसन्देह, आस्थाहरू, आत्महत्या जस्ता तत्सम र केही ठेट शब्दको साथै प्रश्नात्मक शैलीको प्रयोगले कविता सरल र सुबोध्य बन्न गएको छ । प्रथम दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरेर कविले प्रेमको शाश्वत र उच्च आदर्श स्वरूपको वर्णन गरेका छन् । प्रेमलाई शाश्वत र उच्च आदर्शको रूपमा प्रस्तुत गर्दै कविले प्रेम वास्तविक र आत्मिक हुनुपर्दछ । प्रेम सम्भौता विहीन हुनु पर्दछ, यसको तुलना कुनै सांसारिक भौतिक

वस्तुसंग गर्नुहुँदैन । कविले तिमीलाई प्रेम गर्छु र सम्भौता इन्कार गर्छु भन्दै आजको युगीन वासनात्मक प्रेमको सन्दर्भप्रति सचेत हुनुपर्ने व्यङ्ग्य भाव प्रस्तुत गरेका छन् ।

४.३.७.८ प्रेमीहरू

पुतली सौन्दर्यको अज्ञान अवस्थामा जल्छन् भने प्रेमीहरू सौन्दर्यको चाहनामा जान्दा जान्दै पनि मृत्युवरण गर्दछन् भन्ने आशय बिम्बात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षकको सार्थकता देखिन्छ । यो कविता दुई अनुच्छेद सत्र पङ्क्तिमा संरचित भएको छ । पहिलो अनुच्छेद एघार पङ्क्ति र दोस्रो अनुच्छेद छ पङ्क्तिमा यसको रचना विस्तार भएको देखिन्छ । पङ्क्तिमा एकशब्ददेखि छ शब्दसम्म फैलिएको पाइन्छ । यो कवितामा गद्यलय विधान रहेको देखिन्छ । अन्त्यानुप्रास ढाँचा काव्यात्मक र कोमल शब्दावलीको प्रयोगले कविता गेयात्मक बनेको छ ।

यस कवितामा प्रतीकात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको पाइन्छ । प्रेमीहरू, मृत्युवरण, उत्सव, अज्ञान जस्ता तत्सम र अन्य ठेट शब्दको प्रयोगले कविताको भाषा र शैली सरल भएको देखिन्छ । प्रेमीहरूलाई पुतलीसँग तुलना गर्दै पुतलीहरू बत्तीको उज्यालोमा जलेर मृत्युवरण गर्दछन् तथापि उनीहरूमा मृत्युको ज्ञानको आभाष हुँदैन । प्रेमीहरूलाई पनि प्रेममा मृत्यु निश्चित छ भन्ने ज्ञान हुँदाहुँदै पनि उनीहरू हरदम प्रेम गरिरहन्छन् भन्दै पुतलीहरू अज्ञान मृत्यु उत्सव मनाउँछन् भने प्रेमहरू जानाजान मृत्यु उत्सव मनाउँछन् भन्ने आशय कारुणिक भावमा व्यक्त गरिएको पाइन्छ ।

४.३.७.९ अन्तिम हस्ताक्षर

कविले जीवनको हरेक मोडमा कसैले गरिदिएको हस्ताक्षर नै आफ्नो हस्ताक्षर बताएको र मृत्यु पछि आफ्नो मुटुको हस्ताक्षरको प्रतिबिम्ब अरूकसैले आफ्नो मुटुमा देखोस् भन्ने चाहना राख्दै मुटुको रडले रङ्गयाएको कविताको रडले पाठकको मुटु रङ्गियोस् भन्ने आशय बिम्बार्थ र प्रतीकात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक विषय बीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ ।

यो कविता पाँच अनुच्छेद अष्टादश पङ्क्तिमा संरचित छ । अनुच्छेदमा तिन पङ्क्तिदेखि आठ पङ्क्तिसम्म रहेको र पङ्क्तिमा एकशब्ददेखि पाँच शब्दसम्म विस्तार देखिन्छ । प्रस्तुत कवितामा गद्यलय विधान रहेको छ । गद्यलय रहेतापनि अन्त्यानुप्रास ढाँचा,

उही शब्द र वर्णको आवृत्ति, मुक्तक ढाँचाको कविता साथै दोस्रो र तेस्रो अनुच्छेदमा रहेका ५/५ पङ्क्ति योजनाले कवितामा नवीन लयको सिर्जना हुन पुगेको छ । गद्य भाषाशैली साथै अलङ्कारि भाषाको प्रयोग पनि भेटिन्छ । कतिपय अनुच्छेद पाँच पङ्क्तिका छोट्टा हुनुको साथै काव्यात्मक भाषाको प्रयोग भएको पनि देखिन्छ । सिस्मोग्राफ, कार्डियोग्राफ, चेकबुकजस्ता आगन्तुक शब्द, ईश्वर, मृत्यु, जीवन, अराजक जस्ता तत्सम शब्दहरूको प्रयोगले कविताको भाषा सरल हुनुको साथै भावपक्ष सुदृढ र सबल रहेको छ । कविले 'म' प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरेर प्रेमको गहिराइप्रतिको भाव व्यक्त गरेका छन् ।

कविले जीवनलाई सादा चेकबुकमा कसैले गरिदिएको मिथ्या हस्ताक्षरको रूपमा लिएका छन् । जीवनका ठूला निर्णयहरूमा उनले त्यही हस्ताक्षर चलाएको र मृत्युपछि उनको मुटुमा गरिएको हस्ताक्षरको प्रतिबिम्ब अरू मानवले देखोस् भन्ने चाहना राखेको भाव व्यक्त गरेको छन् ।

प्रस्तुत कविताको चौथो अनुच्छेदको चौथो पङ्क्ति "कुनै पुरातात्विक वस्तुभैँ" कथ्यमा उनमा अलङ्कारको प्रयोग गरेको पाइन्छ ।

४.३.७.१० सारांश

हजारवर्षको निद्रा कविता कवि भूपनिको तेस्रो कविता सङ्ग्रहको रूपमा रहेको छ । सामाजिक, राजनीतिक, साँस्कृतिक एवम् जीवनयात्राको भोगाइको क्रममा प्राप्त अनुभवलाई कलात्मक ढङ्गले प्रस्तुत गर्ने कविले कविताका विषयवस्तुका रूपमा प्रकृति, देशप्रेम विसङ्गति, आर्थिक असमानता, भौगोलिक विकटता, मानवता, जीवन, मृत्यु, देशको जर्जर अवस्था, परीवर्तनको चाहना, सभ्यताले थिचेको सहरी वातावरण, सुन्दर ग्राम्य परिवेश, उदात्तप्रेम, ईश्वरीय रूढ मान्यताप्रति विमति आदि रहेको पाइन्छ ।

भूपिन लघु र मध्यम आयामका कविता रचना गर्ने कवि हुन् । अनुप्रास, रस, अलङ्कार र लयको समुचित प्रयोगको साथ नवीन, पुरातन, विम्ब एवम् प्रतीकको प्रयोगले भावपक्ष र कलापक्ष बढी सबल भएको छ । तत्सम, तद्भव र आगन्तुक एवम् ठेट शब्दको समुचित प्रयोगले उनका कविताको भाषा सरल, शैली श्रुतिरम्य र लयात्मक भएको छ । विसङ्गतिवादी अस्तित्ववादी एवम् समसामयिक भावधाराभिन्न जीवनको यथार्थलाई काव्यात्मक रूपमा मर्मस्पर्शी र सशक्त रूपमा प्रस्तुत गर्न सक्नु उनको काव्यात्मक उच्चता हो । जीवन र मृत्यु सहयात्री एवम् परिपूरक भएको र जीवन जिउनलाई मृत्यु स्वीकार

गर्नुपर्ने र जीवन जति विसङ्गत भएपनि विसङ्गतिपूर्ण जीवनभित्र सङ्गति खोजेर जीवन एवम् जगत्को सौन्दर्य र अस्तित्वलाई स्वीकारेर वैयक्तिक र सामाजिक जीवन शान्तिपूर्ण बनाउनुपर्ने सन्देश हजारवर्षको निद्रा कविताकृतिका माध्यमबाट दिन खोजेका छन् ।

४.४ विषय प्रवेश : चौबीस रिल निबन्धको अध्ययन

चौबीस रिल निबन्ध (२०६९) निबन्धकार भूपिनको कृति प्रकाशन दृष्टिले चौथो र निबन्ध विधाका दृष्टिले पहिलो रहेको छ । “**चौबीस रिल** निबन्ध भूपिनको सस्मरण, यात्रा र विचारको सङ्गालो हो । उनका वैचारिक निबन्धहरूमा *कवि र सपना, रूखको बिम्बमा कविता, साँस्कृतिक बिम्ब, अस्तित्व, जीवन साभा बसको अन्तिम सिट, नदी र जीवन, हत्यारासोच र दुई महान् त्रासदी* रहेका छन् । *चोरबाटो हुँदै माडी, साठीसालको डायरी र साङ्ग्रिलाको हृदय* जस्ता निबन्ध यात्रा र दैनिकीको रूपमा लिन सकिन्छ, भने *भोकको सङ्गीत, समयको कुरूप चित्रकारिता, कविता यात्राको गोरेटो, डिभाइन भ्यालीमा नास्तिक अनुभूति* जस्ता निबन्धहरू संस्मरणात्मक शैलीका निबन्धहरूका रूपमा रहेका छन् । कतिपय निबन्धमा नितान्त वैयक्तिक गुनासा जस्ता लाग्ने कुराहरू समेटिएको देखिन्छ । साङ्ग्रिला पुस्तक प्रा.लि.द्वारा प्रकाशित यस सङ्ग्रहमा भूपिनका सोह्र वर्षको अवधिमा छायाङ्कन गरिएका लामा छोटो र मध्यम आयामका चौबीसओटा निबन्ध समावेश गरिएको दुईसय अठार पृष्ठमा विस्तार भएको मझौला आकारको निबन्ध सङ्ग्रह हो”, (श्रेष्ठ, २०६८:५) ।

भूपिनको निबन्धका स्रोत आफू जन्मे हुर्केको गाउँ, बाल्यकालको स्मृति, उच्चशिक्षाको लागि पोखरा बसाइ, विश्वविद्यालय अध्ययनको समय, यात्रामा घुमेका स्वदेश र विदेशका विभिन्न ठाउँहरूको सम्झना, अध्ययन अवलोकन भ्रमण, अनुभव अनुभूति र स्मृतिका छालहरू उनका निबन्धका स्रोत र विषयवस्तुका रूपमा आएका छन् । चौबीसओटा निबन्धलाई उनले रिलको प्रतीकमा **चौबीस रिल** नाम दिएर पुस्तकको नामाङ्कन गरेका छन् भने कतिपय निबन्ध मार्फत समाजका विविध, क्षेत्रमा देखा परेका विकृतिप्रति तिखो व्यङ्ग्य गरेका छन् (रानाभाट, २०७०:९) । **चौबीस रिल** निबन्धको लागि उनले उत्तम शान्तिजस्तो महत्त्वपूर्ण पुरस्कार लगायत विभिन्न सम्मानबाट सम्मानित भएका छन् । तसर्थ यसबाट के प्रस्ट हुन्छ भने उनी आधुनिक नेपाली निबन्धको समसामयिक धारमा स्थापित निबन्धकार हुन् भनेर दावी गर्न सकिन्छ । उनका यस सङ्ग्रहमा समावेश गरिएका

निबन्धहरूलाई क्रमशः शीर्षक, संरचना, विषयवस्तु, उद्देश्य र भाषाशैलीका आधारमा अध्ययन गरिएको छ ।

४.४.१ कवि र सपना

४.४.१.१ शीर्षक

कविहरू स्वप्नजीवी हुने र कुनै नवीन चिजको सिर्जना गर्न सपना आवश्यक रहेको भन्दै सुन्दर कविता लेख्ने कविको सपनाले देश, समाज र राष्ट्रलाई सही मार्गमा डोऱ्याउने हुँदा राज्य सञ्चालन गर्ने अभियन्ताहरूले कविको सपनालाई यथार्थमा रूपान्तरण गर्नुपर्ने आशय बिम्बात्मक रूपमा व्यक्त भएको हुँदा शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

४.४.१.२ संरचना

छ पृष्ठ, बाह्र अनुच्छेद, एकचालिस पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको देखिन्छ । अनुच्छेदहरू छ पङ्क्ति देखि बाईस पङ्क्तिसम्म विस्तार भएका छन् । बाह्र अनुच्छेदमध्ये एक नेपाली र एक अङ्ग्रेजी कविताका अनुच्छेद रहेका छन् । यस निबन्धमा सानो अनुच्छेद पाँच पङ्क्ति (पृ.१२) र ठूलो अनुच्छेद अठ्ठाइस पङ्क्तिको (पृ.१६) रहेको छ ।

४.४.१.३ विषयवस्तु

निबन्धमा प्रकट गरिने अन्तर्वस्तु नै विषयवस्तु हो । विषयवस्तु मूर्त तथा अमूर्त हुन सक्छ । व्यक्तिनिष्ठता र वस्तुनिष्ठता जे भए पनि वैयक्तिकताको अभिव्यक्ति निबन्धमा रहेको हुन्छ (आचार्य, २०६३:२९५) ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले कविहरूको सपनालाई नै यसको विषयवस्तु बनाएका छन् । कविहरू बढी स्वप्नजीवी हुने र कविको सपनामा बेजोड शक्ति रहेको हुँदा कुनै नयाँ कुराको सिर्जना गर्न सपना देख्न जरुरी हुने भन्दै सपनाले मानिसलाई मात्र होइन देशलाई ज्यूँदो राख्दछ । जुनदेशमा सपना हुँदैन त्यो देश सबैभन्दा बढी दरिद्र हुने र कविको सपनाले समाज र देशलाई सही मार्गमा अगाडि बढाउन मद्दत पुऱ्याउने विचार प्रकट गरेका छन् ।

४.४.१.४ उद्देश्य

जहाँ रवि पुग्न सक्दैनन् त्यहाँ कवि पुग्न सक्छन् । त्यसैले कवि तथा लेखकले देखेको सपना यो देशका हिमाल, पहाड र तराईका शोषित, पीडित जनताका वास्तविक सपना

भएको हुँदा ती सपनालाई (समस्याहरू/उपलब्धिहरू) राज्य तथा राज्य सञ्चालन गर्ने शासकहरूले व्यक्तिगत स्वार्थमा नलागी संवेदनशील भएर यथार्थमा रूपान्तरण गर्नुपर्न आशय यसको उद्देश्यको रूपमा रहेको पाइन्छ ।

४.४.१.५ भाषाशैली

आत्मपरक शैलीमा लेखिएको यो निबन्धको भाषा, शैली सरल रहेको छ साथै क्यू, सिनेट, इयरफोन, अंग्रेजी शब्द, रक्त, प्रिय, दृश्य, क्रीडास्थल तत्सम, तद्भव र ठेट शब्दको प्रयोग, कोमल पदावली र काव्यात्मक भाषाले निबन्धलाई सरल र रोचक बनाएको पाइन्छ ।

४.४.२ सिलिगढीमा शब्दसाँघु

४.४.२.१ शीर्षक

यो चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रह अन्तर्गतको दोस्रो निबन्ध हो । सिलिगढीमा साहित्य, संस्कृति र समाज सेवामा क्रियाशील संस्था भानुभक्त समितिले रजत जयन्तीको अवसरमा विभिन्न ठाउँमा छरिएर रहेका विविध भाषा भाषिकाका साहित्यकारहरूलाई समेटेर नेपाली भाषाको श्रीवृद्धि गर्न सेतुको रूपमा शब्दसाँघुले काम गरेको हुँदा शीर्षक र विषय बीच निकट सम्बन्ध रहेको हुँदा शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

४.४.२.२ संरचना

बाह्र पृष्ठमा विस्तार भएको यो निबन्धमा पाँच पङ्क्तिदेखि बत्तीस पङ्क्तिका ठूला साना आयामका अठाईस अनुच्छेद रहेका छन् । तिनसय एक पङ्क्तिमा विस्तार यो निबन्धमा सिलिगढीमा आयोजित काव्य सम्मेलनले साहित्यमा पुऱ्याएको योगदान र भूमिकाको चर्चा गरिएको छ ।

४.४.२.३ विषयवस्तु

भारतीय भूमिमा रहेका नेपाली साहित्यकारहरूले नेपाली साहित्यमा पुऱ्याएको योगदानको उल्लेख गर्नु यसको मुख्य विषयवस्तुको रूपमा रहेको छ । त्यसको साथै भारतीय नेपाली काव्य सम्मेलनमा भागलिन जाँदाको यात्रानुभूति, मेची पारिका कविहरू र प्रवासमा

रहेका नेपाली साहित्यकारहरूले नेपाली साहित्यमा पुऱ्याएको योगदानको चर्चा, प्रकृतिको सुन्दर मनोरम दृश्यको अवलोकन र वर्णन, शब्दसाँघुमा विभिन्न साहित्यकारहरूसँगको भेटघाट र छलफलनै यसको विषयवस्तु रहेको छ ।

४.४.२.४ उद्देश्य

भारतीय भूमिमा रहेर पनि नेपाली भाषा साहित्य र कलालाई हृदयदेखि नै माया गरेर यसको स्तर उन्नति, स्तरीकरण र गतिशीलताको लागि योगदान पुऱ्याउने कवि र लेखकहरूको बारेमा जानकारी दिनुको साथै दार्जिलिङ र त्यस वरपरको भूगोल, प्राकृतिक मनोरम दृश्यको वर्णन र त्यहाँका वासिन्दाको चालचलन र संस्कृति र समाजसेवा प्रतिको रुचिको बारेमा उजागर गर्नु नै यसको मुख्य उद्देश्य देखिन्छ ।

४.४.२.५ भाषाशैली

सरल भाषामा लेखिएको यो निबन्धको शैली वर्णनात्मक रहेका छ । फेसबुक, ज्याक, जिलेटिन, पिच, रेस्टुरेन्ट, रिजर्ब, क्याम्प, अफ सिजन अंग्रेजी शब्द, गीतो मे उभर आया नेपालका दर्द जस्ता हिन्दी वाक्य, काव्य, अमूर्त, कवि, स्मृति, अमर, हृदय जस्ता तत्सम शब्दका साथै काव्यात्मक भाषा र अलङ्कारिक भाषाको प्रयोगले निबन्धलाई आकर्षक बनाएको छ ।

४.४.३ मनको एल्मबका प्रिय गीत

४.४.३.१ शीर्षक

मनको एल्मबका प्रिय गीत यस सङ्ग्रहको तेस्रो निबन्धको रूपमा रहेको छ । निबन्धकारले मनको एल्मबमा बाल्यकालदेखि हालसम्म सुन्दै आएका सयौं प्रिय गीतहरू रहेका र तिनै गीतहरूमध्ये छ ओटा सर्वोत्कृष्ट गीतको छनोट गर्न निबन्धकारले चुनौतीपूर्ण निर्णय लिनुपरेको आशय बिम्बात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षकको औचित्यता देखिन्छ ।

४.४.३.२ संरचना

मनको एल्मबका प्रिय गीत निबन्ध आठ पृष्ठमा फैलिएको मध्यम आकारको निबन्ध हो । यसमा लामाछोटा आयामका स्रोह ओटा अनुच्छेद रहेका छन् । सबैभन्दा छोटो अनुच्छेद

सात पङ्क्तिको (पृ. ३) र सबैभन्दा लामो एककाईस पङ्क्तिमा (पृ. ३१) विस्तार भएको पाइन्छ । एकसय पचहत्तर पङ्क्तिमा यो निबन्ध फैलिएको छ ।

४.४.३.३ विषयवस्तु

उनको मनको एल्मबमा रहेका सयौँगीत मध्येबाट सर्वोत्कृष्ट छ ओटा गीतको बारेमा निर्णय गर्नु पर्दा गीतको कुरुक्षेत्रमा उभिन परको चुनौतीपूर्ण र कठिनकार्यको अनुभूतिको महसुस, गीत छनोट गर्दा त्यसको भाव, मर्म, गीतले दिन खोजेको सन्देशको गहन चर्चा र विश्लेषण, बाल्यजीवनको स्मृति, दर्शन, साहित्य, राजनीति, ईश्वर, सङ्गीतलाई गीतको विषयवस्तुको रूपमा प्रस्तुत गर्नु नै यस निबन्धको विषयवस्तुको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.४.३.४ उद्देश्य

यस निबन्धमा गीत सङ्गीत विना मानिसको जीवन अपूरो हुन्छ । कविता र कला भैं सङ्गीत पनि मानव अभिव्यक्तिको उच्चतम आविष्कार हो । यसले मानिसलाई स्वस्थ बनाउने र मनोरञ्जन मात्र दिने गर्दैन, मानवीय सोच बदल्ने ताकत पनि राख्दछ । यो मानिसको सुख-दुःखको असल साथी हो । मोक्ष र मुक्ति प्राप्तिको सार्थक बाटो पनि हो भनेर चित्रण गर्नु यसको उद्देश्य रहेको देखिन्छ ।

४.४.३.५ भाषाशैली

साहित्य भाषाको कलात्मक अभिव्यक्ति हो । तरल अनुभूतिलाई ठोस आकार प्रदान गर्ने काम भाषाबाट हुन्छ । भाषाको गद्यात्मक रूपबाट निबन्ध सिर्जना हुन्छ । निबन्ध स्रष्टाको हृदयको अभिव्यक्ति भएकाले भाषामा आवेग, संवेग आदि मानसिक क्रिया प्रस्तुत भएको हुन्छ (आचार्य, ०६३:२९५) ।

यस निबन्धमा आत्मपरक शैलीमा जीवन भोगाइका अनुभूतिहरू सरलभाषामा व्यक्त गरेका छन् । सी.आई.डीं, न्यूयोर्क, ब्लोइड इन द वीन्ड, द टाइम्स, दे आर चन्जिड, लाईब्रेरी, अफ द विट जस्ता अंग्रेजी शब्द र वाक्य साथै तत्सम र भर्रा शब्दको प्रयोग, काव्यात्मक भाषा, उखानटुक्का, कोमल शब्दावलीको प्रयोगले निबन्ध सरल रोचक र आकर्षक बनेको छ ।

४.४.४ रूखको बिम्बमा कविता

४.४.४.१ शीर्षक

रूखको बिम्बमा कविता यस निबन्ध सङ्ग्रहको चौथो निबन्ध हो । भूपिनले रूखको बिम्बमा कविता देख्छन् । कविताको सौन्दर्य, कला र विचार एवम् विश्लेषण निबन्धमा गर्दै कवितालाई रूखको सादृश्यमा हेरेका छन् । कविताको जरा हुन्छ कविताको जरा विचार हो । जराविहीन रूख नभएजस्तै विचारविहीन कविता हुन सक्दैन भन्दै शीर्षककै सेरोफेरोमा निबन्धका विषय केन्द्रित रहेकाले शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

४.४.४.२ संरचना

सातपृष्ठ, एकसय त्रिचालीस पङ्क्ति, अठार अनुच्छेदमा यसको संरचना विस्तार भएको पाइन्छ । यस निबन्धमा सानो अनुच्छेद तिन पङ्क्तिको (पृ.३७) र ठूलो अनुच्छेद सत्र पङ्क्तिको (पृ. ३८) रहेको देखिन्छ ।

४.४.४.३ विषयवस्तु

निबन्धको मुख्य विषयवस्तुको रूपमा कवितालाई रूखको सादृश्यमा हेरेका छन् । देशभित्र र बाहिरका प्रख्यात कविहरूले समेत रूखलाई आधार मानेर साहित्य सिर्जना गरेको प्रसङ्गको उल्लेख गर्दै निबन्धकारले आफूलाई हिँड्ने रूखसँग तुलना गर्दै रूखलाई प्रमुख स्थान दिएर निबन्धलाई अगाडि बढाउनु, तार्किकता, बौद्धिकता र दर्शन उनका निबन्धका विषयवस्तुका रूपमा आएका छन् ।

४.४.४.४ उद्देश्य

यस निबन्धमा संसारको जुनसुकै विषयमा पनि स्तरयुक्त निबन्ध लेख्न सकिने कुरालाई दर्शाउँदै जसरी जराविना रूखको अस्तित्व हुँदैन त्यसरी नै फूल वा फल विना रूखको अस्तित्व हुँदैन भन्दै कला सौन्दर्य नभएको जीवनको कुनै उपयोगिता र अर्थ हुँदैन भन्ने भाव दर्शाउनु यसको उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.४.५ भाषाशैली

कविले देखेको, भोगेको विविध प्रसङ्ग र अनुभूतिलाई वर्णनात्मक शैलीमा लेखिएको विचारमूलक निबन्ध हो साथै कितना निराला रिस्ता है, पेडको चिडिया से, रसीदी टिकट जस्ता हिन्दी शब्द र वाक्य, द वनायन ट्री, सेकेण्ड ट्याण्ड, फोटो सेन्थेसिस जस्ता अङ्ग्रेजी शब्द, वाणी तत्सम शब्द लगायत ठेट शब्दको प्रयोग काव्यात्मक अलङ्कारिक भाषा, प्रश्नात्मक वाक्य संवादात्मक अभिव्यक्तिले निबन्धको भाषा सरल बनेको छ ।

४.४.५ कविता यात्राको गोरेटो

४.४.५.१ शीर्षक

कविता यात्राको गोरेटो चौबीस रिल निबन्ध सङ्ग्रह भित्रको पाँचौं निबन्ध हो । यसमा निबन्धकारले आफू नेपाली साहित्यको सिर्जनायात्रामा लाग्दा भोगेका र अनुभव गरेका अनुभूति र सङ्घर्षहरू तथा जीवनका विसङ्गतिहरूलाई कविता यात्राको गोरेटो नाम दिएर बिम्बात्मक रूपमा शीर्षक आएको हुँदा विषय र शीर्षक बीच निकट सम्बन्ध रहेकोले यसको औचित्य प्रस्ट देखिन्छ ।

४.४.५.२ संरचना

दशपृष्ठ, बीस अनुच्छेद, दुईसय पैतीस पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको छ । यस निबन्धको लामो अनुच्छेद पच्चीस पङ्क्तिको (पृ.२५) र छोटोमा दुई पङ्क्तिको (पृ.४६) रहेको छ । पृ.४९ को अन्तिम अनुच्छेदमा कार्पेन्ट्सको अंग्रेजी गीत र पृ.५३ को अन्तिममा कवि रोबर्ट फ्रस्ट र गोपाल प्रसाद रिमालको कविता समेटिएको देखिन्छ ।

४.४.५.३ विषयवस्तु

विश्वका सूक्ष्म जीवाणुदेखि वृहत् आकृतिका प्राणीसम्म, परमाणुदेखि स्थूल ग्रहसम्म र कल्पनाका तरङ्गदेखि यथार्थका क्रियाकलापसम्मका व्यापकतम क्षेत्रसम्म निबन्धको विषय फैलिएको हुन्छ तर विषयको शून्यतामा निबन्ध लेखिँदैन (सुवेदी, २०६४:११९) । यस निबन्ध आफू जन्मे हुर्केको गाउँ, बाल्यकालको स्मृति, लाहुरेको जीवनशैली, ग्रामीण जीवनको सुख दुःखका क्षण, उच्च शिक्षाको लागि पोखरा बसाइ क्रममा साहित्यतर्फको भुकाव, साहित्यिक

यात्राको थालनी, साहित्यिक सङ्घ संस्थासँगको निकटता, अध्ययन भ्रमण, जीवनका अनुभव र अनुभूतिलाई उनले निबन्धको विषय बनाएका छन् ।

४.४.५.४ उद्देश्य

नेपाली साहित्यमा उनको रुचि, प्रेरणा, प्रभाव र साहित्यिक यात्राको विषयमा जानकारी दिनुका साथै उनलाई सहित्य सिर्जना र लेखक बन्न उत्प्रेरित गर्ने विविध विषयवस्तुको जानकारी दिएर उनको विगतको स्मरण गराउनु यसको मुख्य उद्देश्य देखिन्छ ।

४.४.५.५ भाषाशैली

आत्मपरक शैली, सरल सहज भाषाको प्रयोग यो निबन्धमा देखिन्छ । ब्लेड, डस्टर, रिटार्यड, हेडिङ्ग, प्लान, पाइलट, टेस्ट अंग्रेजी शब्द, अरेभाइ, दोस्त, बहुत हिन्दी शब्द, बेसाह, गर्जो, गोरस, लैनो जस्ता ठेट र तत्सम शब्दको प्रयोग देखिन्छ । साथै 'सुइदानी साप टपाईका काँइला छोरा लाहुरे वनडैनन', बुडिमान बन्चन् । 'अइ भुपे यता आर दाइको चिठी लेख्देलतौँ' जस्ता स्थान विशेष भाषिकाको प्रयोगले निबन्धको भाषा रोचक आकर्षक बनेको पाइन्छ ।

४.४.६ सांस्कृतिक बिम्ब

४.४.६.१ शीर्षक

जति देश भूगोलले बाँच्छ, त्यति चेतनाले बाँच्छ । चेतनाको अन्तर घुलनले संस्कृतिको निर्माण हुने भएको हुँदा कुनै पनि देशलाई चिनाउन त्यो देशको सांस्कृतिक धरोहरको महत्त्वपूर्ण योगदान रहने आशय बिम्बात्मक रूपमा व्यक्त भएको हुँदा शीर्षकको सार्थकता प्रस्ट देखिन्छ ।

४.४.६.२ संरचना

पाँच पृष्ठ, आठ अनुच्छेद, एकसय बाह्र पङ्क्तिको लघुआयाममा यसको संरचना भएको देखिन्छ । यस निबन्धमा लामो अनुच्छेद एक्काइस पङ्क्ति (पृ.५५) र छोटो आठ पङ्क्तिको (पृ.५६) रहेको छ ।

४.४.६.३ विषयवस्तु

यस निबन्धमा एउटा देश बाँच्नको लागि धेरै कुरा चाहिन्छ, जस्तै भूगोल, प्रविधि, जनशक्ति, सांस्कृतिक सम्पदा, चेतना, सांस्कृतिक विम्ब भन्दै उनले देशका वाङ्मयिक प्रतिभाहरूलाई पनि सम्झेका छन् । राज्यले नागरिकको चेतना भन्दा उनीहरूको पाखुरालाई बढी महत्त्व दिएकोमा चिन्ता व्यक्त गर्दै वाङ्मयिक प्रतिभाको कदर नगर्दासम्म देश दरिद्र र निर्जीव हुने तार्किक विचार व्यक्त गरेका छन् ।

४.४.६.४ उद्देश्य

पाठक समुदायमा अपेक्षित सन्देश पुऱ्याउन गरिने आग्रह निबन्धको उद्देश्यमा निहित हुन्छ । उक्त सन्देश रचनाका माध्यमबाट पाठकसम्म पुऱ्याउनु नै यसको उद्देश्य हो (सुवेदी, २०६४:११९) । यस निबन्धमा चेतनालाई प्रेम गर्ने संस्कृति नै संसारको सबभन्दा सुन्दर संस्कृति हो । यस्तो संस्कृतिको निर्माण र जगेर्ना साहित्यिक कला र सिर्जनाले गर्दछ । तसर्थ हाम्रो देशका विभिन्न भूभागहरूमा साहित्य, कला र सङ्गीतमा लागेका कैयन विम्बहरू छन्, जसलाई राज्यले सांस्कृतिक सम्पदाको रूपमा संरक्षण गर्नुपर्दछ भन्ने आशय व्यक्त गर्नु यसको उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.६.५ भाषाशैली

आत्मपरक शैलीमा लेखिएको विचारमूलक निबन्ध हो । त्रिफ हिस्ट्री, अफटायम, ग्राण्डडिजाइन, कम्प्युटर, किबोर्ड, ब्रेनड्रेन जस्ता अंग्रेजी शब्द, ताँती फिलिङ्गा, ठेट शब्द, वैभव दुर्ग, स्नायु प्रेम जस्ता तत्सम शब्द, काव्यात्मक र कोमल शब्दावलीले भाषा सहज र सरल बनेको देखिन्छ ।

४.४.७ अस्तित्व

४.४.७.१ शीर्षक

यो निबन्ध चौबीस रिलको सातौँ निबन्धको रूपमा रहेको छ । निबन्धकार अस्तित्ववादी दर्शनबाट प्रभावित हुँदै आफ्ना निर्णय र कार्यमा स्वतन्त्र छु भनी आफ्नो उपस्थिति बोध गराउँदै मेरो अस्तित्व छ , त्यसैले मेरो जीवनको अर्थ र सार छ भनी

अस्तित्ववादी विचार व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषय बीच घनिष्ठ सम्बन्ध हुँदा यो सार्थक देखिन्छ ।

४.४.७.२ संरचना

पाँच पृष्ठ वीस अनुच्छेद, एकसयआठ पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको पाइन्छ । यस निबन्धमा छोटो अनुच्छेद दुई पङ्क्ति (पृ.६२) र लामो अनुच्छेद बाह्र पङ्क्तिको (पृ.६०) रहेको देखिन्छ ।

४.४.७.३ विषयवस्तु

यस निबन्धको विषयवस्तुमा मान्छे हुनुको अस्तित्व, उसको नाम, परिचय र पहिचानले साबित गर्दछ । बाल्यकालमा भूपिनले स्कुलबाट लुकाएर ल्याएको चकले बाटोभरी आफ्नो नाम लेख्थे, स्कुलका बेन्चमा, घरका भित्तामा, खोलाका ढुङ्गामा लेखिएका नामहरू अरूले पढून् र मनमा प्रेमपूर्वक सजाएर राखून् भन्ने चाहन्थे । आफ्ना अग्रज र अनुजको परिचयले आफू चिनाएको र आफ्नो परिचयले अग्रजलाई चिनाएको विचारलाई अस्तित्वसँग जोडेर जीवनको पहिचानलाई खोतल्नु नै यसको विषयवस्तुको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.४.७.४ उद्देश्य

यस निबन्धमा अस्तित्वप्रतिको चिन्तन गर्दै मान्छेले विकासात्मक अवस्थामा आफ्नो अस्तित्वप्रतिको आशक्ति राख्ने र आफ्नो स्थानको खोजीमा समयको ठूलो लगानी गर्दै अस्तित्वको खोजी गर्नु नै यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.७.५ भाषाशैली

यस निबन्धमा लेखकले तार्किकता र बौद्धिकताले भरिएका वैचारिक भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन् साथै अस्तित्व युग, अंश, योगदान, क्षितिज जस्ता तत्सम, चक, बेन्च, डायरी जस्ता आगन्तुक र लौरी, बाउसो, चौतारी जस्ता प्रचलित ठेट शब्दको प्रयोगले भाषालाई सरल बनाएको पाइन्छ ।

४.४.८ भोकको सङ्गीत

४.४.८.१ शीर्षक

यस निबन्धमा उच्च शिक्षाका लागि गाउँबाट पोखरा आउँदाको अनुभूति र बाबाको पेन्सनबाट आएको रूपैयाँ पोखरा बसाइ, पढाइ खर्चमा सकिएको र घर फर्कने बेलामा भोक-भोकै नौ, दश घण्टा हिँडेर घरपुग्दा भोकले सताएको कारुणिक पीडाको चर्चा गरेका छन् र शीर्षकको सेरोफेरोमा निबन्धको विषयवस्तु केन्द्रित रहेको हुँदा शीर्षक उपयुक्त छ ।

४.४.८.२ संरचना

यस निबन्धमा लामाछोटा आयामका तेईस अनुच्छेद रहेको र यीमध्ये लामो अनुच्छेद बाह्र पङ्क्तिको (पृ.६७) र छोटोमा तिन पङ्क्तिको (पृ.७०) रहेको छ । आठ पृष्ठमा विस्तार मझौला आकारको निबन्धमा एकसय बयानबन्धे पङ्क्तिहरू रहेको देखिन्छ ।

४.४.८.३ विषयवस्तु

बाल्यावस्थाको स्मृति, साहित्यतिर उन्मुख यात्रा, उच्च शिक्षाको लागि पोखरा आउँदाको अनुभूति, बुबाको छोरालाई डाक्टर बनाउने सपना, पोखरा बसाई, क्याम्पस भर्ना गरेर गाउँ फर्कदा खर्च सकिएकोले भोकको सङ्गीत सुन्दै बुबा र उनको यात्रा घरसम्म पुगेको मार्मिक सम्झना, ग्रामीण जनजीवन, प्रकृतिको चित्रण र अवलोकन उनका निबन्धका विषयवस्तुका रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.४.८.४ उद्देश्य

कुनै पनि लेखन निरुद्देश्य हुन सक्दैन । निबन्ध पनि लेखकले निश्चित उद्देश्यका साथ लेख्दछ । आफ्ना अनुभवहरू प्रस्तुत गर्नु, काव्यात्मक उपदेश प्रस्तुत गर्नु, सूचना सम्प्रेषण गर्नु, विसङ्गत जीवनको प्रस्तुतीकरण गर्नु आदि निबन्धका उद्देश्य हुन सक्छन् । (आचार्य, २०६३ : २९७) । बाल्यकालको घटनाहरूलाई स्मरण गर्दै असल मानिसहरू महान् हुन् तर सबै महान् मानिसहरू असल नहुन पनि सक्छन् त्यसैले हामी मानवहरू सदा असल बन्न प्रयत्न गर्नुपर्दछ भन्ने सन्देश दिनु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.८.५ भाषाशैली

सस्मरणात्मक र वर्णनात्मक शैलीमा यो निबन्ध अगाडि बढेको छ । इस्टकोट, बटुवा, टाकुरा, टौवा, बुँद जस्ता ठेट शब्द, इन्जिनियर, पाइलट, टाई, सर्ट, अंग्रेजी लगायत तत्सम शब्दको प्रयोगले निबन्धको भाषा सरल र सहज बन्न पुगेको छ ।

४.४.९ समयको कुरूप चित्रकारिता

४.४.९.१ शीर्षक

यस निबन्धमा उच्च शिक्षा अध्ययनका क्रममा पोखरामा भेट भएका साथी तीर्थ गुरुङको दुवै मिर्गौला खराब भएर जीवन्तको अवस्थामा अस्पतालमा मृत्युसँग सङ्घर्ष गरिरहेको दुःखद र कारुणिक अवस्थाको सम्झनाका साथै समयले उनलाई कुरूप बनाएको विषयलाई केन्द्रमा राखेर निबन्ध अगाडि बढेको हुँदा शीर्षकको सार्थकता प्रस्ट हुन्छ ।

४.४.९.२ संरचना

आठपृष्ठमा विस्तार गरिएको मध्यम आकारको यस निबन्धमा उन्नाईस अनुच्छेद, एकसय उनन्सत्तरी पङ्क्तिमा यसको संरचना भएको छ । यस निबन्धमा छोटो अनुच्छेद तिन पङ्क्तिको (पृ.७७) र लामो अनुच्छेद बाईस पङ्क्तिको (पृ.७७) रहेको छ ।

४.४.९.३ विषयवस्तु

साथी तीर्थसँगको पोखरा बसाइको अविस्मरणीय क्षणहरू, तीर्थको अध्ययनशील स्वभाव, उसको खराब स्वास्थ्य अवस्था, मिर्गौला रोगको महङ्गो उपचारपद्धति र प्रत्यारोपण गर्न भन्नुभट्टिलो कानुनी व्यवस्था, देश विदेशबाट तीर्थको उपचारको लागि कवि तथा लेखकहरूले आर्थिक सहयोग जुटाउन खेलेको महत्त्वपूर्ण भूमिकाको चर्चा, तीर्थको सङ्घर्षमय जीवन र रोगले ग्रस्त तीर्थको शारीरिक अवस्थाको दयनीय स्थिति नै यस निबन्धको विषयवस्तुको रूपमा रहेको छ ।

४.४.९.४ उद्देश्य

मिर्गौला जस्तो घातक रोगको कारण कुनै पनि नेपालीले अकालमा ज्यान गुमाउन नपरोस् भन्दै स्वास्थ्य जस्तो नागरिकको संवेदनशील विषयलाई राज्यको तर्फबाट सर्वसुलभ

तथा निःशुल्क उपचार गरिनुपर्ने र हामी नेपालीमा मानवतावादी भाव र सकारात्मक सोच रहेको खण्डमा विश्वको जुनसुकै कुनामा बसेतापनि दुःख र कष्टमा परेको व्यक्तिलाई सहयोग गर्न सकिन्छ, भन्ने सन्देश दिनु यसको उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.९.५ भाषाशैली

अभिव्यञ्जनाको तीव्रता, कवितात्मक प्रवाह, सुललित अन्विति आदिको काम भाषाको परिपक्वताबाट मात्र हुन सक्दछ । यस कामको लागि भाषाले उच्च अभिव्यक्ति र सौन्दर्य प्रवहन गर्ने क्षमता आर्जन गर्न सक्नुपर्दछ (सुवेदी, २०६३ :१०) । सस्मरणात्मक शैलीमा लेखिएको यो निबन्धको भाषाशैली सरल, सहज र प्रवाहमय छ । यसमा मेरिल्याण्ड, एकाउण्ट, च्याट, हस्पिटल, डायलोसिस, गुडमर्निङ, बोर्डिङ, हन्ड्रेड इयर्स, लास्ट लेक्चर, इ-मेल, फेसबुक जस्ता अंग्रेजी शब्द र वाक्य, शब्द, कविता, अलिखित जस्ता तत्सम शब्द लगायत काव्यात्मक भाषाको प्रयोगले निबन्ध जटिल नभई सरल बन्न पुगेको छ ।

४.४.१० जीवन : साभा बसको अन्तिम सिट

४.४.१०.१ शीर्षक

यस निबन्धमा कविले साभा बसको अन्तिम सिटमा बसेर गरेको यात्रालाई उनको जीवन भोगाइको वास्तविक यात्रासँग एकाकार गर्दै अधिल्ला सिटमा बस्नेहरूभन्दा बढी जीवनबोधी-जीवनयोग्य, ज्ञानप्राप्तिको ठूलो अवसर पछिल्ला सिटमा बसेर गरेको यात्रा अनुभूतिलाई बिम्बात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषयबीच निकट सम्बन्ध रहेकोले यो शीर्षक छनोट उपयुक्त छ ।

४.४.१०.२ संरचना

छ पृष्ठ, कविता सहितका बाह्र अनुच्छेद, एकसय तेईस पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको पाइन्छ । लामो अनुच्छेदमा बीस पङ्क्तिको (पृ.८३) र छोटोमा पाँच पङ्क्तिको (पृ.८४) रहेको देखिन्छ । यो लघु आयामको निबन्ध अन्तर्गत पर्दछ ।

४.४.१०.३ विषयवस्तु

पछाडि बस्नु नै अगाडि बस्नु हो भन्ने विचारका पक्षपाती भूपिन जीवन साभा बसको अन्तिम सिटलाई कवि राजा पुनियानीको जीवनबोधी कविता *पिजोको अन्तिम सिटसँग एकाकार गराउन चाहन्छन्* । कीर्तिपुरदेखि महाराजगञ्जसम्मको छोटो दूरीमा उनी साभा बसको अन्तिम सिटमा बस्छन् र जीवनका बारेमा विचार विमर्श गर्दछन् । अतीतलाई फर्केर हेर्दै पोखरा सम्भकेका छन् र मनका भित्तामा पोखराको परिवेश आउँछ, शुरूमा पोखरामा नगरबसको अगाडि सिट रोजेर बसेको स्मरण गर्दै पछिल्लो समय पछिल्ला सिटमा बसेर यात्रा गर्दा युगअनुरूप, जीवनबोध, जीवनदर्शनको प्राप्ति र यथार्थको अनुभूति मिले जस्ता विषयवस्तु यस निबन्धमा आएका छन् ।

४.४.१०.४ उद्देश्य

यस निबन्धमा कविताको सिर्जनामा होस् या कुनै सवारी साधनको यात्रामा होस् जीवनको बारेमा गम्भीर विचारविमर्श र चिन्तन गर्न अवसर मिले त्यसबाट जीवनबोध र ज्ञानप्राप्ति हुने उद्देश्य राखिएको छ ।

४.४.१०.५ भाषाशैली

यस निबन्धमा आत्मपरक भाषाशैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ । सिट, क्याम्पस, हस्पिटल, स्पिडब्रेकर, लेकसाइड, सिटि जस्ता अंग्रेजी आगन्तुक शब्द, दृश्य, जीवनबोध, अभिशप्त, दर्शन, मस्तिष्क तत्सम शब्दको प्रयोग देखिन्छ साथै दार्शनिक, बौद्धिक र तार्किक भाषाको साथै काव्यात्मक भाषाको प्रयोगले निबन्ध सरल बनेको छ ।

४.४.११ नदी र जीवन

४.४.११.१ शीर्षक

निबन्धकारले नदी र जीवनलाई तुलना गर्दै मानव सभ्यताको विकास नदी किनारबाटै भएको र आफू पनि त्यसबाट अछुतो रहन नसकेको भन्दै नदी वा प्रकृतिबाट मानवले धेरै कुरा सिकेर आफ्नो जीवनमा लागु गर्नुपर्ने, मान्छे नदीजस्तै शान्त, सफा, पारदर्शी, गतिशील, भेदभाव रहित रहनुपर्ने मानवतावादी विचार विम्बात्मक रूपमा व्यक्त भएको हुँदा शीर्षक उपयुक्त छ ।

४.४.११.२ संरचना

पाँच पृष्ठ, साना-ठूला उन्नाईस अनुच्छेद, एकसय नौ पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको पाइन्छ । लामो अनुच्छेदमा सत्र पङ्क्ति र छोटो अनुच्छेदमा दुई पङ्क्ति भएको लघु आकारको निबन्ध हो ।

४.४.११.३ विषयवस्तु

निबन्धको विषयगत क्षेत्र निकै विशाल र व्यापक छ । एककोषीय जीवदेखि लिएर मानिससम्म वा स्थूलराशिदेखि लिएर आकाशका तारामण्डलसम्म कुनै पनि विषय निबन्धको हुनसक्छ । विषयका आधारमा निबन्धको नामाकरण गरिने र विषय विना यसको रचना गर्न नसकिने हुनाले विषयवस्तु निबन्धको प्रमुख तत्त्व हो (ओभा, २०६४:१०) । मानवसभ्यताको विकास नदी किनारबाट भएको, मान्छेको विचार नदीको जस्तै सफा, स्वच्छ र भेदभावरहित हुनुपर्ने, नदी र मान्छेको जीवन बीच घनिष्ठ सम्बन्धको चर्चा, प्रकृतिबाट धेरै कुरा सिकेर मान्छेले आफ्नो जीवनलाई सफल बनाउन पर्ने आशय यसको विषयवस्तुका रूपमा आएका छन् ।

४.४.११.४ उद्देश्य

जीवन र नदीको तुलना गर्दै मान्छेको जीवन पनि नदी जस्तै सफा र पारदर्शी, शान्त र गतिशील रहनुपर्ने समाजमा जात, वर्ण, वर्गको आधारमा कसैलाई पनि विभेद गर्न नहुने, मानवतावादी विचार राख्नुपर्ने यस निबन्धको मुख्य उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.११.५ भाषाशैली

यस निबन्धमा आत्मपरक शैलीका साथै बिम्बात्मक भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ साथै कम्पोज, फ्रोस्टवाइट अंग्रेजी शब्द, जीवन, मृत्यु, विश्व, वर्षे, अनुशासन, क्षितिज, नदी, प्रेम कविता, आकाश, वर्षात जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द र काव्यात्मक भाषाको प्रयोगले निबन्ध सम्प्रेष्य बन्न पुगेको छ ।

४.४.१२ चोरबाटो हुँदै माडी

४.४.१२.१ शीर्षक

संरक्षण कविता यात्रा अन्तर्गत कविहरू बन्द, हडताल र चक्काजामको सास्ती र हत्या हिंसा जस्तो दिग्दारीबीच चोरबाटो हुँदै माडी पुगेको घटनालाई अभिधात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा विषय र शीर्षक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध देखिएको हुँदा शीर्षक सार्थकता देखिन्छ ।

४.४.१२.२ संरचना

लामा छोटा आयामका पचपन्न अनुच्छेद, तिनसय पङ्क्ति, तेह्र पृष्ठमा यसको संरचना फैलिएको छ । यस निबन्धमा छोटा दुई पङ्क्ति र लामो नौ पङ्क्तिसम्मका अनुच्छेद रहेका छन् ।

४.४.१२.३ विषयवस्तु

बन्द, हडताल, चक्काजामको बाबजुत पनि चोरबाटो हुँदै पोखरेली र चितौने कविको माडी यात्रा, यात्रामा कविहरूबीच गजल, कविता अन्ताक्षरीको रस्साकस्सी चलेको, माडीको जनजीवन, धर्म संस्कृति र रहनसहनको चर्चा, माडीको विकास, माडीमा सशस्त्र द्वन्द्वले पारेको प्रभाव, जङ्गली जनावरको डर त्रासको वस्तुस्थिति, प्राकृतिक वातावरण बाँदरमुढे घटनाको कुरूप वीभत्स हत्याको तितो यथार्थ, थारू वस्तीहरूको संस्कृति, भेषभूषा आदि यस निबन्धको विषयवस्तुका रूपमा आएका छन् ।

४.४.१२.४ उद्देश्य

गाउँलाई केन्द्र मानेर काव्यको सिर्जना गर्नु, कविता स्वतस्फूर्तले मात्र सिर्जना हुँदैन क्रियाशीलताले पनि जन्मिन्छ भन्ने ठान्नु, तत्स्थानीय र तात्क्षणिक कविता रचना गर्नु र त्यहीका मानिसहरूलाई ती कविताहरूको पहिलो श्रोता बन्ने अवसर दिनु र पर्यावरणको संरक्षण गर्न चेतना फैलाउनु यस निबन्धको मुख्य उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.१२.५ भाषाशैली

निबन्धमा प्रयोग गरिने भाषा सरल, सरस एवम् रागात्मक हुनुपर्दछ । निबन्धमा निबन्धकारको छुट्टाछुट्टै भाषाशैलीगत विशिष्टता हुनेगर्दछ, तथापि संक्षिप्तता, सुसङ्गठन र कसिला वाक्यको प्रयोग एवम् भाषा सरल र सहज, कोमल, हार्दिक, रागात्मक, सम्प्रेषणीय र हृदयस्पर्शी हुनुपर्ने मानिन्छ (ओभा, २०६४ : ११) । यस निबन्धमा आत्मपरक भाषाशैलीको प्रयोग भएको छ । रेक्टर, एम्बुस, आइसक्रिम, ब्याग, टायर, चेकपोष्ट, डेटएक्सापायर्ड, हन्ड्रेड पर्सेन्ट, बाइक, फोन, स्ट्रिट जस्ता अंग्रेजी आगन्तुक शब्द, आशा, किरण, आवाज, दीप कविताजस्ता प्रचलित तत्सम शब्द, भयाम्ता, ट्याटु, चिचर, पावनी आदि स्थान विशेष थारू संस्कृतिसंग सम्बन्धित भाषिका, बलौटे, कांसघारी, भिटिभाम्ता, भुप्रा, टायल, ठेट शब्दको प्रयोगको साथै काव्यात्मक भाषाको प्रयोगले भाषा सरल बन्न पुगेको छ ।

४.४.१३ सेप्टेम्बर एघारको ऐँठन

४.४.१३.१ शीर्षक

यस निबन्धमा शीर्षक अभिधात्मक रूपमा आएको छ । अमेरिकाको जुम्ल्याहा भवनहरू माथि क्रुर पाशविक र दुःखद आतङ्कवादी आक्रमण गरेर आतङ्कवादीका नाइके विनलादेनले अपूरणीय मानवीय क्षति पुऱ्याएको दिन सेप्टेम्बर एघार भएको र त्यस दुःखद दिनको चर्चा यस निबन्धमा गरिएको हुँदा शीर्षक र विषयबीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ ।

४.४.१३.२ संरचना

आठपृष्ठ, एक्काइस अनुच्छेद र एकसय छयहत्तर पङ्क्तिमा यस निबन्धका संरचना विस्तार भएको छ । यसमा लामो अनुच्छेदमा सोह्र पङ्क्तिको (पृ.१०८) र छोटोमा दुई पङ्क्तिको (पृ.१०४) रहेको देखिन्छ ।

४.४.१३.३ विषयवस्तु

काठमाडौँ महाराजगञ्ज स्थित कृष्णदाइसँगको बसाइ, महाराजगञ्ज वरपरको दृश्यहरू, जुम्ल्याहा भवनहरूमा आतङ्कवादी आक्रमण, उक्त आतङ्कवादी आक्रमणबाट त्रसित र स्तब्ध अमेरिकी नागरिक, त्यस आक्रमणले अमेरिकी नागरिकमा परेको भौतिक मानवीय र मनोवैज्ञानिक क्षति, बचाउ कार्यमा युद्धस्तरमा जुटिरहेका दमकल, फायर

फाइटर र नागरिकको कारुणिक दृश्यहरू, मारिएको विनलादेनको क्षतविक्षत अनुहार र अमेरिकी सुरक्षा नीतिमा ल्याएको उच्च सतर्कता नै यस निबन्धको विषयवस्तु हुन् ।

४.४.१३.४ उद्देश्य

विश्वबाट आतङ्कवादलाई निर्मूल र परास्त गर्नुपर्ने र त्यस्तो मानवता विरोधी क्रियाकलापमा संलग्न हुने व्यक्ति र सङ्गठनलाई निरुत्साहित गर्न सबै राष्ट्रहरू एकजुटभई त्यसको डटेर सामना गर्नुपर्ने सन्देश दिनु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.१३.५ भाषाशैली

यस निबन्धमा अभिधात्मक र संस्मरणात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ । न्यूजच्यानल, एजेन्सी, बी.बी.सी., मस्टवान्टेड, अप्रेसन, फ्ल्याक्स ब्याक, रिफ्रिजेरेटर, अमेरिका अन अट्याक, सेलिब्रेट जस्ता अधिकतम् प्रचलित अङ्ग्रेजी शब्दका साथै तत्सम र ठेट नेपाली शब्दहरूको प्रयोगले निबन्धको भाषा सरल देखिन्छ ।

४.४.१४ प्रकट दाइ र पोखरा नोस्टाल्जिया

४.४.१४.१ शीर्षक

यस निबन्धमा निबन्धकारलाई पोखरा बसाइको क्रममा समता काव्य सन्ध्यासँगको निकटताले साहित्यमा लाग्ने प्रेरणा मिल्नु साथै प्रकटदाइको साहित्य सम्बन्धी अभिरुचि र उनको व्यक्तित्वलाई केन्द्र मानेर सम्पूर्ण निबन्ध अगाडि बढेको हुँदा यो शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

४.४.१४.२ संरचना

सात पृष्ठ, अठार अनुच्छेद, एकसय साठी पङ्क्तिमा यो निबन्धको रचना विस्तार भएको पाइन्छ । यसमा ठूलो अनुच्छेदमा बाईस पङ्क्ति (पृ.११२) र सानो दुई पङ्क्तिको (पृ.११५) रहेको देखिन्छ ।

४.४.१४.३ विषयवस्तु

पोखराको मनोरम दृश्यहरू, समताकाव्य सन्ध्यासँग निबन्धकारको निकटता, अग्रज कविहरूको संसर्गले साहित्यमा लाग्ने प्रेरणा, पोखरा बसाइको क्रममा भेटिएको प्रकट पंगेनीसँगको उठबस, पत्रिका निकाल्ने योजना, साहित्यिक गोष्ठी र छलफल अन्तक्रियामा सहभागी, संरक्षण कविता आन्दोलनले साहित्यमा खेलेको भूमिकाको चर्चा यस निबन्धको विषयवस्तुको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.४.१४.४ उद्देश्य

उद्देश्य बिनाको निबन्धको कुनै महत्त्व नरहने हुँदा निबन्धकारले आफ्ना निबन्धका माध्यमबाट मान्यता, विचार, धारणा, अनुभव, अनुभूति, एवम् जीवन दर्शन पाठक सामु प्रस्तुत गर्दछ (ओझा, २०६४ : १२) । नेपाली साहित्यको उत्थान र विकासमा समताकाव्य सन्ध्याले खेलेको भूमिकाको चर्चाको साथै तत्कालीन पोखरेली कवि र लेखकहरूले नेपाली साहित्यमा पुऱ्याएको योगदानको मूल्याङ्कन गर्नु र महाकवि बन्नुभन्दा असल कवि हुनुपर्ने कुरामा जोड दिनु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको देखिन्छ ।

४.४.१४.५ भाषाशैली

यस निबन्धमा आत्मपरक शैली, सरल र सहज भाषाको प्रयोग गरेको पाइन्छ । आर्ट, मिडिया, डोज, ब्यानर, प्यासेज, लिबर्ड, इफ विन्टर कम्स क्यान स्पिड वि फार बिहाइण्ड जस्ता प्रचलित अङ्ग्रेजी शब्द र वाक्य साथै कोमल शब्द काव्यात्मक भाषाको प्रयोगले निबन्धलाई रोचक र अकर्षक बनाएको पाइन्छ ।

४.४.१५ साठी सालको डायरी

४.४.१५.१ शीर्षक

यस निबन्धमा शीर्षक, अभिधात्मक रूपमा आएको छ । निबन्धकारले साठी सालको डायरीबाट केही महत्त्वपूर्ण दिनहरूलाई भिकेर आफ्नो अनुभूतिहरू र जीवन भोगाइलाई व्यक्त गरेको हुँदा निबन्धको विषय र शीर्षक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध देखिएको हुँदा शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

४.४.१५.२ संरचना

एघार पृष्ठ, लामाछोटा आयामका पैतीस अनुच्छेद र एकसय बीस पङ्क्तिमा यसको रचना फैलिएको पाइन्छ । यस निबन्धमा ठूलो अनुच्छेद चौध पङ्क्तिको (पृ.१२६) र सानो अनुच्छेद दुई पङ्क्तिको (पृ.१२०) रहेको छ ।

४.४.१५.३ विषयवस्तु

भूपिनको निबन्धमा समाज, कला, स्थान, इतिहास आदिलाई परस्पर अन्तरघुलन गरिएका विषयवस्तुले उनको लेखनको विषयवस्तुलाई गाढा आकारमा उतारेका छन् । (गुरूड, २०७० : १) । निबन्धकार डायरी लेख्छन् र आफ्ना कुरा भुटा नहुन भनेर सचेत रहन्छन् । साठीसालको डायरीबाट उनले केही पानाहरू साभार गरेका छन् । कृषि जीवनका काम गर्दै आफ्नो विगतको उपलब्धिलाई ग्राफमा ढाल्छन्, समाचार पढ्छन् र रोजी खेल पोपको अभियानबाट पग्लिन्छन् तर आफ्नो जीवन उपलब्धिहीन तरिकाले बितेकोमा विसङ्गतिबोध गर्दछन् । फ्रायडको मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त पढेर समीकरणमा घोटलिन्छन् । काठमाडौँ र भरतपुरको बसाइको महत्त्वपूर्ण क्षणहरूको स्मृति नै यसको विषयवस्तुका रूपमा रहेका छन् ।

४.४.१५.४ उद्देश्य

निबन्धकारको जीवनमा घटेका, भोगेका र देखापरेका घटना, अनुभव र अनुभूति जसले उनको जीवनलाई प्रभाव पारेको छ । त्यसलाई जस्ताको तस्तै पाठक सामु राख्नु यस निबन्धको उद्देश्य देखिन्छ ।

४.४.१५.५ भाषाशैली

यस निबन्धको भाषा आत्मपरक, दैनिकी शैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ । कर्डलेस, द गुड अर्थ, ग्राफ, फ्रिज, प्रोजेक्टर, स्लाइट जस्ता प्रचलित अङ्ग्रेजी शब्द बेहद हिन्दी, डल्लेठो, टापु, जुवा, लिडको जस्ता ठेट शब्दको प्रयोग भएको देखिन्छ । कतिपय अनुच्छेदको भाषामा बौद्धिकता, तार्किकता र चिन्तनशीलता रहेको पाइन्छ ।

४.४.१६ सांग्रिलाको हृदय

४.४.१६.१ शीर्षक

यस निबन्धमा एक्यापको व्यवस्थापन र सरुभक्तको संयोजकत्वमा संरक्षण कविता यात्राको सिर्जनात्मक नौओटा स्वर्णिम दिनलाई सांग्रिलाको हृदयमा कैद गरेका छन् । यात्रामा कविताको माध्यमबाट वातावरण संरक्षण र वातावरणीय जनचेतना विस्तार गर्नु रहेको यथार्थ विम्बात्मक रूपमा आएको हुँदा शीर्षक सार्थकता सिद्ध देखिन्छ ।

४.४.१६.२ संरचना

यस निबन्धमा ठूला साना आयामका चौहत्तर अनुच्छेद, उन्नाईस पृष्ठ र चार सय चार पङ्क्ति, नौ उपशीर्षकमा यसको संरचना विस्तार भएको वृहत् आकारको निबन्ध हो । सबैभन्दा सानो अनुच्छेद दुई पङ्क्ति र ठूलोमा सोह्र पङ्क्तिको (पृ.१३६) रहेको छ ।

४.४.१६.३ विषयवस्तु

सरुभक्तको नेतृत्वमा अन्नपूर्ण क्षेत्रको यात्रा, बाटोमा पर्ने याम्दी खोला, भुरुङ्गी खोला र धम्पुसबाट देखिने माछापुच्छ्रे हिमालको मनोरम दृश्यको वर्णन, नयाँपूल बिरेठाँटी, घोरेपानीका बाटामा पर्ने दृश्यहरू, घान्द्रुक बसाइ, कविता रचना, कवितामा ग्रामीण विम्ब र मिथकको प्रयोग, अन्नपूर्ण बेस क्याम्प, भेडीगोठ, ग्राम्य चालचलन र संस्कृति, यात्रामा देखापरेका अनुभव र अनुभूतिहरू यस निबन्धको विषयवस्तुको रूपमा आएका छन् ।

४.४.१६.४ उद्देश्य

गाउँमुखी कविताको सिर्जना गर्नु, ग्रामीण जनजीवनको भित्री मर्मलाई छाम्नु, ग्रामीण क्षेत्रमा कविताको जागरण ल्याउनु, गाउँ-गाउँमा घुमेर तत्काल त्यहीं कविता लेख्न लगाई कविता गोष्ठी आयोजना गर्नुको साथै काव्यको माध्यमबाट पर्यावरणीय संरक्षण गर्नु यसको लागि जनचेतना फैलाउनु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.१६.५ भाषाशैली

यस निबन्धमा अभिधात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको पाइन्छ । त्यसैगरी बेसक्याम्प, बोल्ड, एक्याप, युनिट, बल्याक टी, नेपाल इज हियर टु चेन्ज यू नट टू चेन्ज इट

जस्ता लामा अंग्रेजी वाक्य, तत्सम शब्द र ठेट नेपाली शब्दको प्रयोगका साथै स्थान विशेष भाषिकाले कविताको भाषालाई सरल, सहज र रोचक बनाएको छ ।

४.४.१७ गोरखामा कविताको एकीकरण

४.४.१७.१ शीर्षक

यस निबन्धमा शीर्षक अभिधात्मक रूपमा आएको देखिन्छ । संरक्षण कविता आन्दोलनको दशौँ जन्म मनाउन गोरखामा जम्मा भएका कवि तथा लेखकहरूले गाउँमा छरिएर रहेका कविता र विचारलाई एकीकरण गरेर काव्यिक आन्दोलनको नयाँ रङलाई गाउँमा पोत्न सफल भएको हुँदा विषय र शीर्षक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध भएकोले शीर्षक अर्थपूर्ण देखिन्छ ।

४.४.१७.२ संरचना

यो निबन्ध आठ पृष्ठ, एकतीस अनुच्छेद, एकसय अन्ठाउन्न पङ्क्तिमा विस्तार भएको छ । लामो अनुच्छेद दश पङ्क्ति (पृ.१५२) र छोटोमा दुई पङ्क्ति (पृ.१५३) रहेको देखिन्छ ।

४.४.१७.३ विषयवस्तु

समीक्षक सुमनराज श्रेष्ठको टिप्पणीमा यो निबन्धमा निबन्धकारले लेखकीयमा भने जस्तै घटना, जीवन र समाजका विषयलाई निबन्धकै नजरबाट खिचेको गतिशील दृश्यहरूको यथार्थ चित्रपट हो भनेका छन् (श्रेष्ठ, २०६८ : ६) । यस निबन्धमा चितवनबाट गोरखाको यात्रामा कवि तथा लेखकहरू प्रस्थान, गोरखा बजारमा महंगो होटलको बसाइ, होटल बसाइको क्रममा समसामयिक साहित्यिक चर्चा, गोरखा बजार र दरबारको अवलोकन, गाउँलेको सहभागितामा गाउँकै वरपर लेखिएका निखर र ताजा कविता सुन्ने सुनाउने कार्यक्रम भोगेने उ.मा.वि.सम्पन्न हुनुको साथै, गाउँकै सानो भाइको दुःख र व्यथा यस निबन्धका विषयवस्तुको रूपमा आएका छन् ।

४.४.१७.४ उद्देश्य

शहरकेन्द्रित साहित्यलाई दुर्गम बस्तीहरूमा पुर्याउनु पर्दछ भन्दै देश गाउँ नै गाउँ मिलेर बनेकोले अबको साहित्य गाउँबाट थालिनु पर्दछ । साहित्यमा ग्रामीण बिम्ब र मिथक

प्रयोग गर्नुपर्ने साथै गाउँलेका सुख र दुःखका कथाहरू सुनाउँदै जागृतिका गीत सुसेल्लै चेतना फैलाउनु यसको मुख्य उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.१७.५ भाषाशैली

भूपिनको निबन्धका भाषाशैली र अभिव्यक्तिहरू सरल, सम्प्रेषणीय, हार्दिक र इमान्दारीपूर्ण छन् भनेर सुरेस रानाभाटले टिप्पणी गरेका छन् (रानाभाट, २०७० : ५) । यस निबन्धमा यात्रा सस्मरणात्मक र वर्णनात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ साथै बेलब्याय, काउन्टर, मेनु, होटल, अर्डर , रेष्टुरा, रेक्टर, इको-पोयेट्री, इँको-क्रिटिसिज्म जस्ता अंग्रेजी शब्द, शब्दकोश, आकाश, जीवन आदिकवि आन्दोलन, वृद्धा जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द, भवाइखट्टे कटुवाली जस्ता ठेट शब्द र छ्याङ्ङ जस्ता अनुकरणात्मक शब्द र काव्यात्मक भाषाको प्रयोगले निबन्धको भाषा सरल सहज बनेको छ ।

४.४.१८ हत्यारासोच

४.४.१८.१ शीर्षक

मानिसभित्र अनेक सोचहरूको बाढी आउने र ती सोचमध्ये कतिपय सोचले मानवलाई सही मार्गमा लाग्न सहयोग गर्ने, जीवनको यथार्थ किनारा पत्ता लगाउन मद्दत पुग्ने हुन्छ भने कतिपय सोच त्यस्ता हुन्छन् जसले बर्खाको नदीले बगाई लाने रूखका निरीह मुढाहरूभैँ जीवनलाई लछारपछार पार्छन् र जीवनका अनन्त गहिराइमा फ्याकिदिन्छन् भन्ने आशय व्यक्त भएकोले विषयवस्तु र शीर्षक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध देखिन्छ ।

४.४.१८.२ संरचना

चारपृष्ठ, नौ अनुच्छेद, बयानबन्धे पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको पाइन्छ । यस निबन्धमा सबैभन्दा लामो अनुच्छेद बाइस पङ्क्तिको (पृ.१५१) र छोटो तिन पङ्क्तिमा विस्तार (पृ. १६०) रहेको पाइन्छ ।

४.४.१८.३ विषयवस्तु

जीवनका अनन्त गोरेटोहरूमा निबन्धकार हत्यारा सोचलाई बोकेर हिँडेको देखिन्छ । बाटोहरू दोबाटोमा परिणत हुन्छन्, मानिस हिँड्दै ज्ञानको राजमार्ग पत्ता लगाउन चाह-

न्छन् । जीवनका सबै बाटाहरू सरल रेखामा तानेका सिधा धागोजस्तै छैनन् , वक्रतामा नै जीवनको चक्र चल्यो । जीवनका बाटाहरूमा उकाली, ओराली अनगन्ती खोला नाला र पहाड भएको विचार उनले व्यक्त गरेका छन् । जीवनको अमूर्तता, अस्पष्टता र जटिलता यस निबन्धको विषयवस्तुको रूपमा रहेका छन् ।

४.४.१८.४ उद्देश्य

जीवनको अमूर्तता, जटिलता र अस्पष्टतालाई बुझेर जीवनको सही र अधिकतम उपयोग गर्दै जीवन बिताउन सकेको खण्डमा सहज हुने विचार व्यक्त गर्नु यसको उद्देश्य रहेको देखिन्छ ।

४.४.१८.५ भाषाशैली

यस निबन्धमा आत्मपरक भाषाशैलीको प्रयोग देखिन्छ । साथै थेसिस, एन्टीथेसिस, ओल्डम्यान एण्ड द सी, ट्युमर जस्ता अंग्रेजी शब्द, जीवन, अज्ञात, आगामी, विद्यालय र अभिशप्त, आत्मसन्तुष्टि जस्ता प्रचलित तत्सम शब्दको प्रयोगले निबन्धको भाषा सरल र सम्प्रेष्य बनेको छ ।

४.४.१९ दुई महान् त्रासदी

४.४.१९.१ शीर्षक

यस निबन्धमा निबन्धकारले पैसा र ईश्वर दुवैलाई जीवनको त्रासदीका रूपमा लिएका छन् । ईश्वरको आध्यात्मिक र पैसाको भौतिक आतङ्कले दुनिया फतनोन्मुख भएको विचार अभिधात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषयबीच निकटता देखिएको हुँदा शीर्षक सार्थक देखिन्छ ।

४.४.१९.२ संरचना

चारपृष्ठ, बाह्र अनुच्छेद, बयासी पङ्क्तिमा यस निबन्धको संरचना विस्तार भएको पाइन्छ । लामो अनुच्छेद बाह्र पङ्क्तिको (पृ.१६१) र छोटोमा दुई पङ्क्ति (पृ.१६४) रहेको लघु आकारको निबन्ध हो ।

४.४.१९.३ विषयवस्तु

विश्वमा पैसा र ईश्वर दुवै अत्यन्त शक्तिशाली रहेको र ईश्वरले मानिसको आत्मिक र पैसाले भौतिक संसारमाथिको नियन्त्रण कायम राखेको, मानिसमाथि पैसा र ईश्वर निर्मम रूपमा हावी हुँदै जाँदा मान्छेले मौलिकता, मानवीयता गुमाएको, पैसाको दास बनेको र यी दुवै कुराबाट मान्छे फुत्किन नसक्ने गरी जकडिएको छ । यो मानव युगको लागि ठूलो त्रासदीको रूपमा रहेको यथार्थ यस निबन्धको विषयवस्तुको रूपमा आएको छ ।

४.४.१९.४ उद्देश्य

मान्छेले कुनैपनि वस्तुको मूल्य चाहिने भन्दा बढी दिएको कारणबाट आफैले सृष्टिगरेका वस्तुले स्वयं मान्छेलाई समाप्त पार्ने कोसिस गरिरहेको छ तसर्थ हामीले कुनै पनि वस्तुको सही सदुपयोग र सही मूल्य दिन जान्नु पर्दछ अन्यथा त्यो हाम्रो (मानवको) मूल्य भन्दा बढी मूल्यवान् हुन्छ र मान्छेको लागि घातक सिद्ध हुनेछ भन्ने आशय व्यक्त गर्नु यसको उद्देश्य देखिन्छ ।

४.४.१९.५ भाषाशैली

आत्मपरक शैली, बौद्धिक र तार्किक भाषाको प्रयोग यस निबन्धमा देखिन्छ । विश्व, ईश्वर, क्षितिज क्रूर, प्रेमी, श्वास, जीवन जस्ता प्रचलित तत्सम शब्दको प्रयोग, सेकेण्ड ह्याण्ड, होमोग्लोविन, फस्फेट, हार्मोन, कोलोजन, फोसिलाइल, कम्प्युटर, रोष्ट जस्ता अंग्रेजी शब्दको प्रयोगका साथै कोमल शब्दावलीको प्रयोगले निबन्धको भाषा सरल र आकर्षक बनेको छ ।

४.४.२० पुजारी

४.४.२०.१ शीर्षक

यस निबन्धमा जातीयताको आधारमा गरिने धार्मिक र साम्प्रदायिक विभेद, मानवता विरोधी रहेको उल्लेख गर्दै जातिभेद, रङ्गभेद प्रथाको अन्त्य गरेर जातीय समानता कायम राख्नुपर्ने आशय गाउँको सार्कीदाइको माध्यमबाट व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षकको सार्थकता प्रस्ट हुन्छ ।

४.४.२०.२ संरचना

बाह्रपृष्ठ रहेको, लामाछोटा आयामका अठतीस अनुच्छेद र एकसय त्रिहत्तर पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको देखिन्छ । यसको लामो अनुच्छेद दशपङ्क्ति (पृ.१७५) र छोटो अनुच्छेद दुई पङ्क्ति (पृ.१८०) मा फैलिएको मध्यम आकारको निबन्ध हो ।

४.४.२०.३ विषयवस्तु

यस निबन्धमा भूपिनले धार्मिक अन्धविश्वास, सनातन मानसिकता, रूढिवादी र ईश्वरीय सत्ताप्रति उनले विमतिका स्वरहरूलाई लयबद्ध गरेका छन् । सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनको चाहना, माटोको ममता, देशप्रतिको मोहलाई निबन्धका विषयवस्तु बनाएका छन् (रानाभाट, २०७० : ५) । एउटा रोचक लघु कथा मार्फत निबन्धकारले आफ्नो गाउँमा सार्की माइलामाथि भएको जातीय र धार्मिक विभेदको सम्झना गर्दै ईश्वरप्रति उनको चरम अनास्था हुँदा हुँदै पनि बाध्यात्मक परिस्थितिमा आमाको मन राख्न पुजारी बनेका छन् । भित्तिजी निर्मलालाई पुजारी बनाउने सपना लैङ्गिक विभेदको चेपमा परेको छ । हाम्रो धर्मशास्त्रले महिलालाई मन्दिरको मूल पुजारी हुनबाट रोकेको यथार्थलाई चित्रण गरेका छन् । दलित जनजातिले समाजमा आफ्नो अस्तित्व र आफ्नो पन देखाउन नपाएको, एउटै हिन्दु धर्म मान्ने भए पनि उनीहरूले सार्की दाइलाई मन्दिरमा पस्न नदिएर जातीय विभेद गरेको विषयलाई चित्रण गरेका छन् ।

४.४.२०.४ उद्देश्य

समाजमा जात धर्म, वर्ण र लिङ्गको आधारमा गरिने कुनैपनि भेदभाव अन्त्यगरेर समतामूलक समाजको निर्माण गर्नुपर्ने अभिप्रायलाई जोडिदिनु नै यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.२०.५ भाषाशैली

यस निबन्धमा अभिधात्मक शैलीको प्रयोग भएको पाइन्छ । साथै स्वयं, मूर्ति, विवेक, देवता, भगवान्, दार्शनिक, अश्लील, ईश्वर, देवी जस्ता प्रचलित तत्सम शब्द मेडिटेसन अंग्रेजी शब्द, बहुल हिन्दी शब्द प्रयोगले कविता भाषा सरल सहज बनेको छ ।

४.४.२१. डिभाइन भ्यालीमा नास्तिक अनुभूति

४.४.२१.१ शीर्षक

साईबाबाको विचार र प्रभावले पुट्टपती दैवीय उपत्यका जस्तो लाग्ने उक्त ठाउँमा निबन्धकार भने ईश्वरमाथिको नास्तिक विचार लिएर सो ठाउँमा तिनदिन बिताएको घटनालाई अभिधात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा शीर्षक र विषय बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहेको देखिन्छ ।

४.४.२१.२ संरचना

बाह्र पृष्ठ, लामा र छोटो आयामका पैतालीस अनुच्छेद, दुईसय पचास पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको पाइन्छ । यस निबन्धमा लामो अनुच्छेद पन्ध्र पङ्क्तिको (पृ.१७८) र छोटो अनुच्छेद दुई पङ्क्ति (पृ.१७४) रहेको वृहत् आकारको निबन्ध अन्तर्गत पर्दछ ।

४.४.२१.३ विषयवस्तु

कुनै पनि विषयवस्तु भाव वा विचारविना निबन्धले मूर्त रूप नलिने हुँदा विषयवस्तुलाई निबन्धको एउटा अनिवार्य तत्त्व मानिन्छ (आचार्य, २०६३ : ५९४) । गोरखपुर देखि पाण्डेचैरीसम्मको रेलको यात्रा, यात्राको क्रममा गोरखपुरमा रायमाझी परिवारसँग भेट, मृत्युले लखेटिरहेको मायाप्रति निबन्धकारको अकस्मात् गहिरो साहनुभूति बढेको, पुट्टपतीको स्वर्गीय मनोरम दृश्यहरू, साईबाबाको बाल्यकाल बितेको चित्रावतीनदी र त्यस वरपरको दृश्य, सङ्ग्रहालय भवनको भित्ताका आकर्षक दृश्यहरू, कलात्मक भवनभित्रको चैतन्य ज्योतिको दृश्य यसको विषयवस्तुको रूपमा आएको छ ।

४.४.२१.४ उद्देश्य

विश्वमा भौतिकवादी सोच र विचारको साथै लोभ, मोह र अहंकारको कारण विश्वमा मानवहित विपरीत अनेक विसङ्गतिहरू देखा परेका अवस्थामा मानव मूल्यमा आधारित आध्यात्मिक चेतनाले मान्छेको भौतिक र आध्यात्मिक जीवनलाई समृद्ध र सुखी बनाउन सकिन्छ भन्ने विचार व्यक्त गर्नु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ ।

४.४.२१.५ भाषाशैली

आत्मपरक र अभिधात्मक भाषाशैलीको प्रयोग यस निबन्धमा भएको देखिन्छ । ट्रेन, रिजर्भसन, फोन, वेटिड, स्पेशल, स्टेशन, अप्रेसन, वाथरूम, स्टयाण्ड जस्ता प्रचलित अंग्रेजी शब्द, ईश्वर, आध्यात्मिक, अस्तित्वबोध, जीवनमुखी, अनुभूति जस्ता तत्सम शब्दको साथै कतिपय अनुच्छेदमा प्रश्नात्मक, संवादात्मक भाषाशैलीको कारण निबन्ध सरल र रोचक बन्न पुगेको छ ।

४.४.२२ बेङ्लोरमा आँधीको चरा

४.४.२२.१ शीर्षक

अत्यन्त छोटो समयको कारण बेङ्लोर शहरको भ्रमण लेखकको लागि हुरीमा उडेको चरा भैँ भएको र उनको आँधीमय शैलीको भ्रमणले बेङ्लोर शहरलाई देख्न र बुझ्न नसकेको आशयलाई अभिधात्मक रूपमा व्यक्त गरेको हुँदा विषय र शीर्षक बीच निकट सम्बन्ध देखिन्छ ।

४.४.२२.२ संरचना

आठ पृष्ठ, अठ्ठाईस अनुच्छेद एकसय छयासी पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको पाइन्छ । लामो अनुच्छेद एघार पङ्क्तिको (पृ.१८८) र छोटो अनुच्छेद तिन पङ्क्तिको (पृ.१८८) रहेको देखिन्छ ।

४.४.२२.३ विषयवस्तु

साढेचारघण्टाको समयमा बेङ्लोरका मुख्य-मुख्य ठाउँको भ्रमण, भिक्टर मार्गमा पर्ने टिपु सुल्तानको प्राचीन दरबार, दुईसय चालीस एकड जमीनमा फैलिएको लालबाघको मूलगेट, कबन पार्क, विश्वेश्वरराय टेक्नोलोजिकल म्युजियम र सर्वोच्च न्यायालयको अवलोकन, फिल्म छायाङ्कनका मुख्य मुख्य ठाउँको अवलोकन, मायाँ पाण्डेसँगको नमिठो विछोड, पुट्टपतीमा साथीहरूसँग विताएको क्षणहरूलाई स्मरण गर्दै बेङ्लोरदेखि पाण्डेचेरीको यात्रा प्रसङ्ग यसको विषय वस्तुको रूपमा आएको देखिन्छ ।

४.४.२२.४ उद्देश्य

निबन्धकारले आफ्नो कथ्य पाठकसमक्ष पुऱ्याउन कुनै न कुनै उद्देश्यले अपेक्षा गर्दछ । उद्देश्यबिना निबन्धकारले पूर्णता र सार्थकता नभेटाउने हुनाले निबन्ध कुनै निश्चित प्रयोजनको परिपूर्तिका निमित्त रचना गरिन्छ, (आचार्य, २०६३ : ५९४) । यात्रा संस्मरणको माध्यमबाट यात्राको क्रममा देखापरेका मुख्य मुख्य ठाउँको वर्णन त्यहाँको भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक र सांस्कृतिक वस्तुस्थितिको जानकारी गराउनु यस निबन्धको उद्देश्यको रूपमा आएको पाइन्छ ।

४.४.२२.५ भाषाशैली

यस निबन्धमा यात्रा संस्मरणात्मक, अभिधात्मक भाषा र शैलीको प्रयोग देखिन्छ साथै गेट, सिट, डायरी, साइट सिइड, पार्क, बायोटेक्नोलोजी, मेकानिकस कोर्ट, स्ट्रिट, ट्रेन टेक्सटायल जस्ता प्रचलित अंग्रेजी शब्द, प्रेम दैवीय अनुभूति शब्द, जीवन मृत्यु अँध्यारो आकाश जस्ता तत्सम शब्द लगायत काव्यात्मक र अलङ्कारिक भाषाको प्रयोगले निबन्धको भाषा सरल र रोचक बनेको छ ।

४.४.२३ साइकलको क्यारियरमा समुद्र

४.४.२३.१ शीर्षक

यस निबन्धमा शीर्षक अभिधात्मक रूपमा आएको छ । साइकलको क्यारियरमा बसेर जीवनको तीव्र चाहनाको रूपमा रहेको समुद्रलाई हेर्दा प्राप्त भएको अनुभव, अनुभूति, दर्शन र स्पर्शलाई व्यक्त गरेको हुँदा विषय र शीर्षक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहेको देखिन्छ ।

४.४.२३.२ संरचना

तेह्र पृष्ठमा विस्तार, लामा र छोटो आयामका उनन्पचास अनुच्छेद, दुईसय एकाउन्न पङ्क्तिमा यो निबन्धको संरचना भएको पाइन्छ । लामो अनुच्छेद बाह्र पङ्क्तिको (पृ.२०५) र छोटोमा दुई पङ्क्ति (पृ.२०४) रहेको बृहत आकारको निबन्धको रूपमा रहेको छ ।

४.४.२३.३ विषयवस्तु

पाण्डेचेरीमा देवेन्द्र दाइ-भाउजूसँगको भेटघाट र बसाइ, साइकलको क्यारियरमा समुद्रको दृश्य अवलोकन, समुद्रको किनारमा सायङ्कालीन भ्रमणमा निस्किएका सयौं रैथानेहरूको भिड, महात्मागान्धीको सालिक, पाण्डेचेरी उत्पत्ति सम्बन्धी रोचक मिथक कथाको साथै त्यसठाँउका मानिसहरूको भाषा, धर्म, संस्कृति र चाडपर्वजस्ता विविध कुराहरू विषयवस्तुको रूपमा आएका छन् ।

४.४.२३.४ उद्देश्य

यात्रा संस्मरणात्मक निबन्ध रहेको हुँदा लेखक साइकलको क्यारियरमा समुद्रमा पुगेर आफ्नो यात्रा पुरा गरेको र समुद्र दर्शन र स्पर्शको रोचक अनुभूति ग्रहण गर्दै पर्यटकीय स्थल पाण्डेचेरीको जानकारी लिनुको साथै त्यस ठाँउका बासिन्दाको रहनसहन, धर्म, संस्कृतिको बारेमा जानकारी गराउनु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको देखिन्छ ।

४.४.२३.५ भाषाशैली

भाषाशैलीका कारण नै निबन्धले आफूलाई अलग र भिन्न विधाको रूपमा स्थापित गरेको छ । निबन्धको भाषा सरल, सरस र मीठासपूर्ण हुनुपर्दछ भन्ने शैली, विनोदात्मक, तर्कपूर्ण, विचारपरक प्रयोग हुनु स्वभाविकै हो (आचार्य, २०६३:५९४)। यो निबन्ध संस्मरणात्मक शैलीको रूपमा अगाडि बढ्नुको साथै अभिधात्मक भाषाशैलीको प्रयोग भएको छ । त्यसैगरी ओभर टाइम, आयोडेक्स, स्ट्रिटल्याम्प, डायरी, बोटहाउस, ग्लोब जस्ता प्रचलीत अंग्रेजी आगन्तुक शब्दको प्रयोग, अज्ञान, दृश्य, किरण अनुभूति, देवता, मातृ , आत्मा जस्ता तत्सम शब्दका साथै काव्यात्मक भाषाको प्रयोगले निबन्ध सरल बनेको छ ।

४.४.२४ हरियो दिल्लीमा लेखकहरू

४.४.२४.१ शीर्षक

सार्क कवि सम्मेलनमा नेपालको प्रतिनिधित्व गर्दै कविहरू र सार्क राष्ट्रका कवि तथा लेखकहरूको जमघट हरियो दिल्लीमा भएको अविस्मरणीय घटनालाई निबन्धकारले अभिधात्मक रूपमा प्रस्तुत गरेको हुँदा शीर्षक र विषयबीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहेकोले शीर्षक उपयुक्त देखिन्छ ।

४.४.२४.२ संरचना

बाह्र पृष्ठ, लामाछोटा आयामका बत्तीस अनुच्छेद, दुईसय पचहत्तर पङ्क्तिमा यसको संरचना विस्तार भएको देखिन्छ। ठूलो अनुच्छेदमा विस पङ्क्ति (पृ.२१४) र सानो अनुच्छेद दुई पङ्क्ति (पृ.२०७) रहेको लामो निबन्ध अन्तर्गत पर्दछ।

४.४.२४.३ विषयवस्तु

सार्क कवि सम्मेलनमा नेपालको प्रतिनिधित्व गर्दै हरियो दिल्लीमा लेखकहरूको जमघट, होटल कन्टिनेन्टल र आश्रमको बसाइ, सार्कका विभिन्न लेखक तथा कविसँग भेटघाट, कुराकानी, छलफल र कवितावाचन, एक आपसमा फोटो खिच्ने र अटोग्राफ लिने कार्यका साथै साहित्य, कला, वातावरण, धर्म र संस्कृतिको प्रभावको विषयमा कविद्वारा कार्यपत्र प्रस्तुत, भारतको प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य कुच्चपुडीको अवलोकन, कवितावाचनमा लेखकको नाम छुट्टा र आश्रममा गर्दै नगरेको गल्लीलाई जबरजस्ती स्वीकार्न लगाउँदा उनको स्वाभिमानमा धक्का लागे पनि अभि सुवेदी सरले पुरस्कार पाउँदा खुसी भएको क्षण यस निबन्धको विषयवस्तुको रूपमा आएका छन्।

४.४.२४.४ उद्देश्य

सार्क सम्मेलनले सार्कराष्ट्रहरूको सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, कला र साहित्यको विकासमा जोड दिनुपर्ने, राजनीतिक प्रदूषणको अन्त्य हुनुपर्ने, शान्तिको कामना, स्वच्छ वातावरणलाई दिगो बनाइराख्नुपर्ने, सार्क कवि, लेखकको तथा राष्ट्रहरूको एक आपसमा धर्म संस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक र आर्थिक अनुभव र विचारको आदानप्रदान हुनुपर्ने र सार्क सम्मेलन मार्फत एकतामा जोड दिनु यसको उद्देश्य रहेको छ।

४.२४.५ भाषाशैली

भाषाशैली स्रष्टाको निजी पहिचान हो। यो प्रस्तुतिको ढाँचा पनि हो। यो कतै कठोर, कतै सहज र कतै सरल पनि हुन सक्दछ। यो कतै बौद्धिक एवम् तार्किक र जटिल पनि हुन्छ। त्यसैले निबन्ध विशिष्ट रचनाशैली प्रदर्शन गरिने विधा पनि हो (सुवेदी, २०६४ : १२०) यस निबन्धमा सरल र सहज भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ। साथै स्ट्रिटल्याम्प, एक्सप्रेस, कन्टिनेन्टल, स्क्रिप्ट राइटर, अटोग्राफ, लेडी गार्डेन, ग्रीनवेल्ट जस्ता प्रचलित अंग्रेजी आगन्तुक शब्दको प्रयोग “हमको सब पत्ता है। बताओ, गुट्खा क्यूँ खाया?”, केमरेमे

सिग्रेड पियाथा ना आपने ? या तो पिना बन्द करो, या आश्रम छोडके चले जाओ'। जस्ता हिन्दी वाक्य, दृश्य, अनुहार, प्रकाश बृद्ध, आनन्द, अशिष्ट तत्सम शब्द लगायत काव्यात्मक र कोमल पदावलीको प्रयोगका कारण मिठास र सरल भाषाको प्रयोग भएको देखिन्छ ।

४.४.२४.६ निष्कर्ष

चौबीस रिल (२०६९) भूपिनको निबन्ध विधाको हिसाबले पहिलो कृति र कृति प्रकाशनको हिसाबले चौथो सङ्ग्रहको रूपमा रहेको छ । चौबीस रिल निबन्ध भित्र विचार, संस्मरण र नियात्रा छन् जसमा आफूलाई लागेको कुरा कलात्मक विचारका माध्यमले प्रस्तुत गरेका छन् । निबन्धकारले अतीतमा आफूले देखे भोगेका घटनालाई उत्खनन गर्दै शब्दमा लयबद्ध गरेका छन् । संस्मरणहरूमा आफूसँगै पाठकलाई पनि आफ्नो अतीत र विगत सम्झाउन उनी सफल देखिन्छन् । जीवनको विविध यथार्थको उनले अनुभूत गरेको बहुल अनुभूतिहरूको तस्वीर समावेश गरिएका निबन्धहरूमा भूपिनको जीवनबोध र समाजबोधको कलात्मक रूपान्तरण छ ।

उनका निबन्धमा धार्मिक अन्धविश्वास, सनातन मानसिकता, रूढिवादी र ईश्वरीय सत्ताप्रति उनले विमतिका स्वरहरूलाई लय बद्ध गरेका छन् साथै सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक र धार्मिक परिवर्तनको चाहना पनि राखेका छन् । माटोको ममता, प्रकृतिको मोह, देशप्रतिको चिन्ता र चासो उनले निबन्धमा जाहेर गरेका छन् । उनको लेखनमा इमान्दारिता र स्वाभिमानी चेतना अब्बल रूपमा आएको छ । विषयगत विविधता, प्रस्तुतिगत बौद्धिकता, तार्किकता र भाषागत कलात्मक उनका निबन्धका विशेषता रहेका छन् । यस निबन्धको भाषामा तत्सम प्रचलित आगन्तुक शब्द, उखान टुक्का र ठेट नेपाली शब्दको प्रयोग लगायत आलङ्कारिक, काव्यात्मक भाषा र कोमलपदावलीको प्रयोगका कारण भाषाशैली सरल, सहज भेटिन्छ । निबन्ध लेखनको क्रममा यदाकदा कमजोरी भेटिएपनि बौद्धिक र कलात्मक लेखनले पाठकको मन छुन सफल भएको हुँदा यो निबन्ध सङ्ग्रह उत्कृष्ट र सबल बन्न पुगेको छ ।

परिच्छेद पाँच

उपसंहार

५.१ परिचय

यस परिच्छेदमा भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व अध्ययनको सन्दर्भमा अधिल्ला परिच्छेदहरूमा गरिएको अध्ययन विश्लेषणको परिच्छेदगत निष्कर्ष र अन्तिममा समग्र निष्कर्षका रूपमा निचोड सहित शोधको अन्त्य गरिएको छ ।

भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन शीर्षक शोधपत्रको परिच्छेद एक शोध परिचयमुलक रहेको छ । यस अन्तर्गत शोध शीर्षक, परिचय, समस्या कथन, शोधकार्यको उद्देश्य, पूर्वकार्यको विवरण, शोधकार्य औचित्य र महत्त्व, शोधकार्यको क्षेत्र र सीमा, सामग्री सङ्कलन विधि, शोधविधि, शोधपत्रको रूपरेखा प्रस्तुत गरिएको छ ।

शोधपत्रको परिच्छेद दुई साहित्यकार भूपिन व्याकुलको जीवनी शीर्षकमा रहेको छ । यस अन्तर्गत भूपिनको जीवनी प्रस्तुत गरिएको छ । यो उनको चिनारी खण्डको रूपमा पनि रहेको छ । बसाइँ-सराइ, वाल्यकाल, शिक्षादीक्षा, विवाह र पारिवारिक अवस्था, दाम्पत्य जीवन, पेसा र आर्थिक अवस्था, साहित्यको क्षेत्रमा प्रवेश र कार्य, सामाजिक क्षेत्रमा संलग्नता र कार्य, रुचि, स्वभाव, भ्रमण, सुख दुःखका क्षणहरू, अविस्मरणीय घटना, जीवन दर्शन, विभिन्न सङ्घसंस्थामा उनको आबद्धता, सम्मान र पुरस्कार, नेपाली साहित्यमा उनको आगमन, साहित्यिक यात्राको प्रसङ्गको साथै प्रेरणाको स्रोत र प्रभाव विषयमा चर्चा गरिएको छ ।

बाग्लुङ जिल्लाको नारायणस्थान-३, बलेवामा जन्मेतापनि कर्मथलोको रूपमा चितवनलाई बनाएका भूपिनले विविध सङ्कटको सामना गर्दै अगाडि बढेको देखिन्छ । विभिन्न सामाजिक सङ्घ संस्थाहरूमा काम गर्दै आएका कविको जीवनी सबै पाठकको लागि अनुकरणीय रहेको छ । समकालीन नेपाली साहित्यमा फरक पहिचान बनाउन सफल र चर्चित कविको रूपमा देखा परेका भूपिनको जीवनमा जतिसुकै दुःख, कष्ट र सङ्कट परेतापनि आफ्नो उद्देश्यमा विचलित नभई नेपाली साहित्यको उत्थान र विकासमा सधैं लागि पर्ने व्यक्तिका रूपमा चिनिएका छन् । उनले नेपाली साहित्य क्षेत्रमा गरेका कार्यहरूलाई मूल्याङ्कन गर्दा उनको जीवन सामान्य परिश्रमी र सङ्घर्षशील रहेको देखिन्छ ।

यस शोध पत्रको परिच्छेद तिनमा साहित्यकार भूपिनको बहुमुखी व्यक्तित्वको विषयमा चर्चा गरिएको छ । यस खण्डमा उनको आन्तरिक र बाह्य व्यक्तित्व, साहित्यिक र साहित्येतर व्यक्तित्वका विषयमा चर्चा गरिएको छ । उनको बाह्य व्यक्तित्व अन्तर्गत शारीरिक बनावट, सुन्दर र लोभलाग्दो, स्वरमा मिठासपन, सहयोगी भावना, चिन्तनशील स्वभाव, नेतृत्वदायी र निर्णय क्षमता उनका विशेषताका रूपमा रहेको पाइन्छ । साहित्यिक व्यक्तित्वमा कवि, निबन्धकार, गीत, गजल, मुक्तक, स्तम्भकार र भूमिका लेखन आदि व्यक्तित्वको परिचय दिएको भएपनि उनको विशेष योगदान र व्यक्तित्व कविता र निबन्ध क्षेत्रमा रहेको देखिन्छ । साहित्येतर व्यक्तित्व अन्तर्गत अध्यापक, खेलाडी, सञ्चारकर्मी सामाजिक, व्यक्तित्वहरू रहेका छन् । यी मध्ये तुलनात्मक रूपमा अध्यापक व्यक्तित्वको रूपमा उनी चिनिँदै आएको पाइन्छ । यसरी उनी एक व्यक्तिमा अनेक व्यक्तित्व भएका बहुमुखी व्यक्तित्वको रूपमा चिनिएका छन् ।

यस शोधपत्रको परिच्छेद चारमा साहित्यकार भूपिन व्याकुलको कृतिहरूको बारेमा अध्ययन र विश्लेषण गरिएको छ । समकालीन नेपाली कविताको रङ्गमञ्चमा भूपिन आफ्नो फरक र छुट्टै पहिचान लिएर नेपाली साहित्यमा देखा परेका हुन् । वि.सं.२०४० को दशकदेखि गजल,गीत, मुक्तक लेखन गर्दै वि.सं २०४८ को *नवकविता* पत्रिकामा कविता प्रकाशित गरी औपचारिक रूपमा साहित्यमा लागि परेका भूपिनका हालसम्म चारओटा कृतिहरू प्रकाशित भैसकेको छन् । तीमध्ये तिन कविता र एक निबन्ध रहेका छन् । **क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक** (२०५३) मा बौद्धिक र गम्भीर कविता कलाको प्रस्तुतिले उनको पहिचानलाई उज्यालो बनाएको छ । **शब्दहरूको नेपथ्य** (२०५६) मा समकालीन कविहरूसँग संयुक्त कविता प्रकाशन गरेर उनले युगबोध र सौन्दर्यबोधका चेतनालाई संयुक्त प्रस्तुती मार्फत उजागर गरेका छन् । मानवीय संवेदना पाठकीय संवेदनालाई छुने कविताको सङ्गालोका साथै कलात्मक बिम्ब, प्रतीक, मिथक जस्ता शिल्पविधानले सिङ्गारेका भूपिनलाई **हजार वर्षको निद्रा** (२०६६) कविता सङ्ग्रहले परिपक्व कविको उचाइमा पुऱ्याएको छ भने **चौबीस रिल** (२०६९) निबन्ध सङ्ग्रहले उनलाई आधुनिक नेपाली निबन्धको समसामयिक धारमा स्थापित गरेको छ । उनको पहिलो चरणका कृतिको विषयवस्तुको रूपमा सामाजिक विसङ्गति, आर्थिक विषमता, मानवीय मूल्य र मान्यताको ह्रास, तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्थाले ल्याएको खराब प्रवृत्ति, सहरिया स्वार्थी प्रवृत्ति, व्यक्तिवादी चिन्तन, भ्रष्ट संस्कृति, विश्वयुद्धको होडवाजी र यसले निम्त्याएको क्षति,

घातप्रतिघात, मानवीय जनजीवन र राष्ट्र-राष्ट्रियता लगायत समग्र पृथ्वी नै क्षतिग्रस्त हुनुपरेको यथार्थलाई चित्रण गरेका छन् । दोस्रो र तेस्रो चरणका कृतिहरूको विषयवस्तुको रूपमा जीवनको विसङ्गतिबोध, अस्तित्वको खोजी, कुण्ठाग्रस्त मानवीय जीवन, मानवीय संवेदनहीनता, अन्योलग्रस्त जीवन, खोक्रोपना, दिशाहीनता, भूमण्डलीकरण, प्रविधि र संस्कृतिको प्रभाव, द्वन्द्वबाट आक्रान्त मानवीय जीवन, गरिबी र पछ्यौटेपन, युगीन शासन व्यवस्थाप्रति असन्तुष्टि, राजनीतिक मूल्यहीनता, सामाजिक असमानता, जातीय विभेदप्रतिको आक्रोश व्यक्त गरेका छन् ।

पहिलो चरणको कृतिमा लेखकको वैयक्तिक आवेगले स्थान पाएको देखिनुको साथै छिटफुट रूपमा भाषागत र व्याकरणगत कमजोरी पनि देखिन्छ भने दोस्रो र तेस्रो चरणमा आइपुग्दा कविको लेखनमा निखार आउनुको साथै विषयवस्तु, भाषा, शैली काव्यिक शिल्पमा परिष्कृत परिमार्जित हुँदै गएको देखिन्छ ।

५.२ सारांश

सर्वजित खडका र वसुन्धरा खडकाको काहिंला सन्तानको रूपमा नारायणस्थान -३, बलेवा बाग्लुङमा वि.सं.२०३० चैत्र ३० गते जन्मिएका भूपिन बहादुर खडका कवितामा भूपिन व्याकुल र निबन्धमा भूपिन नामले सुपरिचित छन् । काहिंला छोराको रूपमा भूपिनको जन्म निम्न मध्यम परिवारमा भएको थियो । अन्तर्मुखी स्वभावका भूपिनको बाल्यावस्था रमाइलो र खुसीसाथ बा-आमाको काखमा बितेको भएपनि ठुलो परिवार, जग्गा जमिनबाट न्यून आय, बाबाले कमाएको भरमा मात्र सबै परिवार पालिनुपर्ने बाध्यताको कारणले केही आर्थिक अभाव, समस्यालाई भेल्लु परेको थियो । बाबाबाट घरमा नै साउँ अक्षर पढ्न र लेख्न सिकेका भूपिनको औपचारिक शिक्षाको प्रारम्भ भने वि.सं.२०३६ सालमा जनता मा.वि. हालको धन उच्च माध्यमिक विद्यालय बलेवाबाट भएको थियो । सोही विद्यालयबाट वि.सं.२०४७ सालमा प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण गरेका हुन् । वि.सं.२०४९ सालमा प्रमाणपत्र तह पी.एन. क्याम्पस पोखराबाट र वि.सं.२०५२ सालमा स्नातक तह सोही क्याम्पसबाट उत्तीर्ण गर्नुको साथै त्रिभुवन विश्वविद्यालय कीर्तिपुरबाट स्वास्थ्य विषयमा स्नातकोत्तर उत्तीर्ण गरेका हुन् । वि.सं.२०६० भाद्र ६ गतेदेखि भूपिन सप्तगण्डकी बहुमुखी क्याम्पस भरतपुरमा निरन्तर अध्यापन कार्यमा संलग्न हुँदै आएका छन् ।

वि.स.२०६१ साल माघ १ गते चितवन, भरतपुर निवासी ज्योती खडकासँग विवाह बन्धनमा बाँधिएका भूपिनका एक छोरा छन् । पुख्र्यौली सम्पत्ति खासै धेरै नभएको हुँदा आर्थिक स्थिति मजबुत देखिँदैन । उनको जागिरबाट तिनजना परिवारको जसोतसो डेरामा बसेर गुजारा चलाउँदै आएका छन् । भूपिन स्कूल पढ्दा विद्यालयमा आयोजना गरिने कथा, कविता र निबन्ध लेखनजस्ता अतिरिक्त क्रियाकलापमा सहभागी हुँदादेखि नै साहित्यतर्फ भुकाव राखेका भूपिन वि.सं. २०४० दशकमा गजल, गीत, मुक्तक लेख्दै वि.स.२०४८ मा “एवम् क्रम : दिन र रातहरू” शीर्षकको कविता *नव कविता पत्रिका*मा छपाएर औपचारिक रूपमै साहित्यतर्फ लागेका हुन् । भूपिनले विभिन्न सामाजिक सङ्घसंस्थामा काम गरेर आफूलाई उदाहरणीय रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । उनी विभिन्न साहित्यिक सङ्घसंस्थासँग आवद्ध रहेर साहित्यको स्तर उन्नति र विकासको लागि देशभित्र र बाहिर आयोजना गरिएका साहित्यिक गोष्ठी र भेलामा सहभागी भएका छन् । उक्त क्रममा विभिन्न ठाउँको अवलोकन र भ्रमण गर्ने अवसर पनि प्राप्त गरेका छन् । जीवनको बयालिस वसन्त पार गरिसकेका भूपिनको जीवनमा अनेक उतारचढाव र सुखदुःखका क्षणहरू आएको देखिन्छ ।

उनको व्यक्तित्वलाई हेर्दा उनी बहुआयामिक प्रतिभाका धनि रहेका छन् । उनका व्यक्तित्वमा साहित्यिक र साहित्येतर व्यक्तित्व दुवै रहेका छन् । साहित्यिक व्यक्तित्वमा गीतकार, गजलकार, मुक्तककार, कवि तथा निबन्धकार आदि व्यक्तित्व रहेका छन् । साहित्येतरतर्फ खेलाडी, अध्यापक, सामाजिक सञ्चारकर्मी व्यक्तित्व रहेका छन् । यी सबै व्यक्तित्वहरूलाई आधारमान्दा कवि, निबन्धकार र अध्यापक व्यक्तित्वमा उनलाई सफलता मिलेको देखिन्छ ।

नेपाली साहित्यको क्षेत्रमा भूपिनले महत्त्वपूर्ण योगदान पुऱ्याएको देखिन्छ । उनको साहित्यिक यात्रा र योगदानलाई तिन चरणमा राखेर अध्ययन गरिएको छ । वि.सं. २०४८ मा पोखराबाट प्रकाशित हुने *नवकविता* पत्रिकामा कविता प्रकाशित गरी साहित्य यात्रा सुरु गरेका भूपिनका हालसम्म चारओटा कृतिहरू प्रकाशित भैसकेको छन् , जसमध्ये तिन कविता विधाका र एक निबन्ध विधामा रहेको छ । उनले यी कृतिका लागि विभिन्न पुरस्कार र सम्मान पनि पाएका छन् । उनले कथा, कविता, निबन्ध, गीत, गजलमा आफ्नो कलम चलाए पनि कविता र निबन्धमा उनको योगदान महत्त्वपूर्ण देखिन्छ । सङ्ख्यात्मक रूपमा उनी जति कृतिहरू लेख्न सफल भएका छन् गुणात्मक हिसाबले ती कृतिले महत्त्वपूर्ण स्थान पनि हाँसिल गरेका छन् ।

उनका रचना विषयवस्तुको रूपमा समाजमा व्याप्त विकृति, विसङ्गति, अन्याय, भ्रष्ट संस्कृति, धोका, षड्यन्त्र, शहीदको अवमूल्य, स्वाभिमानमा ह्रास, जीवन र मृत्युको वास्तविकता, राष्ट्रियता, युगीन यथार्थ, गरिबी, सामाजिक विभेद, देशको आर्थिक जर्जरता, रुग्णता, परिवर्तनको चाहना, युगीन शासन र शासक वर्गप्रति असन्तुष्टि, सभ्यताले थिचेको शहरी वातावरण, सुन्दर ग्राम्य जीवनको चित्रण, उदात्तप्रेम, जीवनको विसङ्गति बोध, उदासीनता र वितृष्णा, संवेदनहीनता, प्रविधि संस्कृतिको प्रभाव, द्वन्द्वका प्रभावबाट अन्योलग्रस्त जीवन, शोषित र पीडित वर्गप्रति सहानुभूति व्यक्त गरेका छन् ।

उनको पहिलो रचना **क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक** कविता सङ्ग्रहमा विचारको बाढी उर्लिएको पाइन्छ । अधिकांश कविताहरू राजनीतिक, सामाजिक, विकृति र विसङ्गतिलाई केन्द्रमा राखेर रचना गरेको पाइन्छ । यस कृतिमा छिटफुट भाषागत र व्याकरणगत कमजोरी पनि देखिन्छ । जे होस् तत्कालीन परिस्थितिमा पनि साहित्य सिर्जना गरी नेपाली समाजमा चेतना विस्तार गरेको हुँदा उनको त्यो कार्यलाई महत्त्वपूर्ण उपलब्धिको रूपमा लिन सकिन्छ ।

उनको पछिल्ला चरणका कविता र निबन्धको विषयमा मानवीय विकृति विसङ्गतिको उठान गर्दै मान्छेलाई केन्द्रमा राखेर मानवीय अस्तित्वको खोजी गरी लेखिएका कविताहरू केही जटिल, असम्प्रेष्य र असहज जस्तो लागेतापनि बिम्ब, प्रतीक, मिथक र अलङ्कारको प्रयोग, भाव भाषाको बीच तालमेल, काव्यात्मक र कोमल शब्दको प्रयोगले सामान्य पाठकले पनि सजिलै बुझ्न र ग्रहण गर्न सक्ने सरल, सहज रहेको अनुभूति हुन्छ । भूपिनका प्रारम्भिक कृतिमा विचारपक्षले कला र भावलाई ओजेलमा पारेको आभाष भएपनि पछिल्ला रचनाहरूमा लेखकीय साधना र अभ्यासले भाव, भाषा र शिल्पमा उचित तादात्म्यता भएको पाइन्छ । लेखकले आफूले सिर्जना गरेको रचनाहरूलाई सुरक्षित र व्यवस्थित गर्न तर्फ त्यति ध्यान पुऱ्याएको देखिदैन, यो उनको कमजोरीको रूपमा रहेको पाइन्छ तसर्थ उनको लेख रचनालाई सुरक्षित र व्यवस्थित गरेर राख्न जरुरी देखिन्छ ।

जीवनमा भोगेका, देखेका, अनुभव गरेका विषयलाई भावनाको माध्यमबाट कलात्मक ढङ्गले प्रस्तुत गर्ने कवि भूपिनको ३० वर्षे लामो काव्य यात्रामा निरन्तर साहित्यिक साधनामा लागि परेर नेपाली साहित्यको विकासमा उनले खेलेको भूमिका वास्तवमा उल्लेखनीय र अनुकरणीय रहेको छ ।

सन्दर्भसामग्रीसूची

क) मूल सन्दर्भपुस्तकसूची

व्याकुल, भूपिन, (२०५३), क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक, पोखरा : चुडामणी सुवेदी र दीपेन्द्र खड्का ।

_____ , (२०५६), शब्दहरूको नेपथ्य, काठमाडौं : शब्दघर ।

_____ , (२०६६), हजार वर्षको निद्रा, पोखरा : पोखरेली युवा सांस्कृतिक परिवार ।

_____ , (२०६९), चौबीस रिल, बागवजार काठमाडौं : साङ्ग्रिला पुस्तक प्रकाशन ।

ख) सहायक सन्दर्भ पुस्तक सूची

अधिकारी, हेमाङ्गराज र बद्रीविशाल भट्टराई, (सम्पा.) (२०६३), प्रयोगात्मक नेपाली शब्दकोश (दो.सं.), काठमाडौं : विद्यार्थी प्रकाशन ।

आचार्य, कृष्णप्रसाद, (२०६३), पूर्व आधुनिक नेपाली साहित्य, लोकसाहित्य र आधुनिक निबन्ध, कीर्तिपुर : क्षितिज प्रकाशन ।

आचार्य, भागवत, (२०६३), कविता सिद्धान्त र नेपाली कविता एवम् निबन्ध, काठमाडौं ।

ओझा, रामनाथ, (२०६४), शंकर लामिछानेको निबन्धकारिता, काठमाडौं : पालुवा प्रकाशन ।

उपाध्याय, केशवप्रसाद, (२०६६), पूर्वीय साहित्य सिद्धान्त, (चौ.सं.) ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

खनाल, नारायणप्रसाद, (२०६८), समीक्षा प्रहर प्रहरका, नवलपरासी : त्रिवेणी साहित्य परिषद ।

गैरे, ईश्वरीप्रसाद र कृष्णप्रसाद आचार्य, (२०५९), आधुनिक नेपाली नाटक र फुटकर कविता, कीर्तिपुर : न्यू हीराबुक्स इन्टरप्राइजेज ।

गौतम, लक्ष्मणप्रसाद, भूमिका, (२००९), चेतनाका बिम्बहरू र हजार वर्षको निद्रा, पोखरा पोखरेली युवा सांस्कृतिक परिवार ।

_____ , (२०६०), समकालीन नेपाली कविताको बिम्बपरक विश्लेषण, पुलचोक ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

_____ , (२०६६), समकालीन नेपाली कविताका प्रवृत्ति, काठमाडौं : पैरवी प्रकाशन ।

- ढुङ्गेल, भोजराज र दुर्गाप्रसाद दाहाल, (२०६८), **नेपाली कविता र काव्य**, काठमाडौं :
एम.के पब्लिसर्स एण्ड डिष्ट्रिब्यूटर्स ।
- त्रिपाठी, वासुदेव, (२०६०), **नेपाली कविता (भाग-४)** (चौथो.सस्करण), ललितपुर : साभा
प्रकाशन ।
- थापा, मोहन हिमांशु, (२०६६), **साहित्य परिचय**, (पाँ.सं.) ललितपुर : साभा प्रकाशन ।
- पोखरेल, बालकृष्ण, (२०४०), **नेपाली बृहद शब्दकोश**, काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा
प्रतिष्ठान ।
- पौडेल, विष्णुप्रसाद, (२०५७), **संस्कृत काव्यशास्त्र** , काठमाडौं : भुँडीपुराण प्रकाशन ।
- प्रेमछोटा, (२०५३), भूमिका, **क्षतिग्रस्त पृथ्वी र मूलसडक**, भूपिन व्याकुल, पोखरा : चूडामणी
सुवेदी र दीपेन्द्र खडका ।
- भण्डारी, पारसमणि र माधवप्रसाद पौडेल, (२०६८), **नेपाली कविता र काव्य**, काठमाडौं :
विद्यार्थी पुस्तक भण्डार ।
- लुइटेल्, खगेन्द्रप्रसाद, (२०५४), **नेपाली कविता**, काठमाडौं : विद्यार्थी पुस्तक भण्डार ।
_____, (२०६२), **कविताको संरचनात्मक विश्लेषण**, काठमाडौं : विद्यार्थी
पुस्तक भण्डार ।
- शर्मा नेपाल, वसन्तकुमार, (२०५८), **नेपाली शब्दसागर**, (दो.सं.), काठमाडौं : भाभा पुस्तक
भण्डार ।
- शर्मा, मोहनराज, (२०५६), **शब्द रचना र वर्णविन्यास**, काठमाडौं : नवीन प्रकाशन ।
- शर्मा, मोहनराज, खगेन्द्रप्रसाद, लुइटेल्, (२०६०), **पूर्विय र पाश्चत्य साहित्य सिद्धान्त** ,
काठमाडौं : विद्यार्थी पुस्तक भण्डार ।
- सुवेदी, राजेन्द्र, (२०६३), **स्नातकोत्तर नेपाली, निबन्ध भाग-३**, (चौ.सं), काठमाडौं :
पाठ्यसामग्री पसल ।
- _____, (२०६४), **सिर्जनात्मक लेखन सिद्धान्त र विश्लेषण** (दो.सं.), काठमाडौं :
पाठ्यसामग्री पसल ।

ग) पत्रपत्रिका सूची

अधिकारी, रञ्जन, (२०७१), *उज्यालै उज्यालोको अन्तिम कविता आदर्श समाज राष्ट्रिय दैनिक*, वर्ष १९, अंक १३९ ।

कँडेल, सुनिता, (२०६८), *अनर्गल प्रलाप निबन्धसङ्ग्रहको कृतिपरक अध्ययन अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोधपत्र, चितवन* : त्रि.वि. नेपाली विभाग, वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, ।

गुरुड, सुशान्त, (२०७०), *वैचारिक वृक्षमा भूपिन, नेपाल पत्रिका*, वर्ष १४, अंक २६, पृ.१ ।

चामलिङ, दुतेन्द्र, (२०६८), *हजार वर्षको निद्रा र व्युँभाउने कविताहरू, डब्लु डब्लु, दुतेन्द्र फेसबुक, डटकम* ।

डंगोल, आर.एम., (२०६६), *भूपिनका कविता र कृष्ण भीरको पहिरो, बुधवार साप्ताहिक*, वर्ष १५, अंक ४ ।

त्रिपाठी, गीता, (२०६६), *नयाँकृति, गोरखापत्र दैनिक* ।

थापा, रोशन, (२०६८), *स्वादिला कविताहरूको सङ्ग्रह, मधुपर्क*, वर्ष १९, अंक ३०४ ।

निखिल, निमेष, (२०७०), *काव्यात्मक निबन्ध, कोसेली*, ७ वैशाख २०७०, शनिवार, पृ.च।

परासर, नरेन्द्र, (२०६८), *हजार वर्षको निद्रामा मस्त कवि भूपिन व्याकुल अन्नपूर्ण पोष्ट, वैशाख ३, शनिवार*, पृ.३ ।

पौडेल, दिलीप, (२०७१), *बिम्बमा भूपिनको एकल कविता वाचन, नागरिक दैनिक*, वर्ष ६, अंक २१४ ।

पौडेल, दीपेन्द्र, (२०६७), *भूपिन व्याकुलको हजार वर्षको निद्रा कविता सङ्ग्रहको विश्लेषण, अप्रकाशित शास्त्रीतह (तृतीय वर्ष) को शोधपत्र, काठमाडौं: नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाडौं* ।

बानिया, राजकुमार, (२०६९), *कविता क्लिनिकमा भूपिन व्याकुल, गरिमा*, वर्ष ३०, अंक ११, पूर्णाङ्क ३५९ ।

भट्टराई, गोविन्दराज, (२०६६), *भूपिन चोटिला कविता लेख्छन्, अन्नपूर्ण पोष्ट* ।

रानाभाट, सुरेश, (२०७०), *चौबीस रिल भित्र भूपिनको दिल, याण्डम रिडर्स सोसाईटी अफ नेपाल* ।

शेरचन, रोशन, (२०६८), *साइबर सेक्स र मोमोका प्लेटमा ईश्वरहरू, गरिमा*, वर्ष २९, अंक १३, पूर्णाङ्क ३४५ ।

श्रेष्ठ, सुमनराज, (२०६८), *चौबीस रिलमा खिचिएका दृश्यहरू, ब्लाग म्यागजिन*, पृ.५,६ ।

श्रेष्ठ, तीर्थ, (२०७१), भूपिनले सुनाए कविता, कान्तिपुर, वर्ष २२ अंक १९३ ।

_____ (२०७१), भूपिन मन पग्लियो पोखरामा, पोखरापत्र राष्ट्रिय दैनिक, वर्ष १६, अङ्क २२९, भाद्र १४ श्रेणी क, पृ.१,४ ।

सरुभक्त, (२०७१), कला र शैली, कान्तिपुर, वर्ष २२, अंक २७९ ।

सापकोटा, दीपक, (२०६९), कविताको ट्रेन्चभित्र छिरेर जीवनको आक्रमणहरूको सामना गर्न इच्छुक एक सिर्जनशील अराजक, सौर्यदैनिक ।

परिशिष्ट-१

त्रिभुवन विश्वविद्यालय वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस भरतपुर नेपाली विभाग स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौं पत्रको अनुसन्धान प्रबन्धका लागि साहित्यकार भूपिन व्याकुलको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन विषयमा शोध गर्न लागेको र त्यसको लागि शोधनायक साहित्यकार भूपिनको व्यक्तिगत जीवनसँग सम्बन्धित उहाँका नातागोता तथा आफन्तसँग सोधिएका प्रश्नहरूको विवरण :

१. साहित्यकार भूपिनको बाल्यकालको अवस्था कसरी बितेको थियो ?
२. साहित्यकार भूपिनको रुचि, स्वभाव कस्तो थियो ?
३. साहित्यकार भूपिनको सामाजिक योगदान कस्तो रहेको छ ?
४. साहित्यकार भूपिनको पेशा र आर्थिक अवस्था कस्तो रह्यो ?
५. नेपाली साहित्यमा उनको आगमन कहिलेदेखि भयो ?
६. साहित्यकार भूपिनको साहित्यिक योगदान के कस्तो रहेको छ ?
७. भूपिन के-के गर्न रुचाउनु हुन्छ ?
८. भूपिनको शैक्षिक योगदान के कस्तो रहेको छ ?
९. भूपिनको व्यक्तित्वलाई तपाईं कुन रूपमा मूल्याङ्कन गर्नु हुन्छ ?
१०. उनको साहित्यिक मान्यता प्रतिको दृष्टिकोण के छ ?
११. उनले साहित्यमा लाग्ने प्रेरणा र प्रभाव कोवाट पाएका थिए ?
१२. उनको वैवाहिक र पारिवारिक अवस्था कस्तो रहेको छ ?

परिशिष्ट-२

अन्तर्वार्ता लिएका व्यक्तिहरूको नाम, थर र ठेगाना

| क्र.सं. | नाम, थर | स्थायी ठेगाना | अस्थायी ठेगाना |
|---------|---------------------|-------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------|
| १ | भूपिन व्याकुल | धौलागिरी अञ्चल, बाग्लुङ जिल्ला नारायणस्थान गा.वि.स. वडा नं. ३, बलेवा । | चितवन जिल्ला भरतपुर उप-महानगरपालिका वडा नं. १२ । |
| २ | ज्योती खड्का | धौलागिरी अञ्चल, बाग्लुङ जिल्ला नारायणस्थान गा.वि.स. वडा नं. ३, बलेवा । | चितवन जिल्ला भरतपुर उप-महानगरपालिका वडा नं. १२ । |
| ३ | देवेन्द्र खड्का | चितवन जिल्ला भरतपुर उप-महानगरपालिका, वडा नं.१२ । | - |
| ४ | दुर्गा बहादुर खड्का | धौलागिरी अञ्चल, बाग्लुङ जिल्ला नारायणस्थान गा.वि.स., वडा नं. ३, बलेवा । | - |
| ५ | सुमनराज श्रेष्ठ | चितवन जिल्ला भरतपुर उप-महानगरपालिका वडा नं.३, नारायणगढ । | - |